NAJAT DILANE WALE AAMAL KI MALOOMAT (HINDI)

नजात

दिलाने वाले आ’माल की मा’लूमात

(मअ़ 41 ह़िकायात)

निय्यत | शुक्र | सब्र | तवक्कुल | ज़िक्रुल्लाह | ख़ौफ़े ख़ुदा | हुस्ने ज़न | इख़्लास

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा’वते इस्लामी)

शो’बए बयानाते दा’वते इस्लामी

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

नजात दिलाने वाले आ'माल की ता'रीफ़ात, ह़ासिल करने के त़रीक़ों व दीगर मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी एक रहनुमा किताब

नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात

(मअ़ 41 हिकायात)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना देहली-6

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : **नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात**
(मअ़ 41 ह़िकायात)

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**
(शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी)

पहली बार : **सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1440 हि.**

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना** (देहली-6)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 8 रबीउ़स्सानी, 1438 हि. ह़वाला नम्बर : 212

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि (उर्दू) किताब

"**नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात**" (मअ़ 41 ह़िकायात)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

07-01-2017

E mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

यादद्दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

याद्दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"नजात दिलाने वाले आ'माल" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "18 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، یحیی بن قیس، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) कु़रआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) शरई मसाइल सीखूंगा (13) कोई बात समझ न आई तो उ़लमाए किराम से पूछ लूंगा (14) (ज़ाती नुस्ख़े पर) "याददाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा (15) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (16) इस किताब के मुत़ालए़ का सवाब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को ईसाल करूंगा (17) फ़र्ज़ उ़लूम सीखूंगा (18) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

मौज़ूअ़	सफ़्हा	मौज़ूअ़	सफ़्हा
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या, मौज़ूअ़ का तआ़रुफ़	7	(20) ज़िक्रुल्लाह, ता'रीफ़, ज़िक्रुल्लाह करने के त़रीक़े	173
पेशे लफ़्ज़ (नजात दिलाने वाले आ'माल)	9	(21) राहे खुदा में ख़र्च करना, ता'रीफ़, ख़र्च करने के त़रीक़े	183
नजात दिलाने वाले आ'माल की ता'रीफ़ात	12	(22) अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहना, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	193
(1) निय्यत, ता'रीफ़, आ़मिले निय्यत बनने के त़रीक़े	19	(23) ख़ौफ़े ख़ुदा, ता'रीफ़, ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने के त़रीक़े	200
(2) इख़्लास, ता'रीफ़, इख़्लास पैदा करने के त़रीक़े	25	(24) ज़ोहद, ता'रीफ़, हुसूले ज़ोहद के त़रीक़े	209
(3) शुक्र, ता'रीफ़, आ़दते शुक्र अपनाने के त़रीक़े	34	(25) उम्मीदों की कमी, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	219
(4) सब्र, ता'रीफ़, सब्र की आ़दत बनाने के त़रीक़े	44	(26) सिद्क़, ता'रीफ़, हुसूले सिद्क़ के त़रीक़े	227
(5) हुस्ने अख़्लाक़, ता'रीफ़, हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने के त़रीक़े	49	(27) हमदर्दिये मुस्लिम, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	233
(6) मुहा़सबए नफ़्स, ता'रीफ़, मुहा़सबा करने के त़रीक़े	57	(28) रजा (रह़मते इलाही से उम्मीद), ता'रीफ़, तुरुक़े हुसूल	239
(7) मुराक़बा, ता'रीफ़, मुराक़बा करने के त़रीक़े	66	(29) मह़ब्बते इलाही, ता'रीफ़, मह़ब्बते इलाही पैदा करने के त़रीक़े	246
(8) मुजाहदा, ता'रीफ़, मुजाहदा करने के त़रीक़े	70		
(9) क़नाअ़त, ता'रीफ़, क़नाअ़त इख़्तियार करने के त़रीक़े	75	(30) रिज़ाए इलाही, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	250
(10) आ़जिज़ी व इन्किसारी, ता'रीफ़, आ़जिज़ी अपनाने के त़रीक़े	81	(31) शौक़े इ़बादत, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	253
(11) तज़्किरए मौत, ता'रीफ़, तज़्किरए मौत करने के त़रीक़े	89	(32) ग़ना, ता'रीफ़, ग़ना पैदा करने के त़रीक़े	257
(12) हुस्ने ज़न, ता'रीफ़, हुस्ने ज़न क़ाइम करने के त़रीक़े	98	(33) क़बूले ह़क़, ता'रीफ़, क़बूले ह़क़ का ज़ेह्न बनाने के त़रीक़े	263
(13) तौबा, ता'रीफ़, तौबा करने के त़रीक़े	105	(34) माल से बे रग़बती, ता'रीफ़, इख़्तियार करने के त़रीक़े	268
(14) सालिहीन से मह़ब्बत, ता'रीफ़, मह़ब्बते सालिहीन के त़रीक़े	121	(35) ग़िब्ता (रश्क), ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	275
(15) अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त, ता'रीफ़ व दीगर उमूर	129	(36) मह़ब्बते मुस्लिम, ता'रीफ़, जज़्बा पैदा करने के त़रीक़े	280
(16) दिल की नर्मी, ता'रीफ़, नर्म दिली पैदा करने के त़रीक़े	135	(37) अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना, ता'रीफ़, तुरुक़े हुसूल	285
(17) ख़ल्वत व गोशा नशीनी, ता'रीफ़, इख़्तियार करने के त़रीक़े	142	(38) एह़तिरामे मुस्लिम, ता'रीफ़, जज़्बा पैदा करने के त़रीक़े	291
		(39) मुख़ालफ़ते शैतान, ता'रीफ़, हुसूल के त़रीक़े	298
(18) तवक्कुल, ता'रीफ़, तवक्कुल पैदा करने के त़रीक़े	157	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	304
(19) ख़ुशूअ़, ता'रीफ़, ख़ुशूअ़ पैदा करने के त़रीक़े	167	मआख़िज़ो मराजेअ़	310

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आशिक़े आ'ला हज़रत, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुहम्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरजए ज़ैल **छ शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

1.....तादमे तह़रीर (जमादिउ़स्सानी 1438 हिजरी) मज़ीद शो'बे क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजिम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नजात दिलाने वाले आ'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक लोगों के वोह उ़म्दा अख़्लाक़ और अच्छी आ़दात या वोह बेहतरीन आ'माल जिन के ज़रीए़ बन्दा अपने रब عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करता और दुन्यवी व उख़रवी तरक़्क़ी की राह पर गामज़न होता है उन्हें "मुन्जियात या'नी **नजात दिलाने वाले आ'माल**" कहा जाता है।[1] एक मुसलमान के लिये ज़ाहिरी व बाति़नी गुनाहों से अपने आप को बचाने और नेक आ'माल बजा लाने की बड़ी अहम्मिय्यत है क्यूंकि नेक आ'माल रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने, रह़मते इलाही पाने, नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने का बहुत बड़ा सबब हैं। जिस त़रह़ "मुह़र्रमाते बाति़निय्या (या'नी बाति़नी ह़राम चीज़ें मसलन) **तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब** (या'नी खुद पसन्दी) व ह़सद वग़ैरहा और उन के मुआ़लजात (या'नी इलाज) का इ़ल्म हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।" वैसे ही "मसाइले इ़ल्मे क़ल्ब या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या मिस्ल तवाज़ोअ़ व इख़्लास व तवक्कुल वग़ैरहा और उन के तुरुक़े तह़सील (ह़ासिल करने के त़रीक़ों) का इ़ल्म भी हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।"[2] अलबत्ता इस मस्अले में काफ़ी तफ़्सील है। इसी ज़रूरत के पेशे नज़र मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने पहले "**बाति़नी गुनाहों की मा'लूमात**" पर मुश्तमिल एक किताब बनाम "**बाति़नी बीमारियों की मा'लूमात**" मुरत्तब की जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से बहुत पज़ीराई मिली, फिर "**मसाइले क़ल्ब की मा'लूमात**" पर मुश्तमिल एक किताब मुरत्तब करने का इरादा किया जिस में ह़त्तल मक्दूर हर अ़मल की ता'रीफ़, आयते मुबारका, ह़दीसे पाक, हुक्म

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 7 माख़ूज़न। 2.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 624 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

या तरग़ीब, ह़िकायत और उस नेक अ़मल को करने का ज़ेहन बनाने और अ़मल करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों का बयान हो, चुनान्चे, येह काम शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी के सिपुर्द कर दिया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस अ़ज़ीम काम को कमो बेश तीन माह के क़लील अ़र्से में मुकम्मल कर लिया गया और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस का नाम **"नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात"** मुन्तख़ब फ़रमाया है। इस किताब पर छे इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की, बिलखुसूस इन तीन इस्लामी भाइयों **नासिर जमाल अ़त्तारी अल मदनी, अ़ली रज़ा अ़त्तारी अल मदनी और अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी अल मदनी** سَلَّمَهُمُ اللهُ الْغَنِى ने ख़ूब कोशिश की। **काम की तफ़्सील** कुछ यूं है :

(1) इस किताब में फ़क़त़ 39 मसाइले इल्मे क़ल्ब या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या मिस्ले तवाज़ोअ़ व इख़्लास व तवक्कुल वग़ैरहा और इन के तुरुक़े तह़सील (ह़ासिल करने के त़रीक़ों) को बयान किया गया है।

(2) **मुश्किल ता'रीफ़ात** से एह़तिराज़ करते हुए मश्हूर और **आ़म फ़ह्म ता'रीफ़ात** पर ही इक्तिफ़ा किया गया है अलबत्ता बा'ज़ जगह ज़रूरतन एक से ज़ाइद ता'रीफ़ात को यक्जा कर के ह़त्तल मक्दूर बा ह़वाला बयान किया गया है, ब सूरते दीगर वहां आ़म फ़ह्म ता'रीफ़ ज़िक्र कर दी गई है।

(3) बा'ज़ आयात में तफ़्सीर को भी पेशे नज़र रखा गया है, नीज़ आयात को क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ में लिखने के साथ साथ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान का भी इल्तिज़ाम किया गया है।

(4) अक्सर वोह अह़ादीस बयान की गई हैं जिन में उस अ़मल की किसी न किसी फ़ज़ीलत का बयान हो, नीज़ तमाम अह़ादीस की तख़रीज या'नी मुकम्मल ह़वाला भी ज़िक्र कर दिया गया है और बा'ज़ अह़ादीस के तह़त उन की शर्ह़ भी ज़िक्र की गई है।

(5) जिन का हुक्मे शरई बा आसानी मिल गया उसे बा हवाला ज़िक्र कर दिया गया है, बक़िय्या के हवाले से तरग़ीबी कलाम डाल दिया गया है, बा'ज़ जगह अहकाम की मुख़्तलिफ़ सूरतों को भी बयान किया गया है।

(6) हर अ़मल को करने का ज़ेहन बनाने या उसे बजा लाने या उसे हासिल करने के बा'ज़ मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों को भी बयान किया गया है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ता, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, अहले बैते इज़ाम, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत जो भी ख़ामियां हों उन में हमारी कोताह फ़ह्मी को दख़्ल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी इस सई को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए, इस में सरज़द होने वाली ग़लत़ियों को मुआ़फ़ फ़रमाए, इसे अ़वामो ख़वास के हक़ में नाफ़ेअ़ बनाए, हम सब को इख़्लास के साथ दीन का काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की गुलामी और **दा'वते इस्लामी** में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए, हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से मदीनए मुनव्वरा में शहादत की मौत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नजात दिलाने वाले आ'माल की ता'रीफ़ात

(1) **निय्यत की ता'रीफ़ :**

"निय्यत लुग़वी तौर पर दिल के पुख़्ता (पक्के) इरादे को कहते हैं और शरअ़न इबादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है।"[1]

(2) **इख़्लास की ता'रीफ़ :**

"किसी भी नेक अ़मल में मह्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल करने का इरादा करना इख़्लास कहलाता है।"[2]

(3) **शुक्र की ता'रीफ़ :**

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : "शुक्र की ता'रीफ़ येह है कि किसी के एह्सान व ने'मत की वज्ह से ज़बान, दिल या आ'ज़ा के साथ उस की ता'ज़ीम करना।"[3]

(4) **सब्र की ता'रीफ़ :**

"**सब्र**" के लुग़वी मा'ना रुकने, ठहरने या बाज़ रहने के हैं और नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना (या'नी डट जाना) जिस पर रुकने (डटे रहने का) का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो **सब्र** कहलाता है। बुन्यादी तौर पर सब्र की दो क़िस्में हैं : (1) **बदनी सब्र** जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और इन पर साबित क़दम रहना। (2) **तबई ख़्वाहिशात और ख़्वाहिश के तक़ाज़ों से सब्र करना।** पहली क़िस्म का सब्र जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है लेकिन मुकम्मल तौर पर ता'रीफ़ के क़ाबिल सब्र की दूसरी क़िस्म है।[4]

(5) **हुस्ने अख़्लाक़ की एक पहलू के ए'तिबार से ता'रीफ़ :**

"हुस्न" अच्छाई और ख़ूब सूरती को कहते हैं, "अख़्लाक़" जम्अ़ है "ख़ुल्क़" की जिस का मा'ना है "रवय्या, बरताव, आ़दत" या'नी लोगों के साथ अच्छे रवय्ये या अच्छे बरताव या अच्छी आ़दात को हुस्ने अख़्लाक़ कहा जाता है।

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الوَالِی फ़रमाते हैं : "अगर नफ़्स में मौजूद कैफ़िय्यत ऐसी हो कि इस के बाइस अ़क़्ली और शरई तौर पर पसन्दीदा अच्छे अफ़्आ़ल अदा हों तो उसे हुस्ने अख़्लाक़ कहते हैं और अगर अ़क़्ली और शरई तौर पर ना पसन्दीदा बुरे अफ़्आ़ल अदा हों तो उसे बद अख़्लाक़ी से ता'बीर किया जाता है।"[5]

1.....नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 224 मुल्तक़तन।

2.....احیاء العلوم، الباب الثانی فی الاخلاص ۔۔۔ الخ، بیان حقیقۃ الاخلاص، ۵/۱۰۷۔

3.....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिहा : तह्तुल आयत : 1, 1 /43

4.....सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह्तुल आयत : 153, 1 / 246

5.....इह्याउल उ़लूम, 3 / 165

www.dawateislami.net

(6) मुह़ासबए नफ़्स की ता'रीफ़ :

मुह़ासबे का लुग़वी मा'ना ह़िसाब लेना, ह़िसाब करना है और मुख़्तलिफ़ आ'माल करने से पहले या करने के बा'द इन में नेकी व बदी और कमी बेशी के बारे में अपनी ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र करना और फिर बेहतरी के लिये तदाबीर इख़्तियार करना **मुह़ासबए नफ़्स** कहलाता है। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : "आ'माल की कसरत और मिक़्दार में ज़ियादती और नुक़्सान की मा'रिफ़त के लिये जो ग़ौर किया जाता है उसे **मुह़ासबा** कहते हैं, लिहाज़ा अगर बन्दा अपने दिन भर के आ'माल को सामने रखे ताकि उसे कमी बेशी का इल्म हो (कि आज मैं ने नेक आ'माल ज़ियादा किये या कम किये) तो येह भी **मुह़ासबा** है।"(1)

(7) मुराक़बे की ता'रीफ़ :

मुराक़बे के लुग़वी मा'ना निगरानी करना, नज़र रखना, देख भाल करना के हैं, इस का ह़क़ीक़ी मा'ना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का लिह़ाज़ करना और उस की त़रफ़ पूरी त़रह़ मुतवज्जेह होना है। और जब बन्दे को इस बात का इल्म (मा'रिफ़त) हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिल की बातों पर मुत्तलअ़ है, पोशीदा बातों को जानता है, बन्दों के आ'माल को देख रहा है और हर जान के अ़मल से वाक़िफ़ है, उस पर दिल का राज़ इस त़रह़ इयां है जैसे मख़्लूक़ के लिये जिस्म का ज़ाहिरी हिस्सा इयां होता है बल्कि इस से भी ज़ियादा इयां है, जब इस त़रह़ की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए और शक यक़ीन में बदल जाए तो इस से पैदा होने वाली कैफ़िय्यत को **मुराक़बा** कहते हैं।(2)

(8) मुजाहदे की ता'रीफ़ :

मुजाहदे जह्द से निकला है जिस का मा'ना है कोशिश करना, मुजाहदे का लुग़वी मा'ना दुश्मन से लड़ना, पूरी त़ाक़त लगा देना, पूरी कोशिश करना और जिहाद करना है। जब कि नफ़्स को उन ग़लत़ कामों से छुड़ाना जिन का वोह आ़दी हो चुका है और आ़म त़ौर पर इसे ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ कामों की तरग़ीब देना या जब मुह़ासबए नफ़्स से येह मा'लूम हो जाए इस ने गुनाह का इर्तिकाब किया है तो इसे उस गुनाह पर कोई सज़ा देना **मुजाहदा** कहलाता है।(3)

(9) क़नाअ़त की ता'रीफ़ :

❁ क़नाअ़त का लुग़वी मा'ना क़िस्मत पर राज़ी रहना है और सूफ़िया की इस्तिलाह़ में रोज़ मर्रा इस्ति'माल होने वाली चीज़ों के न होने पर भी राज़ी रहना क़नाअ़त है।(4) ❁ ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

1.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 319

2.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 328

3.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 359

4.....التعریفات للجرجانی، ص۱۲۶۔

www.dawateislami.net

"क़नाअ़त येह है कि इन्सान की क़िस्मत में जो रिज़्क़ लिखा है इस पर उस का नफ़्स राज़ी रहे।"(1) ۞ अगर तंगदस्ती होने और ह़ाजत से कम होने के बा वुजूद सब्र किया जाए तो इसे भी क़नाअ़त कहते हैं।(2)

(10) आ़जिज़ी व इन्किसारी की ता'रीफ़ :

लोगों की त़बीअ़तों और उन के मक़ामो मर्तबे के ए'तिबार से उन के लिये नर्मी का पहलू इख़्तियार करना और अपने आप को ह़क़ीर व कमतर और छोटा ख़याल करना आ़जिज़ी व इन्किसारी कहलाता है।(3)

(11) तज़्किरए मौत की ता'रीफ़ :

ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने, सच्ची तौबा करने, रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करने, दुन्या से जान छूटने, क़ुर्बे इलाही के मरातिब पाने, अपने मह़बूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत ह़ासिल करने के लिये मौत को याद करना **तज़्किरए मौत** कहलाता है।

(12) ह़ुस्ने ज़न की ता'रीफ़ :

किसी मुसलमान के बारे में अच्छा गुमान रखना "ह़ुस्ने ज़न" कहलाता है।

(13) तौबा की ता'रीफ़ :

जब बन्दे को इस बात की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए कि गुनाह का नुक़्सान बहुत बड़ा है, गुनाह बन्दे और उस के मह़बूब के दरमियान रुकावट है तो वोह इस गुनाह के इर्तिकाब पर नदामत इख़्तियार करता है और इस बात का क़स्द व इरादा करता है कि मैं गुनाह को छोड़ दूंगा, आयिन्दा न करूंगा और जो पहले किये इन की वज्ह से मेरे आ'माल में जो कमी वाक़ेअ़ हुई उसे पूरा करने की कोशिश करूंगा तो बन्दे की इस मजमूई कैफ़िय्यत को **तौबा** कहते हैं। इल्म, नदामत और इरादे इन तीनों के मजमूए़ का नाम **तौबा** है लेकिन बसा अवक़ात इन तीनों में से हर एक पर भी तौबा का इत़लाक़ कर दिया जाता है।(4)

(14) सालिह़ीन से मह़ब्बत की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उस के नेक बन्दों से मह़ब्बत रखना, उन की सोह़बत इख़्तियार करना, उन का ज़िक्र करना और उन का अदब करना "**सालिह़ीन से मह़ब्बत**" कहलाता है क्यूंकि मह़ब्बत का तक़ाज़ा येही है जिस से मह़ब्बत की जाए उस की दोस्ती व सोह़बत को मह़बूब रखा जाए, उस का ज़िक्र किया जाए, उस का अदबो एह़तिराम किया जाए।

1 ……الرسالة القشيرية، باب القناعة، ص۱۹۷۔

2 …..इह़याउल उ़लूम, 4 / 200

3 ……فيض القدير، حرف الهمزة، ۱/ ۵۹۹، تحت الحديث: ۹۲۵ ماخوذا۔

4 …..इह़याउल उ़लूम, 4 / 11 मुलख़्ख़सन।

(15) अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन बातों को करने का हुक्म दिया है उन पर अ़मल करना और जिन से मन्अ़ फ़रमाया उन को न करना "**अल्लाह** व रसूल की इत़ाअ़त" कहलाता है।

(16) दिल की नर्मी की ता'रीफ़ :

दिल का ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस त़रह़ नर्म होना कि बन्दा अपने आप को गुनाहों से बचाए और नेकियों में मश्ग़ूल कर ले, नसीह़त उस के दिल पर असर करे, गुनाहों से बे रग़बती हो, गुनाह करने पर पशेमानी हो, बन्दा तौबा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, शरीअ़त ने इस पर जो जो हुक़ूक़ लाज़िम किये हैं इन की अच्छे त़रीक़े से अदाएगी पर आमादा हो, अपने आप, घरबार, रिश्तेदारों व ख़ल्क़े ख़ुदा पर शफ़्क़त व रह़्म व नर्मी करे, कुल्ली त़ौर पर इस कैफ़िय्यत को "**दिल की नर्मी**" से ता'बीर किया जाता है।

(17) ख़ल्वत व गोशा नशीनी की ता'रीफ़ :

۞ ख़ल्वत के लुग़वी मा'ना "तन्हाई" के हैं और बन्दे का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने, तक़्वा व परहेज़गारी के दरजात में तरक़्क़ी करने और गुनाहों से बचने के लिये अपने घर या किसी मख़्सूस मक़ाम पर लोगों की नज़रों से पोशीदा हो कर इस त़रह़ मो'तदिल अन्दाज़ में नफ़्ली इबादत करना "**ख़ल्वत व गोशा नशीनी**" कहलाता है कि **हुक़ूक़ुल्लाह** (या'नी फ़राइज़ो वाजिबात व सुनने मुअक्कदा) और शरीअ़त की त़रफ़ से इस पर लाज़िम किये गए तमाम हुक़ूक़ की अदाएगी, वालिदैन, घरवालों, आल औलाद व दीगर हुक़ूक़ुल इबाद (बन्दों के हुक़ूक़) की अदाएगी में कोई कोताही न हो। ۞ सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़दीक लोगों में ज़ाहिरी त़ौर पर रहते हुए बात़िनी त़ौर पर इन से जुदा रहना या'नी ख़ुद को रब तआ़ला की त़रफ़ मुतवज्जेह रखना ख़ल्वत व गोशा नशीनी है।

(18) तवक्कुल की ता'रीफ़ :

۞ **तवक्कुल** की इजमाली ता'रीफ़ यूं है कि अस्बाब व तदाबीर को इख़्तियार करते हुए फ़क़त़ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद व भरोसा किया जाए और तमाम कामों को उस के सिपुर्द कर दिया जाए।

(19) ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़ :

बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी के वक़्त दिल का लग जाना या बारगाहे इलाही में दिलों को झुका देना "ख़ुशूअ़" कहलाता है।(1)

(20) ज़िक्रुल्लाह की ता'रीफ़ :

۞ ज़िक्र के मा'ना याद करना, याद रखना, चर्चा करना, ख़ैर ख़्वाही इ़ज़्ज़तो शरफ़ के हैं। क़ुरआने करीम में ज़िक्र इन तमाम मा'नों में आया हुवा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना, उसे याद रखना, उस का चर्चा करना और उस का नाम लेना **ज़िक्रुल्लाह** कहलाता है।(2)

---

(1)......الحديقة الندية، الخلق الثالث والاربعون، ۲/ ۱۷ ا ماخوذاً۔

(2).....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 304 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

(21) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा और अज्रो सवाब के लिये अपने घरवालों, रिश्तेदारों, शरई फ़क़ीरों, मिस्कीनों, यतीमों, मुसाफ़िरों, ग़रीबों व दीगर मुसलमानों पर और हर जाइज़ व नेक काम या नेक जगहों में हलाल व जाइज़ माल ख़र्च करना "**राहे ख़ुदा में ख़र्च करना**" कहलाता है।

(22) अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने की ता'रीफ़ :

ख़ुशी, ग़मी, राह़त, तक्लीफ़, ने'मत मिलने, न मिलने, अल ग़रज़ हर अच्छी बुरी ह़ालत या तक़्दीर पर इस त़रह़ राज़ी रहना, ख़ुश होना या सब्र करना कि उस में किसी क़िस्म का कोई शिक्वा या वावेला वग़ैरा न हो "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना**" कहलाता है।

(23) ख़ौफ़े ख़ुदा की ता'रीफ़ :

ख़ौफ़ से मुराद वोह क़ल्बी कैफ़िय्यत है जो किसी ना पसन्दीदा अम्र के पेश आने की तवक़्क़ोअ़ के सबब पैदा हो, मसलन फल काटते हुए छुरी से हाथ के ज़ख़्मी हो जाने का डर। जब कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए।[1]

(24) ज़ोह्द की ता'रीफ़ :

दुन्या को तर्क कर के आख़िरत की त़रफ़ माइल होने या **ग़ैरुल्लाह** को छोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने का नाम **ज़ोह्द** है।[2] और ऐसा करने वाले को **ज़ाहिद** कहते हैं। **ज़ोह्द** की मुकम्मल और जामेअ़ ता'रीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का क़ौल है, आप फ़रमाते हैं : "**ज़ोह्द** येह है कि बन्दा हर उस चीज़ को तर्क कर दे जो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर करे।"[3]

(25) उम्मीदों की कमी की ता'रीफ़ :

नफ़्स की पसन्दीदा चीज़ों या'नी लम्बी उ़म्र, सिह़्ह़त और माल में इज़ाफ़े वग़ैरा की उम्मीद न होना "**उम्मीदों की कमी**" कहलाता है।[4] अगर लम्बी उ़म्र की ख़्वाहिश मुस्तक़्बिल में नेकियों में इज़ाफ़े की निय्यत के साथ हो तो अब भी "**उम्मीदों की कमी**" ही कहलाएगी।[5]

(26) सिद्क़ की ता'रीफ़ :

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی सिद्क़ या'नी सच की

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، باب بیان حقیقۃ الخوف، ۴/۱۹۰ ماخوذاً، ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14

2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 647 3 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 684

4 ......فیض القدیر، ۲/۷۰۹، تحت الحدیث: ۲۵۵۰ ماخوذاً۔ 5 ......الحدیقۃ الندیۃ، ۲/۳۸۳ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "सिद्क़ का लुग़वी मा'ना वाक़ेअ़ के मुताबिक़ ख़बर देना है।"(1)

(27) हमदर्दिये मुस्लिम की ता'रीफ़ :

किसी मुसलमान की ग़मख़्वारी करना और उस के दुख दर्द में शरीक होना "हमदर्दिये मुस्लिम" कहलाता है। हमदर्दिये मुस्लिम की कई सूरतें हैं, बा'ज़ येह हैं : (1) बीमार की इयादत करना (2) इन्तिक़ाल पर लवाहिक़ीन से ता'ज़ियत करना (3) कारोबार में नुक़्सान पर या मुसीबत पहुंचने पर इज़्हारे हमदर्दी करना (4) किसी ग़रीब मुसलमान की मदद करना (5) बक़दरे इस्तिताअ़त मुसलमानों से मुसीबतें दूर करना और उन की मदद करना (6) इल्मे दीन फैलाना (7) नेक आ'माल की तरग़ीब देना (8) अपने लिये जो अच्छी चीज़ पसन्द हो वोही अपने मुसलमान भाई के लिये भी पसन्द करना। (9) ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकना और मज़्लूम की मदद करना (10) मक़रूज़ को मोहलत देना या किसी मक़रूज़ की मदद करना (11) दुख दर्द में किसी मुसलमान को तसल्ली और दिलासा देना। वग़ैरा

(28) रजा की ता'रीफ़ :

आयिन्दा के लिये भलाई और बेहतरी की उम्मीद रखना "रजा" है। मसलन अगर कोई शख़्स अच्छा बीज हासिल कर के नर्म ज़मीन में बो दे और उस ज़मीन को घास फूस वग़ैरा से साफ़ कर दे और वक़्त पर पानी और खाद देता रहे फिर इस बात का उम्मीदवार हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस खेती को आस्मानी आफ़ात से मह़फ़ूज़ रखेगा तो मैं ख़ूब ग़ल्ला हासिल करूंगा तो ऐसी आस और उम्मीद को "रजा" कहते हैं।(2)

(29) मह़ब्बते इलाही की ता'रीफ़ :

त़बीअ़त का किसी लज़ीज़ शै की त़रफ़ माइल हो जाना मह़ब्बत कहलाता है।(3) और मह़ब्बते इलाही से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब और उस की ता'ज़ीम है।(4)

(30) रिज़ाए इलाही की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहना रिज़ाए इलाही है।

(31) शौक़े इबादत की ता'रीफ़ :

इबादत में सुस्ती को तर्क कर के शौक़ और चुस्ती के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करना शौक़े इबादत है।

1......التعریفات للجرجانی، باب الصاد، ص ۹۵۔

2......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان حقیقۃ الرجا، ۴/۱۷۴، ۱۷۵ملخصاً۔
کیمائے سعادت، اصل سیم درخوف ورجاء، حقیقت رجا، ۲/۸۱۰ملخصاً۔

3.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 16

4......الرسالۃ القشیریۃ، باب المحبۃ، ص ۳۴۸۔

www.dawateislami.net

(32) ग़ना की ता'रीफ़ :

जो कुछ लोगों के पास है उस से नाउम्मीद होना ग़ना है।[1]

(33) क़बूले ह़क़ की ता'रीफ़ :

बात़िल पर न अड़ना और ह़क़ बात मान लेना क़बूले ह़क़ है।

(34) माल से बे रग़बती की ता'रीफ़ :

माल से मह़ब्बत न रखना और उस की त़रफ़ रग़बत न करना माल से बे रग़बती कहलाता है।

(35) ग़िब्त़ा (रश्क) की ता'रीफ़

किसी शख़्स में कोई ख़ूबी या उस के पास कोई ने'मत देख कर येह तमन्ना करना कि मुझे भी येह ख़ूबी या ने'मत मिल जाए और उस शख़्स से उस ख़ूबी या ने'मत के ज़वाल की ख़्वाहिश न हो तो येह ग़िब्त़ा या'नी रश्क है।[2]

(36) मह़ब्बते मुस्लिम की ता'रीफ़ :

"किसी बन्दे से सिर्फ़ इस लिये मह़ब्बत करे कि रब तआ़ला उस से राज़ी हो जावे, इस में दुन्यावी ग़रज़ रिया न हो इस मह़ब्बत में मां बाप, औलाद अह्ले क़राबत मुसलमानों से मह़ब्बत सब ही दाख़िल हैं जब कि रिज़ाए इलाही के लिये हों।"[3]

(37) अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पोशीदा अफ़्आ़ल से वाक़ेअ़ होने वाले बा'ज़ अफ़्आ़ल को उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** कहते हैं और इस से डरना अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना कहलाता है।[4]

(38) एह़तिरामे मुस्लिम की ता'रीफ़ :

मुसलमान की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत का पास रखना और उसे हर त़रह़ के नुक़्सान से बचाने की कोशिश करना एह़तिरामे मुस्लिम कहलाता है।

(39) मुख़ालफ़ते शैत़ान की ता'रीफ़ :

अल्लाह तआ़ला की इ़बादत कर के शैत़ान से दुश्मनी करना, अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में शैत़ान की पैरवी न करना और सिद्क़े दिल से हमेशा अपने अ़क़ाइदो आ'माल की शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करना मुख़ालफ़ते शैत़ान है।[5]

صَلُّوْاعَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......معجم کبیر، ۱۰/۱۳۹، حدیث: ۱۰۲۳۹۔

2 ...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा शांज़दहुम, 3 / 542 मुलख़्ख़सन। 3 ...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 584

4 ...इह़याउल उ़लूम, 4 / 504, 505 माख़ूज़न। 5 ...मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 110 माख़ूज़न।

﴾1﴿...निय्यत

निय्यत की ता'रीफ़ :

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ **"नेकी की दा'वत"** सफ़्ह़ा 92 पर निय्यत की ता'रीफ़ करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : "निय्यत लुग़वी त़ौर पर दिल के पुख़्ता (पक्के) इरादे को कहते हैं और शरअ़न इबादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है।"(1)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआन में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।" इस आयत के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि अ़मल की मक़्बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : **एक** तो त़ालिबे आख़िरत होना या'नी निय्यत नेक, **दूसरे** सई या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के हुक़ूक़ के साथ अदा करना, **तीसरी** ईमान जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है।"(2)

अह़ादीसे मुबारका

(1) "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के

---

1 .....नुज़हतुल क़ारी, 1 / 224 मुल्तक़त़न।

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 15, अल असरा, तह़तुल आयत : 19

www.dawateislami.net

लिये वोही है जिस की वोह निय्यत करे।''(1) (2) ''मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''(2) (3) ''अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।''(3)

निय्यत के मुतफ़र्रिक़ अह़काम

निय्यत के बहुत से अह़काम हैं : (1) इ़बादाते मक़्सूदा या'नी वोह इ़बादात जो ख़ुद बिज़्ज़ात मक़्सूद हों किसी दूसरी इ़बादत के लिये वसीला न हों।(4) इन में निय्यत होना ज़रूरी है कि बिग़ैर निय्यत के वोह इ़बादत ही न पाई जाएगी जैसा कि नमाज़ कि अगर कोई शख़्स नमाज़ जैसे अफ़्आ़ल करे मगर मुत़लक़ नमाज़ की निय्यत न हो तो उसे नमाज़ ही न कहा जाएगा। फिर फ़र्ज़ नमाज़ में फ़र्ज़ की निय्यत भी ज़रूरी है। मसलन दिल में येह निय्यत हो कि आज की ज़ोहर की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता हूं। असह़ह़ (या'नी दुरुस्त तरीन) येह है कि नफ़्ल, सुन्नत और तरावीह़ में मुत़लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है मगर एह़तियात़ येह है कि तरावीह़ में तरावीह़ या सुन्नते वक़्त की निय्यत करे और बाक़ी सुन्नतों में सुन्नत या सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुताबअ़त (या'नी पैरवी) की निय्यत करे, इस लिये कि बा'ज़ मशाइख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم इन में मुत़लक़ नमाज़ की निय्यत को नाकाफ़ी क़रार देते हैं।(5)

(2) इ़बादाते ग़ैर मक़्सूदा या'नी वोह इ़बादात जो ख़ुद बिज़्ज़ात मक़्सूद न हों बल्कि किसी दूसरी इ़बादत के लिये वसीला हों। इन में निय्यत करना ज़रूरी नहीं कि बिग़ैर निय्यत के भी वोह इ़बादत पाई जाएगी अलबत्ता

1 ......بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی۔۔۔الخ، ۱/۲، حدیث: ۱۔

2 ......معجم کبیر، یحیی بن قیس، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲۔

3 ......مسند الفردوس، باب المیم، ۴/۳۰۵، حدیث: ۶۸۹۵۔

4 .....बहारे शरीअ़त, 1 / 1015, हिस्सा पन्जुम। 5 .....नमाज़ के अह़काम, स. 199

www.dawateislami.net

इस का सवाब नहीं मिलेगा। मसलन वुज़ू कि इस में निय्यत करना सुन्नत है, अगर कोई शख़्स बिग़ैर निय्यत के आ'ज़ाए वुज़ू को धो ले या धुल गए तो उस का वुज़ू तो हो जाएगा लेकिन निय्यत न होने की वज्ह से उसे सवाब नहीं मिलेगा।[1]

(3) मुबाह़ काम अच्छी निय्यत से मुस्तह़ब हो जाता है। या'नी हर वोह जाइज़ अ़मल या फ़े'ल जिस का करना और न करना यक्सां हो कि ऐसा काम करने से न सवाब मिले न गुनाह। मसलन खाना पीना, सोना, टहलना, दौलत इकठ्ठी करना, तोह़फ़ा देना, उ़म्दा या ज़ाइद लिबास पहनना वग़ैरा। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हर मुबाह़ निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से मुस्तह़ब हो जाता है।"[2] फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मुबाह़ात (या'नी ऐसे जाइज़ काम जिन पर न सवाब हो न गुनाह इन) का हुक्म अलग अलग निय्यतों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हो जाता है, इस लिये जब मुबाह़ से इ़बादात पर क़ुव्वत ह़ासिल करना या इ़बादात तक पहुंचना मक़्सूद हो तो येह मुबाह़ात या'नी जाइज़ चीज़ें भी इ़बादात होंगी। मसलन खाना पीना, सोना, ह़ुसूले माल और वत़ी करना।"[3]

(4) मुनासिब येही है कि बन्दा हर चीज़ में कुछ न कुछ निय्यत करे ह़त्ता कि खाने, पीने, पहनने, सोने और निकाह़ में भी निय्यत करे क्यूंकि इन तमाम का तअ़ल्लुक़ उन आ'माल से है कि जिन के बारे में बरोज़े क़ियामत

1.....बहारे शरीअ़त, 1 / 992, ह़िस्सए दुवुम, माख़ूज़न।
2.....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 452
3.....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 189

www.dawateislami.net

पूछा जाएगा। अगर निय्यत रिज़ाए इलाही की हो तो येह ही अ़मल नेकियों के मीज़ान में वज़्नी होगा।(1)

1 हिकायत अच्छी निय्यत की वज्ह से बख़्शिश हो गई

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद की ज़ौजा ज़ुबैदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْھَا को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكِ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" पूछा : "क्या मग़फ़िरत का सबब वोह रास्ता बना जिसे आप ने बहुत ज़ियादा माल ख़र्च कर के मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ बनवाया था ?" कहा : "नहीं, उस रास्ते का सवाब तो काम करने वालों को मिला, मुझे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अच्छी निय्यत की वज्ह से बख़्श दिया।"(2)

"आ़मिले निय्यत" बनने के आठ (8) त़रीक़े

(1) **अच्छी निय्यतें करने की निय्यत कर लीजिये :** जिस काम की आ़दत न हो तो उस को मा'मूलाते ज़िन्दगी में शामिल करना अव्वलन दुश्वार ज़रूर होता है लेकिन ना मुमकिन नहीं, येही मुआ़मला जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने का भी है, लेकिन बन्दा अगर किसी जाइज़ काम को पायए तक्मील तक पहुंचाने का पुख़्ता अ़ज़्म कर ले तो फिर उस के इरादों को कमज़ोर करना बहुत मुश्किल है, लिहाज़ा अपने जाइज़ आ'माल को अच्छी अच्छी निय्यतों के ज़रीए इ़बादात बनाने और इस पर रह़मते इलाही से अज्रो सवाब पाने की यूं निय्यत कर लीजिये कि "आयिन्दा हर जाइज़ काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ"

(2) **निय्यत की अहम्मिय्यत हमेशा अपने पेशे नज़र रखिये :** कि किसी भी चीज़ की अहम्मिय्यत और फ़वाइद अगर पेशे नज़र हों तो उस पर अ़मल करना आसान हो जाता है, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام अच्छी निय्यत

1 ......قوت القلوب، الفصل الثامن فی الاخلاص ــ الخ، ۲/۲۶۷۔

2 ......الرسالة القشیریة، باب رؤیا القوم، ص ۴۲۲۔

की तरग़ीब दिलाया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन कसीर عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْعَزِيز फ़रमाते हैं : "इल्मे निय्यत ह़ासिल करो क्यूंकि निय्यत की अहम्मिय्यत अ़मल से कई गुना ज़ियादा है।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अच्छी निय्यत के बिग़ैर गुफ़्त्गू भी न करो।"(2) ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने तमाम भलाइयों पर ग़ौर किया, सिर्फ़ अच्छी निय्यत को इन का जामेअ़ पाया।"(3)

(3) **दिन की इब्तिदा अच्छी अच्छी निय्यतों से कीजिये :** शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "हर सुब्ह़ येह निय्यत कर लीजिये : आज का दिन आंख, कान, ज़बान और हर उ़ज़्व को गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात से बचाते हुए, नेकियों में गुज़ारूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ"

(4) **आ़मिलीने निय्यत की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** कि सोह़बत असर रखती है, अच्छों की सोह़बत अच्छा और बुरों की सोह़बत बुरा बना देती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखा गया है कि आप हर जाइज़ और नेक काम से क़ब्ल अच्छी अच्छी निय्यतें करने के न सिर्फ़ खुद आ़मिल हैं बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं, लिहाज़ा आ़मिले निय्यत बनने में आप की सोह़बत इख़्तियार करना बहुत मुआ़विन है।

(5) **निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ा कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस सिलसिले में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की मायानाज़ तस्नीफ़ "**इह़याउल उ़लूम**", अ़ल्लामा इब्ने ह़ाज मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "**अल मदख़ल**" और अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल,

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، یحیی بن کثیر، ۳/۸۲، رقم:۳۲۵۷۔

2 ......قوت القلوب، الفصل السابع والثلاثون فی شرح الکبائر۔۔۔الخ، ۲/۲۵۱۔

3 ......جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص ۲۳۔

www.dawateislami.net

ख़ुसूसन रिसाला "**सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है कि इस में निय्यत की दीगर मा'लूमात के साथ साथ कमो बेश 72 जाइज़ कामों की अच्छी अच्छी निय्यतों का तफ़्सीली बयान मौजूद है, इस के इ़लावा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी मुज़ाकरों को सुनना भी बहुत मुफ़ीद है।

(6) **निय्यतें लिखने की आ़दत बना लीजिये :** कई जाइज़ काम ऐसे भी हैं जिन्हें रोज़ाना किया जाता है, बा'ज़ काम ऐसे भी हैं जिन्हें कभी कभी सर अन्जाम दिया जाता है, अगर दोनों त़रह़ के कामों की कुछ न कुछ निय्यतें लिखने की आ़दत बना ली जाए तो येह अम्र भी आ़मिले निय्यत बनने में बेहतरीन मुआ़विन हो सकता है, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को भी देखा गया है कि कई जाइज़ कामों की अच्छी अच्छी निय्यतें करने के बा'द आप ने इन्हें लिख कर मह़फ़ूज़ फ़रमा लिया है और दोबारा इन्हें पढ़ कर निय्यतें फ़रमाते रहते हैं।

(7) **हर जाइज़ और नेक काम से पहले निय्यतों पर ग़ौर कर लीजिये :** कि उस काम में कोई अच्छी निय्यत हो सकती है या नहीं, अगर हो सकती है तो पहले निय्यत कर लीजिये और फिर उस काम को कीजिये, येह अ़मल भी आ़मिले निय्यत बनने में बहुत मुआ़विन है बल्कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن भी ऐसा किया करते थे। चुनान्चे, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बालों में कंघी करना चाहते थे, अपनी अहलिया को आवाज़ दी और फ़रमाया : "कंघी ले आओ।" उन्हों ने पूछा : "आ़ली जाह ! शीशा भी लाऊं ?" इस पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कुछ देर ख़ामोश रहे, फिर फ़रमाया : "हां ले आओ।" इस ताख़ीर के बारे में पूछा गया तो जवाब दिया कि "कंघी के लिये तो मेरी निय्यत मौजूद थी लेकिन शीशे के बारे में उस वक़्त कोई अच्छी निय्यत मौजूद नहीं थी, चुनान्चे, मैं शीशा मंगवाने से बाज़ रहा फिर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शीशे के लिये मेरी अच्छी निय्यत को ह़ाज़िर फ़रमा दिया तो मैं ने मंगवा लिया।"[1]

1.....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम, स. 37 मुलख़्ख़सन।

(8) **बद निय्यती की हलाकतों पर ग़ौर कीजिये :** कि जिस त़रह़ अच्छी निय्यत का फल अच्छा होता है इसी त़रह़ बुरी निय्यत का अन्जाम भी बुरा होता है, अच्छी निय्यत दुन्या व आख़िरत में ज़रीअ़ए नजात है तो बुरी निय्यत सबबे हलाकत व आफ़ात बन सकती है। मन्क़ूल है कि इब्ने मुक़्ला नामी एक ख़त़्ता़त़ अपने फ़न में महारत की वज्ह से काफ़ी मश्हूर था, बादशाहे वक़्त भी उस के फ़न को देख कर मुतअस्सिर हुवा तो उसे अपना वज़ीर मुक़र्रर कर लिया, कुछ अ़र्से के बा'द ताजो तख़्त के मुआ़मले में उस की निय्यत ख़राब होने लगी, जो उसे ताजो तख़्त के ह़ुसूल के लिये साज़िशों पर उक्साती, किसी त़रह़ उन साज़िशी मन्सूबों की भिनक बादशाह को पड़ गई फ़ौरन उसे अपने दरबार में त़लब किया और क़ैद करवा दिया। कुछ अ़र्से बा'द बादशाह ने रह़्म दिली का मुज़ाहरा करते हुए उसे क़ैद से आज़ाद कर के मन्सब पर दोबारा बह़ाल भी कर दिया लेकिन फिर उस की **बद निय्यती** ने उसे मन्सब के ह़ुसूल के लिये साज़िशों पर मजबूर कर दिया, इस बार भी बादशाह को पता चल गया और उस ने बत़ौरे सज़ा उस का हाथ और ज़बान काट दी और हज़ारों दीनार का जुरमाना आइद कर के दोबारा जेल में क़ैद करवा दिया। आख़िर कार एक तारीक जेल में येह माहिर ख़त़्ता़त़ **फ़साद़े निय्यत** की आफ़त में गिरिफ़्तार हो कर **इब्रतनाक मौत** का शिकार हो गया।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾...इख़्लास

इख़्लास की ता'रीफ़

"किसी भी नेक अ़मल में मह़्ज़ रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने का इरादा करना इख़्लास कहलाता है।"[2]

---

1 ......الکامل فی التاریخ، سنۃ ۳۲۶، ۷/۱۳۷، ۱۳۸۔

2 ......احیاء العلوم، الباب الثانی فی الاخلاص---الخ، بیان حقیقۃ الاخلاص، ۵/۱۰۷۔

www.dawateislami.net

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِیَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَ یُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوا الزَّكٰوةَ﴾(پ۳۰، البینۃ:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उन लोगों को तो येही हुक्म हुवा कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अक़ीदा लाते एक त़रफ़ के हो कर और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें।"

इस आयते मुबारका में इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी करने और तमाम दीनों को छोड़ कर ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़ (पैरवकार) हो कर नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात देने का हुक्म दिया गया है।(1)

﴿हदीसे मुबारका﴾ इख़्लास के साथ थोड़ा अ़मल भी काफ़ी

हुज़ूर नबिये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "इख़्लास के साथ अ़मल करो कि इख़्लास के साथ थोड़ा अ़मल भी तुम्हें काफ़ी है।"(2)

इख़्लास का हुक्म

किसी अ़मल में फ़क़त़ इख़्लास होने या इस के साथ किसी और ग़रज़ की आमेज़िश होने के ए'तिबार से आ'माल की तीन सूरतें हैं : (1) जिस अ़मल से मक़्सूद सिर्फ़ रियाकारी हो उस का क़त़्ई त़ौर पर गुनाह होगा और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और अ़ज़ाब का सबब है। (2) जो अ़मल ख़ालिसतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये होगा तो वोह रिज़ाए इलाही और अज्रो सवाब का सबब है। (3) जो अ़मल ख़ालिसतन

---

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 30, अल बय्यिनह, तह़्तुल आयत : 5 माख़ूज़न।

(2).....نوادرالاصول، الاصل السادس، ۱/۴۴، حدیث:۴۵۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये न हो बल्कि इस में रियाकारी और नफ़्सानी अग़राज़ की आमेज़िश हो तो कुव्वत के ए'तिबार से इस की तीन क़िस्में हैं : ۞ अगर रिज़ाए इलाही और दूसरी ग़रज़ दोनों कुव्वत में बराबर हों तो दोनों एक दूसरे के मुक़ाबिल हो कर साक़ित हो जाएंगी और इस अ़मल का न तो सवाब होगा न ही अ़ज़ाब और ۞ अगर रिया की कुव्वत ज़ियादा हो तो येह अ़मल कुछ नफ़्अ़ न देगा बल्कि उल्टा नुक़्सान और अ़ज़ाब को लाज़िम करेगा, अलबत्ता इस में रिज़ाए इलाही का जितना उ़न्सर होगा इतना अ़ज़ाब में कमी हो जाएगी और इस अ़मल का अ़ज़ाब उस अ़मल के अ़ज़ाब से हल्का होगा जो ख़ालिस रियाकारी के साथ हो और जिस में रिज़ाए इलाही बिल्कुल न हो और ۞ अगर रिज़ाए इलाही का उ़न्सर ग़ालिब हो तो येह जिस क़दर क़वी होगा उसी क़दर सवाब ज़ियादा होगा और जितना रिया होगा इतना सवाब कम हो जाएगा।[1]

2 हिकायत इख़्लास के साथ इबादत करने वाला ग़ुलाम

एक शख़्स ने एक ग़ुलाम ख़रीदा तो उस ग़ुलाम ने उस से अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे आक़ा ! मेरी तीन शराइत़ हैं : (1) आप मुझे फ़र्ज़ नमाज़ से मन्अ़ नहीं करेंगे जब उस का वक़्त आ जाए। (2) दिन को जो चाहें हुक्म दें, रात को कोई हुक्म नहीं देंगे। (3) अपने घर में मेरे लिये एक कमरा जुदा कर दें जिस में मेरे सिवा कोई दूसरा दाख़िल न हो।" आक़ा ने कहा : "मुझे येह शराइत़ क़बूल हैं।" फिर उस ने कहा कि "तुम अपने लिये कोई भी कमरा पसन्द कर लो।" चुनान्चे, ग़ुलाम ने एक ख़राब सा टूटा फूटा कमरा पसन्द कर लिया। इस पर आक़ा ने कहा : "ऐ ग़ुलाम ! तू ने ख़राब कमरा क्यूं पसन्द किया ?" ग़ुलाम ने जवाब दिया : "मेरे आक़ा ! क्या आप नहीं जानते कि टूटा फूटा कमरा भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद और उस के ज़िक्र

1.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 279 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

की बरकत से बाग़ बन जाता है।" चुनान्चे, वोह ग़ुलाम दिन को अपने आक़ा की ख़िदमत करता और रात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इख़्लास के साथ इबादत करता। कुछ अ़र्से के बा'द एक रात आक़ा घर में चलते चलते ग़ुलाम के कमरे तक पहुंच गया तो क्या देखता है कि कमरा रोशन है, ग़ुलाम अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सज्दा रेज़ है, उस के सर पर आस्मानो ज़मीन के दरमियान एक रोशन क़िन्दील लटकी हुई है और वोह अल्लाह रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ यूं मुनाजात कर रहा है: "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझ पर मेरे आक़ा का ह़क़ और दिन को इस की ख़िदमत लाज़िम कर दी है, अगर येह मसरूफ़िय्यत न होती तो मैं दिन रात सिर्फ़ तेरी ही इ़बादत में मसरूफ़ रहता, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा ले।" आक़ा उसे देखता रहा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई, वोह क़िन्दील वापस चली गई और मकान की छत मिल गई। येह मन्ज़र देखने के बा'द आक़ा वापस आ गया और सारा माजरा अपनी ज़ौजा को सुनाया। दूसरी रात वोह अपनी ज़ौजा को भी साथ ले कर ग़ुलाम के दरवाज़े पर आया तो देखा कि ग़ुलाम सज्दे में पड़ा है और नूरानी क़िन्दील उस के सर पर है, दोनों येह मन्ज़र देखते रहे और रोते रहे। सुब्ह़ हुई तो उन्हों ने ग़ुलाम को बुला कर कहा: "तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आज़ाद हो ताकि तुम जो उ़ज़्र पेश कर रहे थे वोह दूर हो जाए और यक्सूई के साथ अल्लाह तआ़ला की इ़बादत कर सको।" ग़ुलाम ने येह सुना तो अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और अ़र्ज़ करने लगा: "ऐ साह़िबे राज़ عَزَّوَجَلَّ ! राज़ तो खुल गया, अब राज़ खुलने के बा'द मैं ज़िन्दा नहीं रहना चाहता।" पस उसी वक़्त वोह मुख़्लिस व इ़बादत गुज़ार ग़ुलाम गिरा और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।(1)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो ...... कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(1) مکاشفة القلوب، الباب الحادی عشر، فی طاعة اللہ ومحبة رسولہ، ص ۳۹۔

www.dawateislami.net

इख़्लास पैदा करने के ग्यारह ﴾11﴿ त़रीक़े

(1) **अपनी निय्यत दुरुस्त कीजिये :** कि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है, जब तक निय्यत ख़ालिस न होगी अ़मल में इख़्लास पैदा नहीं होगा क्यूंकि निय्यत के ख़ालिस होने का नाम ही तो इख़्लास है। बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अपने आ'माल में निय्यत को ख़ालिस कर लो, तुम्हें थोड़ा अ़मल भी किफ़ायत करेगा।"(1) लिहाज़ा खुद को अच्छी अच्छी निय्यतों का आ़दी बनाइये।

(2) **दुन्यवी अग़राज़ को दूर कीजिये :** ऐसी दुन्यवी अग़राज़ जिन से मक़्सूद आख़िरत की तय्यारी व मुआ़वनत न हो अगर हर अ़मल से उन को दूर कर दिया जाए और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही पेशे नज़र हो तो आ'माल में रियाकारी या'नी दिखावे के इमकानात काफ़ी कम हो जाते हैं।

अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का उ़सरत व तंगी के अय्याम में कुरआनी सूरतें व वज़ाइफ़ वग़ैरा इस निय्यत से पढ़ना कि अल्लाह तआ़ला उन्हें क़नाअ़त अ़ता करे और उतनी मिक़्दार में रोज़ी अ़ता करे जिस से इबादते इलाही बजा ला सकें और दर्सो तदरीस वग़ैरा की कुव्वत बहाल रहे तो इस त़रह़ का इरादा नेक इरादा है दुन्या का इरादा नहीं।(2)

(3) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरते रहिये :** क्यूंकि आ'माल वोही क़बूल होंगे जो रियाकारी से बचते हुए इख़्लास के साथ किये होंगे और आ'माल को रियाकारी जैसी मूज़ी बीमारी से बचाने का एक बहुत मुफ़ीद ह़ल येह है कि बन्दा खुद को हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डराता रहे कि जिस क़दर ख़ौफ़े खुदा नसीब होगा उतना ही अ़मल में रियाकारी से बचेगा और इख़्लास की दौलत नसीब होगी।

---

1 ......اتحاف السادۃ المتقین، کتاب النیۃ والاخلاص، الباب الاول فی النیۃ، ۱۳/۲۰۔

2 .....मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 445 माख़ूज़न।

(4) **नफ़्सानी ख़्वाहिशात को ख़त्म कीजिये :** कि इख़्लास में बहुत बड़ी रुकावट नफ़्सानी ख़्वाहिशात हैं क्यूंकि हर अ़मल पर चन्द ता'रीफ़ी कलिमात सुन कर नफ़्स बेहद सुकून महसूस करता है और येही सुकून नफ़्स को रियाकारी पर उभारता है जो इख़्लास की दुश्मन है और यूं उख़रवी फ़ाएदे के लिये किया जाने वाला अ़मल नुक़्सान का सबब बन जाता है। लिहाज़ा नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाइये और आ'माल में इख़्लास ह़ासिल कीजिये।

(5) **ख़ल्वत व जल्वत में यक्सां अ़मल कीजिये :** नफ़्स लोगों के सामने तो मशक़्क़त से भरपूर इ़बादत करने पर रिज़ामन्द हो जाता है क्यूंकि इस त़रह़ इसे शोहरत, ता'रीफ़ और वाह वाह जैसे मीठे ज़ह्‌र मिलते हैं, लेकिन तन्हाई में रिज़ाए इलाही के लिये ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ दो रक्अ़त पढ़ना उस के नफ़्स पर निहायत गिरां है। ख़ल्वत व जल्वत का येह तज़ाद बन्दे के अ़मल से इख़्लास को ख़त्म कर देता है। लिहाज़ा अपने आ'माल में इख़्लास पैदा करने के लिये ख़ल्वत व जल्वत दोनों में रिज़ाए इलाही की निय्यत से ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ नेक आ'माल बजा लाइये।

(6) **अपने गुनाहों को याद रखिये :** उ़मूमन लोग अपनी नेकियों को याद रखते और गुनाहों को भूल जाते हैं जिस से वोह रियाकारी और ख़ुद पसन्दी जैसी मूज़ी बीमारी में मुब्तला हो जाते हैं जो इख़्लास की सख़्त दुश्मन हैं, लिहाज़ा अपने गुनाहों को याद रखिये, नफ़्स को उन पर मलामत करते रहिये कि तू फ़ुलां फ़ुलां गुनाहों का मजमूआ़ है फिर किसी नेक अ़मल पर इतराने का क्या मा'ना ? यूं काफ़ी ह़द तक इसे तकब्बुर व रियाकारी से दूर रखने में मुआ़वनत मिलेगी और आ'माल में इख़्लास पैदा करने की राह हमवार होगी।

(7) **अपनी नेकियों को छुपाइये :** कि नेकियों का चर्चा ही नफ़्स को रियाकारी, हुब्बे मद्ह़ और त़लबे शोहरत जैसी बात़िनी बीमारियों में मुब्तला कर देता है जो इख़्लास को दीमक की त़रह़ चाट लेती हैं, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين भी अपनी नेकियों को छुपाया करते थे, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "रात में आप की नमाज़ की कैफ़िय्यत क्या होती है ?" आप इस बात से सख़्त नाराज़ हुए और इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! रात का एक हिस्सा छुप कर नमाज़ पढ़ना मुझे बहुत मह़बूब है इस बात से कि मैं सारी रात नमाज़ अदा करूं, फिर लोगों में उसे बयान करता फिरूं ।"(1) इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मरूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं चार माह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बत में रहा, आप न तो रात का क़ियाम छोड़ते, न ही दिन की क़िराअत छोड़ते, इस के बा वुजूद उसे छुपा लिया करते ।"(2)

(8) **इख़्लास के फ़ज़ाइल को पेशे नज़र रखिये :** ❁ इख़्लास के साथ अ़मल करना मोमिन की निशानी है । ❁ जो बन्दा चालीस दिन ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करता है तो उस के दिल से उस की ज़बान पर ह़िक्मत के चश्मे जारी हो जाते हैं । ❁ जो शख़्स ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करता है वोह शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बच जाता है । ❁ इख़्लास के साथ मांगी जाने वाली दुआएं मक़्बूल होती हैं । ❁ बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन के नज़्दीक इख़्लास के साथ किया जाने वाला अ़मल सत्तर ह़ज से बढ़ कर है । ❁ एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "ख़ल्वत में इख़्लास के

---

1 ......الزهد لاحمد بن حنبل، اخبار عبد الله بن عمر، ص ۲۱۵، رقم: ۱۱۰۶-

2 ......صفة الصفوة، احمد بن محمد بن حنبل، ۲/۲۲۳، رقم: ۲۶۲-

www.dawateislami.net

साथ दो रक्अ़त पढ़ना सत्तर70 या सात सो700 अह़ादीस आ़ली सनद के साथ लिखने से बेहतर है।" ❁ एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "घड़ी भर के इख़्लास में अबदी नजात है।" ❁ इख़्लास नेकियों पर उभारता है।(1) मज़ीद तफ़्सील के लिये इह़याउल उ़लूम, जि. 5, स. 255 से इख़्लास के बाब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(9) **मुख़्लिस की ता'रीफ़ का इ़ल्म ह़ासिल कीजिये :** क्यूंकि जब इस बात का इ़ल्म ही नहीं होगा कि मुख़्लिस किसे कहते हैं तो खुद कैसे मुख़्लिस बनेंगे ? ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब मक्फ़ूफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियों को ऐसे छुपाए जैसे अपने गुनाहों को छुपाता है।" ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : "सआ़दत मन्द है वोह शख़्स जिस का एक क़दम भी सह़ीह़ हो जाए कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और की निय्यत न हो।"(2) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "इख़्लास मख़्लूक़ की निगाहों से बचने का नाम है।" ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इख़्लास की अ़लामत येह है कि बन्दे के लिये लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ और मज़म्मत दोनों एक जैसी हों।"(3)

(10) **इख़्लास न होने के उख़रवी नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** मसलन कल बरोज़े क़ियामत ऐसे आ'माल मुंह पर मार दिये जाएंगे जो इख़्लास के साथ न किये होंगे, चुनान्चे, कल बरोज़े क़ियामत एक शहीद से फ़रमाया जाएगा कि तू ने इस लिये क़िताल किया ताकि तुझे बहादुर कहा

(1)...इह़याउल उ़लूम, 5 / 256 ता 263 माख़ूज़न। (2)...इह़याउल उ़लूम, 5 / 260 मुलख़्ख़सन।
(3)......الرسالة القشيرية، باب الاخلاص، ص ۲۴۳ ماخوذا۔

जाए, सो तुझे कह लिया गया, एक आ़लिम से फ़रमाया जाएगा कि तू ने इ़ल्म इस लिये हा़सिल किया कि तुझे आ़लिम कहा जाए, तुझे क़ारी कहा जाए, सो तुझे कह लिया गया, एक मालदार से फ़रमाया जाएगा कि तू ने इस लिये माल ख़र्च किया ताकि तुझे सख़ी कहा जाए सो तुझे कह लिया गया, फिर उन सब को जहन्नम में डाल दिया जाएगा ।(1)

(11) **इख़्लास से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इख़्लास येह है कि बन्दे का ठहरना और ह़रकत करना सब ख़ालिसतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हो ।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नैशापुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "इख़्लास येह है कि फ़क़त़ ख़ालिक़ की त़रफ़ हमेशा मुतवज्जेह रहने की वज्ह से मख़्लूक़ को देखना भूल जाए ।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "इख़्लास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और बन्दे के दरमियान एक राज़ है, इसे फ़िरिश्ते न जाने कि लिख ले और शैत़ान भी न जाने कि ख़राबी पैदा करे और ख़्वाहिशे नफ़्स को भी इस का इ़ल्म न हो कि इसे अपनी त़रफ़ माइल करे ।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों ने आप की बारगाह में अ़र्ज़ की : "आ'माल में ख़ालिस कौन है ?" फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल करता है और पसन्द नहीं करता कि इस पर कोई उस की ता'रीफ़ करे ।"(2)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......مسلم، كتاب الامارة، باب من قاتل للرياو السمعة استحق النار، ص ١٠٥٥، حديث: ١٩٠٥-

2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 271 ता 274 मुल्तक़त़न, الرسالة القشيرية، باب الاخلاص، ص ٢٤٤-

www.dawateislami.net

﴾3﴿...शुक्र

शुक्र की ता'रीफ़

"शुक्र की ह़क़ीक़त, ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार है, जब कि नाशुक्री ने'मत को भूल जाना और उस को छुपाना है।"(1) तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : "शुक्र की ता'रीफ़ येह है कि किसी के एह़सान व ने'मत की वज्ह से ज़बान, दिल या आ'ज़ा के साथ उस की ता'ज़ीम करना।"(2) खुशह़ाली में शुक्र करने वाला शाकिर है जब कि मुसीबत में शुक्र करने वाला शकूर है। अ़ता (या'नी देने) पर शुक्र करने वाला शाकिर है जब कि मन्अ़ (या'नी न देने) पर शुक्र करने वाला शकूर है।(3)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ ۝۷﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुनइम (या'नी ने'मत देने वाले) की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को इस का ख़ूगर बनाए। यहां एक बारीकी है वोह येह कि बन्दा जब **अल्लाह**

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 8, अल आ'राफ़, तह़्तुल आयत : 10

2.....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा : तह़्तुल आयत : 1, 1 / 43

3.....التوقیف علی مھمات التعاریف، ص۲۰۷۔

तआ़ला की ने'मतों और उस के त़रह़ त़रह़ के फ़ज़्लो करम व एह़सान का मुत़ालआ़ करता है तो उस के शुक्र में मश्ग़ूल होता है इस से ने'मतें ज़ियादा होती हैं और बन्दे के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत बढ़ती चली जाती है। येह मक़ाम बहुत बरतर (ऊंचा) है और इस से आ'ला मक़ाम येह है कि मुनइ़म की मह़ब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को ने'मतों की त़रफ़ इल्तिफ़ात बाक़ी न रहे, येह मक़ाम सिद्दीक़ों का है। **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)[1]

«ह़दीसे मुबारका» दुन्या व आख़िरत की भलाइयां

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे चार चीज़ें मिल गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई मिल गई : (1) शुक्र करने वाला दिल (2) ज़िक्र करने वाली ज़बान (3) आज़माइश पर सब्र करने वाला बदन और (4) अपने आप और शौहर के माल में ख़ियानत न करने वाली बीवी।"[2]

शुक्र के मुख़्तलिफ़ अह़काम

(1) "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र अदा करना वाजिब है।" (या'नी दिल व ए'तिक़ाद में **अल्लाह** की त़रफ़ ने'मत की निस्बत करे और ना फ़रमानी में ख़र्च न करे।)[3] इन्आ़माते इलाहिय्या (**अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों) पर शुक्र अदा करना मोमिनीन का त़रीक़ा और इन की नाशुक्री करना कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। शुक्र अदा करना रिज़ाए इलाही और जन्नत में ले जाने वाला काम है जब कि नाशुक्री करना रब तआ़ला की नाराज़ी और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 13, इब्राहीम, तह़्तुल आयत : 7

2 .....معجم اوسط، ۵/۲۴۴، حدیث: ۷۲۱۲-

3 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 172

www.dawateislami.net

(2) अम्बियाए किराम पर जो इन्आमे इलाही हो उस की यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना (मुतअद्दद सूरतों में) मस्नून (या'नी सुन्नत) है अगर कुफ़्फ़ार भी क़ाइम करते हों जब भी उस को छोड़ा न जाएगा जैसा कि मुहर्रमुल हराम की दसवीं तारीख़ को हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔन से नजात दिलाई, वोह इस के शुक्राने में आशूरे का रोज़ा रखते थे, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया : "हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की फ़त्ह की ख़ुशी मनाने और इस की शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूद से ज़ियादा हक़दार हैं।"[1]

(3) जिस रोज़ **अल्लाह** तआला की ख़ास रहमत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना, इबादतें करना, शुक्रे इलाही बजा लाना तरीक़ए सालिहीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी **अल्लाह** तआला की अज़ीम तरीन ने'मत और बुज़ुर्ग तरीन रहमत है, इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़ कर शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़्हारे फ़रह और सुरूर (ख़ुशी) करना मुस्तहसन (अच्छा) व महमूद (क़ाबिले ता'रीफ़) और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का तरीक़ा है।[2]

3 हिकायत — मा'ज़ूरी में भी शुक्र अदा करने वाला नेक शख़्स

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे एक बुज़ुर्ग ने येह वाक़िआ सुनाया कि मैं औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तहतुल आयत : 50 माख़ूज़न।
2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 7, अल माइदा, तहतुल आयत : 114

तलाश में हर वक़्त सरगर्दां रहता और उन की क़ियामगाहों को ढूंडने के लिये सह़राओं, पहाड़ों और जंगलों में फिरता ताकि उन की सोह़बत से फ़ैज़याब हो सकूं। एक मरतबा इसी मक़्सद के लिये मिस्र की त़रफ़ रवाना हुवा, जब मैं मिस्र के क़रीब पहुंचा तो वीरान सी जगह में एक ख़ैमा देखा, जिस में एक ऐसा शख़्स मौजूद था जिस के हाथ, पाउं और आंखें (जुज़ाम की) बीमारी से ज़ाएअ़ हो चुकी थीं लेकिन इस ह़ालत में भी वोह मर्दे अ़ज़ीम इन अल्फ़ाज़ के साथ अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना व शुक्र अदा कर रहा था : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी वोह ह़म्द करता हूं जो तेरी तमाम मख़्लूक़ की ह़म्द के बराबर हो। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है और तू सब पर फ़ज़ीलत रखता है, मैं इस इन्आ़म पर तेरी ह़म्द करता हूं कि तू ने मुझे अपनी मख़्लूक़ में कई लोगों से अफ़्ज़ल बनाया "

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं ने उस शख़्स की येह ह़ालत देखी तो मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस शख़्स से येह ज़रूर पूछूंगा कि क्या ह़म्द के येह पाकीज़ा कलिमात तुम्हें सिखाए गए हैं या तुम्हें इल्हाम हुए हैं ?" चुनान्चे, इसी इरादे से मैं उस के पास गया और उसे सलाम किया, उस ने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैं ने कहा : "ऐ मर्दे सालेह़ ! मैं तुम से एक चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम मुझे जवाब दोगे ?" वोह कहने लगा : "अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर जवाब दूंगा।" मैं ने कहा : "वोह कौन सी ने'मत है जिस पर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द कर रहे हो और वोह कौन सी फ़ज़ीलत है जिस पर तुम शुक्र अदा कर रहे हो ?" (ह़ालांकि तुम्हारे हाथ, पाउं और आंखें वग़ैरा सब ज़ाएअ़ हो चुके हैं फिर भी तुम किस ने'मत पर ह़म्द बजा ला रहे हो ?"

वोह शख़्स कहने लगा : "क्या तू देखता नहीं कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं, मैं सब देख चुका हूं।" फिर वोह कहने लगा : "देखो ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो मुझ पर आस्मान से आग बरसा देता जो मुझे जला कर राख बना देती, अगर वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ चाहता तो पहाड़ों को हुक्म देता और वोह मुझे तबाहो बरबाद कर डालते, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो समुन्दर को हुक्म फ़रमाता जो मुझे ग़र्क़ कर देता या फिर ज़मीन को हुक्म फ़रमाता तो वोह मुझे अपने अन्दर धंसा देती लेकिन देखो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इन तमाम मुसीबतों से मह़फ़ूज़ रखा फिर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र क्यूं न अदा करूं, उस की ह़म्द क्यूं न करूं और उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत क्यूं न करूं ?"

फिर मुझ से कहने लगा : "मुझे तुम से एक काम है, अगर कर दोगे तो तुम्हारा एह़सान होगा।" चुनान्चे, वोह कहने लगा : "मेरा एक बेटा है जो नमाज़ के अवक़ात में आता है और मेरी ज़रूरिय्यात पूरी करता है और इसी त़रह़ इफ़्त़ारी के वक़्त भी आता है लेकिन कल से वोह मेरे पास नहीं आया, अगर तुम उस के बारे में मा'लूमात फ़राहम कर दो तो तुम्हारा एह़सान होगा।" मैं ने कहा : "मैं तुम्हारे बेटे को ज़रूर तलाश करूंगा और फिर मैं येह सोचते हुए वहां से चल पड़ा कि अगर मैं ने इस मर्दे सालेह़ की ज़रूरत पूरी कर दी तो शायद इसी नेकी की वज्ह से मेरी मग़फ़िरत हो जाए।" चुनान्चे, मैं उस के बेटे की तलाश में एक त़रफ़ चल दिया, चलते चलते जब रेत के दो टीलों के दरमियान पहुंचा तो वहां का मन्ज़र देख कर मैं ठिठक कर रुक गया। मैं ने देखा कि एक दरिन्दा एक लड़के को चीर फाड़ कर उस का गोश्त खा रहा है, मैं समझ गया कि येह उसी शख़्स का बेटा है, मुझे उस की मौत पर बहुत अफ़्सोस हुवा और मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहा और

www.dawateislami.net

वापस उसी शख़्स के ख़ैमे की त़रफ़ चल दिया। मैं येह सोच रहा था कि अगर मैं ने उस परेशान ह़ाल शख़्स को उस के बेटे की मौत की ख़बर फ़ौरन ही सुना दी तो वोह येह ख़बर सुन कर कहीं मर ही न जाए, आख़िर किस त़रह़ उसे येह ग़मनाक ख़बर सुनाऊं कि उसे सब्र नसीब हो जाए। चुनान्चे, मैं उस शख़्स के पास पहुंचा, उसे सलाम किया, उस ने जवाब दिया, फिर मैं ने उस से पूछा : "मैं तुम से एक सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम जवाब दोगे ?" येह सुन कर वोह कहने लगा कि अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर जवाब दूंगा। मैं ने कहा : "तुम येह बताओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام का मक़ामो मर्तबा ज़ियादा है या आप का ?" येह सुन कर वोह कहने लगा : "यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام का मर्तबा व मक़ाम ही ज़ियादा है।" फिर मैं ने कहा : "जब आप عَلَيْهِ السَّلَام को मुसीबतें पहुंचीं तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन बड़ी बड़ी मुसीबतों पर सब्र किया या नहीं ?" वोह कहने लगा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام ने कमा ह़क़्क़ुहू, मुसीबतों पर सब्र किया।" फिर मैं ने कहा : "उन को तो इस क़दर बीमारी और मुसीबतें पहुंचीं कि जो लोग उन से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत किया करते थे उन्हों ने भी आप عَلَيْهِ السَّلَام से दूरी इख़्तियार कर ली। क्या आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ऐसी ह़ालत में सब्र से काम लिया या नहीं ?" वोह शख़्स कहने लगा : "आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ऐसी ह़ालत में भी सब्रो शुक्र से काम लिया और सब्रो शुक्र का ह़क़ अदा किया।" येह सुन कर मैं ने उस शख़्स से कहा : "फिर तुम भी सब्र से काम लो, सुनो ! अपने जिस बेटे का तुम ने तज़्किरा किया था उस को दरिन्दा खा गया है।"

येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरे दिल में दुन्या की ह़सरत डाली।" फिर वोह शख़्स रोने लगा और रोते रोते उस ने जान दे दी। मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहा

और सोचने लगा कि मैं इस जंगल बयाबान में अकेले इस की तजहीज़ो तक्फ़ीन कैसे करूंगा ? यहां इस वीराने में मेरी मदद को कौन आएगा ? अभी मैं येह सोच ही रहा था कि अचानक एक सम्त मुझे दस बारह सुवारों का क़ाफ़िला नज़र आया। मैं ने उन्हें इशारे से अपनी त़रफ़ बुलाया तो वोह मेरे पास आए और मुझ से पूछा : "तुम कौन हो और येह मुर्दा शख़्स कौन है ?" मैं ने उन्हें सारा वाक़िआ सुनाया तो वोह वहीं रुक गए और उस शख़्स को समुन्दर के पानी से ग़ुस्ल दिया और उसे वोह कफ़न पहनाया जो उन के पास था। फिर मुझे उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने को कहा तो मैं ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उन्हों ने मेरी इक्तिदा में नमाज़े जनाज़ा अदा की।

फिर हम ने उस अ़ज़ीम शख़्स को उसी ख़ैमे में दफ़्न कर दिया। उन नूरानी चेहरों वाले बुज़ुर्गों का क़ाफ़िला एक त़रफ़ रवाना हो गया, मैं वहीं अकेला रह गया, रात हो चुकी थी लेकिन मेरा वहां से जाने को दिल नहीं चाह रहा था, मुझे उस साबिरो शाकिर इन्सान से मह़ब्बत हो गई थी, मैं उस की क़ब्र के पास ही बैठ गया, कुछ देर बा'द मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा तो मैं ने ख़्वाब में एक नूरानी मन्ज़र देखा कि मैं और वोह शख़्स एक सब्ज़ क़ुब्बे में मौजूद हैं और वोह सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किये खड़े हो कर क़ुरआने ह़कीम की तिलावत कर रहा है। मैं ने उस से पूछा : "क्या तू मेरा वोही दोस्त नहीं जिस पर मुसीबतें टूट पड़ी थीं और वोह इन्तिक़ाल कर गया था ?" उस ने मुस्कुराते हुए कहा : "हां ! मैं वोही हूं।" फिर मैं ने पूछा : "तुम्हें येह अ़ज़ीमुश्शान मर्तबा कैसे मिला और तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला पेश आया ?" येह सुन कर वोह कहने लगा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों के साथ जन्नत में मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है जो मुसीबतों पर सब्र करते हैं और जब उन्हें कोई ख़ुशी पहुंचती है तो शुक्र

www.dawateislami.net

अदा करते हैं।" (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)[1]

शुक्र की आदत अपनाने के सात ﴾7﴿ तरीके

(1) **शुक्र के फ़ज़ाइल व वाकिआत का मुतालआ कीजिये :** कि फ़ज़ाइल पढ़ने से शुक्र करने का मदनी ज़ेहन बनेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रामीन सहारा देंगे और बन्दा शुक्र की तरफ़ माइल होगा और शुक्र से मुतअल्लिक वाकिआत पढ़ने से येह ज़ेहन बनेगा कि दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कई ऐसे नेक बन्दे भी हैं जिन पर मसाइबो आलाम के पहाड़ टूटे लेकिन इस के बा वुजूद उन की ज़बान पर नाशुक्री का एक कलिमा भी न आया, उन्हों ने हर हाल में रब तआला का शुक्र ही अदा किया। शुक्र के फ़ज़ाइल पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना का मतबूआ रिसाला "शुक्र के फ़ज़ाइल' और इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**इह्याउल उलूम**" जिल्द चहारुम, सफ़्हा 239 से मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

(2) **अपने से कम तर व अदना पर नज़र कीजिये :** मसलन : यूं ग़ौर कीजिये कि हमारे पास रहने के लिये अपना मकान है मगर कई लोग ऐसे हैं जिन के पास अपना मकान नहीं, बल्कि बा'ज़ों के पास तो मकान ही नहीं, सड़कों और फुट पाथों पर उन के शबो रोज़ बसर हो रहे हैं, हमें सुब्ह दोपहर शाम तीन वक्त का पुर तकल्लुफ़ खाना मुयस्सर है मगर कई लोग ऐसे भी हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी मुयस्सर नहीं, हमारे लिये मीठे मशरूबात मौजूद हैं मगर कई लोगों को तो पीने का साफ़ पानी तक मुयस्सर नहीं, आलूदा पानी पीने पर मजबूर हैं। उम्मीद है इस तरह रब तआला की अता कर्दा ने'मतों पर शुक्र करने का मदनी ज़ेहन बनेगा।

---

1 .....उ़यूनुल हिकायात, हिस्सए अव्वल, स. 146

www.dawateislami.net

(3) **रब तआ़ला की ने'मतों पर ग़ौर कीजिये :** कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बेशुमार मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया लेकिन हमें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात पैदा फ़रमाया, फिर मुसलमान पैदा फ़रमाया, नबिये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा फ़रमाया, हवा की ने'मत अ़ता फ़रमाई, पानी की ने'मत अ़ता फ़रमाई, धूप की ने'मत अ़ता फ़रमाई, अपने जिस्म में ग़ौर कीजिये कि देखने के लिये दो आंखें अ़ता फ़रमाईं, सुनने के लिये दो कान अ़ता फ़रमाए, पकड़ने और छूने के लिये दो हाथ अ़ता फ़रमाए, सूंघने के लिये नाक अ़ता फ़रमाई, चलने के लिये पाउं अ़ता फ़रमाए, खाने के लिये मुंह अ़ता फ़रमाया फिर सख़्त चीज़ें चबाने के लिये दांत अ़ता फ़रमाए, अल ग़रज़ रब तआ़ला की ने'मतों का शुमार नहीं मगर जितनी भी ने'मतों में ग़ौर करेंगे उतना ही बारगाहे इलाही में शुक्र बजा लाने का मदनी ज़ेह्न बनता ही जाएगा । ने'मतों की मुख़्तलिफ़ अक़्साम और इन के तफ़्सीली बयान के लिये इह्याउल उ़लूम, जिल्द 4 से शुक्र के बाब का मुतालआ़ कीजिये ।

(4) **ने'मतों के ज़वाल का ख़ौफ़ कीजिये :** क्यूंकि ने'मतों पर शुक्र अदा किया जाए तो इन में इज़ाफ़ा होता है और अगर इन की नाशुक्री की जाए तो वोह ने'मतें छीनी जा सकती हैं, जब बन्दे को ने'मतों के ज़वाल का ख़ौफ़ होगा तो ख़ुद ब ख़ुद इस का ज़ेह्न ने'मतों के शुक्र की त़रफ़ माइल होगा कि कहीं मेरे पास मौजूद ने'मत ज़ाइल न हो जाए । एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ने'मतें वह्शी जानवरों की त़रह़ हैं, उन्हें शुक्र के ज़रीए क़ैद में रखो ।"[1]

(5) **शुक्र गुज़ारों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** कि सोह़बत असर रखती है, जो बन्दा जैसी सोह़बत इख़्तियार करता है वोह वैसा ही बन जाता है, नाशुक्रों की सोह़बत इख़्तियार करेंगे तो नाशुक्री की आ़दत पड़

1 .....इह्याउल उ़लूम, 4 / 373

जाएगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शुक्र गुज़ार बन्दों की सोहबत इख़्तियार करेंगे तो शुक्र अदा करने वाले बन जाएंगे। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(6) **मुख़्तलिफ़ आ'ज़ा से शुक्र अदा कीजिये :** दिल के साथ इस त़रह़ कि भलाई का इरादा कीजिये, ज़बान के साथ इस त़रह़ कि शुक्र का इज़्हार करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द कीजिये और आ'ज़ा के साथ इस त़रह़ कि इस ने'मत को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़तो फ़रमांबरदारी के लिये इस्ति'माल में लाइये और उस की ना फ़रमानी वाले कामों में इस से मदद न लीजिये। आंखों के शुक्र में से येह भी है कि मुसलमान का जो भी ऐ़ब देखें उसे छुपाएं, कानों का शुक्र येह है कि किसी का ऐ़ब सुन लें तो उसे छुपाएं, अपनी ज़बान को भी हर वक़्त शुक्रे इलाही से तर रखें। आ'ज़ा के शुक्र में सिर्फ़ मिसालें ज़िक्र की हैं वरना शुक्र की मुतअ़द्दद सूरतें हो सकती हैं।

(7) **मुसीबतों पर भी शुक्र कीजिये :** कि बन्दा जब मुसीबतों पर शुक्र की आ़दत बना लेगा तो ख़ुद ब ख़ुद ने'मतों पर भी शुक्र बजा लाएगा, मुसीबतों पर शुक्र के इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने पांच पहलू बयान फ़रमाए हैं ۞ हर मुसीबत और बीमारी के बारे में येह तसव्वुर करे कि इस से भी बढ़ कर बीमारी और मुसीबत मौजूद है अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में इज़ाफ़ा फ़रमा दे तो क्या मैं रोक सकता हूं, इसे दूर कर सकता हूं? हरगिज़ नहीं! पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने बड़ी मुसीबत व बीमारी नहीं भेजी। ۞ येह तसव्वुर कर के शुक्र अदा करे कि हो सकता है इस मुसीबत के बदले कोई दीनी मुसीबत दूर कर दी गई हो। एक शख़्स ने सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से कहा : "चोर मेरे घर में दाख़िल हुवा और सामान ले कर चला गया।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो अगर शैत़ान तुम्हारे दिल में दाख़िल हो कर ईमान लूट लेता तो क्या करते?" ۞ येह तसव्वुर करे कि हो सकता है कोई

उख़्रवी सज़ा दुन्या में ही दे दी गई हो और येह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है क्यूंकि जिसे किसी अ़मल की दुन्या में सज़ा दे दी गई तो अब उसे उस अ़मल की आख़िरत में सज़ा नहीं मिलेगी, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बन्दा अगर कोई गुनाह करे फिर उसे दुन्या में कोई तक्लीफ़ या मुसीबत पहुंच जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दोबारा सज़ा नहीं देगा।"[1] ۞ येह मुसीबत व तक्लीफ़ तो बन्दे के लिये लौहे़ महफ़ूज़ में लिखी हुई थी जो लाज़िमन उस को पहुंचनी थी, जब दुन्या में पहुंच चुकी और उस के बा'ज़ या कुल से फ़राग़त और राह़त ह़ासिल कर ली तो येह भी उस के ह़क़ में ने'मत है लिहाज़ा इस पर शुक्र अदा करे। ۞ जिस त़रह़ दवा मरीज़ के लिये ना पसन्दीदा होती है मगर उस के ह़क़ में मुफ़ीद होती है इसी त़रह़ मोमिन को पहुंचने वाली तक्लीफ़ भी ना पसन्दीदा होती है लेकिन उस के ह़क़ में बेहतर होती है लिहाज़ा इस पर शुक्र अदा करे, मोहलिक (हलाक करने वाले) गुनाहों की बुन्याद दुन्या की मह़ब्बत है और दुन्या से दिल का उचाट हो जाना उख़्रवी नजात का बाइ़स है, तक्लीफ़ों मुसीबतों की वज्ह से बन्दे का दिल दुन्या से उचाट हो जाता है तो येह बज़ाते ख़ुद एक ने'मत है लिहाज़ा इस पर शुक्र अदा करना चाहिये।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《4》...सब्र

सब्र की ता'रीफ़

"**सब्र**" के लुग़वी मा'ना रुकने, ठहरने या बाज़ रहने के हैं और नफ़्स को इस चीज़ पर रोकना (या'नी डट जाना) जिस पर रुकने (डटे

❶.....ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء لا یزنی الزانی وھومؤمن، ۴/۲۸۴، حدیث: ۲۶۳۵-

❷.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 377 ता 382 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

रहने) का अ़क्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो **सब्र** कहलाता है। बुन्यादी तौ़र पर सब्र की दो क़िस्में हैं : (1) बदनी सब्र जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और उन पर साबित क़दम रहना। (2) त़बई ख़्वाहिशात और ख़्वाहिश के तक़ाज़ों से सब्र करना। पहली क़िस्म का सब्र जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है लेकिन मुकम्मल तौ़र पर ता'रीफ़ के क़ाबिल सब्र की दूसरी क़िस्म है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاصْبِرُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَۚ﴾ (پ۱۰، الانفال:۴۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और सब्र करो बेशक **अल्लाह** सब्र वालों के साथ है।"

﴿ह़दीसे मुबारका﴾ साबिर के लिये उख़रवी इनआ़म

हु़ज़ूर नबिये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मैं अपने किसी बन्दे को उस के जिस्म, माल या औलाद के ज़रीए़ आज़माइश में मुब्तला करूं, फिर वोह सब्रे जमील के साथ उस का इस्तिक़्बाल करे तो क़ियामत के दिन मुझे ह़या आएगी कि उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आ'माल खोलूं।"[2]

सब्र करने के मुख़्तलिफ़ अह़काम

❁ शरीअ़त ने जिन कामों से मन्अ़ किया है उन से सब्र (या'नी रुकना) फ़र्ज़ है। ❁ ना पसन्दीदा काम (जो शरअ़न गुनाह न हो उस) से

1.....सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह : तह़्तुल आयत : 153, 1 / 246

2.....نوادرالاصول، الاصل الخامس والثمانون والمائة، ج ۲، ص ۷۰۰، حدیث: ۹۶۳۔

www.dawateislami.net

सब्र मुस्तहब है। ۞ तक्लीफ़ देह फ़े'ल जो शरअ़न ममनूअ़ है उस पर सब्र (या'नी ख़ामोशी) ममनूअ़ है। मसलन किसी शख़्स या उस के बेटे का हाथ नाहक़ काटा जाए तो उस शख़्स का ख़ामोश रहना और सब्र करना ममनूअ़ है, ऐसे ही जब कोई शख़्स शहवत के साथ बुरे इरादे से उस के घरवालों की त़रफ़ बढ़े तो उस की ग़ैरत भड़क उठे लेकिन ग़ैरत का इज़्हार न करे और घरवालों के साथ जो कुछ हो रहा है उस पर सब्र करे और क़ुदरत के बा वुजूद न रोके तो शरीअ़त ने इस सब्र को **ह़राम** क़रार दिया है।[1]

۞ **सब्रे जमील** या'नी सब से बेहतरीन सब्र येह है कि मुसीबत में मुब्तला शख़्स को कोई न पहचान सके, उस की परेशानी किसी पर ज़ाहिर न हो।[2]

۞ **सब्र का आ'ला तरीन दरजा** येह है कि लोगों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र किया जाए। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ''जो तुम से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे उस से सिलए रेह़्मी से पेश आओ, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ करो।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं तुम से कहता हूं कि बुराई का बदला बुराई से न दो बल्कि जो तुम्हारे एक गाल पर मारे अपना दूसरा गाल उस के आगे कर दो, जो तुम्हारी चादर छीने तुम कमर बन्द भी उसे पेश कर दो और जो तुम्हें एक मील साथ चलने पर मजबूर करे तुम उस के साथ दो मील तक चलो।'' इन तमाम इरशादात में तकालीफ़ पर सब्र करने का फ़रमाया गया है और येही सब्र का आ'ला मर्तबा है।[3]

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 206
2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 221
3 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 215

www.dawateislami.net

हिकायत 4 बिच्छू के काटने पर सब्र

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 656 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन**" जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा 316 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना सरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَلِى से सब्र के बारे में पूछा गया तो आप ने सब्र से मुतअ़ल्लिक़ बयान शुरूअ़ कर दिया। इसी दौरान एक बिच्छू आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की टांग पर मुसलसल डंक मारता रहा लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पुर सुकून रहे। आप से पूछा गया कि इस मूज़ी (या'नी तक्लीफ़ देने वाले) को हटाया क्यूं नहीं ? फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आ रही थी कि मैं सब्र का बयान करूं लेकिन खुद सब्र न करूं।"[1]

सब्र की आ़दत बनाने के सात ﴾7﴿ त़रीके़

(1) **सब्र के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** क्यूंकि किसी भी नेक काम या अच्छे अ़मल के फ़ज़ाइल पेशे नज़र हों तो इस पर अ़मल करने का जल्दी ज़ेह्न बन जाता है, सब्र तो वोह बात़िनी ख़ूबी है कि जिस के फ़ज़ाइल क़ुरआनो ह़दीस में ब कसरत बयान फ़रमाए गए हैं। सब्र की मा'लूमात, अक़्साम, आयात, फ़ज़ाइल व तफ़्सीली रिवायात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुब **इह़याउल उ़लूम**, (जिल्द चहारुम), **फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन** (जिल्द अव्वल), **मुकाशफ़तुल क़ुलूब, मिन्हाजुल आ़बिदीन, जन्नत में ले जाने वाले आ'माल** वग़ैरा का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(2) **बारगाहे इलाही में सब्र की दुआ़ कीजिये :** दुआ़ मोमिन का हथियार है, जब मोमिन अपना हथियार ही इस्ति'माल नहीं करेगा तो यक़ीनन उस के ख़त़रनाक दुश्मन नफ़्सो शैत़ान उस पर ह़म्ला आवर होते

1 ......الرسالة القشيرية، باب الصبر، ص ٢٢٣۔

www.dawateislami.net

रहेंगे और मुसीबतों पर सब्रो शुक्र की बजाए नाशुक्री व बे सब्री जैसे मज़्मूम अफ़्आ़ल सादिर होते रहेंगे।

(3) **अपनी ज़ात में आ़जिज़ी पैदा कीजिये :** कि किसी की त़रफ़ से मिलने वाली तक्लीफ़ पर बे सब्री और इन्तिक़ामी कारवाई का एक सबब तकब्बुर भी है, जब बन्दा अपनी ज़ात में आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा करेगा तो इन्तिक़ामी कारवाई का ज़ेहन ख़त्म हो जाएगा और लोगों से मिलने वाली तकालीफ़ पर सब्र नसीब होगा और रह़मते इलाही से इस सब्र पर अज्र मिलेगा। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(4) **जल्द बाज़ी न कीजिये :** हमारी ज़िन्दगी में कई काम ऐसे हैं जिन में जल्द बाज़ी की वज्ह से सब्र रुख़्सत हो जाता है, बल्कि इस जल्द बाज़ी की वज्ह से बसा अवक़ात शदीद नुक़्सान भी उठाना पड़ता है, लिहाज़ा जल्द बाज़ी की आ़दत को दूर कीजिये, सब्र से काम लीजिये।

(5) **मुआ़फ़ करने की आ़दत अपनाइये :** जब किसी की त़रफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो नफ़्स उस से बदला लेने पर उभारता है जिस की ज़िद अ़फ़्वो दरगुज़र या'नी मुआ़फ़ कर देना है, जब बन्दा मुआ़फ़ कर देने की आ़दत अपनाएगा तो तकालीफ़ पहुंचने पर उसे ख़ुद ब ख़ुद सब्र भी नसीब हो जाएगा।

(6) **मुसीबत में ने'मतों को तलाश कीजिये :** येह बुज़ुर्गाने दीन का त़रीक़ा है और इस से सब्र करने में मुआ़वनत मिलती है, हर मुसीबत में कोई न कोई ने'मत मख़्फ़ी (छुपी) होती है, मसलन बसा अवक़ात एक छोटी मुसीबत किसी बड़ी मुसीबत को टालती है, कोई मुसीबत किसी गुनाह के लिये कफ़्फ़ारा बन जाती है, मुसीबतें दरजात में बुलन्दी का बाइस भी होती है, दुन्यवी मुसीबतें उख़्रवी मुसीबतों से नजात भी दिलाती हैं, यक़ीनन येह तमाम सूरतें रब तआ़ला की बड़ी ने'मतें हैं जो मुसीबत में पोशीदा हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे जिस मुसीबत में भी मुब्तला किया उस में मुझ पर चार ने'मतें थीं : (1) वोह आज़्माइश मेरे दीन में न थी। (2) उस से बढ़ कर मुसीबत न आई। (3) मैं उस पर राज़ी होने की दौलत से मह़रूम न हुवा। (4) मुझे उस पर सवाब की उम्मीद रही।"[1]

(7) **अपने से बड़ी मुसीबत वाले को देखिये :** क्यूंकि जिसे कोई मुसीबत पहुंचती है तो वोह येही समझता है शायद मुझे सब से ज़ियादा बड़ी मुसीबत पहुंची है और येही बात बसा अवक़ात उसे बे सब्री में मुब्तला कर देती है, जब वोह अपने से बड़ी मुसीबत वाले को देखेगा तो शुक्र करेगा और उसे सब्र की ने'मत नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿...हुस्ने अख़्लाक़

हुस्ने अख़्लाक़ की एक पहलू के ए'तिबार से ता'रीफ़

"हुस्न" अच्छाई और ख़ूब सूरती को कहते हैं, "अख़्लाक़" जम्अ़ है "ख़ुल्क़" की जिस का मा'ना है "रवय्या, बरताव, आ़दत"। या'नी लोगों के साथ अच्छे रवय्ये या अच्छे बरताव या अच्छी आ़दात को हुस्ने अख़्लाक़ कहा जाता है। इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "अगर नफ़्स में मौजूद कैफ़िय्यत ऐसी हो कि इस के बाइ़स अ़क़्ली और शरई तौर पर पसन्दीदा अच्छे अफ़्आ़ल अदा हों तो उसे हुस्ने अख़्लाक़ कहते हैं और अगर अ़क़्ली और शरई तौर पर ना पसन्दीदा बुरे अफ़्आ़ल अदा हों तो उसे बद अख़्लाक़ी से ता'बीर किया जाता है।"[2]

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 378
2 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 165

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ में शामिल नेक आ'माल

हक़ीक़त में हुस्ने अख़्लाक़ का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है, इस में कई नेक आ'माल शामिल हैं चन्द आ'माल येह हैं : मुआ़फ़ी को इख़्तियार करना, भलाई का हुक्म देना, बुराई से मन्अ़ करना, जाहिलों से ए'राज़ करना, क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह़्मी करना, मह़रूम करने वाले को अ़त़ा करना, ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ कर देना, ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना, किसी को तक्लीफ़ न देना, नर्म मिज़ाजी, बुर्दबारी, ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पा लेना, ग़ुस्सा पी जाना, अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लेना, लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिलना, मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करना, लोगों में सुल्ह़ करवाना, हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी करना, मज़्लूम की मदद करना, ज़ालिम को उस के ज़ुल्म से रोकना, दुआ़ए मग़्फ़िरत करना, किसी की परेशानी दूर करना, कमज़ोरों की कफ़ालत करना, ला वारिस बच्चों की तरबियत करना, छोटों पर शफ़्क़त करना, बड़ों का एह़तिराम करना, उ़लमा का अदब करना, मुसलमानों को खाना खिलाना, मुसलमानों को लिबास पहनाना, पड़ोसियों के हुक़ूक़ अदा करना, मशक़्क़तों को बरदाश्त करना, ह़राम से बचना, ह़लाल ह़ासिल करना, अहलो इ़याल पर ख़र्च में कुशादगी करना। वग़ैरा वग़ैरा। मज़ीद तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "हुस्ने अख़्लाक़" और "इह़याउल उ़लूम," जिल्द सिवुम, सफ़ह़ा 153 ता 164 का मुत़ालआ़ कीजिये।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ۝۴﴾ (پ ۲۹، القلم: ۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।" इस आयते मुबारका के तह़्त

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : हज़रते उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ कुरआन है। हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने अफ़आल की तक्मील व ततमीम (मुकम्मल व पूरा करने) के लिये मबऊस फ़रमाया।[1]

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा ..... तेरी ख़िल्क़ को हक़ ने जमील किया

कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा ! ..... तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

﴾हदीसे मुबारका﴿ मीज़ाने अमल में सब से वज़्नी शै

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ान में हुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़्नी कोई शै नहीं होगी।"[2]

हुस्ने अख़्लाक़ का हुक्म

हुस्ने अख़्लाक़ के मुख़्तलिफ़ पहलू हैं इसी वज्ह से बा'ज़ सूरतों में हुस्ने अख़्लाक़ वाजिब, बा'ज़ में सुन्नत और बा'ज़ सूरतों में मुस्तहब है।

5 हिकायत नवासए रसूल का कमाले हुस्ने अख़्लाक़

एक शामी का बयान है कि एक मरतबा मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हुवा तो मैं ने ख़च्चर पर सुवार एक ऐसे शख़्स को देखा कि उस जैसा ख़ूब सूरत, पुर वक़ार और ख़ुश लिबास शख़्स मैं ने

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 29, अल क़लम, तहतुल आयत : 4

2.....ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی حسن الخلق، ۳/۴۰۳، حدیث: ۲۰۰۹۔

www.dawateislami.net

पहले कभी नहीं देखा था और न ही उस की सुवारी से उ़म्दा सुवारी कभी देखी थी, मेरा दिल उस शख़्स की जानिब खिंचा जा रहा था। जब मैं ने उन के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो पता चला कि येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बड़े फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। मेरा दिल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बुग़्ज़ व अ़दावत से भर गया, मुझे मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से ह़सद हो गया कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बेटा भी (शानो शौकत के लिह़ाज़ से) आप ही की मिस्ल है। मैं ने आगे बढ़ कर पूछा : "क्या तुम फ़रज़न्दे अ़ली हो ?" इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जवाब दिया : "जी हां ! मैं सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का बेटा हूं।" येह सुनते ही मैं आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और आप के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को सब्बो शत्म करने (या'नी बुरा भला कहने) लगा।

जब मैं ख़ामोश हुवा तो सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुझे कुछ कहने या मेरी सरज़निश करने की बजाए हुस्ने अख़्लाक़ का बेहतरीन मुज़ाहरा करते हुए इरशाद फ़रमाया : "लगता है तुम ह़ाजत मन्द हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं ह़ाजत मन्द हूं।" फ़रमाया : "हमारे पास आ जाओ, अगर तुम्हें रिहाइश की ह़ाजत हुई तो हम तुम्हारे क़ियाम का इन्तिज़ाम कर देंगे, अगर माल की ह़ाजत हुई तो माली ए'तिबार से ख़ैर ख़्वाही में ज़र्रा बराबर कमी नहीं छोड़ेंगे, इस के इलावा भी तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी तो तुम्हारे साथ ज़रूर तआ़वुन करेंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस कमाले हुस्ने अख़्लाक़ को देख कर उस शामी के दिल में आप की मह़ब्बत घर कर गई। वोह शामी शख़्स कहता है : "जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से जुदा हुवा तो रूए ज़मीन पर आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर मुझे कोई महबूब न था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुस्ने अख़्लाक़ ने मुझे बहुत मुतअस्सिर किया, आप का शुक्रिय्या अदा करने के सिवा मेरे लिये कोई चारह न रहा और मुझे अपने बुरे रवय्ये पर इन्तिहाई शरमिन्दगी हुई।(1)

हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने के दस ﴾10﴿ त़रीक़े

(1) **अच्छी सोहबत इख़्तियार कीजिये :** कि सोहबत असर रखती है, जो बन्दा जैसी सोहबत इख़्तियार करता है वैसा ही बन जाता है, अच्छों की सोहबत अच्छा और बुरों की सोहबत बुरा बना देती है, बद अख़्लाक़ों की सोहबत बद ख़ुल्क़ और हुस्ने अख़्लाक़ वालों की सोहबत हुस्ने अख़्लाक़ वाला बना देती है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी भी अच्छा माहोल फ़राहम करती है, दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में हुस्ने अख़्लाक़ सिखाया जाता है, बद अख़्लाक़ी से बचाया जाता है, हज़ारों ऐसे लोग जो अपनी बद अख़्लाक़ी की वज्ह से मुआ़शरे में बदनाम थे, दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हुए, हुस्ने अख़्लाक़ का ताज सर पर सजाया और आज वोही लोग दूसरों को हुस्ने अख़्लाक़ का दर्स देते नज़र आते हैं, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, हुस्ने अख़्लाक़ को अपनाइये, बद अख़्लाक़ी को दूर भगाइये और रहमते इलाही से अज्रे कसीर पाइये।

(2) **हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइल का मुतालआ़ कीजिये :** जब किसी चीज़ के फ़ज़ाइल पेशे नज़र हों तो उसे अपनाना आसान हो जाता है, हुस्ने अख़्लाक़ की मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब अ़ल्लामा त़बरानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की किताब मकारिमुल अख़्लाक़ तर्जमा

(1) ......وفیات الاعیان، حسن بن علی بن ابی طالب، ۲/۵۵۔

www.dawateislami.net

बनाम हुस्ने अख़्लाक़, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तसानीफ़ इह़याउल उ़लूम, जिल्द सिवुम और मुकाशफ़तुल कुलूब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **बद अख़्लाक़ी की दुन्यवी व उख़रवी बुराइयों पर ग़ौर कीजिये :** कि बद अख़्लाक़ शख़्स से लोग नफ़रत करते हैं, उस से दूर भागते हैं, उसे दुन्यवी मुआ़मलात में नाकामियों का सामना करना पड़ता है, वोह खुद भी परेशान रहता है और लोगों को भी परेशान करता है, बद अख़्लाक़ शख़्स के दुश्मन भी ज़ियादा होते हैं, बन्दा बुरे अख़्लाक़ के सबब जहन्नम के निचले त़ब्क़े में पहुंच सकता है, बद अख़्लाक़ शख़्स अपने आप को दुन्यावी मुसीबत में भी मुब्तला कर लेता है, बद अख़्लाक़ शख़्स टूटे हुए घड़े की त़रह़ है जो क़ाबिले इस्ति'माल नहीं होता।[1]

(4) **हुस्ने अख़्लाक़ में शामिल नेक आ'माल की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** जब तक बन्दे को ऐसे नेक आ'माल की मा'लूमात नहीं होगी जो हुस्ने अख़्लाक़ में शामिल हैं तो उस वक़्त तक हुस्ने अख़्लाक़ को इख़्तियार करना दुश्वार होगा। ऊपर हुस्ने अख़्लाक़ की ता'रीफ़ के बा'द तक़रीबन तीस(30) से ज़ाइद ऐसे नेक आ'माल बयान किये गए हैं जो हुस्ने अख़्लाक़ में शामिल हैं।

(5) **दिल में एह़तिरामे मुस्लिम पैदा कीजिये :** जब बन्दे के दिल में मुसलमानों का एह़तिराम पैदा होगा तो खुद ब खुद उन के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आएगा, एह़तिरामे मुस्लिम पैदा करने का एक त़रीक़ा येह भी है बन्दा खुद से तमाम लोगों को अच्छा जाने, अपने आप को बड़ा गुनहगार समझे, आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करे, यूं एह़तिरामे मुस्लिम पैदा होगा और हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

1 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 160 माख़ूज़न।

(6) **नफ़्सानी ख़्वाहिशात से परहेज़ कीजिये :** बसा अवक़ात ज़ाती रन्जिश, ना पसन्दीदगी और नाराज़ी की बिना पर नफ़्स अपने गुस्से का इज़्हार ग़ीबत, गाली गलोच, चुग़ली वग़ैरा जैसी बद अख़्लाक़ी की बद तरीन क़िस्मों से करवाता है जो हुस्ने अख़्लाक़ की बद तरीन दुश्मन हैं, लिहाज़ा नफ़्सानी ख़्वाहिशात से परहेज़ कीजिये ताकि हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत नसीब हो।

(7) **हुस्ने अख़्लाक़ की बारगाहे इलाही में दुआ कीजिये :** कि दुआ मोमिन का हथियार है, हुज़ूर नबिये रह़मत शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो दुआएं पेशे ख़िदमत हैं : ۞ اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी सूरत अच्छी बनाई है पस मेरे अख़्लाक़ को भी अच्छा कर दे।"[1] ۞ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعَافِيَةَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सिह़्ह़त, आफ़िय्यत और अच्छे अख़्लाक़ का सुवाल करता हूं।"[2]

(8) **बुराई का जवाब अच्छाई से दीजिये :** बुराई का जवाब भलाई से देने को अफ़्ज़ल अख़्लाक़ में शुमार किया गया है, चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "दुन्या व आख़िरत के अफ़्ज़ल अख़्लाक़ में से येह है कि तुम क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह़्मी करो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो।"[3]

(9) **बद अख़्लाक़ी के अस्बाब को दूर कीजिये :** बद अख़्लाक़ी हुस्ने अख़्लाक़ की ज़िद है, जब बद अख़्लाक़ी दूर हो जाएगी तो हुस्ने अख़्लाक़ ख़ुद ही पैदा हो जाएगा। ۞ बद अख़्लाक़ी का एक सबब घर का

---

1 ......شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ۶/۳۶۴، حدیث: ۸۵۴۲-

2 ......مجمع الزوائد، کتاب الادعیة، باب الاجتھاد فی الدعاء، ۱۰/۲۷۴، حدیث: ۱۷۳۶۷-

3 ......شعب الایمان، باب فی صلة الارحام، ۶/۲۲۲، حدیث: ۷۹۵۹-

www.dawateislami.net

माहोल अच्छा न होना है । इस का इलाज येह है कि दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हो जाइये, हिक्मते अमली के साथ घर में मदनी माहोल बनाइये, फ़ह्हाशी व उरयानी वाले चैनल्ज़ को बन्द कर के मदनी चैनल को बसाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मदनी चैनल आप की आप के घरवालों की, बच्चों की, वालिदैन और दीगर रिश्तेदारों की ऐसी मदनी तरबियत करेगा, जिस से हुस्ने अख़्लाक़ पैदा करने में आसानी होगी । ۞ बद अख़्लाक़ी का एक सबब मन्सब या ओहदे का छिन जाना भी है कि जब बन्दे से कोई मन्सब या ओहदा छीन लिया जाए तो बसा अवक़ात वोह बद अख़्लाक़ हो जाता है, इस का इलाज येह है कि बन्दा किसी भी मन्सब को मुस्तक़िल और दाइमी न समझे, बल्कि अपना यूं मदनी ज़ेहन बनाए कि मुझे तो दुन्या में भी मख़्सूस मुद्दत तक रहना है तो येह मन्सब हमेशा कैसे रहेगा, जब पहले से ही मन्सब के हमेशा न रहने का ज़ेहन होगा तो उस के छिन जाने पर अफ़्सोस भी न होगा और बद अख़्लाक़ी भी पैदा न होगी । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ۞ बसा अवक़ात ज़रूरत से ज़ाइद मालदारी भी बद अख़्लाक़ी का सबब बन जाती है, लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये कमाए और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी करे, आ'माले सालेहा बजा लाए, रिज़ाए इलाही वाले काम करे ।

(10) **बिला वज्ह ग़ुस्सा छोड़ दीजिये :** बिला वज्ह ग़ुस्सा बहुत सारी बुराइयों की जड़ और कई ख़ामियों की बुन्याद है, जब बन्दा बिला वज्ह ग़ुस्सा करता है तो बद अख़्लाक़ी का शिकार हो जाता है, बिला वज्ह ग़ुस्से को छोड़ देना ही अच्छे अख़्लाक़ की अलामत है । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अर्ज़ की गई कि "एक जुम्ले में बताइये कि अच्छे अख़्लाक़ क्या हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "(बिला वज्ह) ग़ुस्से को छोड़ देना ।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1).....इहयाउल उलूम, 3 / 508

www.dawateislami.net

﴾6﴿...मुहासबए नफ़्स (फ़िक्रे मदीना)

मुहासबए नफ़्स की ता'रीफ़

मुहासबे का लुग़वी मा'ना हिसाब लेना, हिसाब करना है और मुख़्तलिफ़ आ'माल करने से पहले या करने के बा'द इन में नेकी व बदी और कमी बेशी के बारे में अपनी ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र करना और फिर बेहतरी के लिये तदाबीर इख़्तियार करना **मुहासबए नफ़्स** कहलाता है। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "आ'माल की कसरत और मिक़्दार में ज़ियादती और नुक़्सान की मा'रिफ़त के लिये जो ग़ौर किया जाता है उसे **मुहासबा** कहते हैं, लिहाज़ा अगर बन्दा अपने दिन भर के आ'माल को सामने रखे ताकि उसे (नेक आ'माल की) कमी बेशी (कम या ज़ियादा होने) का इल्म हो तो येह भी **मुहासबा** है।"(1)

आ'माल से क़ब्ल और बा'द मुहासबे की नफ़ीस वज़ाहत

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं कि मोमिन के दिल में अचानक कोई पसन्दीदा ख़याल पैदा होता है तो मोमिन कहता है : "ख़ुदा की क़सम ! तू मुझे बहुत पसन्द है, तू मेरी ज़रूरत भी है, लेकिन अफ़्सोस ! तेरे और मेरे दरमियान एक रुकावट है।" येह कह कर मोमिन उस पसन्दीदा ख़याल को तर्क कर देता है, इसी का नाम अमल से पहले मुहासबा है। फिर फ़रमाया कि बा'ज़ अवक़ात मोमिन से कोई ख़ता हो जाती है तो वोह नफ़्स को मुख़ातब कर के कहता है : "तू ने क्या सोच कर ऐसा किया ?" ख़ुदा की क़सम ! ऐसी ख़ता में मेरा कोई उ़ज़्र क़बूल नहीं किया जाएगा। ख़ुदा की क़सम ! आयिन्दा मैं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी ऐसी ख़ता नहीं करूंगा।"(2)

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 319

2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 349

मुहासबए नफ़्स, फ़िक्रे मदीना, दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल में कमी बेशी के ए'तिबार से **मुहासबए नफ़्स** करने को तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की इस्तिलाह में "**फ़िक्रे मदीना करना**" कहते हैं। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मुरीदीन, तालिबीन, मुतअल्लिक़ीन, बल्कि दा'वते इस्लामी से महब्बत करने वाले तमाम मुसलमानों को **मुहासबए नफ़्स** या'नी **फ़िक्रे मदीना** करने के लिये "**मदनी इन्आमात**" का तोहफ़ा अता फ़रमाया है। "**मदनी इन्आमात**" दर अस्ल मुख़्तलिफ़ सुवालात पर मुश्तमिल नेक आ'माल की मा'लूमात व तरग़ीबात का ऐसा मजमूआ है जिस पर अमल कर के दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां हासिल की जा सकती हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, मदनी मुन्नों, ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों, मदारिसुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना के तलबा, इन तमाम के लिये अलाहदा **मदनी इन्आमात** रसाइल की सूरत में मुरत्तब फ़रमाए हैं, आप भी नेक आ'माल को बजा लाने, उन पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करने, अपनी और अपने घरवालों की दीनी व शरई व अख़्लाक़ी तरबियत करने के लिये **मदनी इन्आमात** के रसाइल हासिल कीजिये, इन पर अमल कीजिये और ढेरों सवाब कमाइये।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢﴾ (پ۲۹، القیامۃ:۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे।" इस आयते मुबारका के तहत हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "मोमिन

www.dawateislami.net

हमेशा नफ़्स को झिड़कता रहता है कि तू ने फुलां बात क्या सोच कर कही ? फुलां खाना तू ने किस लिये खाया ? फुलां मशरूब तू ने किस लिये नोश किया ? जब कि काफ़िर ज़िन्दगी बसर करता रहता है लेकिन कभी अपने नफ़्स को नहीं झिड़कता (या'नी उस का मुहासबा नहीं करता) ।"[1]

«हदीसे मुबारका» समझदार कौन ?

सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "समझदार वोह शख़्स है जो अपना मुहासबा करे और आख़िरत की बेहतरी के लिये नेकियां करे और आजिज़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और **अल्लाह** तआला से आख़िरत के इन्आम की उम्मीद रखे ।"[2]

मुहासबए नफ़्स का हुक्म

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान रखने वाले हर अक़्ल मन्द शख़्स पर लाज़िम है कि वोह नफ़्स के मुहासबे से ग़ाफ़िल न हो और नफ़्स की ह़रकातो सकनात और लज़्ज़ात व ख़यालात पर सख़्ती करे क्यूंकि ज़िन्दगी का हर सांस अनमोल हीरा है जिस से हमेशा बाक़ी रहने वाली ने'मत (या'नी जन्नत) ख़रीदी जा सकती है तो इन सांसों को ज़ाएअ़ करना या हलाकत वाले कामों में सर्फ़ करना बहुत संगीन और बड़ा नुक़्सान है जो समझदार शख़्स का शेवा नहीं ।"[3]

6 हिकायत मुहासबए नफ़्स करने वाला ख़ुश नसीब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ, 649 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**हिकायतें और नसीहतें**" स. 52 पर

---

1 .....इह्याउल उ़लूम, 5 / 350

2 .....ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب:۲۵، ۴/۲۰۷، حدیث:۲۴۶۷۔

3 .....इह्याउल उ़लूम, 5 / 315

www.dawateislami.net

है : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : एक शख़्स बुराइयों और ख़ताओं पर अपने नफ़्स का मुहासबा किया करता था। एक दिन उस ने अपनी ज़िन्दगी के सालों का हिसाब लगाया तो साठ(60) साल बने, फिर दिनों का हिसाब किया तो इक्कीस हज़ार पांच सो(21500) दिन बने तो उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ा, जब होश में आया तो कहने लगा : "हाए अफ़्सोस ! अगर रोज़ाना एक गुनाह भी किया हो तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इक्कीस हज़ार पांच सो(21500) गुनाह ले कर हाज़िर होऊंगा तो उन गुनाहों का क्या हाल होगा जिन का शुमार ही नहीं ? हाए अफ़्सोस ! मैं ने अपनी दुन्या आबाद की और आख़िरत बरबाद की और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता रहा, मैं दुन्या में तो आबादी से बरबादी की तरफ़ मुन्तक़िल होना पसन्द नहीं करता तो बरोज़े क़ियामत बिग़ैर सवाब व अमल के हिसाबो किताब कैसे दूंगा ? और अज़ाब का सामना कैसे करूंगा ?" फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गया, जब हरकत दी गई तो उस की जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द हो चुकी थी।

मुहासबा करने और इस का ज़ेहन बनाने के बारह ﴾12﴿ तरीक़े

(1) **मुहासबए नफ़्स की मा'रिफ़त हासिल कीजिये :** कि जब तक किसी चीज़ की मा'लूमात न हों उस चीज़ तक पहुंचना मुश्किल होता है, जब मुहासबए नफ़्स की मा'रिफ़त व मा'लूमात हासिल होंगी तो मुहासबए नफ़्स करना बहुत आसान हो जाएगा, इस के लिये हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ "इहयाउल उ़लूम," जिल्द 5, सफ़हा 311 से मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

(2) **ख़ौफ़े ख़ुदा के वाक़िआत मुलाहज़ा कीजिये :** कि बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के ख़ौफ़े ख़ुदा से भरपूर वाक़िआत का मुतालआ करता है तो उस का येह मदनी ज़ेहन बनता है कि वोह लोग नेक

परहेज़गार होने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इतना डरते थे, मैं तो बहुत ही गुनहगार हूं मुझे तो रब तआ़ला से बहुत ज़ियादा डरना चाहिये यूं रह़मते इलाही से उसे मुहासबए नफ़्स नसीब हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ वाक़िआत के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(3) **बुज़ुर्गाने दीन के मुहासबे के वाक़िआत का मुत़ालआ़ कीजिये :** ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मरवी है कि किसी परिन्दे ने उन की तवज्जोह नमाज़ से हटा कर बाग़ की जानिब मब्ज़ूल करवा दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ौरो फ़िक्र किया और अपने फ़े'ल पर नदामत का इज़्हार करते हुए बत़ौरे कफ़्फ़ारा अपना बाग़ राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दिया। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लकड़ियों का एक गठ्ठा उठाया तो किसी ने कहा : "ऐ अबू यूसुफ़! आप के बेटे और गुलाम इस काम के लिये काफ़ी थे।" फ़रमाया : "मैं नफ़्स का इम्तिह़ान लेना चाहता था कि कहीं वोह इन्कार तो नहीं करता।" ۞ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त पाउं पर दुर्रा मार कर नफ़्स से पूछते : "आज तू ने क्या अ़मल किया?"[1]

(4) **अपने आप को बेबाक और जरी होने से बचाइये :** कि येह चीज़ बन्दे को तकब्बुर व सरकशी पर मजबूर कर देती है और बन्दा कभी भी अपना मुहासबा नहीं कर पाता। उ़मूमन दीन का इ़ल्म न होना बेबाक और जरी होने पर उभारता है लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि उ़लमाए अह्ले सुन्नत व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम से राबित़े में रहे, हर मुआ़मले में उन से शरई रहनुमाई ह़ासिल करे, दीनी उ़लूम ह़ासिल करने के लिये दीनी कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करे। इस्लामी अ़क़ाइद, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 348, 349

www.dawateislami.net

रोज़ मर्रा के कसीर मुआ़मलात के मुख़्तलिफ़ मसाइल जानने के लिये **"बहारे शरीअ़त"** का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(5) **ह़िसाबे क़ियामत को याद कीजिये :** कि आज अगर मैं ने दुन्या में अपना मुह़ासबा कर के नेक आ'माल करने और बुरे आ'माल से बचने की कोशिश न की तो कल बरोज़े क़ियामत बारगाहे इलाही में कैसे ह़िसाब दूंगा ? अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अपने नफ़्स का मुह़ासबा करो इस से पहले कि तुम्हारा ह़िसाब लिया जाए और वज़्न किये जाने से पहले अपने अ़मल का ख़ुद वज़्न करो और बहुत बड़ी पेशी के लिये तय्यार हो जाओ।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "दुन्या में नफ़्स का मुह़ासबा करने वालों का ह़िसाब आख़िरत में आसान होगा जब कि मुह़ासबा न करने वालों का ह़िसाब बरोज़े क़ियामत सख़्त होगा।"(2)

(6) **हर काम के करने से क़ब्ल ग़ौर कीजिये :** कि येह अच्छे और बुरे अ़मल को परखने के लिये एक बेहतरीन मुह़ासबा है, एक शख़्स ने रसूले अकरम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि मुझे नसीह़त फ़रमाइये तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब किसी काम का इरादा करो तो उस के अन्जाम में ग़ौरो फ़िक्र कर लो, अगर अन्जाम अच्छा हो तो उसे कर लो और अगर बुरा हो तो न करो।"(3)

(7) **मुह़ासबए नफ़्स के लिये वक़्त मुक़र्रर कर लीजिये :** मुह़ासबए नफ़्स की आ़दत बनाने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह भी है कि इस के लिये वक़्त मुक़र्रर कर लिया जाए, क्यूंकि जिस काम के लिये कोई वक़्त मुक़र्रर कर लिया जाए तो उसे करने में आसानी हो जाती है।

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 321
2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 349
3 .....الزھد لابن المبارک، باب التخصیص علی طاعۃ اللہ، ص ۱۴، حدیث: ۴۱۔

www.dawateislami.net

(8) **हर सुब्ह़ और रात मुह़ासबए नफ़्स कीजिये :** सुब्ह़ इस त़रह़ मुह़ासबा कीजिये : "ऐ नफ़्स ! याद रख मेरी तमाम जम्अ़ पूंजी येही ज़िन्दगी है अगर येह ज़ाएअ़ हो गई तो मेरा तमाम माल ज़ाएअ़ हो जाएगा और मुझे उख़रवी तिजारत और इस के नफ़्अ़ से मह़रूम होना पड़ेगा, ऐ नफ़्स ! तू येह समझ कि तुझे मौत आ गई थी लेकिन तुझे दोबारा दुन्या में भेज दिया गया है लिहाज़ा इसे ग़नीमत जान और आज किसी गुनाह में मश्ग़ूल न होना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में गुज़ारना ।" रात को सोने से क़ब्ल दिन भर किये जाने वाले तमाम आ'माल पर ग़ौरो फ़िक्र कीजिये कि आज मैं ने कौन कौन से नेक आ'माल किये ? नीज़ नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर कौन कौन से गुनाह किये ? फिर नेक आ'माल में कमी हो तो नफ़्स से इस बात का अ़ह्द लीजिये कि अब इन नेक आ'माल में इज़ाफ़ा करूंगा, इसी त़रह़ अगर गुनाह किये हैं तो उन से सच्ची पक्की तौबा कीजिये, हो सके तो सलातुत्तौबा भी अदा कीजिये, फिर नफ़्स से इस बात का अ़ह्द लीजिये कि आयिन्दा इन गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा ।

(9) **मुह़ासबा करने के फ़वाइद, न करने के नुक़्सानात पर नज़र रखिये :** अपना यूं मदनी ज़ेह्न बनाइये कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ से कुछ पोशीदा नहीं, अ़न क़रीब मुझ से ह़िसाब होगा, मुझे तमाम ख़यालात व लम्ह़ात का भी ह़िसाब देना है, बेहतर येही है कि मैं अपनी हर सांस व ह़रकत और हर लह़्ज़ा व लम्ह़ा नफ़्स पर कड़ी नज़र रखूं क्यूंकि जिस ने ह़िसाबो किताब से पहले ख़ुद अपना मुह़ासबा कर लिया बरोज़े क़ियामत उस का ह़िसाब आसान होगा और सुवाल के वक़्त वोह जवाब दे सकेगा नीज़ उस का अन्जाम व ठिकाना भी अच्छा होगा और जो आदमी अपना मुह़ासबा नहीं करता उसे ह़श्र के मैदान में ज़ियादा देर रुकना पड़ सकता है नीज़ उस की बुराइयां उसे ग़ज़ब व रुस्वाई में मुब्तला कर देंगी ।

www.dawateislami.net

(10) **अच्छी बातों की सोच और बुरी बातों पर नदामत इख़्तियार करें :** कि इस त़रह़ अच्छी बातों पर अ़मल की तरग़ीब और बुरी बातों को छोड़ने की तौफ़ीक़ मिलती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "भलाई में ग़ौरो फ़िक्र करना इस पर अ़मल करने की दा'वत देता है और बुराई पर नादिम होना बुराई छोड़ने पर उभारता है।"(1)

(11) **मुशाहदात से इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये :** दिन भर हमारी नज़रों से कई मनाज़िर गुज़रते हैं, हम कई मुशाहदात करते हैं, अगर इन मुशाहदात से इ़ब्रत ह़ासिल करने का ज़ेहन बन जाए तो मुह़ासबा करने में काफ़ी आसानी हो जाएगी। मसलन कोई ह़ादिसा देख कर येह सोचें कि ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर ह़ादिसा मेरे साथ पेश आ जाता तो मेरा क्या बनता ? क्या मैं ने क़ब्र में जाने की तय्यारी कर ली थी ? क्या मैं ने अपने आप को ह़िसाबो किताब के लिये तय्यार कर लिया था ? ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी गुफ़्तगू में अक्सर एक शे'र से मिसाल दिया करते थे जिस का तर्जमा यूं है कि "जब इन्सान ग़ौरो फ़िक्र करता है तो उसे हर शै से इ़ब्रत ह़ासिल होती है।"(2)

(12) **मुह़ासबे की आ़दत बनाने के लिये मश्क़ कीजिये :** मश्क़ का मत़लब है एक काम को बार बार करना और जब किसी काम को बार बार किया जाता है तो वोह क़रार पकड़ जाता है, उस पर इस्तिक़ामत नसीब हो जाती है। कभी कभार अ़लाह़दगी में आंखें बन्द कर के अपने रोज़ मर्रह के मा'मूलात के मुह़ासबे की यूं मश्क़ कीजिये : "भूले से या जान बूझ कर सादिर होने वाले गुनाहों को याद कीजिये कि कल सुब्ह़ से ले कर अब तक जिस अन्दाज़ से मैं अपना वक़्त गुज़ार चुका हूं, क्या येह अन्दाज़ एक

---

(1).....इह़याउल उ़लूम, 5 / 412
(2).....इह़याउल उ़लूम, 5 / 410

मुसलमान को ज़ेब देता है ? अफ़्सोस ! ۞ नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा करने में सुस्ती की ۞ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत दाढ़ी भी मुन्डाई ۞ वालिदैन की बे अदबी की, उन के साथ बद तमीज़ी से पेश आया ۞ दिन भर बद निगाही की ۞ झूट, धोका देही और ख़ियानत कर के माल कमाया ۞ माल कमाने में इतना मसरूफ़ रहा कि दीगर नमाज़ों का भी ख़याल न रहा ۞ आवारा दोस्तों की मजलिस में बैठ कर ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, बद गुमानी जैसे बातिनी अमराज़ का शिकार हुवा ۞ फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे भी सुने ۞ अल ग़रज़ यूं सारा वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी में गुज़ार दिया। ऐ नादान ! तू कब तक इसी मन्हूस त़र्ज़े ज़िन्दगी को अपनाए रखेगा ? क्या रोज़ाना यूंही तेरे नामए आ'माल में गुनाहों की ता'दाद बढ़ती रहेगी ? क्या तुझे नेकियों की बिल्कुल ह़ाजत नहीं ? क्या तुझ में दोज़ख़ के शदीद तरीन अ़ज़ाबात बरदाश्त करने की हिम्मत व त़ाक़त है ? क्या तू जन्नत से मह़रूमी का दुख बरदाश्त कर पाएगा ? याद रख ! अगर अब भी तू ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार न हुवा तो अचानक मौत की सख़्तियां तुझे झन्झोड़ कर रख देंगी, लेकिन अफ़्सोस ! उस वक़्त बहुत देर हो चुकी होगी, पछताने के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा, लिहाज़ा अपनी इस क़ीमती ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और मोमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में लग जा, तुझे दुन्या व आख़िरत की भलाइयां नसीब होंगी।

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो.....फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾7﴿...मुराक़बा करना

मुराक़बे की ता'रीफ़

मुराक़बे के लुग़वी मा'ना निगरानी करना, नज़र रखना, देख भाल करना के हैं, इस का ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का लिह़ाज़ करना और उस की त़रफ़ पूरी त़रह़ मुतवज्जेह होना है और जब बन्दे को इस बात का इल्म (मा'रिफ़त) हो जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दिल की बातों पर मुत्त़लअ़ है, पोशीदा बातों को जानता है, बन्दों के आ'माल को देख रहा है और हर जान के अ़मल से वाक़िफ़ है, उस पर दिल का राज़ इस त़रह़ इयां है जैसे मख़्लूक़ के लिये जिस्म का ज़ाहिरी हिस्सा इयां होता है बल्कि इस से भी ज़ियादा इयां है, जब इस त़रह़ की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए और शक यक़ीन में बदल जाए तो इस से पैदा होने वाली कैफ़िय्यत को **मुराक़बे** कहते हैं।[1]

वाज़ेह़ रहे कि उ़र्फ़े आ़म में ख़ल्वत (अ़लाह़दगी) में, या जल्वत (भीड़) में, या किसी बुज़ुर्ग के मज़ार पर सर झुका कर दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा का तसव्वुर जमाना, या फ़िक्रे आख़िरत करना, या ज़िक्रुल्लाह करना, या औरादो वज़ाइफ़ पढ़ना, या मह़ब्बते इलाही में गुम हो जाना, या अपने शैख़ की बात़िनी तवज्जोह के ज़रीए़ क़ल्ब को ज़िन्दा करना, या दिल की सफ़ाई करना, या ब ज़रीअ़ए इस्तिख़ारा रब तआ़ला से किसी मुआ़मले में मुआ़वनत चाहना वग़ैरा। इन तमाम सूरतों को भी **मुराक़बा** से ही ता'बीर किया जाता है लेकिन यहां येह **मुराक़बा** मुराद नहीं है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ رَّقِیْبًا۠﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है।"

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 328

﴾हदीसे मुबारका﴿ मुराक़बे की मुबारक ता'लीम

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक त़वील ह़दीसे पाक मरवी है कि हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और चन्द सुवालात किये, उन में से एक सुवाल येह था कि ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एह़सान क्या है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इबादत करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तुम्हें ज़रूर देख रहा है।''(1) अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम हवाज़िन क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''हुज़ूर नबिये करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का येह फ़रमाना कि अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तुम्हें ज़रूर देख रहा है। मुराक़बे की त़रफ़ इशारा है क्यूंकि **मुराक़बा** बन्दे के उस बात को जानने (और यक़ीन रखने) का नाम है कि रब तआ़ला उसे देख रहा है।''(2)

मुराक़बे का हुक्म

''**मुराक़बा**'' या'नी इस बात का इ़ल्म और यक़ीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है हर मुसलमान पर ज़रूरी है और येह तमाम नेकियों की अस्ल है, मुराक़बे के बिग़ैर किसी अ़मल में इख़्लास नहीं हो सकता, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि अफ़्ज़ल इबादत क्या है ? तो इरशाद फ़रमाया : **مُرَاقَبَةُ الْحَقِّ عَلٰى دَوَامِ الْاَوْقَات** या'नी हर वक़्त **मुराक़बा** या'नी इस बात का इ़ल्म और यक़ीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है।''(3)

---

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب سوال جبریل۔۔۔الخ، ۱/ ۳۱، حدیث: ۵۰ ملتقطاً۔

2 ......الرسالة القشيرية، باب المراقبة، ۲۲۵۔

3 ......الرسالة القشيرية، باب المراقبة، ص ۲۲۶۔

www.dawateislami.net

7 हिकायत

मुराक़बा करने वाला शागिर्द

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बहुत से शागिर्द थे, वोह उन तमाम शागिर्दों में से एक शागिर्द के साथ बहुत इम्तियाज़ी सुलूक करते और उस पर ज़ियादा तवज्जोह दिया करते थे। जब उन से एक ही शागिर्द के साथ इस इम्तियाज़ी सुलूक की वज्ह दरयाफ़्त की गई तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं अभी तुम लोगों पर ज़ाहिर करता हूं कि मैं इस शागिर्द पर ज़ियादा तवज्जोह और इस के साथ इम्तियाज़ी सुलूक क्यूं करता हूं। फिर इन्हों ने उस शागिर्द समेत दीगर तमाम शागिर्दों को बुलाया और सब को एक एक परिन्दा दे कर हुक्म दिया कि इस परिन्दे को ले जा कर ऐसी जगह ज़ब्ह कर के लाओ जहां तुम्हें कोई न देख रहा हो। तमाम शागिर्द चले गए और जब वापस आए तो उस एक शागिर्द के इलावा सब ने अपने परिन्दे ज़ब्ह किये हुए थे। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस शागिर्द से पूछा कि "तुम ने अपना परिन्दा क्यूं ज़ब्ह न किया ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : "आ़ली जाह ! आप ने फ़रमाया था कि येह परिन्दा ऐसी जगह ज़ब्ह करना जहां कोई न देख रहा हो, मुझे कोई भी ऐसी जगह नहीं मिली जहां कोई न देख रहा हो।" (क्यूंकि मैं जहां भी गया वहां मेरा रब मुझे देख रहा था।) इस **मुराक़बा** करने वाले शागिर्द का येह आ़लीशान जवाब सुन कर उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इम्तियाज़ी सुलूक और ज़ियादा तवज्जोह के बारे में पूछने वालों से इरशाद फ़रमाया : "येह वज्ह है जिस के सबब मैं इस पर ज़ियादा तवज्जोह करता और इस के साथ इम्तियाज़ी सुलूक करता हूं।"(1)

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب المراقبة، ص ٢٢٦-

www.dawateislami.net

मुराक़बा करने के पांच (5) त़रीके़

(1) **मुराक़बे की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** इस सिलसिले में अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی की किताब "रिसालए क़ुशैरिय्या" और हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِی की माया नाज़ किताब "इह़याउल उ़लूम," जिल्द पन्जुम का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(2) **मुराक़बे के फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये :** कि मुराक़बा तमाम नेकियों की अस्ल है, मुराक़बे के बिग़ैर किसी अ़मल में इख़्लास पैदा नहीं हो सकता, **मुराक़बा** तमाम बुराइयों से बचाने में मुआ़विन है, **मुराक़बा** नेक आ'माल में रग़बत को बढ़ाता है, **मुराक़बा** दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा को पैदा करता है, **मुराक़बा** ज़ुल्म से बचाता है, **मुराक़बे** की ता'लीम ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाई है, **मुराक़बा** करना बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का मुबारक त़रीक़ा है। वग़ैरा वग़ैरा

(3) **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है" नुमायां जगह पर लिख कर लगा दीजिये :** घर, दुकान, ऑफ़िस वग़ैरा में ऐसी जगह जहां हर वक़्त या अक्सर नज़र पड़ती है वहां येह जुम्ला लिख कर लगा देने से **मुराक़बा** करने में आसानी पैदा होगी। अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखा गया है कि आप बसा अवक़ात अपने सीने पर ऐसा कार्ड आवेज़ां फ़रमाते हैं जिस पर वाज़ेह़ और जली (या'नी बड़े) हुरूफ़ में लिखा होता है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है।"

(4) **अपने बच्चों को मुराक़बे की तरबियत दीजिये :** उन्हें येह सिखाइये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है। बचपन की तरबियत पूरी ज़िन्दगी असर करेगी और जब वोह बच्चा अह़कामे शरइय्या का मुकल्लफ़ होगा तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **मुराक़बे** की येह तरबियत उसे नेक आ'माल के बजा लाने और गुनाहों से बचने में बहुत मुआ़विन साबित होगी।

(5) **कोई भी काम करने से पहले एक मिनट मुराक़बा कीजिये :** कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है, अगर इस में उख़रवी फ़ाएदा हो तो बजा लाए वरना तर्क कर दे, यूं **मुराक़बे** की आ़दत भी बनेगी और नेक आ'माल बजा लाने, गुनाहों से बचने में आसानी भी होगी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿...मुजाहदा करना

मुजाहदे की ता'रीफ़

मुजाहदा जहदुन से निकला है जिस का मा'ना है कोशिश करना, **मुजाहदे** का लुग़वी मा'ना दुश्मन से लड़ना, पूरी त़ाक़त लगा देना, पूरी कोशिश करना और जिहाद करना है । जब कि नफ़्स को उन ग़लत़ कामों से छुड़ाना जिन का वोह आ़दी हो चुका है और आ़म त़ौर पर उसे ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ कामों की तरग़ीब देना या जब मुह़ासबए नफ़्स से येह मा'लूम हो जाए उस ने गुनाह का इर्तिकाब किया है तो उसे उस गुनाह पर कोई सज़ा देना **मुजाहदा** कहलाता है ।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَاؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ۠(۶۹)﴾ (پ ۲۱، العنکبوت: ۶۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताज़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب इस आयते मुबारका के ज़िम्न में इरशाद फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स ने अपने ज़ाहिर को मुजाहदे के साथ मुज़य्यन किया **अल्लाह**

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 359

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ उस के बातिन को मुशाहदे के साथ हसीन बना देता है।[1]

«हदीसे मुबारका» मुजाहदए नफ़्स करने वाले सहाबी

हज़रते सय्यिदुना तलहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन एक शख़्स ज़ाइद कपड़े उतार कर बाहर निकला और गर्म रेत पर ख़ूब लोट कर ख़ुद को मुख़ातब कर के कहने लगा : "ऐ रात के मुर्दार और दिन के बेकार ! येह ज़ाएक़ा चख, क्यूंकि जहन्नम की आग इस से भी ज़ियादा गर्म है।" इस दौरान अचानक उस की निगाह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब गई कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दरख़्त के साए में तशरीफ़ फ़रमा हैं। वोह ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : "मेरा नफ़्स मुझ पर ग़ालिब हो गया है।" रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुनो ! तुम्हारे लिये आस्मानी दरवाज़े खोल दिये गए हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : "अपने भाई से तोशए आख़िरत लो।" एक शख़्स ने कहा : "ऐ फ़ुलां ! मेरे लिये दुआ करो।" रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन सब के लिये दुआ करो।" चुनान्चे, उस ने यूं दुआ मांगी : "اَللّٰھُمَّ اجْعَلِ التَّقْوٰی زَادَھُمْ وَاجْمَعْ عَلَی الْھُدٰی اَمْرَھُمْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन सब का ज़ादे राह तक़्वा बना दे और इन सब के मुआमले को हिदायत पर जम्अ फ़रमा।" फिर रहमते आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स के लिये दुआ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को राहे रास्त पर साबित रख।" उस शख़्स ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा ठिकाना जन्नत बना दे।"[2]

---

1 .....इह्याउल उलूम, 5 / 359, الرسالة القشيرية، باب المجاهده، ص ۱۳۵-

2 .....جامع الاحادیث، مسند طلحه بن عبید الله، ۹/ ۹، حدیث: ۸۹۱۷-

www.dawateislami.net

मुजाहदे का हुक्म

हर मुसलमान को चाहिये कि मुजाहदए नफ़्स करे कि येह अ़मल नजात का बाइ़स है, अगर नफ़्स मुह़ासबे के बा वुजूद **हुक़ूक़ुल्लाह** में कोताही और गुनाह करने से बाज़ न आए तो उसे खुली छुट्टी नहीं देनी चाहिये क्यूंकि इस त़रह़ उस के लिये गुनाह करना आसान हो जाता है और नफ़्स को गुनाहों की लत पड़ जाती है, फिर गुनाहों से बचना मुश्किल हो जाता है और येह चीज़ हलाकत का सबब बन जाती है लिहाज़ा नफ़्स को ख़बरदार करते रहना चाहिये। मसलन आदमी जब नफ़्सानी ख़्वाहिश के सबब कोई मुश्तबा लुक़्मा खा ले तो नफ़्स को भूका रख कर सज़ा दे और अगर किसी ग़ैर मह़रम को देख ले तो आंख को येह सज़ा दे कि किसी चीज़ की त़रफ़ न देखे। इसी त़रह़ जिस्म के हर उ़ज़्व को कोताही करने पर ख़्वाहिशात की तक्मील से रोक कर सज़ा दे, राहे आख़िरत के मुसाफ़िरों की येही आ़दत है।(1)

8 हिकायत सुस्ती दिलाने पर नफ़्स को अनोखी सज़ा

सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی बयान करते हैं कि एक बार शैख़ इब्ने कुरैबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि रात का वक़्त था, मुझे ग़ुस्ल की ज़रूरत पेश आई तो मैं ने इरादा किया कि उसी वक़्त ग़ुस्ल कर लूं मगर सख़्त सर्दी के सबब नफ़्स ने सुस्ती दिलाई और मश्वरा दिया कि "सुब्ह़ तक ग़ुस्ल मुअख़्ख़र कर दो, बा'द में पानी गर्म कर के ग़ुस्ल कर लेना या ह़म्माम चले जाना, ख़्वाह म ख़्वाह ख़ुद को क्यूं मशक़्क़त में डाल रहे हो ?" मैं ने कहा : "बड़ी अ़जीब बात है जो हुक़ूक़ मुझ पर वाजिब थे उस की अदाएगी में पूरी ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी करता रहा तो आज अ़मल करने में जल्दी की बजाए सुस्ती और ताख़ीर कैसे कर सकता हूं ?" लिहाज़ा मैं ने नफ़्स को अनोखी सज़ा देने के

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 353

www.dawateislami.net

लिये क़सम खाई कि मैं उसी लिबास में गुस्ल करूंगा नीज़ उसे उतार कर निचोडूंगा भी नहीं बल्कि बदन ही पर खुश्क करूंगा।[1]

मुजाहदा करने और इस का आदी बनने के छ ﴾6﴿ त़रीक़े

(1) **मुजाहदा करने के फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये :** कि मुजाहदा या'नी ग़लती करने पर नफ़्स को सज़ा देना गुनाहों से बचने में मुआ़विन है कि एक बार नफ़्स को सज़ा मिलेगी तो दोबारा गुनाह में मुब्तला होने से पहले वोह ज़रूर सोचेगा, मुजाहदा करने से बन्दा अपने आप को छोटे बड़े तमाम गुनाहों से बचा सकता है, ज़ुल्मो सितम से बच सकता है, दिल आज़ारी से बच सकता है, मुसलमानों की ह़क़ तलफ़ी से बच सकता है, मुजाहदा करने से नफ़्स बेबाक और जरी होने से बच जाता है, मुजाहदा करने से नफ़्स कन्ट्रोल में रहता है, मुजाहदा करने से नेकियों में इज़ाफ़ा होता है, कई ऐसे बड़े बड़े नेक काम जो पहले बन्दा नहीं कर सकता था मुजाहदा करने के बा'द उन नेक कामों को बजा लाना बहुत आसान हो जाता है, मुजाहदा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का सबब है, मुजाहदा आख़िरत की मन्ज़िलों को आसान करता है, मुजाहदा मग़फ़िरत का सबब और जन्नत में ले जाने वाला काम है। वग़ैरा वग़ैरा

(2) **मुजाहदा करने वाले बुज़ुर्गों के वाक़िआत का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस सिलसिले में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "इह़याउल उ़लूम," जिल्द 5, सफ़ह़ा 354 ता 363 तक मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **ज़ाहिरी और बात़िनी गुनाहों की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** क्यूंकि गुनाहों की मा'लूमात न होने की सूरत में नफ़्स को किसी

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 354

www.dawateislami.net

गुनाह पर सज़ा देना बहुत दुश्वार है, इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ इन कुतुब का मुताअ़ला बहुत मुफ़ीद है : इह्याउल उ़लूम, जि 3, बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल। वग़ैरा

(4) **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये :** कि इस से येह ज़ाहिर होगा कि आज कौन कौन से नेक आ'माल किये हैं, किन में सुस्ती हुई और नफ़्सो शैतान ने कौन कौन से गुनाहों में मुब्तला किया, फिर उन गुनाहों पर नफ़्स को सज़ा दे और आयिन्दा न करने का अ़ह्द ले, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ नेकियों पर मुआ़वनत में ख़ूब मदद मिलेगी।

(5) **मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये :** तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तह़्त मदनी क़ाफ़िलों में अ़मली तौर पर मुजाहदा करवाया जाता है कि वोह नफ़्स जो पहले फ़राइज़ो वाजिबात की कोताही में मुब्तला था मदनी क़ाफ़िलों में इस नफ़्स को फ़राइज़ो वाजिबात के साथ सुननो नवाफ़िल भी अदा करने का अ़मली तौर पर जज़्बा मिलता है। नमाज़े तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन और सलातुत्तौबा की सआ़दत नसीब होती है, वोह नफ़्स जो पहले मस्जिद जाने से कतराता था अब उसे दिन रात मस्जिद में ही गुज़ारने होते हैं, जो नफ़्स इल्मे दीन से घबराता था अब उसे मुख़्तलिफ़ अवक़ात में इल्मे दीन ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिलता है। वग़ैरा वग़ैरा

(6) **मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत कीजिये :** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वक़्तन फ़ वक़्तन मदनी मुज़ाकरे फ़रमाते ही रहते हैं जिन में आप लोगों के मुख़्तलिफ़ सुवालात के इल्मी व

इस्लाही जवाबात अता फ़रमाते हैं, नफ़्सो शैतान की हीला बाज़ियों से आगाह फ़रमाते और इन से बचने के तरीक़े इरशाद फ़रमाते हैं, मुजाहदए नफ़्स करवाते हैं, मदनी ज़ेहन बनाते हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हज़ारों ऐसे नौजवान जो पहले नफ़्सो शैतान के चन्गुल में फंसे हुए थे, तरह तरह के गुनाहों में मुब्तला थे, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत की बरकत से मुजाहदए नफ़्स कर के कसीर गुनाहों से बचने में कामयाब हो गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी मुज़ाकरे तहरीरी तौर पर रसाइल की सूरत में, ऑडियो वीडियो सीडीज़ की सूरत में मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन भी तलब किये जा सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9)...क़नाअत

क़नाअत की ता'रीफ़

❁ क़नाअत का लुग़वी मा'ना क़िस्मत पर राज़ी रहना है और सूफ़िया की इस्तिलाह में रोज़ मर्रह इस्ति'माल होने वाली चीज़ों के न होने पर भी राज़ी रहना क़नाअत है।(1) ❁ हज़रते मुहम्मद बिन अली तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़नाअत येह है कि इन्सान की क़िस्मत में जो रिज़्क़ लिखा है उस पर उस का नफ़्स राज़ी रहे।"(2) ❁ अगर तंग दस्ती होने और हाजत से कम होने के बा वुजूद सब्र किया जाए तो उसे भी **क़नाअत** कहते हैं।(3) ❁ **क़नाअत** की तफ़्सीली ता'रीफ़ यूं है : "हर वोह शख़्स जिस के पास माल न हो और उसे माल की ज़रूरत हो और उस की हालत येह हो कि माल में रग़बत की वज्ह से उस के नज़्दीक माल का होना

(1)......التعریفات للجرجانی، ص ۱۲۶۔

(2)......الرسالۃ القشیریۃ، باب القناعۃ، ص ۱۹۷۔

(3).....इह्याउल उ़लूम, 4 / 200

www.dawateislami.net

न होने की निस्बत ज़ियादा पसन्दीदा हो लेकिन येह रग़बत इस ह़द तक न पहुंची हो कि हुसूले माल के लिये भाग दौड़ करे बल्कि अगर ब आसानी ह़ासिल हो तो ख़ुशी से ले ले और अगर ह़ासिल करने के लिये मेह़नत करनी पड़े तो छोड़ दे इस ह़ालत को **क़नाअ़त** और ऐसे शख़्स को क़ानेअ़ या'नी **क़नाअ़त** करने वाले के नाम से मौसूम किया जाता है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿۴۸﴾﴾ (پ۲۷، النجم:۴۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और येह कि उसी ने ग़ना दी और **क़नाअ़त** दी।"

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी अमीरों को ग़ना, फ़क़ीरों को सब्रो क़नाअ़त बख़्शी या अपने मह़बूबों का दिल ग़नी बनाया और ज़ाहिरी **क़नाअ़त** अ़त़ा फ़रमाई, बा'ज़ अमीरों को ग़ना के साथ **क़नाअ़त** भी दी, हवस से बचाया।"[2]

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ क़नाअ़त पसन्द रब का मह़बूब है

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ परहेज़गार, क़नाअ़त पसन्द और गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाता है।"[3]

क़नाअ़त का हुक्म

क़नाअ़त हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 563 माख़ूज़न।
2.....नूरुल इरफ़ान, पारह 27, अन्नज्म, तह़्तुल आयत : 48
3.....مسلم، کتاب الزھدوالرقائق، ص ۱۵۸۵، حدیث:۲۹۶۵۔

www.dawateislami.net

सुन्नत, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मुबारक सौग़ात है, हर मुसलमान को चाहिये कि इस सौग़ात को ह़ासिल करे, **क़नाअ़त** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बनने, उस की रिज़ा पाने, क़ब्रो ह़श्र में आसानी फ़राहम करने और जन्नत में ले जाने वाला काम है।

9 हिकायत रोटी के टुकड़े के सबब क़नाअ़त इख़्तियार कर ली

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ख़ुरासान के मालदार लोगों में से थे। एक दिन आप अपने मह़ल से बाहर देख रहे थे कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जिस के हाथ में रोटी का एक टुकड़ा था जिसे वोह खा रहा था, खाने के बा'द वोह सो गया। आप ने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : "जब येह शख़्स बेदार हो तो इसे मेरे पास लाना।" चुनान्चे, उस के बेदार होने पर ग़ुलाम उसे आप के पास ले आया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! क्या रोटी खाते वक़्त तुम भूके थे ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" पूछा : "क्या उस रोटी से तुम सैर हो गए ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" आप ने फिर सुवाल किया : "रोटी खाने के बा'द तुम्हें अच्छी त़रह़ नींद आई ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" उस की येह बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने दिल में सोचा : "जब एक रोटी से भी गुज़ारा हो सकता है तो फिर मैं इतनी दुन्या ले कर क्या करूं ?"(1)

क़नाअ़त का ज़ेह्न बनाने और इसे इख़्तियार करने के आठ ﴿8﴾ त़रीक़े

(1) **क़नाअ़त के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** क़नाअ़त के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल छ रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिये : ۞ उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत ह़ासिल हुई उस की रोज़ी ब क़दरे किफ़ायत है और वोह इस पर **क़नाअ़त** करता है।

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 591

❁ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा बन्दा वोह फ़क़ीर है जो अपनी रोज़ी पर **क़नाअ़त** इख़्तियार करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी रहे। ❁ क़ियामत के दिन हर शख़्स चाहे अमीर हो या ग़रीब इस बात की तमन्ना करेगा कि उसे दुन्या में सिर्फ़ ब क़दरे किफ़ायत रोज़ी दी जाती। ❁ कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुन्तख़ब और चुने हुए लोगों को त़लब फ़रमाएगा और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ पर **क़नाअ़त** करने और उस की तक़्दीर पर राज़ी रहने वाले होंगे। ❁ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आले मुह़म्मद के लिये ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ (या'नी क़नाअ़त) की दुआ़ फ़रमाई।[1] ❁ **क़नाअ़त** ऐसा ख़ज़ाना है जो फ़ना नहीं होता।[2]

(2) **क़नाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** ❁ अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि मोह़ताज लोग मुर्दा हैं सिवाए उस शख़्स के जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़नाअ़त की इ़ज़्ज़त से ज़िन्दा रखे। ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं कि **क़नाअ़त** एक फ़िरिश्ता है जो सिर्फ़ मोमिन के दिल में रहता है। ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मराग़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अ़क़्ल मन्द वोह है जो दुन्यवी उमूर की तदबीर **क़नाअ़त** और लैतो ला'ल से करे और आख़िरत की तदबीर ह़िर्स और जल्दी से करे और दीनी मुआ़मलात की तदबीर इ़ल्म और कोशिश से करे। ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मफ़्क़ूद चीज़ की उम्मीद को तर्क करना और

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 588

2.....الزهد الكبير للبيهقي، فصل في بيان الزهد وانواعه، ص٨٨۔

www.dawateislami.net

मौजूद चीज़ के साथ मालदारी इख़्तियार करना **क़नाअ़त** है। ❁ हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इ़ज़्ज़त और मालदारी दोनों दोस्त की तलाश में निकलीं तो दोनों की **क़नाअ़त** से मुलाक़ात हो गई तो वोह ठहर गईं। ❁ हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि जो शख़्स **क़नाअ़त** इख़्तियार करता है वोह अह्ले ज़माना से आराम पाता है और तमाम लोगों से सबक़त ले जाता है। ❁ हज़रते सय्यिदुना कत्तानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि जो शख़्स हि़र्स को **क़नाअ़त** के बदले में फ़रोख़्त कर दे वोह इ़ज़्ज़त और मुरव्वत के साथ कामयाबी हा़सिल करता है।[1]

(3) **रब तआ़ला पर कामिल यक़ीन रखिये :** दुन्या व आख़िरत में कामयाबी का बुन्यादी उसूल "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल यक़ीन" है, क्यूं कि बे यक़ीनी का एक लम्हा कामयाबी के हुसूल के लिये सालहा साल की जाने वाली मेह़नत पर पानी फेर देता है जब कि बसा अवक़ात सारी ज़िन्दगी नाकाम होने वाले शख़्स को लम्हा भर का यक़ीन कामयाबी से हम कनार करवा देता है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर यक़ीन रखिये क्यूंकि आप के यक़ीन की क़ुव्वत **क़नाअ़त** का जज़्बा बेदार करने में बेह़द मुआ़विन साबित होगी।

(4) **ह़िसाबे क़ियामत से ख़ुद को डराइये :** अगर्चे ज़रूरत व ह़ाजत से ज़ाइद माल कमाना मुबाह़ है लेकिन याद रखिये जिस का माल जितना ज़ियादा होगा बरोज़े क़ियामत उस का ह़िसाब किताब भी उतना ही ज़ियादा होगा, ज़ियादा मालो दौलत वाले को कल बरोज़े क़ियामत दुश्वारी का सामना होगा, जब कि क़लील माल वाले लोग जल्दी जल्दी ह़िसाब किताब से फ़ारिग़ हो जाएंगे, लिहाज़ा ह़िसाबे क़ियामत से ख़ुद को डराइये, इस से भी **क़नाअ़त इख़्तियार** करने में भरपूर मदद मिलेगी।

---

[1] ......الرسالة القشيرية، باب القناعة، ص ۱۹۶ تا ۱۹۸ ملتقطاً

www.dawateislami.net

(5) **क़नाअ़त की दुआ़ कीजिये :** कि दुआ़ मोमिन का हथियार है, दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है, यूं दुआ़ कीजिये : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर नबिये पाक साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक **क़नाअ़त** के सदक़े मुझे भी **क़नाअ़त** की दौलत से माला माल फ़रमा। आमीन

(6) **क़नाअ़त पसन्दों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** कि सोह़बत असर रखती है, उ़मूमन देखा गया है जब बन्दा फ़ुज़ूल ख़र्च और अ़य्याश लोगों की सोह़बत इख़्तियार करता है तो वोह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची जैसी बीमारी में मुब्तला हो जाता है और फिर अपनी अ़य्याशियां पूरी करने के लिये ह़रामो नाजाइज़ त़रीक़े से माल कमाने लग जाता है, जिस से **क़नाअ़त** रुख़्सत हो जाती है, लिहाज़ा **क़नाअ़त** पसन्द लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये कि इस से आप को भी **क़नाअ़त** की दौलत नसीब होगी। **क़नाअ़त** पसन्द इन्सान मुत्तक़ी होता है और मुत्तक़ी की सोह़बत ने'मते इलाही है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "साहि़बे तक़्वा की हम नशीनी बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से सब से बड़ी ने'मत है।"[1]

(7) **मालो दौलत की ह़िर्स का ख़ातिमा कीजिये :** दुन्यवी मालो दौलत की ह़िर्स मोमिन के लिये निहायत ख़त़रनाक है, अगर इस की रोक थाम न की जाए तो बसा अवक़ात येह दुन्यवी बरबादियों के साथ साथ उख़रवी हलाकतों की त़रफ़ भी ले जाती है, लिहाज़ा इसे ख़त्म करने के लिये क़नाअ़त इख़्तियार कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम मारिस्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान है : "जिस त़रह़ क़िसास के ज़रीए़ अपने दुश्मन से इन्तिक़ाम लिया जाता है इसी त़रह़ **क़नाअ़त** इख़्तियार कर के अपनी ह़िर्स से इन्तिक़ाम लो।"[2]

1 ......الانوار القدسية فی آداب الصحبة، ص ۱۹۹-

2 ......تنائج الافکار القدسية، باب القناعة، جزء:۳، ۲/ ۷۷-

www.dawateislami.net

(8) **क़नाअ़त के अज्ज़ा को ह़ासिल कीजिये :** जब इस के अज्ज़ा ह़ासिल हो जाएंगे तो क़नाअ़त भी ख़ुद ब ख़ुद ह़ासिल हो जाएगी। क़नाअ़त तीन चीज़ों से मुरक्कब है : अ़मल, सब्र, इ़ल्म। (1) पहली चीज़ अ़मल है या'नी मईशत में ए'तिदाल और ख़र्च में किफ़ायत इख़्तियार करना। जो शख़्स क़नाअ़त में बुज़ुर्गी चाहता है उसे चाहिये कि कम ख़र्च करे। ह़दीसे पाक में इरशाद है : "اَلتَّدْبِيْرُ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ" या'नी "तदबीर से काम लेना निस्फ़ मईशत है।"(1) (2) दूसरी चीज़ सब्र है कि बन्दा अपने नफ़्स पर सब्र करे और ख़्वाहिशात को कम करे ताकि वोह किसी दूसरे ह़ाल में भी ह़ाजत की वज्ह से परेशान न हो। (3) तीसरी चीज़ इ़ल्म है येह कि वोह इस बात को जान ले कि क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त और सुवाल करने से बचत है जब कि त़मअ़ में ज़िल्लत ही ज़िल्लत है, पस यूं ह़िर्स से जान छुड़ा ले और क़नाअ़त को पा ले।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿...आ़जिज़ी व इन्किसारी

आ़जिज़ी व इन्किसारी की ता'रीफ़

लोगों की त़बीअ़तों और उन के मक़ामो मर्तबे के ए'तिबार से उन के लिये नर्मी का पहलू इख़्तियार करना और अपने आप को ह़क़ीर व कमतर और छोटा ख़याल करना आ़जिज़ी व इन्किसारी कहलाता है।(3)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

---

1 ......فردوس الاخبار، ۱/۳۰۷، حدیث:۲۲۴۰۔

2 ......لباب الاحیاء، ص۲۳۸ ماخوذاً۔

3 ......فیض القدیر، حرف الهمزة، ۱/۵۹۹، تحت الحدیث:۹۲۵ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

﴿اِنَّ الْمُسْلِمِیْنَ وَ الْمُسْلِمٰتِ وَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْقٰنِتِیْنَ وَ الْقٰنِتٰتِ وَ الصّٰدِقِیْنَ وَ الصّٰدِقٰتِ وَ الصّٰبِرِیْنَ وَ الصّٰبِرٰتِ وَ الْخٰشِعِیْنَ وَ الْخٰشِعٰتِ وَ الْمُتَصَدِّقِیْنَ وَ الْمُتَصَدِّقٰتِ وَ الصَّآىٕمِیْنَ وَ الصّٰٓىٕمٰتِ وَ الْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ۝۳۵﴾

(پ۲۲، الاحزاب: ۳۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमां बरदार और फ़रमां बरदारें और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और **आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां** और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

﴾हदीसे मुबारका﴿ आ़जिज़ी करने वाले के लिये बुलन्दी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिये करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।"(1)

आ़जिज़ी व इन्किसारी का हुक्म

अपने आप को तकब्बुर से बचाना और **आ़जिज़ी** व इन्किसारी इख़्तियार करना हर मुसलमान पर लाज़िम है, अलबत्ता दीगर अख़्लाक़ की त़रह़ **आ़जिज़ी** के भी तीन दरजे हैं : (1) अगर **आ़जिज़ी** ऐसी हो जिस में ज़ियादती की त़रफ़ मैलान हो तो उसे तकब्बुर कहते हैं और येह नाजाइज़ो

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة۔۔۔الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص۱۳۹۷، حدیث: ۲۵۸۸۔

www.dawateislami.net

ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला मज़्मूम काम है। (2) अगर **आ़जिज़ी** ऐसी हो जिस में कमी की त़रफ़ मैलान हो तो उसे कमीनगी व ज़िल्लत कहते हैं मसलन किसी आ़लिमे दीन के पास कोई मोची आए और वोह उस के लिये अपनी जगह छोड़ दे और उसे अपनी जगह बिठाए, फिर आगे बढ़ कर उस के जूते सीधे करे और पीछे पीछे दरवाज़े तक जाए तो उस आ़लिम ने ज़िल्लत व रुस्वाई को गले लगाया। येह ना पसन्दीदा बात है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ए'तिदाल पसन्दीदा है या'नी हर ह़क़दार को उस का ह़क़ दिया जाए। इस त़रह़ की आ़जिज़ी अपने साथियों और हम पल्ला लोगों के साथ बेहतर है। आ़म आदमी के लिये आ़लिम की त़रफ़ से तवाज़ोअ़ इसी क़दर है कि जब वोह आ जाए तो खड़े हो कर उस का इस्तिक़्बाल करे, ख़न्दा पेशानी से गुफ़्त्गू करे, उस के सुवाल का जवाब देने में नर्मी बरते, उस की दा'वत क़बूल करे, उस की ज़रूरत पूरी करने की कोशिश करे और ख़ुद को उस से बेहतर न समझे, बल्कि दूसरों की निस्बत अपने बारे में ज़ियादा ख़ौफ़ रखे नीज़ उसे ह़क़ारत की नज़र से देखे न ही छोटा समझे, क्यूंकि इसे अपने अन्जाम की ख़बर नहीं। (3) अगर आ़जिज़ी ऐसी हो कि जिस में मियाना रवी हो या'नी अपने हम पल्ला और कम मर्तबा लोगों के साथ बराबर की **आ़जिज़ी** करे, न तो ख़ुद को ज़िल्लत व कमीनगी वाली जगह पर पेश करे, न ही बुलन्दी की त़रफ़ मैलान हो तो ऐसी **आ़जिज़ी** शरअ़न मह़मूद या'नी क़ाबिले ता'रीफ़, बाइ़से अज्रो सवाब और जन्नत में ले जाने वाला काम है।[1]

10 हिकायत: सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की आ़जिज़ी व इन्किसारी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَسِيْب रात के वक़्त कुछ लिख रहे थे और आप के पास एक मेहमान भी मौजूद था।

1.....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1089 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

जब चराग़ बुझने लगा तो मेहमान ने कहा : "मैं उठ कर चराग़ दुरुस्त कर देता हूं।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मेहमान से ख़िदमत लेना शराफ़त नहीं।" उस ने अ़र्ज़ की : "तो फिर ख़ादिम को बेदार कर दें।" इरशाद फ़रमाया : "नहीं क्यूंकि वोह अभी अभी तो सोया है।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ुद सुराही से तेल निकाल कर चराग़ में डाला। मेहमान ने बड़े तअ़ज्जुब से अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ब ज़ाते ख़ुद क्यूं उठे ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं उठा तब भी उ़मर था और वापस आया हूं तब भी उ़मर ही हूं।"[1]

आ़जिज़ी का ज़ेहन बनाने और अपनाने के ग्यारह ﴾11﴿ त़रीक़े

(1) **आ़जिज़ी के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** ۞ **आ़जिज़ी** करने वाले के लिये फ़िरिश्ते बुलन्दी की दुआ़ करते हैं। ۞ **आ़जिज़ी** करने वाले के लिये ख़ुश ख़बरी है। ۞ **आ़जिज़ी** करने वाले बरोज़े क़ियामत मिम्बरों पर बैठे होंगे। ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे मह़बूब रखता है उसे **आ़जिज़ी** भी अ़त़ा फ़रमाता है : ۞ **आ़जिज़ी** करने वाले को सातवें आस्मान तक बुलन्दी अ़त़ा की जाती है। ۞ **आ़जिज़ी** करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़म फ़रमाता है।[2] मज़ीद फ़ज़ाइल के लिये हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**इह़याउल उ़लूम,**" जिल्द सिवुम, स. 999 से मुत़ालआ़ कीजिये।

(2) **आ़जिज़ी से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** ۞ अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी

1 ......الرسالة القشيرية، باب الخشوع والتواضع، ص ١٨٣۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1001 माख़ूज़न।

इख़्तियार करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की लगाम बुलन्द करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुक़र्रर फ़िरिश्ता कहता है : उठ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाए।" ۞ उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : तुम लोग अफ़्ज़ल इबादत या'नी आ़जिज़ी से ग़ाफ़िल हो।" ۞ सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़ियादा कोशिश और मुजाहदे की ब निस्बत थोड़ी आ़जिज़ी काफ़ी है।" ۞ सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**आ़जिज़ी** येह है कि तुम ह़क़ के सामने झुक जाओ और उस की पैरवी करो और अगर बच्चे या किसी बड़े जाहिल से भी ह़क़ बात सुनो तो उसे क़बूल करो।" ۞ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अस्ल आ़जिज़ी येह है कि तुम दुन्यवी ने'मतों में अपने से कमतर के सामने भी आ़जिज़ी का इज़्हार करो ह़त्ता कि तुम यक़ीन कर लो कि तुम्हें दुन्यवी ए'तिबार से उस पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं।"[1] मज़ीद फ़रामीन के लिये "इह़याउल उ़लूम," जिल्द सिवुम, स. 1002 से मुत़ालआ़ कीजिये।

(3) आ़जिज़ी न करने के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :

۞ ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स को माल, जमाल, लिबास या इ़ल्म दिया गया फिर उस ने उस में आ़जिज़ी इख़्तियार न की तो येह ने'मतें क़ियामत के दिन उस के लिये वबाल होंगी। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "जो बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर शुक्र अदा न करे और न ही आ़जिज़ी करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे से उस का दुन्यवी नफ़्अ़ भी रोक देता है और उस के लिये जहन्नम का एक त़बक़ा खोल देता है, अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे और चाहे तो मुआ़फ़ कर दे। ۞ ह़ज़रते

1.....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1002 मुल्तक़त़न।

सय्यिदुना ज़ियाद नुमैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "ज़ोह्दो तक़्वा अपनाने वाला आ़जिज़ी के बिग़ैर बे फल दरख़्त की त़रह़ है।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली जूज़जानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस शख़्स की हलाकत का इरादा फ़रमाता है उस से तवाज़ोअ़, ख़ैर ख़्वाही और क़नाअ़त को रोक देता है।"[1]

(4) **तकब्बुर के अस्बाब व इलाज की मा'रिफ़त ह़ासिल कीजिये :** क्यूंकि तकब्बुर आ़जिज़ी की ज़िद है, जब तक आप तकब्बुर के अस्बाब की मा'लूमात ह़ासिल कर के उन का इलाज नहीं करेंगे तब तक आप की ज़ात में आ़जिज़ी पैदा नहीं होगी। तकब्बुर की ता'रीफ़, अस्बाब और इलाज जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 352 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात" सफ़्ह़ा 275 और 97 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "तकब्बुर" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(5) **तकब्बुर की अ़लामात से ख़ुद को बचाइये :** कि इस त़रह़ ख़ुद ब ख़ुद आ़जिज़ी पैदा हो जाएगी। तकब्बुर की चन्द अ़लामात येह हैं : ۞ मुंह फुला लेना, तिरछी नज़रों से देखना, सर को एक त़रफ़ झुकाना, ۞ जब तक उस के पीछे चलने वाला कोई न हो वोह न चले। ۞ मुतकब्बिर दूसरों की मुलाक़ात के लिये नहीं जाता। ۞ मुतकब्बिर अपने क़रीब बैठने वाले से नफ़रत करता है। ۞ मुतकब्बिर मरीज़ों और बीमारों के पास बैठने से भागता है। ۞ मुतकब्बिर घर में अपने हाथ से कोई काम नहीं करता। ۞ मुतकब्बिर घर का सौदा ख़ुद नहीं उठाता। ۞ मुतकब्बिर अदना लिबास नहीं पहनता। ۞ मुतकब्बिर अपने ह़ुस्नो जमाल और त़ाक़तो क़ुव्वत पर फ़ख़्र करता है। ۞ मुतकब्बिर अपने इ़ल्म पर भी तकब्बुर करता है।[2] वाज़ेह़ रहे कि येह तकब्बुर की अ़लामात हैं लेकिन जिस में येह

1 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1004 ता 1008 मुल्तक़त़न।
2 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1046 ता 1047 मुल्तक़त़न।

अ़लामात पाई जाएं ज़रूरी नहीं कि वोह मुतकब्बिर भी हो, इस लिये किसी भी मुसलमान की ज़ात में इन अ़लामात के होते हुए उसे मुतकब्बिर समझना या उसे मुतकब्बिर कहना शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है।

(6) **अपनी सलाहिय्यतों के क़सीदे पढ़ने से बचिये :** येह खुद पसन्दी है जो बातिनी बीमारी है, येह नाजाइज़ व ममनूअ़ व गुनाह है, जब बन्दा खुद पसन्दी में मुब्तला हो जाता है तो फिर आ़जिज़ी व इन्किसारी उस से रुख़्सत हो जाती है, लिहाज़ा खुद पसन्दी से अपने आप को बचाइये ताकि आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा हो। खुद पसन्दी की मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 352 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बातिनी बीमारियों की मा'लूमात"** सफ़ह़ा 42 का मुत़ालआ़ कीजिये।

(7) **मुह़ासबए नफ़्स कीजिये :** उ़मूमन बन्दे के सामने जब उस की खूबियां ही बयान हों तो वोह तकब्बुर में मुब्तला हो जाता है और आ़जिज़ी नहीं करता क्यूंकि आ़जिज़ी तो अपनी खूबियों को कम जानने और ख़ामियों को ज़ियादा जानने का नाम है। लिहाज़ा मुह़ासबए नफ़्स करे कि इस त़रह़ उस की ख़ामियां सामने आ जाएंगी और उस के लिये आ़जिज़ी करना आसान हो जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "बन्दा उस वक़्त तक आ़जिज़ी नहीं कर सकता जब तक अपने आप को पहचान न ले।"(1)

(8) **हर मुसलमान को अपने से आ'ला व बरतर जानिये :** जब बन्दा अपने आप को किसी से आ'ला व बरतर जानता है तो तकब्बुर में मुब्तला हो जाता है, आ़जिज़ी इख़्तियार नहीं कर सकता, लिहाज़ा हर मुसलमान को अपने से आ'ला व बरतर जानिये कि इस त़रह़ दिल में आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी

(1).....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1007

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो आ़जिज़ी क्या है ? आ़जिज़ी येह है कि तुम अपने घर से निकलो तो जिस मुसलमान को देखो उसे अपने से अफ़्ज़ल गुमान करो ।"(1)

(9) **ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाइये :** दिल के जज़्बात का इज़्हार ज़बान से होता है इसी लिये ज़बान को दिल का तर्जुमान कहते हैं, येही वज्ह है कि जिन अफ़राद के दिल आ़जिज़ी से भरपूर होते हैं वोह ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हैं या'नी फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बचते हुए फ़क़त काम की गुफ़्तगू ही करते हैं, जब कि आ़जिज़ी से ख़ाली दिल रखने वाला शख़्स सुनने से ज़ियादा दूसरों को सुनाने की कोशिश करता है दर अस्ल येह रवय्या अपनी बरतरी ज़ाहिर करने के लिये इख़्तियार किया जाता है लिहाज़ा अगर आप अपने अन्दर आ़जिज़ी पैदा करना चाहते हैं तो ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाइये ।

(10) **शुक्रिय्या के साथ ग़लती क़बूल कीजिये :** आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा करने में येह बात निहायत ही मददगार है, बन्दा जब अपनी ग़लती को शुक्रिय्या के साथ तस्लीम करता और उस की इस्लाह़ की कोशिश करता है तो उस का नफ़्स खुद ब खुद आ़जिज़ी करने पर मजबूर हो जाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे कभी भी अपनी ख़ामियों का दिफ़ाअ़ नहीं करते बल्कि अपनी ग़लती को क़बूल कर के उस की इस्लाह़ की कोशिश करते हैं शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को भी देखा गया है कि आप आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर हैं, हर मदनी मुज़ाकरा के शुरूअ़ में खुद ए'लान फ़रमाते हैं कि "**अगर भूल करता पाएं तो मेरी इस्लाह़ फ़रमाएं, मुझे आएं बाएं शाएं करता, अपने मौक़िफ़ पर बिला वज्ह अड़ता नहीं बल्कि शुक्रिय्या के साथ अपनी ग़लती को क़बूल करता**

1 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1005

पाएंगे।" हमें भी चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की सीरत पर अ़मल करते हुए ग़लती क़बूल करने की आ़दत बनाएं इस की बरकत से हमारे लिये आ़जिज़ी करना आसान हो जाएगा।

(11) **दूसरों में अच्छाइयां ढूंड कर आ़जिज़ी कीजिये :** तकब्बुर से बचने और आ़जिज़ी इख़्तियार करने का सब से आसान त़रीक़ा येह है कि दूसरों की ज़ात में अच्छाइयां ढूंड कर दिल में आ़जिज़ी पैदा कीजिये, मसलन : ۞ किसी जाहिल को देखे तो दिल में कहे : इस ने जहालत की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की है और मैं ने इल्म होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की है लिहाज़ा मेरे मुक़ाबले में इस का उ़ज़्र ज़ियादा क़ाबिले क़बूल है। ۞ जब किसी आ़लिम को देखे तो यूं कहे : "येह उन बातों का इल्म रखता है जिन का मुझे इल्म नहीं लिहाज़ा मैं किस त़रह़ इस की बराबरी कर सकता हूं !" जब आदमी अपने ख़ातिमे को पेशे नज़र रखेगा तो अपने आप से तकब्बुर दूर करने और आ़जिज़ी पैदा करने पर क़ादिर हो सकेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿...तज़्किरए मौत

तज़्किरए मौत की ता'रीफ़

ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने, सच्ची तौबा करने, रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करने, दुन्या से जान छूटने, क़ुर्बे इलाही के मरातिब पाने, अपने मह़बूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत ह़ासिल करने के लिये मौत को याद करना **तज़्किरए मौत** कहलाता है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

1.....इह़याउल उ़लूम, 3 / 1076

www.dawateislami.net

﴾كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ﴿ (پ۱۷،الانبیاء:۳۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "हर जान को मौत का मज़ा चखना है।"

﴾हदीसे मुबारका﴿ लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत की याद

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) को ज़ियादा याद किया करो।"[1] या'नी मौत को याद कर के लज़्ज़तों को बद मज़ा कर दो ताकि उन की त़रफ़ त़बीअ़त माइल न हो और तुम यक्सूई के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाओ।[2]

तज़्किरए मौत का हुक्म

मौत को याद करने की चार सूरतें हैं : (1) अगर कोई शख़्स दुन्यवी मालो दौलत में मगन हो कर इस के छूट जाने की वज्ह से मौत को याद करता है जिस की वज्ह से वोह मौत की मज़म्मत में मश्ग़ूल हो जाता है और इस त़रह़ मौत को याद करना उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मज़ीद दूर कर देता है तो येह तज़्किरए मौत नाजाइज़ और ममनूअ़ है। अलबत्ता अगर वोह इस लिये मौत को याद करता है ताकि दुन्यवी ने'मतों में उस की दिल चस्पी न रहे और लज़्ज़तें बद मज़ा हो जाएं तो येह तज़्किरए मौत शरअ़न मज़मूम नहीं बल्कि बाइ़से अज्रो सवाब है। (2) अगर कोई शख़्स मौत को इस लिये याद करता है ताकि दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो और यूं उसे सच्ची तौबा नसीब हो जाए तो येह तज़्किरए मौत शरअ़न जाइज़ और बाइ़से अज्रो सवाब है और अगर येह शख़्स मौत को इस ख़ौफ़ की वज्ह से ना पसन्द करता है कि कहीं सच्ची तौबा से पहले या सामाने आख़िरत की तय्यारी से

---

1 ......ابن ماجۃ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد، ۴/۴۹۵، حدیث:۴۲۵۸۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 477

www.dawateislami.net

पहले मौत न आ जाए तो ऐसा करना क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं। (3) अगर कोई शख़्स मौत को इस लिये याद करता है क्यूंकि मौत अपने महबूब रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का वा'दा है और महब्बत करने वाला महबूब से मिलने का वा'दा कभी नहीं भूलता और आ़म तौ़र पर येही होता है कि मौत देर से आती है लिहाज़ा येह शख़्स मौत की आमद को पसन्द करता है ताकि ना फ़रमानी के इस घर से जान छूटे और कुर्बे इलाही के मर्तबे पर फ़ाइज़ हो सके तो येह तज़्किरए मौत भी जाइज़, शरअ़न महमूद या'नी क़ाबिले ता'रीफ़ और बाइसे अज्रो सवाब है।[1] (4) अगर अह़कामे शरइय्या के मुवाफ़िक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला, फ़राइज़ो वाजिबात व सुनन का पाबन्द कोई शख़्स इस लिये मौत को याद करता और इस की तमन्ना करता है कि मौत के वक़्त या क़ब्र में मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब होगी तो येह तज़्किरए मौत भी शरअ़न महमूद या'नी क़ाबिले ता'रीफ़ और बाइसे अज्रो सवाब है।

सकरात में गर रूए मुह़म्मद पे नज़र हो.......हर मौत का झटका भी मुझे फिर तो मज़ा दे

नबी के आ़शिक़ों को मौत तो अनमोल तोहूफ़ा है.....कि उन को क़ब्र में दीदारे शाहे अम्बिया होगा

है तमन्नाए अ़त्तार या रब उन के जल्वों में यूं मौत आए

झूम कर जब गिरे मेरा लाशा थाम लें बढ़ के शाहे मदीना

(5) हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : ''हर ह़ाल में मौत को याद करने में सवाब और फ़ज़ीलत है और येह सवाब और फ़ज़ीलत दुन्या में मगन शख़्स भी मौत को याद कर के पा सकता है इस त़रह़ कि दुन्या से अलग थलग रहे ता कि दुन्यावी ने'मतों में दिल चस्पी न रहे और लज़्ज़तें बद मज़ा हो जाएं क्यूंकि हर वोह लज़्ज़त व ख़्वाहिश जो इन्सान के लिये बद मज़ा हो वोह अस्बाबे नजात में से है।''[2]

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 475 मुलख़्ख़सन।
2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 477

www.dawateislami.net

11 हिकायत मौत की याद

हज़रते सय्यिदुना सालिम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْحَاكِم फ़रमाते हैं : एक मरतबा मुल्के रूम से कुछ क़ासिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْحَسِيب के पास आए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जब तुम लोग किसी को अपना बादशाह बनाते हो तो उस का क्या ह़ाल होता है ?" कहा : जब हम किसी को अपना बादशाह बनाते हैं तो उस के पास एक गोरकुन (या'नी क़ब्र खोदने वाला) आ कर कहता है : "ऐ बादशाह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी इस्लाह़ फ़रमाए ! जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मुझे हुक्म दिया : मेरी क़ब्र इस इस त़रह़ बनाना और मुझे इस त़रह़ दफ़्न करना।" चुनान्चे, क़ब्र तय्यार कर ली गई। फिर उस के पास कफ़न फ़रोश आ कर कहता है : ऐ बादशाह ! अल्लाह तेरी इस्लाह़ फ़रमाए ! जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मरने से क़ब्ल ही अपना कफ़न, ख़ुश्बू और काफ़ूर वग़ैरा ख़रीद लिया फिर कफ़न को ऐसी जगह लटका दिया गया जहां हर वक़्त नज़र पड़ती रहे और मौत की याद आती रहे।" ऐ मुसलमानों के अमीर ! हमारे बादशाह तो इस त़रह़ मौत को याद करते हैं। रूमी क़ासिद की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने फ़रमाया : "देखो ! जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलने की उम्मीद भी नहीं रखता वोह मौत को किस त़रह़ याद करता है, उसे भी मौत की कितनी फ़िक्र है ?" इस वाक़िए के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत ज़ियादा बीमार हो गए और इसी बीमारी की ह़ालत में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन[1]

1.....उ़यूनुल हिकायात, हिस्सए दुवुम, स. 380

www.dawateislami.net

तज़्किरए मौत का ज़ेह्न बनाने और करने के ग्यारह ﴾11﴿ तरीक़े

(1) **मौत से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द रिवायात येह हैं : ۞ अगर जानवर मौत के बारे में वोह कुछ जान लेते जो इन्सान जानता है तो तुम्हें खाने के लिये कोई मोटा जानवर न मिल पाता। ۞ जो दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करे उसे शहीदों के साथ उठाया जाएगा। ۞ मौत मोमिन के लिये तोह़्फ़ा है। ۞ मौत हर मुसलमान के लिये कफ़्फ़ारा है। ۞ मौत को ज़ियादा याद करो कि येह गुनाहों को मिटाती और दुन्या से बे रग़्बत करती है। ۞ जुदाई डालने के लिये मौत ही काफ़ी है। ۞ नसीह़त के लिये मौत ही काफ़ी है। ۞ मौत को ज़ियादा याद करने और इस की ज़ियादा तय्यारी करने वाले लोग अ़क़्ल मन्द हैं।[1]

(2) **मौत से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मौत ने दुन्या को रुस्वा कर के किसी अ़क़्ल मन्द के लिये कोई ख़ुशी न छोड़ी।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मोमिन मौत से बेहतर किसी ग़ाइब चीज़ का इन्तिज़ार नहीं करता, नीज़ फ़रमाया करते कि मेरी मौत की ख़बर किसी को मत देना और मुझे तेज़ तेज़ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ले चलना।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के सामने जब मौत का ज़िक्र किया जाता तो आप के जिस्म का हर ह़िस्सा सुन हो जाता। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَسِيْب रोज़ाना रात के वक़्त उ़लमा को जम्अ़ करते फिर आपस में मिल कर क़ब्रो आख़िरत और मौत के बारे में गुफ़्तगू करते फिर सब यूं रोते गोया उन के सामने जनाज़ा मौजूद है।

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 477 मुलख़्ख़सन।

❁ हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दो चीज़ों ने मुझ से दुन्या की लज़्ज़तें छुड़ा दीं, एक मौत की याद ने और दूसरा बारगाहे इलाही में खड़े होने ने।" ❁ हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मौत को पहचान लेता है उस पर दुन्या की मुसीबतें और ग़म हल्के हो जाते हैं।"(1)

(3) **मौत को अपने सामने समझते हुए याद कीजिये :** इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "मौत को याद करने का फ़ाएदा इस त़रीक़े से पहुंच सकता है कि मौत को अपने सामने समझते हुए याद करे और इस के इलावा हर चीज़ को अपने दिल से निकाल दे जैसे कोई शख़्स ख़त़रनाक जंगल में सफ़र का इरादा करे या समुन्दरी सफ़र का इरादा करे तो बस इसी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है, लिहाज़ा जब मौत की याद का तअ़ल्लुक़ दिल से बराहे रास्त होगा तो इस का असर भी होगा और अ़लामत येह होगी कि दुन्या से दिल इतना टूट चुका होगा कि दुन्या की हर ख़ुशी बे मा'ना हो कर रह जाएगी।"(2)

(4) **मौत की याद पुख़्ता करने वाले अक़्वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** तीन अक़्वाल येह हैं : ❁ हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब तुम मुर्दों को याद करो तो अपने आप को भी उन्ही में शुमार करो।" ❁ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ख़ुश क़िस्मत है वोह शख़्स जो दूसरों से नसीह़त ह़ासिल करे।" ❁ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं : "तुम इस बात में ग़ौरो फ़िक्र क्यूं नहीं करते कि रोज़ाना सुब्ह़ शाम किसी न किसी को बारगाहे इलाही के लिये तय्यार करते रहो और उसे

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 479 ता 480 मुलतक़त़न। 2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 482

www.dawateislami.net

गढ़े में डाल देते हो ह़ालांकि मिट्टी उस का तक्या बन जाती है, दोस्त अह़बाब पीछे रह जाते हैं और अस्बाब ख़त्म हो जाते हैं।"[1]

(5) **जनाज़ों में शिर्कत कीजिये :** येह भी मौत को याद करने और उस की याद को पुख़्ता करने नीज़ आख़िरत की तय्यारी करने में बहुत मुआ़विन है, जब कोई जनाज़ों में शिर्कत करता है तो उसे अपनी मौत याद आ जाती है, उस का दिल नर्म हो जाता है, दिल की सख़्ती दूर हो जाती है, उसे नेकियों से मह़ब्बत और गुनाहों से नफ़रत होने लगती है, वोह येह तसव्वुर करता है कि आज इस शख़्स का जनाज़ा मैं पढ़ रहा हूं कल मेरा जनाज़ा मेरे दोस्त पढ़ रहे होंगे, यूं वोह तौफ़ीक़े इलाही से अपनी आख़िरत की तय्यारी में लग जाता है।

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

(6) **क़ब्रिस्तान जाने की आ़दत बनाइये :** येह अ़मल भी मौत की याद को पुख़्ता करने में बहुत मुफ़ीद है, ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ज़ियारते क़ुबूर के लिये तशरीफ़ ले जाया करते थे, ज़ियारते क़ुबूर से येह मदनी ज़ेहन बनता है कि आज इन लोगों का येह ठिकाना है, कल मेरा भी येही ठिकाना होगा, इन क़ब्रों में से कई ऐसी क़ब्रें होंगी जो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ होंगी और कई जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा, न जाने मेरी क़ब्र जन्नत का बाग़ होगी या जहन्नम का गढ़ा ? यूं वोह मौत की याद और आख़िरत की तय्यारी की त़रफ़ माइल हो जाता है।

(7) **मौत से मुतअ़ल्लिक़ कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** मौत और उस की याद को पुख़्ता करने, फ़िक्रे आख़िरत पैदा

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 483

करने, दुन्यवी लज़्ज़तों को ख़त्म या कम करने, आख़िरत की तय्यारी का मदनी ज़ेहन देने वाली मक्तबतुल मदीना की चन्द मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल के नाम येह हैं : ۞ नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं ۞ जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ۞ दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी ۞ इह़याउल उ़लूम, जिल्द पन्जुम ۞ जहन्नम के ख़त़रात ۞ आईनए इ़ब्रत ۞ क़ब्र में आने वाला दोस्त ۞ तौबा की रिवायात व ह़िकायात ۞ ख़ौफ़े खुदा ۞ क़ब्र खुल गई ۞ मुर्दा बोल उठा ۞ बद नसीब दूल्हा ۞ बुरे ख़ातिमे के अस्बाब ۞ चार सनसनी ख़ेज़ ख़्वाब ۞ क़ब्र की पहली रात ۞ क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात ۞ क़ियामत का इम्तिह़ान ۞ क़ब्र का इम्तिह़ान ۞ मुर्दे के सदमे।

(8) **इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ या मुशाहदा कीजिये :** अगर हम मुआ़शरे, शह्‌र, मुल्क या दीगर मुमालिक पर ग़ौर करें या इन के मुतअ़ल्लिक़ ख़बरें पढ़ें तो हम पर ज़ाहिर होगा कि आए दिन कोई न कोई ऐसा वाक़िआ़ पेश आता ही रहता है जो हमें मौत की याद दिलाता है, रोज़ाना बीसियों एक्सीडन्ट होते हैं, कई लोगों की अम्वात हो जाती हैं, कई लोग मा'ज़ूर हो जाते हैं, क़ुदरती आफ़ात जैसे तूफ़ान, ज़लज़ले और सैलाब वग़ैरा के वाक़िआ़त भी पेश आते ही रहते हैं जिन में बसा अवक़ात हज़ारों लाखों लोगों की जानें चली जाती हैं, येह सब वाक़िआ़त हमें मौत की याद दिलाते हैं। मौत की याद और फ़िक्रे आख़िरत पैदा करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त़्त़ारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के मदनी चैनल पर नश्र किये गए सिलसिले "**इ़ब्रतनाक ख़बरें**" की वीडियोज़ देखना भी बहुत मुफ़ीद है।

(9) **मौत के बा'द पेश आने वाले ह़ालात पर मुश्तमिल कुतुब का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 324 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "152 रह़मत भरी ह़िकायात" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है, जिस में तक़रीबन 92 बुज़ुर्गों के मौत के बा'द पेश आने वाले ह़ालात को बयान किया गया है।

(10) **मौत के मौज़ूअ़ पर होने वाले बयानात सुनिये :** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दर्जे ज़ैल ऑडियो, वीडियो बयानात को सुनना बहुत मुफ़ीद है :

۞ मौत की सख़्तियां ۞ बेकसी की मौत ۞ जवान मौत ۞ अच्छी बुरी मौत ۞ मौत की मन्ज़र कशी ۞ मौत की सख़्ती ۞ मौत का इन्तिज़ार है दुन्या ۞ अम्वात से इब्रत ह़ासिल कीजिये ۞ मौत आ कर रहेगी ۞ मौत से फ़िरार कहां ? ۞ इब्रतनाक मौतें ۞ बादशाहों की मौत ۞ क़ब्र की पहली रात ۞ क़ब्र की तबाहकारियां ۞ क़ब्र की पुकार ۞ ज़मीन खा गई नौजवां कैसे कैसे ? ۞ ढल जाएगी येह जवानी ۞ शिकस्ता खोपड़ी ۞ क़ब्र का सुलूक ۞ मुर्दे की पुकार ۞ अह्ले क़ब्र की सर गुज़श्त ۞ क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र ۞ क़ब्र के शो'ले ۞ क़ब्रों के मनाज़िर ۞ बुरे ख़ातिमे के अस्बाब ۞ मलकुल मौत के नुमाइन्दे ۞ बादशाहों की हड्डियां ۞ मुर्दे के सदमे।

(11) **दुन्या से चले जाने वाले लोगों के अह़वाल को याद कीजिये :** मौत को याद करने का सब से मुफ़ीद त़रीक़ा येह है कि बन्दा इस दुन्या से चले जाने वाले चेहरों, सूरतों और उन के मरने और मिट्टी के नीचे दफ़्नाए जाने को याद करे नीज़ उन के ह़ालात और ओ़ह्दों को याद करे और ग़ौर करे कि किस त़रह़ मिट्टी में उन की ह़सीन सूरतें मल्यामेट हो चुकी हैं,

किस त़रह़ क़ब्रों में उन के अज्ज़ा बिखर चुके हैं, किस त़रह़ उन की औ़रतें बेवा और बच्चे यतीम हो गए, किस त़रह़ उन का माल ख़र्च किया गया और उन की बनाई हुई इमारतें और बसाई हुई मह़फ़िलें बे रौनक़ हो गईं, किस त़रह़ वोह अपनी जवानी पर भरोसा और लह्वो ला'ब में मुब्तला हो कर जल्द आने वाली मौत से ग़ाफ़िल थे, वोह जिन हाथों और पाउं से दुन्या जम्अ़ करने की कोशिशों में लगे हुए थे अब उन के वोही हाथ पाउं और जोड़ अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो चुके हैं, जिस ज़बान के ज़रीए़ वोह गुफ़्त्गू किया करते थे अब उस ज़बान को कीड़े खा चुके हैं, जिन दांतों से वोह हंसा करते थे अब मिट्टी उन के दांतों को खा चुकी है, वोह अपनी मौत से ग़ाफ़िल मरने से पहले सालहा साल की जम्अ़ पूंजी में लगे हुए थे कि ख़बर ही न हुई और मौत आ गई, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत ज़ाहिर हुई और बिग़ैर मोहलत दिये उन की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई। येह सब तसव्वुर करने के बा'द वोह सोचेगा कि मैं भी तो इन के जैसा हूं और मेरी ग़फ़्लत भी इन की ग़फ़्लत जैसी है और अ़न क़रीब मेरा भी वोही अन्जाम होगा जो इन सब का हुवा है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿...हुस्ने ज़न

हुस्ने ज़न की ता'रीफ़

किसी मुसलमान के बारे में अच्छा गुमान रखना "हुस्ने ज़न" कहलाता है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾﴾ (پ۱۸، النور: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्यूं न हुवा जब तुम ने उसे सुना था कि

www.dawateislami.net

मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता और कहते येह खुला बोहतान है।" इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, में है : "मुसलमान को येही हुक्म है कि मुसलमान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी ममनूअ़ है।"(1)

«ह़दीसे मुबारका» मुसलमान के साथ हुस्ने ज़न रखने की हुरमत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को त़वाफ़ करते हुए येह फ़रमाते सुना : "(ऐ का'बा !) तू कितना पाकीज़ा है, तेरी ख़ुश्बू कितनी पाकीज़ा है, तू कितना मुअ़ज़्ज़म है, तेरी हुरमत कितनी ज़ियादा है, लेकिन उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक एक मोमिन, उस के माल, उस के ख़ून, उस के साथ हुस्ने ज़न रखने की हुरमत तेरी हुरमत से भी ज़ियादा है।"(2)

हुस्ने ज़न का हुक्म

मुफ़स्सिरे क़ुरआन सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : "हुस्ने ज़न कभी तो वाजिब होता है जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ अच्छा गुमान रखना और कभी मुस्तह़ब जैसे किसी नेक मोमिन के साथ नेक गुमान करना।"(3) अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब किसी मुसलमान का ह़ाल पोशीदा हो (या'नी उस के नेक व बद होने का इ़ल्म न हो तो) तो उस से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब और उस के बारे में बद गुमानी करना ह़राम है।"(4)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, अन्नूर, तह़्तुल आयत : 12

2.....ابن ماجه، كتاب الفتن، باب حرمة دم المؤمن وماله، ٢/٣١٩، حديث: ٣٩٣٢-

3.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 26, अल हुजुरात, तह़्तुल आयत : 12

4.....الحديقة الندية، ٢/١٢ ملخصا-

www.dawateislami.net

12 हिकायत हुस्ने ज़न की बरकत से शिफ़ा मिल गई

मन्क़ूल है कि एक बार डाकूओं की एक जमाअ़त लूटमार के लिये निकली, इसी दौरान उन्हों ने रात एक मुसाफ़िर ख़ाने में क़ियाम किया और वहां येह ज़ाहिर किया कि हम लोग राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर हैं। मुसाफ़िर ख़ाने का मालिक नेक आदमी था उस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से उन की ख़ूब ख़िदमत की, सुब्ह वोह डाकू किसी त़रफ़ रवाना हो गए और लूटमार कर के शाम को वापस वहीं आ गए। गुज़श्ता शब मुसाफ़िर ख़ाने वाले के जिस लड़के को (उन्हों ने) चलने फिरने से मा'ज़ूर देखा था वोह आज बिला तकल्लुफ़ या'नी बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के चल फिर रहा था ! उन्हों ने तअ़ज्जुब के साथ मुसाफ़िर ख़ाने वाले से पूछा : "क्या येह वोही कल वाला मा'ज़ूर लड़का नहीं ?" उस ने बड़े एह़तिराम से जवाब दिया : "जी हां ! येह वोही है।" पूछा : "येह कैसे सिह़्ह़त याब हो गया ?" जवाब दिया : "येह सब आप जैसे राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों की बरकत है, बात येह है कि आप लोगों ने जो खाया था उस में से कुछ बच गया था, हम ने आप ह़ज़रात का जूठा खाना ब निय्यते शिफ़ा अपने मा'ज़ूर बच्चे को खिलाया और जूठे पानी से उस के बदन पर मालिश की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप जैसे नेक बन्दों के जूठे खाने और पानी की बरकत से हमारे मा'ज़ूर बच्चे को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी।" जब डाकूओं ने येह सुना तो उन की आंखों से आंसू जारी हो गए, रोते हुए कहने लगे : "येह सब आप के **हुस्ने ज़न** का नतीजा है वरना हम तो सख़्त गुनहगार लोग हैं, सुनो हम राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर नहीं डाकू हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस करम नवाज़ी ने हमारे दिलों की दुन्या ज़ेरो ज़बर कर दी, हम आप को गवाह बना कर तौबा करते हैं।" चुनान्चे, उन डाकूओं ने ताइब हो कर नेकी का रास्ता अपना लिया और मरते दम तक तौबा पर साबित क़दम रहे।[1]

---

1 ......كتاب القليوبى، ص ٢٠۔

www.dawateislami.net

हुस्ने ज़न का ज़ेह्न बनाने और हुस्ने ज़न क़ाइम करने के नव ﴾9﴿ तरीक़े

(1) **हुस्ने ज़न के फ़वाइद पेशे नज़र रखिये :** हुस्ने ज़न एक जाइज़ व ह़लाल, बाइसे अज्रो सवाब व जन्नत में ले जाने वाला काम है। ۞ हुस्ने ज़न से एह़तिरामे मुस्लिम पैदा होता है। ۞ हुस्ने ज़न से बद गुमानी दूर हो जाती है। ۞ हुस्ने ज़न से दिली कीना दूर हो जाता है। ۞ हुस्ने ज़न से बुग़्ज़ और ह़सद दूर होता है। ۞ हुस्ने ज़न से दिल में मुसलमानों की मह़ब्बत पैदा होती है। ۞ हुस्ने ज़न से नाजाइज़ दुश्मनी ख़त्म हो जाती है। ۞ हुस्ने ज़न से बदला लेने की चाहत ख़त्म होती है। ۞ हुस्ने ज़न से अ़फ़्वो दर गुज़र की सआ़दत नसीब होती है। ۞ हुस्ने ज़न से सुकूने क़ल्ब नसीब होता है। ۞ हुस्ने ज़न करने से बन्दा ग़ीबत से बच जाता है। ۞ हुस्ने ज़न करने से आपस में मह़ब्बत बढ़ती और नफ़रत ख़त्म होती है। ۞ हुस्ने ज़न करने में मुसलमानों की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ है। ۞ हुस्ने ज़न का सब से बड़ा फ़ाएदा येह है कि इस में कोई नुक़्सान नहीं। चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دامت برکاتهم العالیه फ़रमाते हैं : "हुस्ने ज़न में कोई नुक़्सान नहीं और बदगुमानी में कोई फ़ाएदा नहीं।"(1)

(2) **बद गुमानी की हलाकतों व नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** ۞ बद गुमानी एक नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ۞ बद गुमानी से एह़तिरामे मुस्लिम ख़त्म हो जाता है। ۞ बद गुमानी हुस्ने ज़न की दुश्मन है। ۞ बद गुमानी बद तरीन झूट है। ۞ बद गुमानी से दिली कीना पैदा हो जाता है। ۞ बद गुमानी से बुग़्ज़ और ह़सद पैदा होता

1.....बद गुमानी, स. 42

www.dawateislami.net

है । ❁ बद गुमानी से दिल में मुसलमानों की नफ़रत पैदा होती है । ❁ बद गुमानी से नाजाइज़ दुश्मनी पैदा हो जाती है । ❁ बद गुमानी से बदला लेने की ख़्वाहिश पैदा होती है । ❁ बद गुमानी अ़फ़्वो दर गुज़र की सआ़दत से मह़रूम कर देती है । ❁ जिस ने अपने मुसलमान भाई से बुरा गुमान रखा उस ने अपने रब से बुरा गुमान रखा । ❁ बद गुमानी से सुकूने क़ल्ब रफ़अ़ या'नी ख़त्म हो जाता है । ❁ बद गुमानी करने से बन्दा ग़ीबत में भी मुब्तला हो जाता है । ❁ बद गुमानी करने से आपस में नफ़रत बढ़ती और मह़ब्बत ख़त्म होती है । ❁ बद गुमानी करने में मुसलमानों की इ़ज़्ज़त की पामाली भी है । ❁ बद गुमानी का सब से बड़ा नुक़्सान येह है कि इस में कोई फ़ाएदा नहीं । चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "हुस्ने ज़न में कोई नुक़्सान नहीं और बद गुमानी में कोई फ़ाएदा नहीं ।"(1)

(3) **मुसलमान भाइयों की ख़ूबियों पर नज़र रखिये :** इस से हुस्ने ज़न की दौलत नसीब होगी क्यूंकि जो बन्दा अपने मुसलमान भाइयों की ख़ामियों पर नज़र रखता है वोह उ़मूमन बद गुमानी में मुब्तला हो जाता है, वैसे भी एक ह़क़ीक़ी मुसलमान के लिये ख़ुश नज़र होना सआ़दत मन्दी की बात है कि वोह ह़त्तल मक़्दूर मुसलमान भाइयों की अच्छाइयों पर ही नज़र रखता है ।

ऐ़बों को ढूंडती है ऐ़ब जू की नज़र
जो ख़ुश नज़र हैं वोह हुनरो कमाल देखते हैं

(4) **दिल को वस्वसों से पाक कीजिये :** वस्वसे शैत़ान की त़रफ़ से होते हैं और शैत़ान कभी भी येह नहीं चाहेगा कि कोई मुसलमान

(1).....बद गुमानी, स. 42

अपने दूसरे मुसलमान के बारे में हुस्ने ज़न करे बल्कि इस की येही कोशिश होती है कि मैं किसी त़रह़ उस के दिल में उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ गन्दे ख़यालात और वस्वसे पैदा कर के उसे बद गुमानी में मुब्तला कर दूं जिस के सबब येह दीगर बाति़नी बीमारियों में मुब्तला हो कर अपनी दुन्या व आख़िरत को तबाहो बरबाद कर दे, जब भी किसी मुसलमान की बद गुमानी का वस्वसा पैदा हो तो "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم" पढ़िये।

(5) **अपनी इस्लाह़ की कोशिश जारी रखिये :** जो शख़्स अपनी इस्लाह़ की कोशिश जारी रखता है वोह दीगर मुसलमानों के बारे में बद गुमानी से काम नहीं लेता बल्कि अच्छा गुमान रखता है। अ़रबी मक़ूला है : اِذَا سَاءَ فِعْلُ الْمَرْءِ سَاءَتْ ظُنُوْنُهٗ "या'नी जब किसी के काम बुरे हो जाएं तो उस के गुमान भी बुरे हो जाते हैं।"[1]

(6) **अपने आप को तजस्सुस से बचाइये :** तजस्सुस या'नी मुसलमानों की टोह में लगे रहना भी बद गुमानी की त़रफ़ ले जाने वाली एक सीढ़ी है, जब बन्दा हर वक़्त इस चक्कर में रहे कि कौन क्या कर रहा है तो फिर शैत़ान भी उस के दिल में त़रह़ त़रह़ के बुरे ख़यालात पैदा करता रहता है और वोह बद गुमानी का शिकार हो कर हुस्ने ज़न से हाथ धो बैठता है।

(7) **बद गुमानों की सोह़बत से दूर रहिये :** जब बन्दा ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करता है जो दीगर मुसलमानों के बारे में बद गुमानी से भरपूर कुछ न कुछ इज़्हारे ख़याल करते ही रहते हैं तो उन का असर इस पर भी हो जाता है और फिर येह भी बद गुमानी में मुब्तला हो जाता है, इस से बचने का त़रीक़ा येह है कि किसी से गुफ़्तगू करते हुए तीसरे

1.....बद गुमानी, स. 33

www.dawateislami.net

शख़्स के बारे में कलाम ही न किया जाए या किया भी जाए तो अच्छा कलाम किया जाए, इसी त़रह़ बे फ़ाएदा कलाम या काम को तर्क कर दिया जाए। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "इन्सान के इस्लाम की खूबियों में से है कि जो नफ़्अ़ न दे उसे छोड़ दे।"(1)

(8) **बद गुमानी से बचते हुए हुस्ने ज़न के मवाक़ेअ़ तलाश कीजिये :** चन्द मवाक़ेअ़ येह हैं : ۞ आप की दा'वत में न पहुंचने वाले इस्लामी भाई ने मुलाक़ात होने पर अपना कोई उ़ज़्र पेश किया तो हुस्ने ज़न से काम लेते हुए उस के उ़ज़्र को क़बूल कर लीजिये। ۞ आप ने अपनी औलाद को कोई काम बोला वोह न कर सकी तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि हो सकता है उन के ज़ेहन से निकल गया हो। ۞ किसी को फ़ोन किया और वोह न उठाए तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि हो सकता है वोह कहीं मसरूफ़ हो। ۞ इसी त़रह़ आप के मेसेज का जवाब न आए तो यूं हुस्ने ज़न कीजिये कि हो सकता है अभी तक उन्हों ने मेसेज ही न पढ़ा हो, या पढ़ने के बा'द उन के ज़ेहन से निकल गया हो। ۞ आप निगरान हैं, मा तह़्त न आया या लेट हो गया तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि बस लेट हो गई होगी, या हो सकता है उस के साथ कोई मस्अला पेश आ गया हो, या हो सकता है उस की त़बीअ़त नासाज़ हो। ۞ आप ने किसी को बुलाया उस ने तवज्जोह न दी तो हुस्ने ज़न कर लीजिये कि हो सकता है उस तक आप की आवाज़ पहुंची ही न हो। ۞ आप ने किसी को खाने की दा'वत दी, उस ने क़बूल न की तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि हो सकता है उस ने पहले ही खाना खा लिया हो, या हो सकता है उस का नफ़्ली रोज़ा हो। ۞ दो अफ़राद सरगोशी कर रहे हों तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि हो सकता है

(1) ......ترمذی، کتاب الزھد، باب: ۱۱، ۴/ ۱۴۲، حدیث: ۲۳۲۴-

कोई ज़रूरी गुफ़्तगू कर रहे हों। ۞ किसी ने क़र्ज़ लिया और राबिते में नहीं आ रहा तो हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि हो सकता है कहीं मसरूफ़ होगा। अल ग़रज़ वालिदैन व औलाद, भाई व बहन, ज़ौज व ज़ौजा, सास व बहू, सुसर व दामाद, नन्द व भावज बल्कि तमाम अह्ले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताद व शागिर्द, सेठ व नौकर, ताजिर व गाहक, अफ़्सर व मज़दूर, हाकिम व मह्कूम येह तमाम लोग अपने अपने मुख़्तलिफ़ मुआमलात में हुस्ने ज़न क़ाइम करने की तरकीब बना सकते हैं, वाज़ेह रहे कि बद गुमानी के मवाक़ेअ़ तो बहुत होते हैं क्यूंकि इन में शैत़ान की मुआवनत होती है लेकिन उ़मूमन हुस्ने ज़न के मवाक़ेअ़ बहुत कम नज़र आते हैं, हालांकि बन्दा थोड़ा सा ग़ौर करे तो वोह तमाम मवाक़ेअ़ जहां शैत़ान हम से बद गुमानी करवाता है हुस्ने ज़न से काम लिया जा सकता है, बस कोशिश करना शर्त़ है।

(9) **हुस्ने ज़न की दुआ़ कीजिये :** हुस्ने ज़न अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से एक अ़ज़ीम ने'मत है, हुस्ने ज़न के सबब रह़मते इलाही बन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाती है, लिहाज़ा बारगाहे इलाही में हुस्ने ज़न की दुआ़ यूं कीजिये : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी सोच को पाकीज़ा फ़रमा कर मुझे हुस्ने ज़न की दौलत अ़त़ा फ़रमा, बद गुमानी को मुझ से दूर फ़रमा दे।" आमीन

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿...तौबा

तौबा की ता'रीफ़

जब बन्दे को इस बात की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए कि गुनाह का नुक़्सान बहुत बड़ा है, गुनाह बन्दे और उस के मह़बूब के दरमियान रुकावट है तो वोह उस गुनाह के इर्तिकाब पर नदामत इख़्तियार करता है

और इस बात का क़स्द व इरादा करता है कि मैं गुनाह को छोड़ दूंगा, आयिन्दा न करूंगा और जो पहले किये उन की वज्ह से मेरे आ'माल में जो कमी वाक़ेअ़ हुई उसे पूरा करने की कोशिश करूंगा तो बन्दे की इस मजमूई कैफ़िय्यत को **तौबा** कहते हैं। इल्म, नदामत और इरादे इन तीनों के मजमूए़ का नाम **तौबा** है लेकिन बसा अवक़ात इन तीनों में से हर एक पर भी तौबा का इत़्लाक़ कर दिया जाता है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا﴾ (پ۲۸، التحریم: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए।" सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : "तौबए सादिक़ा जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो, उस की ज़िन्दगी त़ाअ़तों और इबादतों से मा'मूर हो जाए और वोह गुनाहों से मुजतनिब (या'नी बचता) रहे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और दूसरे अस्ह़ाब ने फ़रमाया कि तौबए नसूह़ वोह है कि तौबा के बा'द आदमी फिर गुनाह की त़रफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुवा दूध फिर थन में वापस नहीं होता।"[2]

﴾हदीसे मुबारका﴿ तौबा करने वाला रब तआ़ला को पसन्द है

सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौबा करने वाले, आज़्माइश में मुब्तला मोमिन बन्दे को पसन्द फ़रमाता है।"[3]

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 11 मुलख़्ख़सन।
2.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 28, अत्तह़रीम, तह़्तुल आयत : 8
3.....مسند امام احمد، مسند علی بن ابی طالب، ۱/۱۷۴، حدیث: ۲۰۵۔

www.dawateislami.net

तौबा का हुक्म

हर मुसलमान पर हर ह़ाल में हर गुनाह से फ़ौरन तौबा करना वाजिब है, या'नी गुनाह की मा'रिफ़त होने के बा'द इस पर नदामत इख़्तियार करना और आयिन्दा न करने का अ़ह्द करना और गुज़रे हुए गुनाहों पर नदामत व शर्मिन्दगी और अफ़्सोस करना भी वाजिब है और वुजूबे तौबा पर इजमाए़ उम्मत है।(1)

गुनाहों से तौबा करने का त़रीक़ा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "सच्ची तौबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह नफ़ीस शै बनाई है कि हर गुनाह के इज़ाले को काफ़ी व वाफ़ी है, कोई गुनाह ऐसा नहीं कि सच्ची तौबा के बा'द बाक़ी रहे यहां तक कि शिर्क व कुफ़्र। सच्ची तौबा के येह मा'ना हैं कि गुनाह पर इस लिये कि वोह उस के रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी थी, नादिम व परेशान हो कर फ़ौरन छोड़ दे और आयिन्दा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा अ़ज़्म करे, जो चारएकार इस की तलाफ़ी का अपने हाथ में हो बजा लाए। मसलन नमाज़ रोज़े के तर्क या ग़सब (नाजाइज़ क़ब्ज़ा), सरक़ा (चोरी), रिश्वत, रिबा (सूद) से तौबा की तो सिर्फ़ आयिन्दा के लिये इन जराइम का छोड़ देना ही काफ़ी नहीं बल्कि इस के साथ येह भी ज़रूर है जो नमाज़ रोज़े नाग़ा किये उन की क़ज़ा करे, जो माल जिस जिस से छीना, चुराया, रिश्वत, सूद में लिया उन्हें और वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को वापस कर दे या मुआ़फ़ कराए, पता न चले तो अपना माल तसद्दुक़ (या'नी सदक़ा) कर दे और दिल में येह निय्यत रखे कि वोह लोग जब मिले अगर तसद्दुक़ पर राज़ी न हुए अपने पास से उन्हें फेर दूंगा।"(2)

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 17 माख़ूज़न। 2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 121

www.dawateislami.net

13 हिकायत तौबा व इस्तिग़फ़ार व मुजाहदे के सबब रूह परवाज़ कर गई

एक दिन हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار लोगों को वा'ज़ो नसीहत करने के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराने और गुनाहों पर डांटने लगे। क़रीब था कि लोग शिद्दते इज़्तिराब से तड़प तड़प कर मर जाते। उस महफ़िल में एक गुनहगार नौजवान भी मौजूद था जो अपने गुनाहों की वज्ह से क़ब्र में उतरने के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी परेशान था। जब वोह आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के इजतिमाअ़ से वापस गया तो यूं लगता था जैसे बयान उस के दिल पर बहुत ज़ियादा असर अन्दाज़ हो चुका है। वोह अपने गुनाहों पर नादिम हो कर अपनी मां की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरी मां ! आप चाहती थीं कि मैं शैत़ानी लह्वो ला'ब और ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी छोड़ दूं लिहाज़ा आज से मैं इसे तर्क करता हूं।" और उस ने अपनी मां को येह भी बताया कि मैं हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار के इजतिमाए़ पाक में हाज़िर हुवा और अपने गुनाहों पर बहुत नादिम हुवा। चुनान्चे, मां ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तुझे बड़े अच्छे अन्दाज़ से अपनी बारगाह की त़रफ़ लौटाया और गुनाहों की बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई और मुझे क़वी उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे तुझ पर रोने के सबब तुझ पर ज़रूर रह़्म फ़रमाएगा और तुझे क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एह़सान फ़रमाएगा।" फिर उस ने पूछा : "ऐ बेटे ! नसीह़त भरा बयान सुनते वक़्त तेरा क्या ह़ाल था ? तो उस ने जवाब में चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है : "मैं ने तौबा के लिये अपना दामन फैला दिया है और अपने आप को मलामत करते हुए मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बन गया हूं। जब बयान करने वाले ने मेरे दिल को इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी की त़रफ़ बुलाया तो मेरे दिल के तमाम क़ुफ़्ल (या'नी ताले) खुल गए। ऐ मेरी

मां ! क्या मेरा मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी गुनाहों भरी ज़िन्दगी के बा वुजूद मुझे क़बूल फ़रमा लेगा। हाए अफ़्सोस ! अगर मेरा मालिक मुझे नाकाम व ना मुराद वापस लौटा दे या अपनी बारगाह में हाज़िर होने से रोक दे तो मैं हलाक हो जाऊंगा।" फिर वोह नौजवान दिन को रोज़े रखता और रातों को क़ियाम करता यहां तक कि उस का जिस्म लाग़र व कमज़ोर हो गया, गोश्त झड़ गया, हड्डियां ख़ुश्क हो गईं और रंग ज़र्द हो गया। एक दिन उस की मां उस के लिये प्याले में सत्तू ले कर आई और इसरार करते हुए कहने लगी : "मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर कहती हूं कि येह पी लो, तुम्हारा जिस्म बहुत मशक़्क़त उठा चुका है।" चुनान्चे, मां की बात मानते हुए जब उस ने प्याला हाथ में लिया तो बेचैनी व परेशानी से रोने लगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान को याद करने लगा ﴿يَّتَجَرَّعُهٗ وَ لَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ब मुश्किल इस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी।" फिर उस ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरूअ़ कर दिया और ज़मीन पर गिर गया। देखते ही देखते उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन[1]

तौबा में ताख़ीर की सात ﴾7﴿ वुजूहात और इन का ह़ल

(1) **गुनाहों के अन्जाम से ग़ाफ़िल रहना :** इस का ह़ल येह है कि बन्दा अपना यूं ज़ेह्न बनाए कि मह़्ज़ एक डॉक्टर की बात पर ए'तिबार कर के आयिन्दा नुक़्सान से बचने के लिये कई अश्या को उन की तमाम तर लज़्ज़त के बा वुजूद छोड़ देता हूं तो क्या येह नादानी नहीं है कि मैं ने एक बन्दे के डराने पर अपनी लज़्ज़तों को छोड़ दिया लेकिन तमाम काएनात के

1.....ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 363

www.dawateislami.net

ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ के वा'दए अ़ज़ाब को सच्चा जानते हुए अपने नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशात को तर्क नहीं करता।

(2) **दिल पर गुनाहों की लज़्ज़त का ग़लबा होना :** इस का ह़ल येह है कि बन्दा इस त़रह़ सोचो बिचार करे कि जब मैं ज़िन्दगी के मुख़्तसर अय्याम में उन लज़्ज़तों को नहीं छोड़ सकता तो मरने के बा'द हमेशा हमेशा के लिये लज़्ज़तों (या'नी जन्नत की ने'मतों) से मह़रूमी कैसे गवारा करूंगा ? जब मैं सब्र की आज़माइश बरदाश्त नहीं कर सकता तो नारे जहन्नम की तक्लीफ़ किस त़रह़ बरदाश्त करूंगा ?

(3) **त़वील अ़र्सा ज़िन्दा रहने की उम्मीद होना :** इस का ह़ल येह है कि बन्दा इस त़रह़ ग़ौर करे कि जब मौत का आना यक़ीनी है और मुझे अपनी मौत के आने का वक़्त भी मा'लूम नहीं तो तौबा जैसी सआ़दत को कल पर मौक़ूफ़ करना नादानी नहीं तो और क्या है ? जिस गुनाह को छोड़ने पर आज मेरा नफ़्स तय्यार नहीं हो रहा कल इस की आ़दत पुख़्ता हो जाने पर मैं इस से अपना दामन किस त़रह़ बचाऊंगा ? और इस बात की भी क्या ज़मानत है कि मैं बुढ़ापे में पहुंच पाऊंगा या नौकरी से रीटायर होने तक मैं ज़िन्दा रहूंगा ?

(4) **रह़मते इलाही के बारे में धोके का शिकार होना :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बड़ा ग़फ़ूरुर्रह़ीम है, हमें अल्लाह की रह़मत पर भरोसा है वोह हमें अ़ज़ाब नहीं देगा। इस का ह़ल येह है कि बन्दा इस बात पर ग़ौर करे कि अल्लाह तआ़ला के रह़ीमो करीम होने में किसी मुसलमान को शको शुबा नहीं हो सकता लेकिन जिस त़रह़ येह दोनों उस की सिफ़ात हैं उसी त़रह़ क़ह्हार और जब्बार होना भी रब عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात हैं और येह बात भी क़ुरआनो ह़दीस से साबित है कि कुछ न कुछ मुसलमान जहन्नम में भी जाएंगे तो इस बात की क्या ज़मानत है कि वोह मुसलमान तो ग़ज़बे

www.dawateislami.net

इलाही عَزَّوَجَلَّ का शिकार हों और जहन्नम में जाएं लेकिन मुझ पर रह़मते इलाही की छमाछम बरसात हो और मुझे दाख़िले जन्नत किया जाए ?[1]

(5) **बा'दे तौबा इस्तिक़ामत न मिलने का ख़ौफ़ होना :** इस का ह़ल येह है कि येह सरासर शैत़ानी वस्वसा है क्यूंकि आप को क्या मा'लूम कि तौबा करने के बा'द आप ज़िन्दा रहेंगे या नहीं ? हो सकता है कि तौबा करते ही मौत आ जाए और गुनाह करने का मौक़अ़ ही न मिले। वक़्ते तौबा आयिन्दा के लिये गुनाहों से बचने का पुख़्ता इरादा होना ज़रूरी है, गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत देने वाली ज़ात तो रब्बुल आ़लमीन की है। अगर इर्तिकाबे गुनाह से मह़फ़ूज़ रहना न भी नसीब हुवा तो भी कम अज़ कम गुज़श्ता गुनाहों से तो जान छूट जाएगी और साबिक़ा गुनाहों का मुआ़फ़ हो जाना मा'मूली बात नहीं। अगर बा'दे तौबा गुनाह हो भी जाए तो दोबारा पुर ख़ुलूस तौबा कर लेनी चाहिये कि हो सकता है येही आख़िरी तौबा हो और इसी पर दुन्या से जाना नसीब हो।

(6) **कसरते गुनाह की वज्ह से मायूसी का शिकार हो जाना :** इस का ह़ल येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये, रह़मते ख़ुदावन्दी किस त़रह़ अपने उम्मीदवार को आग़ोश में लेती है, इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है कि मक्की मदनी सरकार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़क़ तआ़ला अपने बन्दों पर इस से कहीं ज़ियादा मेह्रबान है, जितना कि एक मां अपने बच्चे पर शफ़्क़त करती है।"[2]

(7) **तौबा करने में शर्मो झिजक मह़सूस करना :** तौबा करने के बा'द जब मेरा अन्दाज़े ज़िन्दगी तब्दील होगा मसलन पहले मैं नमाज़ें क़ज़ा कर दिया करता था मगर बा'दे तौबा पांच वक़्त मस्जिद का रुख़ करते दिखाई दूंगा, पहले मैं शेव्ड था बा'दे तौबा मेरे चेहरे पर सुन्नते मुस्त़फ़ा

1.....तौबा की रिवायात व ह़िकायात, स. 21 माख़ूज़न।

2.....مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی سعۃ رحمۃ اللہ تعالی، ص ۱۴۷۲، حدیث: ۲۷۵۴۔

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी दाढ़ी शरीफ़ सजी हुई नज़र आएगी तो लोग मुझे अ़जीब निगाहों से देखेंगे और मुझे शर्म मह़सूस होगी। याद रखिये ! येह भी शैत़ानी वस्वसा है, ज़रा सोचिये तो सही कि आज उन लोगों की परवाह करते हुए अगर आप नेकी के रास्ते पर चलने से कतराते रहे और सुन्नतों से मुंह मोड़ते रहे लेकिन कल जब क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने अपना नामए आ'माल पढ़ कर सुनाना पड़ेगा और अगर उस में गुनाह ही गुनाह हुए तो किस क़दर शर्म आएगी। लिहाज़ा आख़िरत में शर्मिन्दा होने से बचने के लिये दुन्या की आ़रिज़ी शर्मो झिजक को बालाए त़ाक़ रखते हुए फ़ौरन तौबा की सआ़दत ह़ासिल कर लेनी चाहिये।

तौबा करने का ज़ेह्न बनाने के छ ﴾6﴿ त़रीक़े

(1) **तौबा न करने के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** जो बन्दा टाल मटोल से काम लेते हुए तौबा की त़रफ़ नहीं बढ़ता तो उसे पहला नुक़्सान येह होता है कि उस के दिल पर गुनाहों की सियाही तह दर तह जमती रहती है ह़त्ता कि ज़ंग सारे दिल को घेर लेता है और गुनाह आ़दत व त़बीअ़त बन कर रह जाता है और फिर वोह सफ़ाई को क़बूल नहीं करता। दूसरा नुक़्सान येह है कि उसे बीमारी या मौत आ घेरती है और उसे गुनाह के इज़ाले की मोहलत नहीं मिल पाती। इसी लिये रिवायत में आया है : "दोज़ख़ियों की ज़ियादा चीख़ो पुकार तौबा में टाल मटोल के सबब होगी।"(1)

(2) **अचानक आने वाली मौत को याद रखिये :** कई हंसते बोलते इन्सान अचानक मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में पहुंच जाते हैं, उन्हें तौबा का मौक़अ़ ही नहीं मिलता, जब बन्दा अचानक आने वाली मौत को याद रखेगा तो उम्मीद है उसे तौबा का मदनी ज़ेह्न नसीब होगा।

(1).....इह़याउल उ़लूम, 4 / 38

www.dawateislami.net

इसी लिये हिक्मत व दानाई के पैकर हज़रते सय्यिदुना हकीम लुक्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को येह नसीहत फ़रमाई : "बेटा ! तौबा में ताख़ीर न करना क्यूंकि मौत अचानक आती है।"[1]

(3) **ख़ुद को अज़ाबे जहन्नम से डराइये :** ख़ुदा न ख़्वास्ता बिग़ैर तौबा के इन्तिक़ाल हो गया और रब तआला नाराज़ हो गया तो जहन्नम का सख़्त अज़ाब मेरा मुक़द्दर होगा, जहन्नम का अज़ाब सेहने की किस में ताक़त है, जहन्नम का सब से हल्का अज़ाब येह होगा कि जहन्नमी को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी और सब से हल्के अज़ाब में मुब्तला शख़्स येह तसव्वुर करेगा कि शायद जहन्नम में सब से ज़ियादा और शदीद अज़ाब मुझे ही हो रहा है। उम्मीद है कि बन्दा जब ख़ुद को जहन्नम के अज़ाब से डराएगा तो उस का गुनाहों से तौबा करने का मदनी ज़ेहन बनेगा।

(4) **तौबा करने वाले को रहमते इलाही से जो दुन्यवी व उख़रवी फ़वाइद मिलने की उम्मीद है उन को पेशे नज़र रखिये।** **मसलन :** ۞ गुनाह से तौबा करने वाले का ऐसा होना जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं ۞ रब عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा होना ۞ रहमते इलाही का मुतवज्जेह होना ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी हासिल होना ۞ शैतान को नाराज़ करना ۞ रहमते इलाही से ईमान पर ख़ातिमा होना ۞ कल बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत नसीब होना ۞ हौज़े कौसर से जाम पीना ۞ बरोज़े क़ियामत हिसाबो किताब में आसानी होना ۞ रहमते इलाही से जन्नत में दाख़िला नसीब होना।

(5) **बुज़ुर्गाने दीन के तौबा के वाक़िआत का मुतालआ कीजिये :** इस के लिये कि मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 124 सफ़हात

---

1 .....इहयाउल उलूम, 4 / 38

www.dawateislami.net

पर मुश्तमिल किताब "**तौबा की रिवायात व हि़कायात**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(6) **उख़रवी लज़्ज़ात को दुन्यवी लज़्ज़ात पर तरजीह़ दीजिये :** येह भी तौबा पर माइल करने में बहुत मुआ़वनत करता है, उ़मूमन शैत़ान बन्दे का येह ज़ेह्न बनाता है कि तू ने तौबा कर ली तो फ़ुलां फ़ुलां दुन्यवी चीज़ों से मह़रूम हो जाएगा, फ़ुलां मुआ़मले में तुझे दुन्यवी तरक़्क़ी नहीं मिल सकेगी, इस शैत़ानी वस्वसे की यूं काट कीजिये कि अगर अचानक मुझे मौत आ जाए तो भी येह सारी दुन्यवी ने'मतें छिन जाएंगी और तौबा न करने के सबब रब तआ़ला की नाराज़ी के साथ दुन्या से रुख़्सती होगी, क्यूं न मैं गुनाहों से तौबा कर के रब तआ़ला की रिज़ा के साथ दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं ताकि हमेशा की उख़रवी ने'मतें नसीब हों। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो दुन्या से मह़ब्बत करता है तो वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो आख़िरत से मह़ब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है तो (ऐ मुसलमानो !) फ़ना होने वाली चीज़ (या'नी दुन्या) को छोड़ कर बाक़ी रहने वाली चीज़ (या'नी आख़िरत) को इख़्तियार कर लो।"(1)

तौबा पर इस्तिक़ामत पाने के छ ﴿6﴾ त़रीक़े

(1) **रोज़ाना सोने से क़ब्ल सलातुत्तौबा अदा कीजिये :** तौबा पर इस्तिक़ामत पाने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह भी है कि बन्दा सोने से क़ब्ल अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर के सोए और दो रक्अ़त नमाज़ सलातुत्तौबा भी अदा कर ले, उम्मीद है कि इस त़रह़ तौबा पर इस्तिक़ामत पाने में आसानी होगी।

(2) **गुनाह से तौबा करने के फ़ौरन बा'द कोई नेकी कर लीजिये :** तौबा पर इस्तिक़ामत पाने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह भी है कि किसी भी गुनाह से तौबा करने के बा'द फ़ौरन कोई नेकी कर लीजिये कि

1 ......مسند امام احمد، حدیث ابی موسی الاشعری، ۷/۱۶۵، حدیث: ۱۹۷۱۷۔

www.dawateislami.net

वोह नेकी उस गुनाह को मिटा देगी और आयिन्दा भी तौबा पर तौफ़ीक़ नसीब होगी। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "गुनाह के बा'द नेकी कर लो येह उसे मिटा देगी।"(1)

(3) **तौबा करने वालों की सोहबत इख़्तियार कीजिये :** जब बन्दा ऐसे लोगों की सोहबत इख़्तियार करेगा जो गुनाहों से तौबा करते रहते हैं तो उम्मीद है कि उसे भी तौबा की तौफ़ीक़ और इस पर इस्तिक़ामत नसीब हो जाएगी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में भी वक़्तन फ़ वक़्तन तौबा करने की तरग़ीब दिलाई जाती बल्कि तौबा करवाई जाती और तौबा पर इस्तिक़ामत की तरग़ीब दिलाई जाती है, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, रहमते इलाही से तौबा पर इस्तिक़ामत नसीब हो जाएगी। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "तौबा करने वालों के पास बैठा करो क्यूंकि वोह बहुत ज़ियादा नर्म दिल होते हैं।"(2)

(4) **ख़ुद को ख़ुश फ़हमी का शिकार मत होने दीजिये :** बन्दा जब इस ख़ुश फ़हमी का शिकार हो जाता है कि मैं तो एक बार तौबा कर चुका हूं लिहाज़ा अब मुझे तौबा करने की हाजत नहीं तो उसे तौबा पर इस्तिक़ामत नसीब नहीं होती। इस ख़ुश फ़हमी को दूर करने का त़रीक़ा येह है कि बन्दा अपनी तौबा पर ग़ौर करे कि क्या मैं ने सच्ची तौबा कर ली है ? क्या मुझे साबिक़ा गुनाहों पर नदामत है ? क्या इन के इज़ाले की भी कोशिश कर ली है ? अगर बिल फ़र्ज़ तौबा में येह तमाम शराइत़ पाई भी जाएं तो क्या मुझे येह मा'लूम है कि मेरी तौबा बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में क़बूल भी हुई है या नहीं ?

---

1 ......مسند امام احمد، حدیث معاذ بن جبل، ۸/۲۴۵، حدیث: ۲۲۱۲۰۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ۸/۱۵۰، حدیث: ۲۴۔

www.dawateislami.net

(5) **इजतिमाआ़त में शिर्कत का मा'मूल बना लीजिये :** गुनाहों की हलाकतों, जन्नत की ने'मतों और जहन्नम की तबाह कारियों को बार बार सुनना न सिर्फ़ तौबा पर इस्तिक़ामत फ़राहम करता है बल्कि इस की बरकत से नेकियां करने का जज़्बा भी बढ़ता है। लिहाज़ा अगर आप तौबा पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये।

(6) **मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में शिर्कत कीजिये :** मदनी इन्आ़मात दर अस्ल शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल का ब सूरते सुवालात मजमूआ़ है, येह दोनों उमूर तौबा पर इस्तिक़ामत पाने में बहुत ही मुआ़विन हैं कि इन दोनों में तौबा पर इस्तिक़ामत की न सिर्फ़ तरग़ीब दिलाई जाती है बल्कि अ़मली त़रीक़ा भी सिखाया जाता है।

गुनाहों से तौबा करने का त़रीक़ा

कुल्ली तौ़र पर गुनाहों की छ अक़्साम हैं, गुनाहों के मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से तौबा भी मुख़्तलिफ़ त़रीक़े से होगी, तफ़्सील कुछ यूं है :

(1) बा'ज़ गुनाहों का तअ़ल्लुक़ **हुक़ूक़ुल्लाह** से होता है। जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज, क़ुरबानी और ज़कात वग़ैरा की अदाएगी में सुस्ती करना, बद निगाही करना, क़ुरआने पाक को बे वुज़ू हाथ लगाना, शराब नोशी करना, फ़ोह़्श गाने सुनना वग़ैरहा। **हुक़ूक़ुल्लाह** से तअ़ल्लुक़ रखने वाले गुनाह अगर किसी इ़बादत में कोताही की वज्ह से सरज़द हों तो तौबा करने के साथ साथ उन इ़बादात की क़ज़ा भी वाजिब है। मसलन अगर नमाज़ें फ़ौत हुई हों या रमज़ान के रोज़े छूटे हों तो इन का ह़िसाब लगाए और इन की क़ज़ा करे, अगर ज़कात की अदाएगी में कोताही हुई हो तो ह़िसाब लगा कर अदाएगी करे, अगर ह़ज फ़र्ज़ हो जाने के बा वुजूद अदा नहीं किया था तो

अब अदा करे और अगर गुनाहों का तअ़ल्लुक़ इबादात में कोताही से न हो मसलन बद निगाही करना, शराब नोशी करना वग़ैरा, तो इन पर नदामत व ह़सरत का इज़्हार करते हुए बारगाहे इलाही में तौबा करे और नेकियां करने में मश्ग़ूल हो जाए।

(2) बा'ज़ ऐसे गुनाह होते हैं जिन का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से होता है। जैसे चोरी, ग़ीबत, चुग़ली, अज़िय्यत देना, मां बाप को सताना, अमानत में ख़ियानत करना, क़र्ज़ ले कर दबा लेना वग़ैरहा। बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ गुनाह अगर उन की इ़ज़्ज़त व आबरू में दस्त अन्दाज़ी की वज्ह से सरज़द हुए हों। मसलन किसी को गाली दी थी या तोह्मत लगाई थी या डराया धमकाया था तो तौबा की तक्मील अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस मज़्लूम से मुआ़फ़ी त़लब करने से होगी। और अगर माली मुआ़मले में शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की वज्ह से गुनाह वाक़ेअ़ हुवा था। मसलन अमानत में ख़ियानत की थी या क़र्ज़ ले कर दबा लिया था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस मज़्लूम से मुआ़फ़ी त़लब करने के साथ साथ उसे उस का माल भी लौटाए और अगर वोह शख़्स इन्तिक़ाल कर गया हो तो उस के वुरसा को दे दे या फिर उस शख़्स से या उस के न होने की सूरत में उस के वुरसा से मुआ़फ़ करवा ले, अगर उस शख़्स का इ़ल्म नहीं, न ही उस के वुरसा का, तो उतना माल उस मज़्लूम की त़रफ़ से इस निय्यत के साथ सदक़ा कर दे कि अगर वोह शख़्स या उस के वुरसा बा'द में मिल गए और उन्हों ने अपने ह़क़ का मुत़ालबा किया तो मैं उन्हें उन का ह़क़ लौटा दूंगा और उन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करता रहे।

(3) बा'ज़ गुनाहों का तअ़ल्लुक़ इन्सान के ज़ाहिर से होता है, मसलन क़त्ल करना वग़ैरा और बा'ज़ वोह होंगे जिन का तअ़ल्लुक़ इन्सान के बात़िन से होता है मसलन बद गुमानी करना, किसी से ह़सद करना,

www.dawateislami.net

तकब्बुर में मुब्तला होना वग़ैरा। ज़ाहिरी गुनाहों से तौबा का त़रीक़ा तो ऊपर गुज़र चुका लेकिन बात़िनी गुनाहों से भी तौबा करने से हरगिज़ ग़फ़्लत न करे। चुनान्चे, अपने दिल पर ग़ौर करे और अगर ह़सद, तकब्बुर, रियाकारी, बुग़्ज़, कीना, गुरूर, शमातत और बद गुमानी जैसे गुनाह दिखाई दें तो नादिम व शर्मसार हो कर बारगाहे इलाही में मुआ़फ़ी त़लब करे।

(4) बा'ज़ गुनाह सिर्फ़ तौबा करने वाले की ज़ात तक मह़दूद होते हैं। मसलन ख़ुद शराब पीना और बा'ज़ ऐसे होते हैं जिन की त़रफ़ उस शख़्स ने किसी दूसरे को राग़िब किया होगा, उसे गुनाहे जारिया भी कहते हैं। मसलन किसी को शराब नोशी की तरग़ीब देना या फ़ोह़्श वेब साइट देखने की तरग़ीब देना वग़ैरा। जो गुनाह उस की ज़ात तक मह़दूद हों उन से मज़्कूरा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ तौबा करे और अगर गुनाहे जारिया का इर्तिकाब किया हो तो जिस त़रह़ उस गुनाह से ख़ुद ताइब हुवा है उस की तरग़ीब देने से भी तौबा करे और दूसरे शख़्स को जिस त़रह़ गुनाह की रग़बत दी थी अब तौबा की तरग़ीब दे, जहां तक मुमकिन हो नर्मी या सख़्ती से समझाए, अगर वोह मान जाए तो ठीक वरना ये बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा।[1]

(5) बा'ज़ गुनाह ऐसे होते हैं जो पोशीदा त़ौर पर किये। मसलन अपने कमरे में फ़ोह़्श फ़िल्में देखना जब कि कुछ गुनाह वोह होंगे जो ए'लानिया किये मसलन दाढ़ी मुन्डाना, सरे आ़म शराब पीना वग़ैरा। जो गुनाह बन्दे और उस के रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान हो या'नी किसी पर ज़ाहिर न हुवा हो तो उस की तौबा पोशीदा त़ौर पर करे या'नी अपना गुनाह किसी पर ज़ाहिर न करे और अगर गुनाह ए'लानिया किया हो तो उस की तौबा भी ए'लानिया करे।[2]

1 .....फ़तावा रज़विय्या, क़दीम 10 / 97 माख़ूज़न। 2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 142

(6) कुछ गुनाह ऐसे होते हैं जिन के इर्तिकाब पर आदमी दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो कर काफ़िर हो जाता है। मसलन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिम कहना, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करना। अगर مَعَاذَ اللّٰہ कलिमए कुफ़्र या कोई ऐसा फ़े'ल सादिर हो जाए जिस से इन्सान काफ़िर हो जाता है तो फ़ौरन तौबा कर के तजदीदे ईमान कर लेनी चाहिये।

तजदीदे ईमान का त़रीक़ा

दिल की तस्दीक़ के बिग़ैर सिर्फ़ ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं होती। मसलन किसी ने कुफ़्र बक दिया, इस को दूसरे ने बहला फुस्ला कर इस त़रह़ तौबा करवा दी कि कुफ़्र बकने वाले को मा'लूम तक नहीं हुवा कि मैं ने फ़ुलां कुफ़्र किया था, यूं तौबा नहीं हो सकती, उस का कुफ़्र ब दस्तूर बाक़ी है। लिहाज़ा जिस कुफ़्र से तौबा मक़्सूद हो वोह उसी वक़्त मक़्बूल होगी जब कि वोह उस कुफ़्र को कुफ़्र तस्लीम करता हो और दिल में उस कुफ़्र से नफ़रत व बेज़ारी भी हो जो कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में उस का तज़्किरा भी हो। मसलन जिस ने वीज़ा फ़ोर्म पर अपने आप को ईसाई लिख दिया वोह इस त़रह़ कहे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो वीज़ा फ़ार्म में अपने आप को ईसाई ज़ाहिर किया है उस कुफ़्र से तौबा करता हूं। "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" इस त़रह़ मख़्सूस कुफ़्र से तौबा भी हो गई और तजदीदे ईमान भी। अगर مَعَاذَ اللّٰہ कई कुफ़्रिय्यात बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से जो जो कुफ़्रिय्यात सादिर हुए हैं मैं उन से तौबा करता हूं।" फिर कलिमा पढ़ ले, (अगर कलिमा शरीफ़ का तर्जमा मा'लूम है तो ज़बान से तर्जमा दोहराने की

www.dawateislami.net

हाजत नहीं) अगर येह मा'लूम ही नहीं कि कुफ़्र बका भी है या नहीं तब भी अगर एह्तियातन तौबा करना चाहें तो इस तरह करें : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं।" येह कहने के बा'द कलिमा पढ़ लें।[1]

तौबा करने का एक त़रीक़ा

तौबा करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि तन्हाई में दो रक्अ़त सलातुत्तौबा पढ़े फिर अपनी ना फ़रमानियों और रब तआ़ला के एह्सानात, अपनी नातुवानी और जहन्नम के अ़ज़ाबात को याद कर के आंसू बहाए, अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत ही बना ले। इस के बा'द तौबा की शराइत़ को मद्दे नज़र रखते हुए रब तआ़ला की बारगाह में मुआ़फ़ी त़लब करे और कुछ इस तरह से दुआ़ करे : "ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरा येह ना फ़रमान बन्दा जिस का रुवां रुवां गुनाहों के समुन्दर में डूबा हुवा है, तेरी पाक बारगाह में हाज़िर है, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इक़रार करता हूं कि मैं ने दिन के उजाले में रात के अन्धेरे में, पोशीदा और ए'लानिया, दानिस्ता और नादानिस्ता तौर पर तेरी ना फ़रमानियां की हैं, यक़ीनन मैं ने तुझे नाराज़ करने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ग़फ़ूर व रहीम है, तू बन्दे पर इस से ज़ियादा मेहरबान है जितना कि एक मां अपने बच्चे पर शफ़्क़त करती है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मेरे गुनाहों पर पकड़ फ़रमाई तो मुझे नारे जहन्नम में जलना पड़ेगा जिस का अ़ज़ाब लम्हा भर के लिये भी सहने की मुझ में ताक़त नहीं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं सिद्क़े दिल से तेरी बारगाह में अपने गुनाहों से तौबा करता हूं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी नातुवानी पर रह्म फ़रमा, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे

1 .....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 622, 28 कलिमाते कुफ़्र, स. 9

www.dawateislami.net

परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दे, ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे, जो इबादात अदा होने से रह गईं उन्हें अदा करने की हिम्मत दे दे, जिन बन्दों के हुक़ूक़ मैं ने तलफ़ किये उन से भी मुआफ़ी मांगने का हौसला अ़ता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू हर शै पर क़ादिर है, तू उन्हें मुझ से राज़ी फ़रमा दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे आयिन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़ता फ़रमा ! आमीन। इस के बा'द उस जगह से इस यक़ीन से उठे कि रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने उस की तौबा क़बूल फ़रमा ली है। फिर एक नए अ़ज़्म के साथ नई और पाकीज़ा ज़िन्दगी का आग़ाज़ करे और साबिक़ा गुनाहों की तलाफ़ी में मसरूफ़ हो जाए। **अल्लाह** तआ़ला हमारा ह़ामी व नासिर हो। اٰمِيْن بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿...सालिह़ीन से मह़ब्बत

सालिह़ीन से मह़ब्बत की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उस के नेक बन्दों से मह़ब्बत रखना, उन की सोह़बत इख़्तियार करना, उन का ज़िक्र करना और उन का अदब करना "**सालिह़ीन से मह़ब्बत**" कहलाता है क्यूंकि मह़ब्बत का तक़ाज़ा येही है जिस से मह़ब्बत की जाए उस की दोस्ती व सोह़बत को मह़बूब रखा जाए, उस का ज़िक्र किया जाए, उस का अदबो एह़तिराम किया जाए।

आयाते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾﴾ (پ۱۶، مریم:۹۶)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रह़मान मह़ब्बत कर देगा।"

इस आयत के तह़त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : "या'नी अपना मह़बूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उन की मह़ब्बत डाल देगा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे को मह़बूब करता है तो जिब्रील से फ़रमाता है कि फ़ुलाना मेरा मह़बूब है जिब्रील उस से मह़ब्बत करने लगते हैं फिर ह़ज़रते जिब्रील आस्मानों में निदा करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां को मह़बूब रखता है सब उस को मह़बूब रखें तो आस्मान वाले उस को मह़बूब रखते हैं फिर ज़मीन में उस की मक़्बूलिय्यत आ़म कर दी जाती है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मोमिनीने सालिह़ीन व औलियाए कामिलीन की मक़्बूलिय्यते आ़म्मा उन की मह़बूबिय्यत की दलील है जैसे कि हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सुल्त़ान निज़ामुद्दीन देहलवी और ह़ज़रते सुल्त़ान सय्यिद अशरफ़ जहांगीर समनानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم और दीगर ह़ज़राते औलियाए कामिलीन की आ़म मक़्बूलिय्यतें उन की मह़बूबिय्यत की दलील हैं।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَآءُ بَعْضٍ ۘ﴾ (پ۱۰، التوبۃ: ۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं" और बाहम दीनी मह़ब्बत व मुवालात (दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात) रखते हैं और एक दूसरे के मुईनो मददगार हैं।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِیَ وَ اِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ۝۶۵﴾ (پ۱۶، طٰہٰ: ۶۵)

---

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम, तह़्तुल आयत : 96

(2).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 10, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 71

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : “बोले ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालें।” ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, में है : इब्तिदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की राए मुबारक पर छोड़ा और इस की बरकत से आख़िर कार **अल्लाह** तआला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया।[1]

अहादीसे मुबारका

चार फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ۞ जब तक तुम नेक लोगों से महब्बत रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे बारे में जब कोई हक़ बात बयान की जाए तो उसे मान लिया करो कि हक़ को पहचानने वाला उस पर अमल करने वाले की तरह होता है।[2] ۞ आदमी उसी के साथ होगा जिस से वोह महब्बत करता है।[3] ۞ नेक लोगों का ज़िक्र गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा है।[4] ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : वोही लोग मेरी महब्बत के हक़दार हैं जो मेरी वज्ह से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं, जो मेरी वज्ह से एक दूसरे से महब्बत करते हैं।[5]

सालिहीन से महब्बत का हुक्म

मुतलक़ सालिहीन या'नी नेक लोगों से महब्बत करना, उन का ज़िक्र करना, सोहबत इख़्तियार करना, और अदबो एहतिराम करना शरअन जाइज़ व नेक, बाइसे अज्रो सवाब व जन्नत में ले जाने वाला काम है। हुज़ूर नबिये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत फ़र्ज़, ऐने ईमान

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, ताहा, तहतुल आयत : 65

2 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی مقاربة اھل الدین۔۔۔الخ، ۲/ ۵۰۳، حدیث: ۹۰۶۳۔

3 ......بخاری، کتاب الادب، باب علامة حب اللہ عزوجل، ۴/ ۱۴۷، حدیث: ۶۱۶۸۔

4 ......کشف الخفاء، ۱/ ۷۱، ۳، تحت الحدیث: ۱۷۷۲۔

5 ......مسند امام احمد، حدیث عمرو بن عبسة، ج۷، ص۱۱۳، حدیث: ۱۹۴۵۵۔

www.dawateislami.net

बल्कि ईमान की जान है, इस के बिग़ैर कोई मोमिन मोमिन नहीं, कोई मुसलमान मुसलमान नहीं। तमाम सह़ाबए किराम, अह्ले बैते अत़हार, अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मह़ब्बत भी ऐ़न सआ़दत व रह़मते इलाही से ख़ातिमा बिल ख़ैर की ज़मानत है।

14 हिकायत — नेक लोगों की सोहबत के अहवाल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ऐसे ऐसे नेक लोगों की सोह़बत में रहा जिन में से बा'ज़ ह़ज़रात पर पचास पचास ऐसे साल गुज़र गए कि उन्हों ने न कभी अपने लिये बिस्तर बिछाए और न कभी आराम के लिये चादरें तह कीं और न ही कभी घर से खाना पकवाया, उन में से कोई एक लुक़्मा ही खाता मगर फिर भी उस की ख़्वाहिश होती कि इस लुक़्मे की जगह अपने मुंह में पत्थर डाल लेता, न तो वोह दुन्या मिलने पर ख़ुश होते और न उस के चले जाने पर ग़मज़दा होते, तुम जिस मिट्टी को अपने पैरों तले रौंदते हो उन के नज़्दीक दुन्या की ह़क़ीक़त और हैसिय्यत उस मिट्टी से भी कम थी। उन के बिल्कुल क़रीब में ह़लाल माल होने के बा वुजूद जब उन में किसी से कहा जाता कि उस में से क़दरे किफ़ायत ही ले लें। तो जवाब मिलता : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ऐसा नहीं कर सकता क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि अगर मैं ने उस में से कुछ ले लिया तो येह मेरे दिल व दीन के बिगाड़ का सबब बन जाएगा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन[1]

15 हिकायत — सय्यिदुना उवैसे क़रनी से मह़ब्बत और इन की सोह़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना हरिम बिन ह़य्यान عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि जब मुझ तक येह ह़दीस पहुंची कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक शख़्स (या'नी

1 .....आंसूओं का दरिया, स. 105

हज़रते उवैसे क़रनी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی) की शफ़ाअत से मेरी उम्मत के क़बीलए रबीआ और क़बीलए मुज़र के बराबर लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा तो मैं फ़ौरन कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुवा । मेरा वहां जाने का सिर्फ़ येही मक़्सद था कि हज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی की ज़ियारत कर लूं और उन की सोहबत से फ़ैज़याब हो सकूं, कूफ़ा पहुंच कर मैं उन्हें तलाश करता रहा । बिल आख़िर मैं ने उन्हें दोपहर के वक़्त नहरे फ़ुरात के कनारे वुज़ू करते पाया । जो निशानियां मुझे उन के मुतअ़ल्लिक़ बताई गई थीं उन की वज्ह से मैं ने उन्हें फ़ौरन पहचान लिया । उन का रंग इन्तिहाई गन्दुमी, जिस्म दुब्ला पतला, सर गर्द आलूद और चेहरा इन्तिहाई बा रो'ब था । मैं ने क़रीब जा कर उन्हें सलाम किया । उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और मेरी तरफ़ देखा । मैं ने कहा : ऐ उवैस ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, आप कैसे हैं ?" उन को इस हालत में देख कर और उन से शदीद महब्बत की वज्ह से मेरी आंखें भर आईं और मैं रोने लगा । मुझे रोता देख कर वोह भी रोने लगे और मुझ से फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई हरिम बिन हय्यान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे, आप कैसे हैं ? और मेरे बारे में आप को किस ने बताया कि मैं यहां हूं ?" मैं ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप की तरफ़ राह दी है ।" येह सुन कर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ और سُبۡحٰنَ اللّٰہ की सदाएं बुलन्द कीं और फ़रमाया : "बेशक हमारे रब عَزَّوَجَلَّ का वा'दा ज़रूर पूरा होने वाला है ।"

(फिर थोड़ी गुफ़्तगू के बा'द) मैं ने उन से कहा : "ऐ मेरे भाई ! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये ताकि मैं उसे याद रखूं । बेशक मैं आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर महब्बत करता हूं ।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने मेरा हाथ

www.dawateislami.net

पकड़ा और सूरए दुख़ान की दो आयतें तिलावत फ़रमाईं, फिर एक ज़ोरदार चीख़ मारी, मेरे गुमान के मुत़ाबिक़ शायद आप बेहोश हो गए थे।

जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो वा'ज़ो नसीह़त के मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए। फिर फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! तू अपने लिये भी दुआ़ करना और मुझे भी दुआ़ओं में याद रखना।" इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करने लगे : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हरिम बिन ह़य्यान का गुमान है कि येह मुझ से तेरी ख़ात़िर मह़ब्बत करता है और तेरी रिज़ा ही की ख़ात़िर मुझ से मुलाक़ात करने आया है। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे जन्नत में इस की पहचान करा देना और जन्नत में भी मेरी इस से मुलाक़ात करा देना। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जब तक येह दुन्या में बाक़ी रहे इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमा और इसे थोड़ी ही दुन्या पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे जो ने'मतें तू ने अ़त़ा की हैं उन पर शुक्र करने वाला बना दे, हमारी त़रफ़ से इसे ख़ूब भलाई अ़त़ा फ़रमा।" फिर मुझ से फ़रमाया : "ऐ इब्ने ह़य्यान ! तुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो और ख़ूब बरकत हो, आज के बा'द मैं तुझ से मुलाक़ात न कर सकूंगा, बेशक मैं शोहरत को पसन्द नहीं करता। जब मैं लोगों के दरमियान होता हूं तो सख़्त परेशान और ग़मगीन रहता हूं। बस मुझे तो तन्हाई बहुत पसन्द है। आज के बा'द तू मेरे मुतअ़ल्लिक़ किसी से न पूछना और न ही मुझे तलाश करना। मैं हमेशा तुझे याद रखूंगा, अगर्चे तुम मुझे न देखोगे और मैं तुझे न देख सकूंगा। मेरे भाई ! तुम मुझे याद रखना, मैं तुम्हें याद रखूंगा। मेरे लिये दुआ़ करते रहना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो मैं तुझे याद रखूंगा और तेरे लिये दुआ़ करता रहूंगा। अब तू इस सम्त चला जा और मैं दूसरी त़रफ़ चला जाता हूं।" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक त़रफ़ चल दिये।

www.dawateislami.net

मैं ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि कुछ दूर तक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ चलूं, लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन्कार फ़रमा दिया और हम दोनों रोते हुए एक दूसरे से जुदा हो गए। मैं बार बार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुड़ मुड़ कर देखता यहां तक कि आप एक गली की त़रफ़ मुड़ गए। इस के बा'द मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बहुत तलाश किया लेकिन आप मुझे न मिल सके, और न ही कोई ऐसा शख़्स मिला जो मुझे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर देता। हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर येह करम किया मुझे हफ़्ते में एक दो मरतबा ख़्वाब में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत ज़रूर होती है। (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)[1]

सालिह़ीन से मह़ब्बत पैदा करने के चार ﴾4﴿ त़रीक़े

(1) **अल्लाह वालों की बातों का मुत़ालआ़ कीजिये :** सालिह़ीन से मह़ब्बत पैदा करने का येह एक बेहतरीन त़रीक़ा है। इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, करामाते सह़ाबा, सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल, अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, शाहराहे औलिया, फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन, अल्लाह वालों की बातें, ह़िकायतें और नसीह़तें, ख़ौफ़े ख़ुदा, उ़यूनुल ह़िकायात, इह़्याउल उ़लूम, । वग़ैरा

(2) **नेक लोगों से मह़ब्बत करने वालों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** सोह़बत असर रखती है, जब बन्दा नेक लोगों से मह़ब्बत करने वालों की सोह़बत में बैठेगा तो रह़मते इलाही से उसे भी नेक लोगों की मह़ब्बत नसीब हो जाएगी।

1.....उ़यूनुल ह़िकायात, ह़िस्सए अव्वल, स. 55

(3) **बद मज़्हबों की सोह़बत से बचिये :** वोह तमाम लोग जो अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, ताबेईन, तब्ए़ ताबेईन, अइम्मए दीन, औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के ख़िलाफ़ ज़बाने त़ा'न दराज़ करते हैं, उन की सोह़बत से बचिये कि येह दीन को ऐसे तबाहो बरबाद कर के रख देते हैं जैसे आग लकड़ी को जला कर राख कर देती है, बद मज़्हबों के साथ बैठने वाला ला'नत में गिरिफ़्तार हो जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक शख़्स को नसीह़त करते हुए इरशाद फ़रमाया : "बद मज़्हब के साथ मत बैठ क्यूंकि मुझे तुझ पर ला'नत उतरने का ख़ौफ़ है।"[1] ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز फ़रमाते हैं : "अगर किसी रास्ते पर बद मज़्हब से सामना हो जाए तो वोह रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार करो।"[2]

(4) **मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत का मा'मूल बना लीजिये :** मदनी मुज़ाकरों में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ न सिर्फ़ मुख़्तलिफ़ सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं बल्कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, ताबेईन तब्ए़ ताबेईन, औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام की मह़ब्बत भी पिलाते हैं, आप की सोह़बत में बैठने वाला रह़मते इलाही से कभी बद अ़क़ीदा न होगा, बल्कि हमेशा नेक लोगों का गिरवीदा होगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......شرح اعتقاد اھل السنۃ اللکائی، ۱/۱۳۳، رقم: ۲۶۲۔

2 ......الشریعۃ للاجری، باب ذم الجدال والخصومات فی الدین، ۱/۴۵۸۔

www.dawateislami.net

﴾15﴿...अल्लाह व रसूल की इताअत

अल्लाह व रसूल की इताअत की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन बातों को करने का हुक्म दिया है उन पर अमल करना और जिन से मन्अ फ़रमाया उन को न करना "अल्लाह व रसूल की इताअत" कहलाता है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ﴾(پ۵، النساء: ۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का।"

अहादीसे मुबारका

तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ۞ "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअत छोड़ दी वोह क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस के पास (अज़ाब से बचने की) कोई हुज्जत न होगी, और जो इस हाल में मरा कि उस की गर्दन में बैअत का पट्टा न था तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरा।"[1] ۞ "जिस ने मेरी इताअत की उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअत की, जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की।"[2] ۞ "जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी इताअत की और फिर हिजरत की मैं उसे जन्नत के कनारे और वस्त में एक एक घर की ज़मानत देता हूं तो जो येह काम करे और न तो ख़ैर का

1 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب ملازمۃ جماعۃ المسلمین۔۔۔الخ، ص۱۰۳۰، حدیث:۱۸۵۱۔
2 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب طاعۃ الامراء۔۔۔الخ، ص۱۰۲۱، حدیث:۱۸۳۵۔

www.dawateislami.net

कोई मौक़अ़ हाथ से जाने दे और न ही बुराई से भागने का कोई मौक़अ़ गंवाए तो (येही उस के लिये काफ़ी है) वोह जहां चाहे मरे।"[1]

अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त का हुक्म

हर मुसलमान पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त लाज़िम है या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन बातों को करने का हुक्म दिया है उन पर अ़मल करे और जिन से मन्अ़ फ़रमाया है उन से बचे।

16 हिकायत सारी उ़म्र इत़ाअ़त में गुज़ार दी मगर.....!

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ख़ौफ़े ख़ुदा" सफ़ह़ा 93 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ बिन अज्दअ़ ताबेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इतनी लम्बी नमाज़ अदा फ़रमाते कि उन के पाउं सूज जाया करते थे और येह देख कर उन के घरवालों को उन पर तरस आता और वोह रोने लगते। एक दिन उन की वालिदा ने कहा : "मेरे बेटे ! तू अपने कमज़ोर जिस्म का ख़याल क्यूं नहीं करता ? इस पर इतनी मशक़्क़त क्यूं लादता है ? तुझे इस पर ज़रा रह़्म नहीं आता ? कुछ देर के लिये आराम कर लिया करो, क्या अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम की आग सिर्फ़ तेरे लिये पैदा की है कि तेरे इ़लावा कोई उस में फेंका नहीं जाएगा ?" उन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ की : "अम्मी जान ! इन्सान को हर ह़ाल में मुजाहदा करना चाहिये क्यूंकि क़ियामत के दिन दो ही बातें होंगी, या तो मुझे बख़्श दिया जाएगा या फिर मेरी पकड़ हो जाएगी, अगर मेरी मग़्फ़िरत हो गई तो येह मह़्ज़ अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और

---

[1] نسائی، کتاب الجهاد، باب مالمن اسلم وهاجر۔۔۔الخ، ص ۵۰۹، حدیث: ۳۱۳۰ ملتقطاً

उस की रह़मत होगी और अगर मैं पकड़ा गया तो येह उस का अ़द्ल होगा, लिहाज़ा अब मैं आराम नहीं करूंगा और अपने नफ़्स को मारने की पूरी कोशिश करता रहूंगा।" जब उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी। लोगों ने पूछा : "आप ने तो सारी उ़म्र मुजाहदों और रियाज़तों में गुज़ारी है, अब क्यूं रो रहे हैं?" इरशाद फ़रमाया : "मुझ से ज़ियादा किस को रोना चाहिये कि मैं सत्तर(70) साल तक जिस दरवाज़े को खटखटाता रहा, आज उसे खोल दिया जाएगा लेकिन येह नहीं मा'लूम कि जन्नत का दरवाज़ा खुलता है या दोज़ख़ का? काश! मेरी मां ने मुझे जनम न दिया होता और मुझे येह मशक़्क़त न देखना पड़ती।"

क़ब्र मह़बूब के जल्वों से बसा दे मालिक......येह करम कर दे तो मैं शाद रहूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी......हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा......गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा करने, इत़ाअ़त करने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े

(1) **नेकियों और नेक आ'माल की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** जब तक बन्दे को इस बात का इ़ल्म न होगा कि नेक आ'माल कौन कौन से हैं, उस वक़्त तक उन आ'माल को बजा लाना बहुत दुश्वार होगा और येही इत़ाअ़त का सब से बड़ा रुक्न है कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुए नेक आ'माल को बजा लाए। इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : ۞ इह़याउल उ़लूम ۞ मुकाशफ़तुल क़ुलूब ۞ मिन्हाजुल आ़बिदीन ۞ बहारे शरीअ़त ۞ जन्नत में ले जाने वाले आ'माल ۞ नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं ۞ नेकी की दा'वत। वग़ैरा

www.dawateislami.net

(2) बुराइयों और गुनाहों की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये : येह बात भी मुसल्लमा (तै शुदा) है कि बीमारी की तश्ख़ीस के लिये इस की मा'लूमात होना बहुत ज़रूरी हैं, जब तक मा'लूमात न होंगी उस वक़्त तक तश्ख़ीस नहीं हो सकती और जब तश्ख़ीस न होगी तो इलाज भी न हो सकेगा। नीज़ इत़ाअ़त का दूसरा बड़ा रुक्न भी येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन चीज़ों से बचने का हुक्म दिया है बन्दा उन से बचे। इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : ❁ इह़याउल उ़लूम ❁ बहारे शरीअ़त ❁ जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ❁ बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात ❁ नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं ❁ गुनाहों की नुहूसत ❁ बुरे ख़ातिमे के अस्बाब। वग़ैरा

(3) इत़ाअ़त गुज़ार लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये : इत़ाअ़ते इलाही का जज़्बा पैदा करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ इत़ाअ़त गुज़ार लोगों की सोह़बत भी है कि बन्दा जैसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करता है वोह वैसा ही बन जाता है, जब बन्दा अपने ही जैसे अफ़राद को नेकियां करते और गुनाहों से बचते हुए देखता है तो उस की ज़ात में भी नेकियां करने और गुनाहों से बचने का जज़्बा पैदा हो जाता है।

(4) इत़ाअ़त के दुन्यवी व उख़रवी फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये : चन्द फ़वाइद येह हैं : ❁ इत़ाअ़त गुज़ार को थोड़े माल पर क़नाअ़त अ़त़ा कर दी जाती है। ❁ इत़ाअ़त गुज़ार लोगों के माल से बे नियाज़ कर दिया जाता है। ❁ इत़ाअ़त गुज़ार को सब्रो शुक्र की दौलत अ़त़ा कर दी जाती है। ❁ इत़ाअ़त गुज़ार की इ़ज़्ज़त लोगों के दिलों में डाल दी जाती है। ❁ इत़ाअ़त गुज़ार का ख़ातिमा रह़मते इलाही से बिल ख़ैर होगा। ❁ इत़ाअ़त गुज़ार को क़ब्र के सुवालात में आसानी होगी। ❁ इत़ाअ़त

गुज़ार को कल बरोज़े क़ियामत हिसाब में भी आसानी होगी। ۞ इताअ़त गुज़ार हश्र की तक्लीफ़ों से महफ़ूज़ रहेगा। ۞ इताअ़त गुज़ार रब की रहमत से अ़ज़ाब से भी महफ़ूज़ रहेगा। ۞ इताअ़त गुज़ार को जन्नत में दाख़िला नसीब होगा। ۞ अल ग़रज़ इताअ़त गुज़ार को दुन्या व आख़िरत की कसीर भलाइयां अ़ता की जाती हैं।

(5) **ना फ़रमानी की हलाकतों पर ग़ौर कीजिये :** चन्द हलाकतें येह हैं : ۞ ना फ़रमान शख़्स की दुन्या में ज़िल्लतो रुस्वाई होगी। ۞ ना फ़रमान शख़्स को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ों का सामना करना पड़ता है। ۞ कभी माली तंगी से दो चार होता है। ۞ कभी घरेलू नाचाक़ियों से पाला पड़ता है। ۞ इसे त़रह़ त़रह़ की बीमारियां लग जाती हैं। ۞ ना फ़रमान शख़्स के बुरे ख़ातिमे का भी ख़ौफ़ है। ۞ ना फ़रमान शख़्स को क़ब्र के सुवालात में भी परेशानी का सामना हो सकता है। ۞ ना फ़रमान शख़्स को ह़श्र में भी ह़िसाबो किताब में मुश्किल हो सकती है। ۞ ना फ़रमान शख़्स से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ होते हैं और यक़ीनन येह तमाम नुक़्सानात में सब से बड़ा नुक़्सान और बद नसीबी है।

(6) **हर हर मुआ़मले में शरीअ़त को मल्ह़ूज़ रखिये :** चाहे इस का तअ़ल्लुक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक़ूक़ से हो या अपनी ज़ात, वालिदैन, आल औलाद व रिश्तेदारों, पड़ोसियों या दीगर हुक़ूक़ुल इबाद से हो। अपनी ज़िन्दगी के हर हर मुआ़मले में शरीअ़त के मुताबिक़ गुज़ारने के लिये सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "बहारे शरीअ़त" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है, इस किताब में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्यवी व उख़रवी कई मुआ़मलात के बारे में तफ़्सीली शरई रहनुमाई की गई है।

(7) **इत़ाअ़त की राह में ह़ाइल अस्बाब को दूर कीजिये :** जब अस्बाब दूर हो जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इत़ाअ़त भी नसीब हो जाएगी, इत़ाअ़त की राह में रुकावट डालने वाले चन्द अस्बाब येह हैं : ۞ इल्मे दीन ह़ासिल न करना ۞ दीनदार लोगों की सोह़बत इख़्तियार न करना ۞ बुरे लोगों की सोह़बत में बैठना ۞ दुन्यवी मह़ब्बत को दिल में बसा लेना ۞ लम्बी लम्बी उम्मीदें लगा लेना ۞ मौत को भूल जाना ۞ फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाना ۞ गुनाहों में मुब्तला हो जाना । वग़ैरा

(8) **मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये :** मदनी इन्आ़मात दर अस्ल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा मुख़्तलिफ़ सुवालात की सूरत में कई नेक आ'माल का मजमूआ़ है, उन नेक आ'माल को बजा लाने से दुन्या व आख़िरत की कसीर भलाइयां ह़ासिल की जा सकती हैं, मदनी इन्आ़मात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करने में बेहतरीन मुआ़विन हैं ।

(9) **मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार कीजिये :** जब बन्दा राहे ख़ुदा में निकल कर नेकियां करने और गुनाहों से बचने की कोशिश करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद ख़ुसूसी त़ौर पर उस के शामिले ह़ाल होती है, बल्कि नेक आ'माल का सवाब कई गुना बढ़ा दिया जाता है, मदनी क़ाफ़िलों में अक्सर वक़्त मस्जिद और इ़बादत व रियाज़त में गुज़ारा जाता है जो यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में बेहतरीन मुआ़विन है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾16﴿...दिल की नर्मी

दिल की नर्मी की ता'रीफ़

दिल का ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस त़रह़ नर्म होना कि बन्दा अपने आप को गुनाहों से बचाए और नेकियों में मश्ग़ूल कर ले, नसीह़त उस के दिल पर असर करे, गुनाहों से बे रग़बती हो, गुनाह करने पर पशेमानी हो, बन्दा तौबा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, शरीअ़त ने उस पर जो जो हुक़ूक़ लाज़िम किये हैं उन की अच्छे त़रीक़े से अदाएगी पर आमादा हो, अपने आप, घरबार, रिश्तेदारों व ख़ल्क़े ख़ुदा पर शफ़्क़त व रह़्म व नर्मी करे, कुल्ली त़ौर पर इस कैफ़िय्यत को "**दिल की नर्मी**" से ता'बीर किया जाता है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَا نْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो कैसी कुछ **अल्लाह** की मेह़रबानी है कि ऐ मह़बूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द (आस पास) से परेशान हो जाते।"

﴾अह़ादीसे मुबारका﴿ नर्म दिल पाक दामन ग़नी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** तबारक व तआ़ला नर्म दिल, पाक दामन ग़नी को पसन्द फ़रमाता है और संगदिल बद किरदार साइल को ना पसन्द फ़रमाता है।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

(1) ......مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فی الشیخ الجعول والبذیٔ والفاجر، ۸/۱۴۵، حدیث: ۱۳۰۲۷۔

www.dawateislami.net

हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यतीम के सर पर हाथ फेर और मसाकीन को खाना खिला।"(1)

दिल की नर्मी का हुक्म

वोह उमूर जो दिल की सख़्ती दूर करने और दिल में नर्मी पैदा करने का सबब बनें उन्हें हासिल करने की कोशिश की जाए।

17 हिकायत — दुआ की बरकत से दिल की सख़्ती दूर हो गई

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الغَنِی फ़रमाते हैं कि मैं दिल की सख़्ती के मरज़ में मुब्तला था और मुझे हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی की दुआ की बरकत से छुटकारा मिल गया। हुवा यूं कि मैं नमाज़े ईद पढ़ने के बा'द वापस लौट रहा था कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखा। आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ एक बच्चा भी था जिस के बाल उलझे हुए थे। दिल टूटने के सबब रोए जा रहा था। मैं ने अर्ज़ की : "या सय्यिदी ! क्या हुवा ? आप के साथ येह बच्चा क्यूं रो रहा है ?" तो आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : "मैं ने चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा लेकिन येह बच्चा एक तरफ़ खड़ा हुवा था। उन बच्चों के साथ न खेलने की वज्ह से इस का दिल टूट गया है। मैं ने बच्चे से पूछा तो इस ने बताया : मैं यतीम हूं, मेरा बाप इन्तिक़ाल कर गया है, मेरा कोई सहारा नहीं और मेरे पास कुछ रक़म भी नहीं कि मैं अख़रोट ख़रीद कर इन बच्चों के साथ खेल सकूं।" चुनान्चे, मैं इस को अपने साथ ले आया हूं ताकि इस के लिये गुठलियां इकठ्ठी करूं जिन से

1 ......مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۳۳۵، حدیث: ۹۰۲۸۔

येह अख़रोट ख़रीद कर दूसरे बच्चों के साथ खेल सके।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप येह बच्चा मुझे दे दें ताकि मैं इस की ह़ालत बदल सकूं।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "चलो इस को पकड़ लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा दिल ईमान की बरकत से ग़नी करे और अपने रास्ते की ज़ाहिरी व बात़िनी पहचान अ़ता फ़रमा दे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं उस बच्चे को ले कर बाज़ार चला गया और अच्छे कपड़े पहनाए, अख़रोट ख़रीद कर दिये और वोह ईद के दिन दूसरे बच्चों के साथ खेलने चला गया। दूसरे बच्चों ने पूछा : "तुझ पर येह एह़सान किस ने किया ?" उस ने जवाब दिया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی और सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِی ने।" जब बच्चे खेल कूद के बा'द चले गए तो वोह बच्चा ख़ुशी ख़ुशी मेरे पास आया। मैं ने उस से पूछा : "बताओ ! ईद का दिन कैसा गुज़रा ?" उस ने कहा : "ऐ मेरे मोह़तरम ! आप ने मुझे अच्छा कपड़ा पहनाया, मुझे ख़ुश कर के बच्चों के साथ खेलने के लिये भेजा, मेरे टूटे हुए दिल को जोड़ा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी बारगाह में ह़ाज़िरी की कमी पूरी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और आप के लिये अपना रास्ता खोल दे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "मुझे बच्चे के इस कलाम से बेह़द ख़ुशी हुई जिस ने ईद की ख़ुशियां दोबाला कर दीं।"[1]

दिल में नर्मी पैदा करने के दस ﴿10﴾ त़रीक़े

(1) **दिल की सख़्ती के मुमकिना नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** चन्द नुक़्सानात येह हैं : ۞ दिल की सख़्ती अ़मल को ज़ाएअ़ कर देने का एक सबब है। ۞ सख़्त दिली से बे रह़मी का अन्देशा है। ۞ सख़्त दिल

[1] .....ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 353

www.dawateislami.net

शख़्स उ़मूमन रह़्म करने की त़रफ़ बहुत कम माइल होता है। ❁ सख़्त दिल लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ना पसन्द हैं। ❁ सख़्त दिल लोगों की सोह़बत बुरी सोह़बत कहलाती है। ❁ सख़्त दिल लोग कल बरोज़े क़ियामत ग़ज़बे इलाही का शिकार हो सकते हैं। ❁ उन को ह़िसाब में दुश्वारी का भी अन्देशा है। ❁ रब तआ़ला की नाराज़ी की सूरत में वोह जहन्नम के अ़ज़ाब का भी शिकार हो सकते हैं। ❁ सख़्त दिली अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब की अ़लामत है। ❁ सख़्त दिल लोग दुन्या व आख़िरत की कसीर भलाइयों से मह़रूम कर दिये जाते हैं। वग़ैरा वग़ैरा

(2) **नर्म दिली के फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये :** चन्द फ़वाइद येह हैं : नर्म दिल शख़्स रह़्म दिल होता है, ❁ सब पर रह़्म करता है, ❁ नर्म दिल लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द हैं, ❁ नर्म दिली अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है, ❁ नर्म दिली खुश बख़्ती की अ़लामत है, ❁ नर्म दिल शख़्स की इ़ज़्ज़त लोगों के दिलों में डाल दी जाती है। ❁ जिसे नर्म दिली अ़त़ा की जाती है उसे दुन्या व आख़िरत की कसीर भलाइयां अ़त़ा कर दी जाती हैं। वग़ैरा वग़ैरा

(3) **भूक से कम खाइये :** इस से दिल नर्म होता है, पेट भर कर खाने से दिल की सख़्ती पैदा होती है। बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का फ़रमान है : "भूक हमारा सरमाया है।" इस क़ौल के मा'ना येह हैं कि हमें जो फ़राग़त, सलामती, इ़बादत, ह़लावत, इ़ल्म और अ़मले नाफ़ेअ़ वग़ैरा नसीब होता है वोह सब भूक के सबब और सब्र की बरकत से होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "दिल की सख़्ती के दो अस्बाब हैं : (1) पेट भर कर खाना (2) ज़ियादा बोलना।"[1]

1 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, पेट का क़ुफ़्ले मदीना, स. 678

(4) **फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू से परहेज़ कीजिये :** फ़ुज़ूल गोई से दिल में सख़्ती पैदा होती है, यूं दिल न तो किसी पर रह़म करने पर आमादा होता है और न ही किसी के लिये हमदर्दी के जज़्बात पैदा होते हैं, किसी के बारे में जिस क़दर मन्फ़ी (ग़ीबत, चुग़ली, तोहमत पर मुश्तमिल) गुफ़्त्गू की जाती है उसी क़दर दिल में नफ़रत के जज़्बात पैदा हो जाते हैं और येह सब फ़ुज़ूल गोई की बुरी आ़दत की वज्ह से होता है। लिहाज़ा दिल में नर्मी पैदा करना चाहते हैं तो ज़बान को फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू से बचाते हुए क़ुफ़्ले मदीना लगाइये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ज़िक्रुल्लाह के बिग़ैर ज़ियादा कलाम न करो क्यूंकि ज़िक्रुल्लाह के बिग़ैर ज़ियादा कलाम दिल की सख़्ती है और सख़्त दिल लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत व इनायत) से सब से ज़ियादा दूर हैं।"[1] ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "अगर तू अपने दिल में सख़्ती या अपने बदन में सुस्ती या अपने रिज़्क़ में मह़रूमी देखे तो यक़ीन कर ले कि तू ने कोई फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू की है।"[2]

(5) **गुनाहों के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर दीजिये :** गुनाह ख़्वाह ज़ाहिरी हो या बात़िनी, दोनों ही दिल की सख़्ती का सबब हैं और जिन के दिल नर्म होते हैं उस के पीछे येह राज़ पोशीदा होता है कि वोह गुनाहों से हर सूरत बचते हैं। लिहाज़ा दिल में नर्मी पैदा करने के लिये आप भी गुनाहों के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर दीजिये, गुनाहों और उन के अस्बाब व इलाज की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये, ख़ुद को गुनाहों से बचाइये। गुनाहों की मा'लूमात, इन के अस्बाब व इलाज के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़

1 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۴/۱۸۴، حدیث: ۲۴۱۹۔
2 .....आंसूओं का दरिया, स. 239

www.dawateislami.net

इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : ۞ इह्याउल उ़लूम ۞ जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ۞ बातिनी बीमारियों की मा'लूमात।

(6) **यतीम व मिस्कीन की ख़ैर ख़्वाही कीजिये :** दिल में नर्मी पैदा करने का एक नुस्ख़ा येह भी है कि यतीम व मिस्कीन के साथ ख़ैर ख़्वाही की जाए कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबिये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सख़्त दिली की शिकायत की तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू दिल की नर्मी चाहता है तो मिस्कीन को खाना खिला और यतीम के सर पर हाथ फेर।"(1)

(7) **मौत को कसरत से याद कीजिये :** मौत दिल की नर्मी का बेहतरीन नुस्ख़ा है। चुनान्चे, एक औ़रत ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अपने दिल की सख़्ती के बारे में शिकायत की तो उन्हों ने फ़रमाया : "मौत को ज़ियादा याद करो इस से तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा।" उस औ़रत ने ऐसा ही किया तो दिल की सख़्ती जाती रही, फिर उस ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का शुक्रिय्या अदा किया।(2)

(8) **ज़ियारते क़ुबूर कीजिये :** ज़ियारते क़ुबूर दिल की सख़्ती का एक बेहतरीन इलाज और दिल की नर्मी में बहुत मुआ़विन है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया करता था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो क्यूंकि ज़ियारते क़ुबूर दिल की नर्मी, अश्कबारी (रोने का सबब) और आख़िरत की याद दिलाने वाली है।"(3)

1 ......البر والصلة لابن جوزی، الباب الخمسون فی کفایة الیتیم، ص ۲۳۳، حدیث: ۴۰۳۔

2 .....इह्याउल उ़लूम, 5 / 480

3 ......مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/ ۴۷۳، حدیث: ۱۳۴۸۷۔

(9) अल्लाह वालों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जैसे लोहा नर्म हो कर औज़ार और सोना नर्म हो कर ज़ेवर और मिट्टी नर्म हो कर खेत या बाग़, आटा नर्म हो कर रोटी वग़ैरा बनते हैं ऐसे ही इन्सान दिल का नर्म हो कर वली, सूफ़ी, आ़रिफ़ वग़ैरा बनता है। दिल की नर्मी **अल्लाह** की बड़ी ने'मत है, येह नर्म दिल बुज़ुर्गों की सोह़बत और उन के पाक कलिमात से नसीब होती है।"[1] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबुल ह़वारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब तू अपने दिल में सख़्ती मह़सूस करे तो ज़िक्र करने वालों की मजलिस में बैठ जा, दुन्या से बे रग़बत लोगों की सोह़बत इख़्तियार कर, अपना खाना कम कर ले, अपनी मुराद (ख़्वाहिश) से इजतिनाब कर, बुरे कामों से ख़ुद को रोक ले।"[2] लिहाज़ा अल्लाह वालों की सोह़बत में बैठने की बरकत से दिल नर्म होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्‌ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी एक अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं, कई ऐसे लोग हैं जिन की सख़्त दिली ने उन्हें बहुत से गुनाहों और संगीन जराइम में मुब्तला कर दिया था, नेकियों से कोसों दूर कर दिया था, उन्हें शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्‌ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुबारक सोह़बत अ़त़ा हुई, आप के बयानात को सुना, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हुए, हफ़्तावार इजतिमाआ़त में शिर्कत और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 2

2 ......الطبقات الصوفية، الطبقة الاولى، ص ۹۴۔

www.dawateislami.net

फ़ज़्लो करम से उन्हें दिल की नर्मी नसीब हो गई, गुनाहों से नफ़रत मिल गई, नेकियों से महब्बत का अ़मली जज़्बा बेदार हो गया, आप भी दिल की नर्मी चाहते हैं तो शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोहबत इख़्तियार करें, बयानात सुनें, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत करें, इस की बरकत से ढेरों भलाइयां ह़ासिल होंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(10) **दिल की नर्मी की बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये :** दुआ़ मोमिन का हथियार और इबादत का मग़्ज़ है। एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल को नर्म कर दे। तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे इस दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई : "يَامُلَيِّنَ الْقُلُوْبِ! لَيِّنْ قَلْبِیْ قَبْلَ اَنْ تُلَيِّنَهٗ عِنْدَ الْمَوْتِ" या'नी ऐ दिलों को नर्म फ़रमाने वाले ! मेरे दिल को भी नर्म कर दे इस से पहले कि तू मौत के वक़्त इसे नर्म करे।" (आमीन)[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿...ख़ल्वत व गोशा नशीनी

ख़ल्वत व गोशा नशीनी की ता'रीफ़

❁ ख़ल्वत के लुग़वी मा'ना "तन्हाई" के हैं और बन्दे का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने, तक़्वा व परहेज़गारी के दरजात में तरक़्क़ी करने और गुनाहों से बचने के लिये अपने घर या किसी मख़्सूस मक़ाम पर लोगों की नज़रों से पोशीदा हो कर इस त़रह़ मो'तदिल अन्दाज़ में नफ़्ली इबादत करना "**ख़ल्वत व गोशा नशीनी**" कहलाता है कि **हुक़ूक़ुल्लाह** (या'नी फ़राइज़ व वाजिबात व सुनने मुअक्कदा) और शरीअ़त की त़रफ़ से उस पर

1.....हिकायतें और नसीह़तें, स. 353

www.dawateislami.net

लाज़िम किये गए तमाम हुक़ूक़ की अदाएगी, वालिदैन, घरवालों, आल औलाद व दीगर हुक़ूकुल इबाद (बन्दों के हुक़ूक़) की अदाएगी में कोई कोताही न हो। ۞ सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक लोगों में ज़ाहिरी तौर पर रहते हुए बातिनी तौर पर उन से जुदा रहना या'नी ख़ुद को रब तआ़ला की त़रफ़ मुतवज्जेह रखना ख़ल्वत व गोशा नशीनी है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝﴾ (پ۲۹، المزمل: ۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और अपने रब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो।" इस आयत के तहत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "या'नी इबादत में इन्क़िताअ़ की सिफ़त हो कि दिल अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी त़रफ़ मश्ग़ूल न हो, सब अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़ात) क़त्अ़ (ख़त्म) हो जाएं, उसी की त़रफ़ तवज्जोह रहे।"(1) ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝﴾ (پ۱۶، مریم: ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और किताब में मरयम को याद करो जब अपने घरवालों से पूरब (मशरिक़) की त़रफ़ एक जगह अलग गई।" इस आयते मुबारका में ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا की ख़ल्वत का ज़िक्र है कि वोह अपने मकान में या बैतुल मुक़द्दस की शरक़ी जानिब में लोगों से जुदा हो कर इबादत के लिये ख़ल्वत में बैठ गईं।(2)

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 29, अल मुज़्ज़म्मिल, तहतुल आयत : 8

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम, तहतुल आयत : 16 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

«हदीसे मुबारका» ख़ल्वत व गोशा नशीनी ज़रीअ़ए नजात है

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "नजात का ज़रीआ़ क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो और तुम को तुम्हारा घर काफ़ी रहे और अपनी ख़त़ाओं पर रोओ।"(1) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الغَنِی फ़रमाते हैं : "या'नी बिला ज़रूरत घर से बाहर न जाओ, लोगों के पास बिला वज्ह न जाओ, घर से न घबराओ, अपने घर की ख़ल्वत को ग़नीमत जानो कि इस में सदहा (सेंकड़ों) आफ़तों से अमान है। बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि सुकूत, लुज़ूमे बुयूत और क़नाअ़त बिल क़ुव्वत इला अय्यमूत अमान की चाबी है या'नी ख़ामोशी, घर में रहना, रब की अ़त़ा पर क़नाअ़त, मौत तक इस पर क़ाइम रहना।"(2)

ख़ल्वत व गोशा नशीनी के अह़काम

(1) मुत़लक़न ख़ल्वत रिज़ाए इलाही पाने, ख़ुद को नेकियों में लगाने, गुनाहों से बचाने और जन्नत में ले जाने वाला काम है। हर मुसलमान को चाहिये कि रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल और इबादात में पुख़्तगी ह़ासिल करने के लिये कुछ न कुछ वक़्त ख़ल्वत इख़्तियार करे, अलबत्ता मुख़्तलिफ़ अफ़राद के मुख़्तलिफ़ अह़वाल की वज्ह से इस के अह़काम भी मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ के लिये ख़ल्वत अफ़्ज़ल और बा'ज़ के लिये जल्वत (या'नी लोगों में रहना) अफ़्ज़ल। (2) ऐसा आ़लिमे दीन जिस से लोग इल्मे दीन ह़ासिल करते हों और अगर येह ख़ल्वत इख़्तियार कर ले तो लोग शरई

(1) ......ترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۴/۱۸۲، حدیث: ۲۴۱۴۔

(2) .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 464

www.dawateislami.net

मसाइल से महरूम हो कर गुमराही में जा पड़ेंगे तो ऐसे आ़लिम के लिये कुलियतन ख़ल्वत इख़्तियार करना नाजाइज़ व ममनूअ़ है अलबत्ता ऐसा साहिबे इल्म शख़्स जिस के पास अपनी ज़रूरत का इल्म मौजूद है और इस के ख़ल्वत इख़्तियार करने से लोगों का भी कोई नुक़्सान नहीं तो ऐसे शख़्स के लिये ख़ल्वत इख़्तियार करना जाइज़ है। (3) ऐसा शख़्स जो ज़रूरिय्याते दीन (फ़राइज़ो वाजिबात व सुनने मुअक्कदा) से नावाक़िफ़ हो, अगर इल्म ह़ासिल न करेगा तो नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर गुमराही के गढ़े में गिर जाएगा ऐसे शख़्स के लिये ख़ल्वत इख़्तियार करना शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है बल्कि उस पर लाज़िम है कि फ़र्ज़ उ़लूम को ह़ासिल करे। (4) अगर किसी शख़्स को अच्छी सोह़बत मुयस्सर नहीं है और वोह ख़ल्वत इख़्तियार नहीं करेगा तो गुनाहों में मुब्तला हो जाएगा तो ऐसे शख़्स पर लाज़िम है कि **हुक़ूक़ुल्लाह** व हुक़ूक़ुल इबाद (**अल्लाह** तआ़ला और बन्दों के हुक़ूक़) की अदाएगी करते हुए ब क़दरे ज़रूरत ख़ल्वत इख़्तियार करे और ख़ुद को गुनाहों से बचा कर इबादत में मसरूफ़ हो जाए। मिरआतुल मनाजीह़ में है : सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि "अब इस ज़माने में जल्वत (लोगों में रहने) से ख़ल्वत अफ़्ज़ल, बुरी सोह़बत से तन्हाई अफ़्ज़ल।"[1] बुरे लोगों की सोह़बत से ख़ल्वत अफ़्ज़ल और ख़ल्वत से अच्छे लोगों की सोह़बत अफ़्ज़ल। (5) अगर ख़ल्वत इख़्तियार करने में किसी भी त़रह **हुक़ूक़ुल्लाह** या **हुक़ूक़ुल इबाद** की तलफ़ी होती हो तो ऐसी ख़ल्वत इख़्तियार करना शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है। मसलन कोई शख़्स घर के एक कोने में बैठ कर इस त़रह ज़िक्रो अज़्कार व इबादत वग़ैरा में मसरूफ़ हो जाए कि जमाअ़त भी तर्क कर दे, जुमुआ़ व ईदैन में भी सुस्ती हो जाए, कस्बे ह़लाल तर्क कर दे और उसे या उस के

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 137

www.dawateislami.net

घरवालों को इस ख़ल्वत की वज्ह से दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़े तो ऐसी ख़ल्वत नाजाइज़ व ह़राम है। ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मुसलमान दो क़िस्म के हैं : एक वोह जिन्हें ख़ल्वत बेहतर है, बा'ज़ वोह जिन के लिये जल्वत अफ़्ज़ल, इन दोनों में जल्वत वाले अफ़्ज़ल हैं क्यूंकि ख़ल्वत वाले सिर्फ़ अपनी इस्लाह़ करते हैं और जल्वत वाले दूसरों को भी दुरुस्त करते हैं। ह़ज़रते अ़ली (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि तुम दुन्या में अपने दोस्त ज़ियादा बनाओ कि कल क़ियामत में मोमिन दोस्त शफ़ाअ़त करेंगे और आप ने अपनी ताईद में येह आयत पढ़ी : ﴿ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۝ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ۝ ﴾ (پ۱۹، الشعراء: ۱۰۰، ۱۰۱) कुफ़्फ़ारे मक्का अपने लिये शफ़ीअ़ और दोस्त न मिलने पर अफ़्सोस करेंगे मगर ख़याल रहे कि बा'ज़ लोगों के लिये बा'ज़ ह़ालात में बा'ज़ मक़ामात पर ख़ल्वत अफ़्ज़ल होती है अगर जल्वत में ख़ुद अपने आप के गुनाहों में मश्ग़ूल हो जाने का अन्देशा हो तो ख़ल्वत बेहतर। ह़ज़रते वह्ब (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) फ़रमाते हैं कि ह़िक्मत दस ह़िस्से हैं : नव ख़ामोशी में, एक ख़ल्वत में। बेहतर येह है कि कभी ख़ल्वत इख़्तियार करे कभी जल्वत : خَيْرُ الْاُمُوْرِ اَوْسَطُهَا (सब से बेहतर काम मियाना रवी वाला होता है) अ़रबी में तन्हाई को عُزْلَةٌ कहते हैं, आ़रिफ़ीन फ़रमाते हैं कि उ़ज़्लत में अगर इल्म का "ऐ़न" न हो तो ज़िल्लत है और अगर ज़ोहद की "ز" न हो तो निरी इ़ल्लत है या'नी ख़ल्वत वोह इख़्तियार करे जिस के पास इल्म भी हो ज़ोहद भी।"[1] ۞ आ'ला ह़ज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से जब ख़ल्वत नशीनी के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी तीन क़िस्म के हैं : (1) मुफ़ीद (2) मुस्तफ़ीद

[1]....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 647

www.dawateislami.net

(3) मुन्फ़रिद। मुफ़ीद वोह कि दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाए, मुस्तफ़ीद वोह कि खुद दूसरे से फ़ाएदा ह़ासिल करे, मुन्फ़रिद वोह कि दूसरे से फ़ाएदा लेने की उसे ह़ाजत न हो और न दूसरे को फ़ाएदा पहुंचा सकता हो। मुफ़ीद और मुस्तफ़ीद को उ़ज़्लत गुज़ीनी (या'नी ख़ल्वत) ह़राम है और मुन्फ़रिद को जाइज़ बल्कि वाजिब।" इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वाक़िआ़ बयान फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया : "वोह लोग जो पहाड़ पर गोशा नशीन हो कर बैठ गए थे वोह खुद फ़ाएदा ह़ासिल किये हुए थे और दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाने की उन में क़ाबिलिय्यत न थी उन को गोशा नशीनी जाइज़ थी और इमाम इब्ने सीरीन (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) पर उ़ज़्लत (या'नी ख़ल्वत) ह़राम थी।"[1]

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो.....फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुम आराई हो

सारा आ़लम हो मगर दीदह दिल देखे तुम्हें....अन्जुमन गर्म हो और लज़्ज़ते तन्हाई हो

18 हिकायत — ख़ल्वत के फ़वाइद ख़ल्वत नशीन राहिब की ज़बानी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद बिन यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं एक राहिब के पास से गुज़रा जो लोगों से अलग थलग अपने सौमआ़ (या'नी इ़बादत ख़ाने) में रहता था। मैं ने उस से पूछा : "ऐ राहिब ! तू किस की इ़बादत करता है ?" कहने लगा : "मैं उस की इ़बादत करता हूं जिस ने मुझे और तुझे पैदा किया।" मैं ने पूछा : "उस की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी का क्या आ़लम है ?" उस ने जवाब दिया : "वोह बड़ी अ़ज़मत व मर्तबत का मालिक है, उस की अ़ज़मत हर चीज़ से बढ़ कर है।" मैं ने पूछा : "इन्सान को दौलते इ़श्क़ कब नसीब होती है ?" तो वोह कहने लगा : "जब उस की मह़ब्बत बे ग़रज़ हो और वोह अपने मुआ़मले में

1....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 373

www.dawateislami.net

मुख़्लिस हो।'' मैं ने पूछा : ''महब्बत कब ख़ालिस व बे ग़रज़ होती है?'' उस ने जवाब दिया : ''जब ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो और वोह महबूब की इत़ाअ़त में लग जाए।'' मैं ने कहा : ''महब्बत में इख़्लास की पहचान क्या है?'' कहने लगा : ''जब ग़मे फ़ुर्क़त (जुदाई के ग़म) के इलावा कोई और ग़म न हो।'' मैं ने पूछा : ''तुम ने ख़ल्वत नशीनी को क्यूं पसन्द किया?'' कहने लगा : ''अगर तू तन्हाई व ख़ल्वत की लज़्ज़त से आशना हो जाए तो तुझे अपने आप से भी वह़्शत मह़सूस होने लगे।'' मैं ने पूछा : ''इन्सान को ख़ल्वत नशीनी से क्या फ़ाएदा ह़ासिल होता है?'' राहिब ने जवाब दिया : ''लोगों के शर से अमान मिल जाती है और उन की आमदो रफ़्त की आफ़त से जान छूट जाती है।'' मैं ने कहा : ''मुझे कुछ और नसीह़त कर।'' तो वोह कहने लगा : ''हमेशा ह़लाल रिज़्क़ खाओ फिर जहां चाहो सो जाओ तुम्हें ग़म व परेशानी न होगी।'' मैं ने पूछा : ''राह़त व सुकून किस अ़मल में है?'' उस ने कहा : ''ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने में।'' मैं ने पूछा : ''इन्सान को राह़त व सुकून कब मुयस्सर आएगा?'' तो वोह कहने लगा : ''जब वोह जन्नत में पहुंच जाएगा।'' मैं ने पूछा : ''ऐ राहिब! तू ने दुन्या से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर इस सौमआ़ (या'नी इबादत ख़ाना) को क्यूं इख़्तियार कर लिया?'' कहने लगा : ''जो शख़्स ज़मीन पर चलता है वोह औंधे मुंह गिर जाता है और दुन्यादारों को हर वक़्त चोरों का ख़ौफ़ रहता है, पस मैं ने दुन्यादारों से तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर लिया और दुन्या के फ़ितना व फ़साद से मह़फ़ूज़ रहने के लिये अपने आप को उस ज़ात के सिपुर्द कर दिया जिस की बादशाही ज़मीनो आस्मान में है, दुन्यादार लोग अ़क़्ल के चोर हैं पस मुझे ख़ौफ़ हुवा कि येह मेरी अ़क़्ल चुरा लेंगे और ह़क़ीक़ी बात येह है कि जब इन्सान अपने दिल को तमाम ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या और बुराइयों से पाक कर लेता है तो उस के लिये ज़मीन तंग हो जाती है (या'नी उसे दुन्या क़ैद

ख़ाना मा'लूम होती है) फिर वोह आस्मानों की त़रफ़ बुलन्दी चाहता है और कु़र्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुतमन्नी (ख़्वाहिश करने वाला) हो जाता है और इस बात को पसन्द करता है कि अभी फ़ौरन अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले।" फिर मैं ने उस से पूछा : "ऐ राहिब ! तू कहां से खाता है ?" कहने लगा : "मैं ऐसी खेती से अपना रिज़्क़ ह़ासिल करता हूं जिसे मैं ने काश्त नहीं किया बल्कि उसे तो उस ज़ात ने पैदा फ़रमाया है जिस ने येह चक्की या'नी दाढ़ें मेरे मुंह में नस्ब कीं, मैं उसी का दिया हुवा रिज़्क़ खाता हूं।" मैं ने पूछा : "तुम अपने आप को कैसा मह़सूस करते हो ?" कहने लगा : "उस मुसाफ़िर का क्या ह़ाल होगा जो बहुत दुश्वार गुज़ार सफ़र के लिये बिग़ैर ज़ादे राह के रवाना हुवा हो, और उस शख़्स का क्या ह़ाल होगा जो अन्धेरी और वह़शतनाक क़ब्र में अकेला रहेगा, वहां कोई ग़म ख़्वार व मूनिस न होगा फिर उस का सामना उस अ़ज़ीम व क़ह्हार ज़ात से होगा जो अह़कमुल ह़ाकिमीन है जिस की बादशाही तमाम जहानों में है। इतना कहने के बा'द वोह राहिब ज़ारो क़ित़ार रोने लगा। मैं ने पूछा : "तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" कहने लगा : "मुझे जवानी के गुज़रे हुए वोह अय्याम रुला रहे हैं जिन में, मैं कुछ नेकी न कर सका और सफ़रे आख़िरत में ज़ादे राह की कमी मुझे रुला रही है, क्या मा'लूम मेरा ठिकाना जहन्नम है या जन्नत ?" मैं ने पूछा : "ग़रीब कौन है ?" कहने लगा : "ग़रीब और क़ाबिले रह़्म वोह शख़्स नहीं जो रोज़ी के लिये शह्र ब शह्र फिरे बल्कि ग़रीब (और क़ाबिले रह़्म) तो वोह शख़्स है जो नेक हो और फ़ासिक़ों में फंस जाए। बार बार सिर्फ़ (ज़बान से) इस्तिग़फ़ार करना (और दिल से तौबा न करना) तो झूटों का त़रीक़ा है, अगर ज़बान को मा'लूम हो जाता कि किस अ़ज़ीम ज़ात से मग़फ़िरत त़लब की जा रही है तो वोह मुंह में ख़ुश्क हो जाती। जब कोई दुन्या से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करता है तो मौत उस का तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर देती है।" फिर कहने लगा : "अगर इन्सान सच्चे दिल से

www.dawateislami.net

तौबा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बड़े बड़े गुनाहों को भी मुआफ़ फ़रमा देता है और जब बन्दा गुनाहों को छोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) कर ले तो उस के लिये आस्मानों से फ़ुतूह़ात उतरती हैं और उस की दुआ़एं क़बूल की जाती हैं और इन दुआ़ओं की बरकत से उस के सारे ग़म काफ़ूर (दूर) हो जाते हैं।" राहिब की हिक्मत भरी बातें सुन कर मैं ने उस से कहा : मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं, क्या तुम इस बात को पसन्द करोगे ?" तो वोह राहिब कहने लगा : "मैं तुम्हारे साथ रह कर क्या करूंगा, मुझे तो उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब नसीब है जो रज़्ज़ाक़ है और रूहों को क़ब्ज़ करने वाला है, वोही मौत व ह़यात देने वाला है, वोही मुझे रिज़्क़ देता है, कोई और ऐसी सिफ़ात का मालिक हो ही नहीं सकता।" (या'नी मुझे वोह ज़ात काफ़ी है, मैं किसी ग़ैर का मोह़ताज नहीं)[1]

ख़ल्वत इख़्तियार करने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े

(1) **ख़ल्वत से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ख़ल्वत, ह़लाल खाने के साथ दुरुस्त होती है और ह़लाल खाना उस वक़्त दुरुस्त होता है जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा किया जाए।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना जरीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "गोशा नशीनी येह है कि तुम लोगों के हुजूम में दाख़िल हो जाओ और अपने बात़िन को उन की मुज़ाह़मत (सामने आने) से मह़फ़ूज़ रखो, अपने नफ़्स को गुनाहों से अलग रखो और तुम्हारा बात़िन ह़क़ के साथ मरबूत़ (वाबस्ता) हो।" ۞ कहा गया है कि "जिस ने गोशा नशीनी को तरजीह़ दी उस ने ह़क़ को पा लिया।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

1.....उ़यूनुल ह़िकायात, ह़िस्सए अव्वल, स. 105

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़ल्वत से बढ़ कर कोई चीज़ इख़्लास की तरग़ीब देने वाली नहीं देखी ।" ❁ हज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "गोशा नशीनी की मशक़्क़त बरदाश्त करना लोगों के मेल जोल और मुदारात (अच्छी त़रह पेश आने) से ज़ियादा आसान है ।" ❁ हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर मख़्लूक़ से मेल जोल में भलाई है तो गोशा नशीनी में सलामती है ।"(1)

(2) **आदाबे ख़ल्वत की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** ख़ल्वत या'नी गोशा नशीनी के भी कुछ आदाब हैं, जब तक बन्दा उन आदाब को न बजा लाए उस वक़्त तक ख़ल्वत इख़्तियार न करे कि इस से नुक़्सान का अन्देशा है, चन्द आदाब येह हैं : (1) ख़ल्वत व गोशा नशीनी इख़्तियार करने वाले को चाहिये कि अव्वलन दुरुस्त अ़क़ाइद का इल्म ह़ासिल करे ताकि शैत़ान उसे वस्वसों के ज़रीए़ बहका न सके, फिर ज़रूरी अह़कामे शरइय्या की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करे ताकि उस के ज़रीए़ फ़राइज़ो वाजिबात की अच्छे त़रीक़े से अदाएगी कर सके और ख़ल्वत का मक़्सदे ह़क़ीक़ी (या'नी रिज़ाए इलाही व इ़बादत पर इस्तिक़ामत) ह़ासिल हो। इ़ल्मे अ़क़ाइद व मसाइल के बिग़ैर ख़ल्वत इख़्तियार करने वाला ऐसा है जैसे टेढ़ी बुन्याद पर इमारत खड़ी करने वाला कि वोह चाहे जितनी भी ख़ूब सूरत इमारत क़ाइम कर ले वोह कभी सीधी न होगी और हमेशा उस के गिरने का ख़त़रा ही रहेगा, इसी त़रह बिग़ैर इ़ल्म के ख़ल्वत इख़्तियार करने वाला भी कभी न कभी नफ़्सो शैत़ान के शिकन्जे में आ कर गुमराही के अ़मीक़ (गहरे) गढ़े में गिर सकता है। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़्ई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने एक गोशा नशीन से फ़रमाया : पहले इ़ल्म ह़ासिल करो फिर गोशा नशीनी इख़्तियार करो ।"(2) (2) ख़ल्वत और गोशा नशीनी दर ह़क़ीक़त बुरी

1 ......الرسالة القشيرية، باب الخلوة والعزلة، ص ۱۳۹، ۱۴۰۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 8 / 200

www.dawateislami.net

ख़स्लतों से दूर रहने का नाम है पस इस की ग़रज़ अपने आ'माल में तब्दीली लाना है न कि अपनी ज़ात से ही दूर हो जाना, इसी लिये जब पूछा गया कि आ़रिफ़ कौन है ? तो सूफ़िियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "जो ज़ाहिर में मख़्लूक़ के साथ होता है और बातिनी ए'तिबार से उन से जुदा होता है।" (3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जो शख़्स सोह़बत पर ख़ल्वत को तरजीह़ देता है उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के इलावा तमाम अज़्कार को छोड़ दे और अपने रब की रिज़ा के इलावा तमाम इरादों से ख़ाली हो जाए और अगर नफ़्स तमाम अस्बाब का मुत़ालबा करे तो उस से भी अलग हो जाए, अगर येह सूरत पैदा नहीं होती तो उस की ख़ल्वत उसे फ़ितने या आज़माइश में डाल देगी।" (4) ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "येह देखो कि तुम्हें ख़ल्वत के साथ उन्स (मह़ब्बत) है या ख़ल्वत में तुम्हारा उन्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ है ? अगर तुम्हारा उन्स ख़ल्वत के साथ है तो जब तुम ख़ल्वत से निकलोगे तो तुम्हारा उन्स ख़त्म हो जाएगा और अगर तुम्हें ख़ल्वत में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ उन्स होगा तो तुम्हारे लिये सह़रा और जंगल तमाम जगहें बराबर होंगी।"[1] (5) ख़ल्वत इख़्तियार करने वाले के लिये ज़रूरी है कि दिल से उन तमाम वस्वसों को निकाल दे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दूरी का सबब बनते हैं। (6) थोड़े रिज़्क़ पर क़नाअ़त करे। (7) नेक औ़रत से शादी करे या नेक शख़्स की सोह़बत इख़्तियार करे ताकि दिन भर ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूलिय्यत के बा'द कुछ वक़्त इन के ज़रीए नफ़्स को आराम पहुंचा सके। (8) लम्बी ज़िन्दगी की आस न लगाए, सुब्ह़ इस ह़ाल में करे कि शाम की उम्मीद न हो और शाम

1 ......الرسالة القشيرية، باب الخلوة والعزلة، ص ١٣٩ ـ

www.dawateislami.net

इस ह़ाल में करे कि सुब्ह़ की उम्मीद न हो। (9) तन्हाई व गोशा नशीनी से जब दिल घबराए तो मौत और क़ब्र की तन्हाई को कसरत से याद करे।[1]

(3) **ख़ल्वत से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व वाक़िआत का मुत़ालआ़ कीजिये :** ख़ल्वत के बारे में मुत़ालआ़ करने से ख़ल्वत व गोशा नशीनी इख़्तियार करने और इस का ज़ेहन बनाने में मुआ़वनत मिलेगी। इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ इह़याउल उ़लूम, जि. 2, स. 799 का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(4) **ख़ल्वत इख़्तियार करने की अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये :** चन्द निय्यतें येह हैं : ۞ लोगों को अपने शर से बचाऊंगा। ۞ ख़ुद को शरीरों के शर से मह़फ़ूज़ रखूंगा। ۞ मुसलमानों के हुक़ूक़ पूरा न करने की आफ़त से छुटकारा ह़ासिल करूंगा। ۞ तमाम वक़्त ख़ालिसतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहूंगा। इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "इन निय्यतों के साथ गोशा नशीन होने के बा'द इन्सान को चाहिये कि मुस्तक़िल इल्मो अ़मल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे ताकि गोशा नशीनी के समरात ह़ासिल कर सके।"[2]

(5) **बुरे लोगों की सोह़बत के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** जब कोई बुरी सोह़बत के नुक़्सानात पर ग़ौर करेगा तो उन से दूर रहने और ख़ल्वत इख़्तियार करने का मदनी ज़ेहन बनेगा। बुरे लोगों की सोह़बत के चन्द नुक़्सानात येह हैं : ۞ बन्दा आहिस्ता आहिस्ता ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। ۞ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी, रियाकारी, बुग़्ज़ो कीना, मह़ब्बते दुन्या, त़लबे शोहरत,

---

1.....इह़याउल उ़लूम, 2 / 882, 883 मुलख़्ख़सन। 2.....इह़याउल उ़लूम, 2 / 881, 882

www.dawateislami.net

ता'ज़ीमे उमरा, तह्क़ीरे मसाकीन, ईज़ाए मुस्लिम, इत्तिबाए शह्वात, ह़िर्स, बुख़्ल, ख़ियानत, और क़सावते क़ल्बी (दिल की सख़्ती) जैसे ख़तरनाक अमराज़ में मुब्तला हो जाता है। ۞ बसा अवक़ात बन्दा फ़राइज़ो वाजिबात व सुनने मुअक्कदा की अदाएगी भी नहीं कर पाता। ۞ बुरे लोगों के साथ रहने वाले को मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता ۞ बुरे लोगों की सोहबत इख़्तियार करने वाले को ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ता है। ۞ बुरे लोगों की सोहबत इख़्तियार करने वाले को भी उन में शुमार किया जाता है। ۞ बुरे लोगों की सोहबत इख़्तियार करने वाले और गुनाहों में मुब्तला होने वाले पर बुरे ख़ातिमे का भी ख़ौफ़ है क्यूंकि गुनाहों में मुब्तला होना बुरे ख़ातिमे के अस्बाब में से है। ۞ बुरे लोगों की सोहबत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सबब है। ۞ बुरे लोगों की सोहबत क़ब्रो ह़श्र की तकालीफ़ और मुश्किलात को दा'वत देती है। ۞ बुरे लोगों की सोहबत ईमान को तबाहो बरबाद करने वाली है। ۞ अल ग़रज़ बुरे लोगों की सोहबत दुन्या व आख़िरत की बेशुमार तबाहियों व बरबादियों का मजमूआ़ है। लिहाज़ा इन तमाम नुक़्सानात से बचने के लिये ख़ल्वत इख़्तियार करना बेहतर है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : "गोशा नशीनी में बुरे साथी से नजात है।"(1)

(6) ख़ल्वत के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद पेशे नज़र रखिये :

चन्द दीनी फ़वाइद येह हैं : ۞ ख़ल्वत में बन्दा जल्वत से बसा अवक़ात ज़ियादा इबादत कर लेता है। ۞ ख़ल्वत से इबादत पर इस्तिक़ामत नसीब होती है। ۞ ख़ल्वत में बन्दा जल्वत के गुनाहों से मह़फ़ूज़ हो जाता है।

(1).....इह़याउल उ़लूम, 2 / 847

www.dawateislami.net

❁ ख़ल्वत में गोया बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत इख़्तियार कर लेता है। ❁ ख़ल्वत में बन्दा फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बच जाता है। ❁ ख़ल्वत में बन्दा कई ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से बच जाता है। ❁ ख़ल्वत में बन्दा हुक़ूक़ुल इबाद की तलफ़ी से भी बच जाता है। ❁ ख़ल्वत में ज़ौक़ो शौक़ के साथ मुतालआ करने का जज़्बा पैदा होता है। ❁ हज़रते सय्यिदुना शुऐब बिन हर्ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा में हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन मसऊद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में हाज़िर हुवा वोह अपने घर में तन्हा थे। मैं ने अर्ज़ की : "आप तन्हाई में वहशत महसूस नहीं फ़रमाते ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरी समझ में नहीं आता कि कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सोहबत में वहशत कैसे महसूस कर सकता है ?"(1)

चन्द दुन्यवी फ़वाइद येह हैं : ❁ बन्दा दुन्या की ख़ूब सूरती की तरफ़ देखने से बच जाता है। ❁ लोग उस की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होते। ❁ वोह लोगों के माल में ख़्वाहिश नहीं रखता। ❁ लोग उस के माल में ख़्वाहिश नहीं रखते। ❁ मेल जोल की वज्ह से ख़त्म होने वाली मुरव्वत (लिहाज़ व रिआयत) बाक़ी रहती है। ❁ हम नशीन की बद अख़्लाक़ी से बन्दा बच जाता है। ❁ बन्दा लड़ाई झगड़े और फ़ितना व फ़साद से बच जाता है।(2)

(7) **हुब्बे जाह, हुब्बे मद्ह और तलबे शोहरत से बचिये :** मक़ामो मर्तबे, अपनी ता'रीफ़, वाह वाह और लोगों में मश्हूर होने की ख़्वाहिशात येह तीनों वोह बातिनी अमराज़ हैं जो बन्दे को ख़ल्वत इख़्तियार नहीं करने देते, बन्दा अपने गिर्द लोगों के हुजूम को पसन्द करता है, अपनी

1.....الرسالة القشيرية، باب الخلوة والعزلة، ص ١٤٠ ـ

2.....इहयाउल उ़लूम, 2 / 817 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

ता'रीफ़ पर फूला नहीं समाता, इन की वज्ह से बन्दा तकब्बुर में भी मुब्तला हो जाता है, अल ग़रज़ ख़ल्वत इख़्तियार करने के लिये इन तीनों अमराज़ से बचना निहायत ज़रूरी है, इन की तफ़्सीली मा'लूमात, अस्बाब व इलाज के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **"बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात"** का मुत़ालआ़ कीजिये।

(8) **ख़ामोश मुबल्लिग़ बनने का ज़ेह्न बना लीजिये :** बा अ़मल मुसलमान ख़ामोश मुबल्लिग़ होता है क्यूंकि उस का अ़मल ही दूसरों के लिये तरग़ीब का सबब है, उस के अख़्लाक़ और किरदार हर एक के लिये वोह आईना होते हैं जिस में अपनी ज़ाहिरी और बात़िनी ख़ामियों को देख कर संवारा जा सकता है। ख़ामोश मुबल्लिग़ बनने का एक फ़ाएदा येह भी है कि बन्दा लोगों के उ़यूब में ग़ौरो फ़िक्र कर के हलाकत में पड़ने से बच जाता है क्यूंकि उस की नज़र सिर्फ़ अपनी ख़ामियों पर होती है और उन्हें दूर करने के लिये वोह हर कोशिश करता है और ऐसा मुबल्लिग़ नेकी की दा'वत देता है तो लोगों के दिल उसे बहुत जल्द क़बूल कर लेते हैं, उसे अपनी गुफ़्तगू में तकल्लुफ़ करने की ज़रूरत पेश नहीं आती, उस के चन्द जुम्ले ही लोगों की ज़िन्दगी बदलने के लिये काफ़ी होते हैं लिहाज़ा अगर आप ख़ल्वत इख़्तियार करना चाहते हैं तो ख़ामोश मुबल्लिग़ बन जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की कसीर बरकतें ह़ासिल होंगी।

(9) **अपनी ज़ात को निज़ामुल अवक़ात का पाबन्द कीजिये :** हर काम के लिये एक वक़्त मुक़र्रर कर लीजिये और फिर उसे उस वक़्त पर अन्जाम देने की भरपूर कोशिश कीजिये, जो बन्दा अपने आप को निज़ामुल अवक़ात का पाबन्द नहीं बनाता, हर काम को उस के वक़्त में करने का आ़दी नहीं बनता, फिर उस के तमाम काम अधूरे रह जाते हैं और उस के लिये ख़ल्वत इख़्तियार करना बहुत दुश्वार हो जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾18﴿...तवक्कुल

तवक्कुल की ता'रीफ़

❁ **तवक्कुल** की इजमाली ता'रीफ़ यूं है कि अस्बाब व तदाबीर को इख़्तियार करते हुए फ़क़त् **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद व भरोसा किया जाए और तमाम कामों को उस के सिपुर्द कर दिया जाए।

❁ हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने **तवक्कुल** की तफ़्सीली ता'रीफ़ भी बयान फ़रमाई है जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है : **तवक्कुल दर अस्ल इल्म, कैफ़िय्यत** और **अ़मल** तीन चीज़ों के मजमूए़ का नाम है। या'नी जब बन्दा इस बात को जान ले कि फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, तमाम मख़्लूक़, मौत व ज़िन्दगी, तंग दस्ती व मालदारी, हर शै को वोह अकेला ही पैदा फ़रमाने वाला है, बन्दों के काम संवारने पर उसे मुकम्मल इल्मो क़ुदरत है, उस का लुत्फ़ो करम और रह़्म तमाम बन्दों पर इजतिमाई ए'तिबार से और हर बन्दे पर इनफ़िरादी ए'तिबार से है, उस की क़ुदरत से बढ़ कर कोई क़ुदरत नहीं, उस के इल्म से ज़ियादा किसी का इल्म नहीं, उस का लुत्फ़ो करम और मेह्रबानी बे ह़िसाब है, इस इल्म के नतीजे में बन्दे पर यक़ीन की ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी होगी कि वोह एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही पर भरोसा करेगा, किसी दूसरे की जानिब मुतवज्जेह न होगा, अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत और ज़ात की जानिब तवज्जोह न करेगा क्यूंकि गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत फ़क़त् **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, तो इस इल्मो यक़ीन, इस से पैदा होने वाली कैफ़िय्यत और इस नतीजे में ह़ासिल होने वाले भरोसे की मजमूई कैफ़िय्यत का नाम "**तवक्कुल**" है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 745, 780 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

आयते मुबारका

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ﴾ (پ۲۸، الطلاق:۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।"

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है। ﴿وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾﴾ (پ۶، المائدۃ:۲۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।"

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ रब तआला पर कामिल तवक्कुल करने का इन्आम

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इस त़रह़ भरोसा करो जैसे उस पर भरोसा करने का ह़क़ है, तो वोह तुम्हें इस त़रह़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जैसे परिन्दों को अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह सुब्ह़ के वक़्त ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम को सैर हो कर लौटते हैं।"(1)

तवक्कुल के अह़काम

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर (मुत़लक़) **तवक्कुल** करना फ़र्ज़े ऐन है।"(2) वाज़ेह़ रहे कि अस्बाब और तदाबीर को तर्क कर के गोशा नशीनी इख़्तियार कर लेने और कस्ब (या'नी रिज़्क़े ह़लाल कमाना) तर्क कर देने की शरअ़न इजाज़त नहीं है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**तवक्कुल** तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि ए'तिमाद अ़लल

---

1 ......ترمذی، ابواب الزھد، باب فی التوکل علی اللّٰہ، ۴/ ۱۵۴، حدیث: ۲۳۵۱۔

2 .....फ़ज़ाइले दुआ, स. 287

अस्बाब का तर्क (**तवक्कुल**) है।"(1) या'नी अस्बाब को छोड़ देना **तवक्कुल** नहीं बल्कि अस्बाब पर ए'तिमाद न करने (व रब तआला पर ए'तिमाद करने) का नाम **तवक्कुल** है।

फिर मुतवक्किल के आ'माल की मुख़्तलिफ़ सूरतें और उन के मुख़्तलिफ़ अहकाम हैं : ۞ अगर कोई शख़्स ऐसे यक़ीनी अस्बाब को तर्क करे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से चीज़ों के साथ क़ाइम हो चुके हैं और उन से जुदा नहीं होंगे तो वोह मुतवक्किल नहीं, मसलन सामने खाना रखा हो, भूक भी हो और खाने की ज़रूरत भी हो लेकिन बन्दा अपना हाथ उस की त़रफ़ न बढ़ाए और यूं कहे : "मैं **तवक्कुल** करता हूं।" तो ऐसा करना बे वुक़ूफ़ी और पागल पन है। ۞ ऐसे ग़ैर यक़ीनी अस्बाब को तर्क कर देना जिन के बारे में ग़ालिब गुमान है कि चीज़ें उन के बिग़ैर ह़ासिल नहीं हो सकतीं, मसलन कोई शख़्स शहरों और क़ाफ़िलों से जुदा हो कर सुनसान रास्ते पर सफ़र करे जिन पर कभी कभार ही कोई आता है तो अगर उस का सफ़र बिग़ैर ज़ादे राह के हो तो येह (आ़म शख़्स के लिये) **तवक्कुल** नहीं है क्यूंकि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का त़रीक़ा येह रहा है कि ऐसे रास्तों पर ज़ादे राह ले कर सफ़र करते और **तवक्कुल** भी बाक़ी रहता क्यूंकि उन का ए'तिमाद ज़ादे राह पर नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल पर होता, अगर्चे ज़ादे राह के बिग़ैर सफ़र करना भी जाइज़ है लेकिन येह **तवक्कुल** का बुलन्द तरीन दरजा है और इसी मर्तबे पर फ़ाइज़ होने की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़्वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का सफ़र बिग़ैर ज़ादे राह के होता था। ۞ अगर कोई शख़्स कमाने की बिल्कुल तदबीर न करे तो येह **तवक्कुल** नहीं बल्कि येह चीज़ **तवक्कुल** को बिल्कुल ख़त्म कर देती है। ۞ अलबत्ता अगर वोह अपने घर या मस्जिद में ऐसी जगह बैठ जाए जहां लोग उस की ख़बरगीरी करते हैं तो येह **तवक्कुल** के ख़िलाफ़ नहीं।

1.....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 379

www.dawateislami.net

❁ सुन्नत के मुत़ाबिक़ रिज़्क़े ह़लाल कमाना **तवक्कुल** के ख़िलाफ़ नहीं जब कि उस का ए'तिमाद सामान और माल वग़ैरा पर न हो और उस की अ़लामत येह है कि वोह माल के चोरी या ज़ाएअ़ होने पर ग़मज़दा न हो। ❁ इयालदार शख़्स का अपने अह्ले ख़ाना के ह़क़ में **तवक्कुल** करना दुरुस्त नहीं, उन के लिये ब क़दरे ह़ाजत कमाना ज़रूरी है, इसी त़रह़ साल भर के लिये खाना वग़ैरा जम्अ़ कर के रखना भी **तवक्कुल** के मनाफ़ी नहीं। अलबत्ता **तवक्कुल** का आ'ला दरजा येह है कि बन्दा उस वक़्त के लिये ज़रूरत के मुत़ाबिक़ रख ले और बक़िय्या माल ज़ख़ीरा न करे बल्कि फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दे। ❁ अपने आप को तक्लीफ़ देह चीज़ों से बचाना भी **तवक्कुल** के ख़िलाफ़ नहीं।(1)

19 हिकायत तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि आइये हम और आप येह अ़ह्द करें कि हम दोनों में से जिस का भी पहले इन्तिक़ाल होगा वोह ख़्वाब में आ कर दूसरे को अपना ह़ाल बताएगा। मैं ने कहा : "क्या ऐसा हो सकता है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां ! मोमिन की रूह़ आज़ाद रहती है, रूए ज़मीन में जहां चाहे जा सकती है।" बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया। मैं एक दिन क़ैलूला कर रहा था तो अचानक (ख़्वाब में) ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे सामने आ गए और बुलन्द आवाज़ से सलाम किया, मैं ने सलाम का जवाब दिया और उन से दरयाफ़्त किया कि विसाल के बा'द आप पर क्या गुज़री ? और आप किस मर्तबे पर हैं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं बहुत ही अच्छे ह़ाल में हूं और मैं आप को येह

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 794, 795, लुबाबुल इह़या, स. 346, 347 मुलख़्ख़सन।

नसीहत करता हूं कि आप हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **तवक्कुल** करते रहें क्यूंकि **तवक्कुल** बेहतरीन चीज़ है, **तवक्कुल** बेहतरीन चीज़ है, **तवक्कुल** बेहतरीन चीज़ है।"[1]

तवक्कुल का ज़ेहन बनाने और तवक्कुल पैदा करने के ग्यारह ﴿11﴾ तरीके

(1) **तवक्कुल की मा'लूमात हासिल कीजिये :** जब तक बन्दे को किसी चीज़ के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात न हों उस चीज़ को इख़्तियार करना या उस का ज़ेहन बनाना बहुत मुश्किल है, **तवक्कुल** का ज़ेहन बनाने और उसे इख़्तियार करने के लिये भी **तवक्कुल** की मा'लूमात होना ज़रूरी है। **तवक्कुल** की मा'लूमात के लिये इह्याउल उ़लूम, जिल्द 4, स. 732 (मत़बूआ मक्तबतुल मदीना), मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 512 (मत़बूआ मक्तबतुल मदीना) से मुत़ालआ बहुत मुफ़ीद है।

(2) **तवक्कुल व मुतवक्किल से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल का मुत़ालआ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मुतवक्किल की तीन अ़लामात हैं : सुवाल नहीं करता, जब कोई उसे चीज़ दे तो रद नहीं करता और जब चीज़ पास आ जाए तो उसे जम्अ़ नहीं करता।" ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुर्शिदे अमीरे अह्ले सुन्नत, क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इसी को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया करते थे : "त़मअ़ नहीं, मन्अ़ नहीं, जम्अ़ नहीं।"[2] ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मदून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "**तवक्कुल अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मज़बूत़ तअ़ल्लुक़ का नाम है।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "**तवक्कुल** का पहला मक़ाम येह है कि बन्दा

1.....करामाते सह़ाबा, स. 220
2.....सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना, स. 12

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने इस त़रह़ हो जिस त़रह़ मुर्दा ग़ुस्ल देने वाले के सामने होता है, वोह उसे जिस त़रह़ चाहे उलट पलट करता है।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुरशी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तअ़ल्लुक़ क़ाइम रहना **तवक्कुल** है।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसरूक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले और अह़काम के सामने सर झुकाना **तवक्कुल** है।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान ह़ीरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद करते हुए उसी पर इक्तिफ़ा करना **तवक्कुल** है।"(1)

(3) **रब तआ़ला की क़ुदरते कामिला पर यक़ीन रखिये :** बन्दा रिज़्क़ और दीगर ज़रूरिय्यात के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़ामिन और कफ़ील होने का तसव्वुर रखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कमाले इ़ल्म, उस की कमाले क़ुदरत का तसव्वुर करे और इस बात पर यक़ीन रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़िलाफ़े वा'दा, भूल, इ़ज्ज़ और हर नक़्स से मुनज़्ज़ा और पाक है, जब हमेशा ऐसा तसव्वुर ज़ेहन में रखेगा तो ज़रूर उसे रिज़्क़ के बारे में रब तआ़ला पर **तवक्कुल** की सआ़दत नसीब हो जाएगी।"(2)

(4) **मुतवक्किल के आदाब का मुत़ालआ़ कीजिये :** हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی ने मुतवक्किल के लिये घरेलू सामान से मुतअ़ल्लिक़ दर्जे ज़ैल 6 आदाब बयान फ़रमाए हैं : (1) **पहला अदब :** दरवाज़ा बन्द कर दे, अलबत्ता ज़ियादा ह़िफ़ाज़ती इन्तिज़ामात न करे जैसे ताला लगाने के बा वुजूद पड़ोसी को देख भाल का कहना या कई ताले लगा देना। (2) **दूसरा अदब :** घर में ऐसा सामान न रखे जो चोरों को चोरी पर आमादा करे कि येह उन के गुनाह में पड़ने का

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب التوكل، ص ٢٠٠۔

2 .....मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 289

www.dawateislami.net

सबब होगा या उन की दिल चस्पी का बाइस होगा। (3) **तीसरा अदब :** बह़ालते मजबूरी कोई चीज़ छोड़ कर जाना पड़े तो येह निय्यत करे कि चोर को मुसल्लत़ करने का जो फ़ैसला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है इस पर राज़ी हूं और यूं कहे : "चोर जो माल लेगा वोह उस के लिये ह़लाल है या वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुबाह़ है और अगर चोर फ़क़ीर हुवा तो उस पर सदक़ा है, बेहतर येह है कि फ़क़ीर की शर्त़ न लगाए। (4) **चौथा अदब :** जब लौट कर आए और माल चोरी पाए तो ग़म न करे बल्कि मुमकिन हो तो खुश हो कर येह कहे : "अगर चोरी होने में बेहतरी न होती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माल वापस न लेता।" अगर माल वक़्फ़ न किया था तो उसे ज़ियादा तलाश न करे, न किसी मुसलमान पर बद गुमानी करे। अगर वक़्फ़ की निय्यत के बा'द वोह माल मिल जाए तो बेहतर येह है कि उसे क़बूल न करे और अगर क़बूल कर भी लिया तो फ़तवा की रू से जाइज़ है क्यूंकि फ़क़त़ निय्यत करने से मिल्किय्यत ख़त्म नहीं होती, अलबत्ता मुतवक्किलीन के नज़्दीक येह अ़मल ना पसन्दीदा है। (5) **पांचवां अदब :** चोर के लिये बद दुआ़ न करे, अगर बद दुआ़ करेगा तो **तवक्कुल** ख़त्म हो जाएगा, इस की वज्ह येह है कि उस ने चोरी होने को ना पसन्द किया और अफ़्सोस किया यूं उस का ज़ोहद ख़त्म हो गया और अगर बद दुआ़ की तो वोह सवाब भी न मिलेगा जो उस मुसीबत पर मिलता, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले को बद दुआ़ दी उस ने बदला ले लिया।"(1) (6) **छटा अदब :** इस बात पर ग़मगीन हो कि चोर चोरी कर के गुनाहगार हो और अ़ज़ाबे इलाही का मुस्तह़िक़ ठहरा और इस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि वोह ज़ालिम के बजाए मज़्लूम बना और उसे दुन्या का नुक़्सान पहुंचा दीन का नहीं।(2)

---

1 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی، ۵/ ۳۲۴، حدیث:۳۵۶۳۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 838 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

(5) **हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगिये :** कि येह अ़मल **तवक्कुल** और उस में पुख़्तगी पैदा करने में बहुत मुआ़विन है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "शैत़ान ख़बीस है और तेरी अ़दावत पर हर वक़्त कमरबस्ता है, तू उस लईन कुत्ते से बचने के लिये हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगता रहे और किसी वक़्त भी उस की मक्कारियों और अ़य्यारियों से ग़ाफ़िल न हो, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से उस कुत्ते को भगा दे, जब तू मर्दाने ख़ुदा जैसा अ़ज़्म व यक़ीन अपने अन्दर पैदा कर लेगा तो ब फ़ज़्ले ख़ुदा उस लईन के दाऊ तुझे कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकेंगे। जैसा कि पारह 14 सूरतुन्नह़्ल आयत 99 में रब तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया है : ﴿اِنَّهٗ لَیْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۹۹﴾﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक उस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।" या'नी "वोह शैत़ानी वस्वसे क़बूल नहीं करते।"[1]

(6) **तवक्कुल के फ़वाइद और फ़ज़ाइल पर ग़ौर कीजिये :** चन्द येह हैं : ۞ **तवक्कुल** करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर अ़मल पैरा होता है। ۞ **तवक्कुल** करने वाला लोगों से बे नियाज़ हो जाता है। ۞ **तवक्कुल** करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है। ۞ **तवक्कुल** करने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं। ۞ **तवक्कुल** करने वाले को दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां नसीब होती हैं। ۞ **तवक्कुल** का सब से बड़ा फ़ाएदा येह है कि उस से ईमान मह़फ़ूज़ हो जाता है, क्यूंकि शैत़ान जब किसी के ईमान पर ह़म्ला आवर होता है तो सब से पहले उस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर यक़ीन और भरोसा कमज़ोर कर देता है। लिहाज़ा अगर

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 14, अन्नह़्ल, तह़्तुल आयत : 99

www.dawateislami.net

आप अपने ईमान की हिफ़ाज़त करना चाहते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा रखिये। चुनान्चे, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे एक दोस्त ने मुझ से ज़िक्र किया कि मेरी एक नेक आदमी से मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा : "क्या हाल है ?" उस ने जवाब दिया : "हाल तो उन का है जिन का ईमान महफ़ूज़ है और वोह सिर्फ़ मुतवक्किलीन ही हैं जिन का ईमान महफ़ूज़ है।"(1)

(7) **मुतवक्किलीन के वाक़िआत का मुतालआ कीजिये :** कि जब बन्दा मुतवक्किलीन के वाक़िआत का मुतालआ करेगा तो उस का भी **तवक्कुल** करने का ज़ेहन बनेगा, इस सिलसिले में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ "इहयाउल उ़लूम," जिल्द 4, सफ़हा 807 (मत़बूआ मक्तबतुल मदीना) से मुतालआ कीजिये।

(8) **मुतवक्किलीन की सोहबत इख़्तियार कीजिये :** कि सोहबत असर रखती है, जब बन्दा **तवक्कुल** करने वालों की सोहबत इख़्तियार करता है तो उस का भी **तवक्कुल** का ज़ेहन बन जाता है और जो नाशुक्रे लोगों की सोहबत इख़्तियार करता है वोह भी वैसा ही बन जाता है, लिहाज़ा **तवक्कुल** की दौलत हासिल करने के लिये मुतवक्किलीन की सोहबत इख़्तियार करना बहुत ज़रूरी है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की सोहबत भी एक मुतवक्किल वलिये कामिल की सोहबत है, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाए, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआत और मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत कीजिये, अमीरे अहले सन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की सोहबत इख़्तियार कीजिये और रहमते इलाही से **तवक्कुल** की दौलत पाइये।

(1).....मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 106

www.dawateislami.net

(9) **मख़्लूक़ की मोह़्ताजी से बचने का अ़ज़्म कर लीजिये :** कि इस त़रह़ बन्दा मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो कर फ़क़त़ ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ही पर भरोसा करेगा क्यूंकि **तवक्कुल** की बेशुमार बरकतों में से एक येह भी है कि बन्दा मख़्लूक़ की मोह़्ताजी से बच जाता है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स सिद्क़ निय्यत से **अल्लाह** سبحانہ وتعالیٰ पर **तवक्कुल** करे, तो उमरा और ग़ैर उमरा सब उस के मोह़्ताज हो जाएंगे और वोह किसी का मोह़्ताज नहीं होगा क्यूंकि उस का मालिक عَزَّوَجَلَّ ग़नी व ह़मीद है।"[1]

(10) **पुर सुकून और ख़ुश ह़ाल ज़िन्दगी पर नज़र रखिये :** हमारी कामयाबी में ज़ेह्नी और क़ल्बी सुकून का बहुत बड़ा किरदार है, ज़ेह्नी और क़ल्बी त़ौर पर मुत़मइन शख़्स उ़मूमन पुर सुकून और ख़ुश ह़ाल ज़िन्दगी गुज़ारता है और **तवक्कुल** से ज़ेह्नी व क़ल्बी सुकून और राह़त ह़ासिल होती है। एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर मजलिस में फ़रमाया करते थे : "अपनी तदबीर उस ज़ात के सिपुर्द कर दे जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया है (या'नी फ़क़त़ **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त पर तवक्कुल कर) तू राह़त पाएगा।"[2]

(11) **रब तआ़ला की बारगाह में तवक्कुल की दुआ़ कीजिये :** कि उस की रह़मत बहुत बड़ी है, उस से जो मांगो वोह अपने फ़ज़्ल से अ़त़ा फ़रमाता है, तवक्कुल की यूं दुआ़ मांगिये : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने ह़बीब, हम गुनाहगारों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से **तवक्कुल** की दौलत अ़त़ा फ़रमा, मुझे अपने सिवा किसी का मोह़्ताज न करना, मुझे हर हर मुआ़मले में बस तेरी ही ज़ात पर भरोसा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।" आमीन

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 104 2.....मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 113

www.dawateislami.net

﴾19﴿...ख़ुशूअ़

ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़

बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी के वक़्त दिल का लग जाना या बारगाहे इलाही में दिलों को झुका देना "ख़ुशूअ़" कहलाता है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ﴾ (پ۲۷، الحدید:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद और उस ह़क़ के लिये जो उतरा।" एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाता है :

﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَۙ(۱) الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَۙ(۲)﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۱،۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।" तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : "बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि उस में दिल लगा हुवा और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और गोशए चश्म से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़बस काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों कनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंगलियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए।"[2]

---

1 ......الحديقة الندية، الخلق الثالث والاربعون، ٢/١٤٧ ماخوذا۔

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, अल मोमिनून, तह़्तुल आयत : 2

www.dawateislami.net

﴾हदीसे मुबारका﴿ जिस दिल में ख़ुशूअ़ न हो उस से पनाह

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं उस दिल से पनाह मांगता हूं कि जिस में ख़ुशूअ़ न हो।"(1)

ख़ुशूअ़ का हुक्म

۞ ख़ुशूअ़ या'नी दिल का ह़ाज़िर होना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है, ख़ुशूअ़ रिज़ाए इलाही पाने, नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है, जिसे अपने आ'माल में ख़ुशूअ़ ह़ासिल हो जाए गोया उसे इख़्लास नसीब हो गया। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "ख़ुशूअ़ या'नी दिल की ह़ाज़िरी नमाज़ की रूह़ है और कम अज़ कम मिक़्दार जिस से रूह़ बाक़ी रहे वोह तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त दिल का ह़ाज़िर होना है और इस क़दर से भी कम हो तो हलाकत है, इस से ज़ियादा जिस क़दर हुज़ूरे क़ल्ब होगा उसी क़दर रूह़ नमाज़ के अज्ज़ा में फैलेगी और कितने ही ज़िन्दा लोग हैं जो ह़रकत नहीं कर सकते, वोह मुर्दों के क़रीब हैं, पस तक्बीरे तह़रीमा के इलावा ग़ाफ़िल उस ज़िन्दा की मिस्ल है जिस में ह़रकत नहीं।"(2) ۞ वाज़ेह़ रहे कि ख़ुशूअ़ को उ़मूमन नमाज़ के साथ ज़िक्र किया जाता है लेकिन येह आ़म है। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "जान लीजिये कि ख़ुशूअ़ ईमान का फल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल से ह़ासिल होने वाले यक़ीन का नतीजा है। जिसे येह ह़ासिल हो

1 ......مسلم، کتاب الذکر والدعا۔۔۔الخ، باب تعوذ من شر ما عمل۔۔۔الخ، ص ۱۴۵۸، حدیث: ۲۷۲۲۔
2 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 501

www.dawateislami.net

जाए वोह नमाज़ से बाहर बल्कि तन्हाई में भी खुशूअ़ अपनाता है, क्यूंकि खुशूअ़ का मूजिब (सबब व इल्लत) इस बात की पहचान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे पर मुत्तलअ़ है, नीज़ बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल और अपनी कोताही की मा'रिफ़त रखता है, इन्ही बातों की पहचान से खुशूअ़ हासिल होता है और येह नमाज़ के साथ ख़ास नहीं इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गों के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते और उस से डरते हुए 40 साल तक आस्मान की त़रफ़ सर नहीं उठाया।[1]

20 हिकायत हर वक़्त खुशूअ़ में डूबे रहते

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हमेशा सर और आंखें झुकाए रखते थे ह़त्ता कि बा'ज़ लोग आप को नाबीना समझते, आप 20 साल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर ह़ाज़िर होते रहे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कनीज़ इन्हें आते देखती तो कहती : "आप के नाबीना दोस्त तशरीफ़ लाए हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की बात सुन कर मुस्कुरा देते। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब दरवाज़ा बजाते, कनीज़ बाहर निकलती तो उन्हें सर और आंखें झुकाए देखती, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब उन्हें देखते तो येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाते : ﴿وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ ﴿۳۴﴾﴾ (پ۱۷، الحج:۳۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और ऐ मह़बूब ! खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।" और फ़रमाते : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हुज़ूरे अन्वर शाफ़ेए मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें देखते तो तुम से खुश होते।"[2]

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 529

2 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 529

www.dawateislami.net

21 हिकायत नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत ही ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ते थे, जब आप नमाज़ पढ़ रहे होते तो अक्सर आप की बेटी दफ़ बजाती और घर में आने वाली औ़रतों से बातें करती लेकिन आप न उन की बातें सुनते और न ही समझ पाते। एक दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : "क्या आप नमाज़ में अपने नफ़्स से कोई बात करते हैं ?" तो फ़रमाया : "हां येह बात कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा हूं और मैं ने दो घरों में से एक घर में लौटना है।" अ़र्ज़ की गई : "क्या हमारी तरह आप भी नमाज़ में उमूरे दुन्या में से कुछ पाते हैं ?" फ़रमाया : "मुझे नमाज़ में दुन्या के ख़यालात पैदा होने से येह बात ज़ियादा पसन्द है कि मुझ पर तीरों से ह़म्ला किया जाए।"(1)

आ'माल में ख़ुशूअ़ पैदा करने के सात ﴿7﴾ त़रीक़े

(1) **ख़ुशूअ़ के फ़ज़ाइल का मुतालआ़ कीजिये :** चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ❁ ख़ुशूअ़ वालों की फ़ज़ीलत क़ुरआन में बयान की गई है। ❁ ख़ुशूअ़ से नमाज़ अदा करने वाले के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। ❁ ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ कामिल है। ❁ ख़ुशूअ़ से नमाज़ अदा करने वाले की नमाज़ मक़्बूल है। ❁ नमाज़ में ख़ुशूअ़ की ख़ुद हुज़ूर नबिये करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने तरग़ीब दिलाई। ❁ ख़ुशूअ़ के साथ नमाज़ अदा करने वाला रब तआ़ला के क़रीब हो जाता है। ❁ ख़ुशूअ़ के साथ नमाज़ अदा करने वाले की नमाज़ की त़रफ़ रब तआ़ला नज़रे रह़मत फ़रमाता है। ❁ ख़ुशूअ़ के साथ दो

1.....इह़याउल उ़लूम, 1 / 530

रक्अ़त अदा करना बिग़ैर ख़ुशूअ़ के पूरी रात क़ियाम करने से अफ़्ज़ल है।[1]

(2) **आ'ज़ा में ख़ुशूअ़ पैदा कीजिये :** कि येह दिल के ख़ुशूअ़ पर दलालत करता है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेलते देखा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर उस के दिल में ख़ुशूअ़ होता तो उस के आ'ज़ा में भी ख़ुशूअ़ होता।"[2]

(3) **ख़ुशूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त का मुतालआ़ कीजिये :** ऐसे वाक़िआ़त पढ़ने से आ'माल में ख़ुशूअ़ पैदा करने का मदनी ज़ेहन बनेगा, ऐसे वाक़िआ़त जानने के लिये हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ "इह़याउल उ़लूम," जिल्द 1, सफ़हा 529 (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) से मुतालआ़ कीजिये।

(4) **दिल में नर्मी पैदा कीजिये :** मौत से ग़फ़्लत और ज़ियादा खाने से पेट भरने के सबब क़सावते क़ल्बी (दिल में सख़्ती) पैदा हो जाती है और येही सख़्ती आ'माल में ख़ुशूअ़ को रोकती है, लिहाज़ा ख़ुशूअ़ पैदा करने के लिये ज़रूरी है कि बन्दा अपने दिल में नर्मी पैदा करे, दिल में नर्मी पैदा करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि बन्दा दिल की सख़्ती के अस्बाब व इलाज की मा'लूमात ह़ासिल करे, इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 352 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात**" सफ़हा 186 का मुतालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(5) **नमाज़ में जन्नत व जहन्नम का तसव्वुर क़ाइम कीजिये :** जन्नत व जहन्नम का तसव्वुर भी ख़ुशूअ़ पैदा करने का एक बेहतरीन

1.....इह़याउल उ़लूम, 1 / 467, 473 माख़ूज़न।

2.....نوادرالاصول، الاصل السابع والاربعون والمائتان، ص۱۰۰۷، حدیث:۱۳۱۰۔

www.dawateislami.net

त़रीक़ा है, चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से किसी ने उन की नमाज़ की कैफ़िय्यत के बारे में पूछा तो फ़रमाया : "जब नमाज़ का वक़्त आता है तो मैं कामिल वुज़ू करता हूं, फिर जिस जगह नमाज़ पढ़ने का इरादा होता है वहां आ कर बैठ जाता हूं यहां तक कि मेरे तमाम आ'ज़ा जम्अ़ हो जाते हैं, फिर येह तसव्वुर बांध कर नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं कि का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा मेरे सामने, पुल सिरात़ पाउं तले, जन्नत मेरे दाईं जानिब, जहन्नम बाईं त़रफ़ और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पीछे हैं और गुमान करता हूं कि येह मेरी आख़िरी नमाज़ है। फिर उम्मीद व ख़ौफ़ की दरमियानी ह़ालत में होता हूं, फिर ह़क़ीक़तन तक्बीरे तह़रीमा कहता, ठहर ठहर कर क़िराअत करता, आ़जिज़ी के साथ रुकूअ़ और ख़ुशूअ़ के साथ सजदा करता हूं, फिर इख़्लास से काम लेता हूं, इस के बा'द मैं नहीं जानता कि मेरी नमाज़ क़बूल होती है या नहीं।"(1)

(6) **आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाइये :** अपनी आंखों को हर ग़ैर शरई मन्ज़र देखने से बचाइये कि बन्दा जो जो मनाज़िर देखता है वोह उस के दिल में नक़्श हो जाते हैं, दिल ग़फ़्लत का शिकार हो जाता है, बन्दा जब भी कोई नेक अ़मल करने लगता है तो वोह मनाज़िर सामने आ जाते हैं और उस अ़मल में ख़ुशूअ़ पैदा नहीं हो पाता, लिहाज़ा आ'माल में ख़ुशूअ़ पैदा करने के लिये ज़रूरी है कि अपनी आंखों की ह़िफ़ाज़त कीजिये।

(7) **क़ल्बी ख़यालात को दूर करने की कोशिश कीजिये :** बसा अवक़ात दिल में त़रह़ त़रह़ के ख़यालात आते हैं जो ख़ुशूअ़ पैदा नहीं होने देते, लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि उन क़ल्बी ख़यालात के अस्बाब पर ग़ौर करे और उन्हें दूर करने की कोशिश करे कि जब अस्बाब दूर हो जाएंगे

(1).....इह़याउल उ़लूम, 1 / 472

www.dawateislami.net

तो क़ल्बी ख़यालात भी दूर हो जाएंगे। नमाज़ में आंखें बन्द करना मकरूह है मगर जब खुली रहने में ख़ुशूअ़ न होता हो तो बन्द करने में ह़रज नहीं बल्कि आंखें बन्द करना बेहतर है।(1) या तारीक कमरे में नमाज़ पढ़े या अपने सामने कोई ऐसी चीज़ न रहने दे जो उस के ह़वास को मश्ग़ूल करे या दीवार के क़रीब नमाज़ पढ़े ताकि नज़र ज़ियादा दूर तक न जाए और रास्तों में नमाज़ पढ़ने से बचे, इसी त़रह़ नक़्शो निगार वाली जगहों और रंगदार फ़र्श पर भी नमाज़ न पढ़े, उम्मीद है इस त़रह़ क़ल्बी ख़यालात से काफ़ी ह़द तक हिफ़ाज़त होगी।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿...ज़िक्रुल्लाह

ज़िक्रुल्लाह की ता'रीफ़

❁ ज़िक्र के मा'ना याद करना, याद रखना, चर्चा करना, ख़ैर ख़्वाही और इ़ज़्ज़तो शरफ़ के हैं। कुरआने करीम में ज़िक्र इन तमाम मा'नों में आया हुवा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना, उसे याद रखना, उस का चर्चा करना और उस का नाम लेना **ज़िक्रुल्लाह** कहलाता है।(3)

ज़िक्रुल्लाह की मुख़्तलिफ़ अक़्साम

❁ **ज़िक्रुल्लाह** की तीन क़िस्में हैं : (1) **ज़िक्रे लिसानी** कि बन्दा ज़बान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, इस में तस्बीह़, तक़्दीस, सना, ह़म्द, मद्ह़, ख़ुत़्बा, तौबा, इस्तिग़फ़ार, दुआ़ वग़ैरा दाख़िल हैं।

---

(1).....बहारे शरीअ़त, 1 / 634 हिस्सए सिवुम।

(2).....इह़याउल उ़लूम, 1 / 507 मुलख़्ख़सन।   (3).....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 304 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

(2) **ज़िक्रे क़ल्बी** कि बन्दा दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद करना, उस की अ़ज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस्तिम्बाते़ मसाइल (क़ुरआनो ह़दीस से मसाइल अख़्ज़ करने) में ग़ौरो फ़िक्र करना दाख़िल है।

(3) **ज़िक्र बिल जवारेह़** कि बन्दा मुख़्तलिफ़ आ'ज़ाए जिस्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे। जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना, आंख का ख़ौफ़े ख़ुदा में रोना, कान का रब तआ़ला का नाम सुनना। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है : तस्बीह़ व तक्बीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह़ है। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** बिल वासित़ा भी होता है और बिला वासित़ा भी। (1) **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात का तज़किरा बिला वासित़ा **ज़िक्रुल्लाह** है। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूबों का मह़ब्बत से चर्चा करना, उस के दुश्मनों का बुराई से ज़िक्र करना सब बिल वासित़ा **ज़िक्रुल्लाह** हैं। सारा क़ुरआने पाक **ज़िक्रुल्लाह** है मगर इस में कहीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात मज़्कूर हैं, कहीं ह़ुज़ूर नबिये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ व मह़ामिद (ता'रीफ़ें), कहीं कुफ़्फ़ार के (बत़ौरे मज़म्मत) तज़किरे। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** बेहतरीन इ़बादत है इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का ताकीदी हुक्म इरशाद फ़रमाया है। ۞ फिर ज़िक्र की मज़ीद दो सूरतें भी हैं : (1) **ज़िक्रे ख़फ़ी** कि बन्दा दिल में या आहिस्ता आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह करे। (2) **ज़िक्रे जली या ज़िक्र बिल जह्र** कि बन्दा बुलन्द आवाज़ से **ज़िक्रुल्लाह** करे। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक **ज़िक्रे ख़फ़ी** अफ़्ज़ल तो बा'ज़ के नज़्दीक **ज़िक्रे जली** अफ़्ज़ल।[1]

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 152, मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 304 माख़ूज़न।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۟ۙ﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۴۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो **अल्लाह** को बहुत याद करो।"

﴾हदीसे मुबारका﴿ सब से ज़ियादा महबूब अ़मल

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सा अ़मल सब से ज़ियादा महबूब है?" इरशाद फ़रमाया : "मरते दम तक तुम्हारी ज़बान **ज़िक्रुल्लाह** से तर रहे।"(1)

ज़िक्रुल्लाह का हुक्म

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में दिलों का इत़्मीनान है, ज़िक्रे इलाही मुन्जियात या'नी नजात दिलाने वाले आ'माल में से है, हर मुसलमान को चाहिये कि हर वक़्त अपनी ज़बान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रखे, हर जाइज़ काम की इब्तिदा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुबारक नाम से करे। ۞ ह़रामो नाजाइज़ काम से क़ब्ल बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए, ह़रामे क़त़ई काम से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना कुफ़्र है। चुनान्चे, फ़तावा आ़लमगीरी में है : "शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जुवा खेलते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना कुफ़्र है।"(2) ۞ याद रखिये ! ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइ़से अज्रो सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में ममनूअ़ भी। मसलन मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त, जिल्द

---

❶......شعب الایمان للبیهقی، باب فی محبة الله، فصل فی ادامة ذکر الله، ۱/ ۳۹۳، حدیث: ۵۱۲۔

❷......فتاوی هندیة، ۲/ ۲۷۳۔

www.dawateislami.net

अव्वल सफ़्हा 533 पर है : गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस ग़रज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ना या سُبْحٰنَ الله कहना कि उस चीज़ की उ़म्दगी ख़रीदार पर ज़ाहिर करे नाजाइज़ है। यूंही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता'ज़ीम को उठें और जगह छोड़ दें नाजाइज़ है।[1]

22 हिकायत एक "या अल्लाह" में सो ﴾100﴿ "लब्बैक"

एक शख़्स रात को ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल था और उस की ज़बान पर **अल्लाह-अल्लाह** का विर्द जारी था। शैतान ने उस को झिड़क कर कहा : "ऐ कम बख़्त ! कब तक **अल्लाह-अल्लाह** की रट लगाए जाएगा। उधर से तो कोई जवाब नहीं मिलता और तू है कि मुसलसल उसी को पुकारे जा रहा है।" शैतान की बात सुन कर उस शख़्स का दिल टूट गया। सर झुकाया तो नींद आ गई। आ़लमे ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं कि "ऐ नेक बख़्त ! तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र क्यूं छोड़ दिया ?" उस ने कहा कि "बारगाहे इलाही से मुझे कोई जवाब नहीं मिलता। इस लिये फ़िक्र मन्द हूं कि कहीं मेरे **ज़िक्रुल्लाह** को रद ही न कर दिया गया हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام ने फ़रमाया कि "बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से मुझ को हुक्म हुवा कि तेरे पास जाऊं और तुझ को बताऊं कि तू जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है, वोही हमारा जवाब है। तेरे दिल में जो सोज़ो गुदाज़ पैदा होता है, वोह हमारा ही तो पैदा किया हुवा है। और येह हमारा ही काम है कि तुझ को **ज़िक्रुल्लाह** में मश्ग़ूल कर दिया है, तेरे हर "या **अल्लाह**" कहने में हमारी सो (100) "लब्बैक" पोशीदा हैं।"[2]

---

1 ......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، ۲/۲۸۱۔

2 .....मस्नवी मौलाना रूम, दफ़्तर सिवुम, स : 32

www.dawateislami.net

ज़िक्रुल्लाह का ज़ेहन बनाने और करने के तेरह ﴾13﴿ त़रीक़े

(1) **ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ۞ **ज़िक्रुल्लाह** करने वाला ख़ुश्क जंगल में सर सब्ज़ दरख़्त की त़रह़ है। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** करने वाला मुजाहिद की त़रह़ है। ۞ रह़मते इलाही बन्दे के साथ होती है जब तक वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहता है और उस के होंट **ज़िक्रुल्लाह** से हिलते रहते हैं। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** से बढ़ कर अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला अ़मल कोई नहीं। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** की कसरत करने वाले के लिये बाग़े जन्नत में आसूदगी की ख़ुश ख़बरी है। ۞ सब से अफ़्ज़ल अ़मल **ज़िक्रुल्लाह** है। ۞ सुब्ह़ो शाम **ज़िक्रुल्लाह** से अपनी ज़बान को तर रखने वाला गुनाहों से पाक हो जाता है। ۞ **ज़िक्रुल्लाह** करने वाले के तमाम उमूर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ संवार देता है, उसे अपनी रह़मत अ़त़ा फ़रमाता और अपना दोस्त बना लेता है।[1]

(2) **इजतिमाई ज़िक्र के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ۞ जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये जम्अ़ होते हैं, फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने उन का चर्चा करता है। ۞ जो लोग मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने बैठते हैं तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है कि मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौट जाओ तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गए हैं। ۞ जिन घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र होता है अहले आस्मान उन घरों को ऐसे देखते हैं जैसे तुम सितारों को देखते हो।[2]

---

❶.....इह़याउल उ़लूम, 1 / 888 माख़ूज़न। ❷.....इह़याउल उ़लूम, 1 / 891 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

(3) **ज़िक्रुल्लाह वाले इजतिमाआत में शिर्कत कीजिये :** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त हर जुमे'रात को बा'द नमाज़े मग़रिब आलमी मदनी मर्कज़ फै़ज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची और दुन्या भर के मुख़्तलिफ़ मदनी मराकिज़ व मसाजिद में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआत मुन्अ़किद किये जाते हैं, इसी त़रह़ ग्यारहवीं शरीफ़, बारहवीं शरीफ़, शबे मे'राज, शबे बराअत और रमज़ानुल मुबारक में तो तक़रीबन हर रात ही **ज़िक्रुल्लाह** वाले इजतिमाआत मुन्अ़किद किये जाते हैं, येह तमाम इजतिमाआत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र पर मुश्तमिल होते हैं, खु़द भी इन में शिर्कत कीजिये और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये।

(4) **कलिमए त़य्यिबा के ज़रीए़ ज़िक्रुल्लाह कीजिये :** अह़ादीसे मुबारका में इस के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुए हैं, चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ۞ "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पढ़ने वाले को क़ब्रो ह़श्र में कोई वह़शत न होगी। ۞ जो शख़्स कामिल वुज़ू कर के आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर कहे :

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे दाख़िल हो जाए। ۞ जो शख़्स रोज़ाना 100 बार येह कलिमात पढ़ता है

"لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ"

तो उसे दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है, उस के नामए आ'माल में 100 नेकियां लिखी जाती और 100 गुनाह मिटा दिये जाते हैं, वोह उस दिन शाम तक शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहता है और उस से बढ़ कर किसी और का अ़मल नहीं होता मगर येह कि कोई शख़्स उस से ज़ियादा कलिमात पढ़े। ۞ सच्चे दिल से "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पढ़ने वाला अगर ज़मीन भर गुनाह ले कर आए फिर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की

मग्फ़िरत फ़रमा देगा। ۞ जिस ने इख़्लास के साथ "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कहा वोह दाख़िले जन्नत हुवा।[1]

(5) سُبْحَانَ الله ، اَلْحَمْدُلِلّٰه और اَللّٰهُ اَكْبَر **वग़ैरा अज़्कार पढ़िये :** इन के भी अहादीस में बहुत फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं। चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ۞ जिस ने हर नमाज़ के बा'द 33 बार سُبْحَانَ الله, 33 बार اَلْحَمْدُلِلّٰه, 33 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहा, फिर 100 का अ़दद पूरा करने के लिये لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَعَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْر कहा तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे, अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। ۞ जो एक दिन में 100 बार سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। ۞ जब बन्दा اَلْحَمْدُلِلّٰه कहता है तो येह कलिमा ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देता है, जब दूसरी मरतबा اَلْحَمْدُلِلّٰه कहता है तो सातवें आस्मान से ले कर तह़्तुस्सरा को भर देता है और जब तीसरी मरतबा اَلْحَمْدُلِلّٰه कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "सुवाल कर तुझे अ़ता किया जाएगा।"[2]

(6) **अल्लाह तआ़ला की ह़म्द और रसूले ख़ुदा की ना'तें पढ़िये :** येह भी **ज़िक्रुल्लाह** और बाइसे ख़ैरो बरकत है। इस सिलसिले में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के मन्ज़ूम कलाम का मजमूआ़ "**ह़दाइके़ बख़्शिश**" और आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई

1 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 893, 894 मुलख़्ख़सन।
2 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 896 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मन्ज़ूम कलाम का मजमूआ **"वसाइले बख़्शिश"** का मुत़ालआ बहुत मुफ़ीद है।

(7) **बारगाहे इलाही में तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिये :** कि येह भी ज़िक्रुल्लाह की एक क़िस्म है, क़ुरआनो अह़ादीस में इस की तरग़ीब दिलाई गई है, जो इस्तिग़फ़ार की कसरत करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हर परेशानी को दूर फ़रमाएगा, हर तंगी से उस के लिये नजात की राह निकालेगा और ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा। यूं तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिये :

"اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ"

या'नी मैं अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तमाम गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हूं जो मैं ने जान बूझ कर किये, या ग़लती से किये, छुप कर किये, या अ़लानिय्या किये और मैं उस की बारगाह में उन तमाम गुनाहों से भी तौबा करता हूं जिन्हें मैं जानता हूं और उन गुनाहों से भी जिन्हें मैं नहीं जानता, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू ग़ैबों को जानने वाला और ऐ़बों को छुपाने वाला और गुनाहों को बख़्शने वाला है और नेकी करने की क़ुव्वत और गुनाहों से बचने की त़ाक़त नहीं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जो बहुत बुलन्द अ़ज़्मत वाला है।"

(8) **बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये :** दुआ़ भी **ज़िक्रुल्लाह** की एक क़िस्म है, दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है, बारगाहे इलाही में दुआ़ से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं, दुआ़ से या तो बन्दे का गुनाह मुआ़फ़ कर दिया जाता है या उसे भलाई अ़त़ा कर दी जाती है या उस के लिये भलाई जम्अ़ कर दी जाती है। दुआ़ के फ़ज़ाइल, आदाबे दुआ़, दुआ़ की क़बूलिय्यत के अस्बाब,

www.dawateislami.net

दुआ़ की क़बूलिय्यत के अवक़ात, दुआ़ की क़बूलिय्यत के मक़ामात, दुआ़ की क़बूलिय्यत के अल्फ़ाज़, दुआ़ मांगने में ममनूअ़ अल्फ़ाज़ व दीगर तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 321 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ज़ाइले दुआ़**" और 1130 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "इह़याउल उ़लूम," जिल्द अव्वल का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(9) **जिस्मानी आ'ज़ा के ज़रीए़ ज़िक्रुल्लाह कीजिये :** जिस्मानी आ'ज़ा से ज़िक्र करने का त़रीक़ा येह है कि तमाम फ़र्ज़ नमाज़ों, वाजिबात व सुननो नवाफ़िल की अच्छे त़रीक़े से अदाएगी कीजिये कि नमाज़ ज़िक्र बिल जवारेह़ या'नी आ'ज़ा के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने पर मुश्तमिल है, ज़कात अदा कीजिये, फ़र्ज़ रोज़े रखिये, इस्तित़ाअ़त होने की सूरत में ह़ज की अदाएगी कीजिये, नेकियां कीजिये, अपने आप को तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों से बचाइये, येह तमाम उमूर भी ज़िक्रुल्लाह में शामिल हैं।

(10) **तिलावते क़ुरआन कीजिये :** तिलावते क़ुरआन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेहतरीन ज़िक्र है, तिलावत के बे शुमार फ़ज़ाइल क़ुरआनो अह़ादीस में बयान फ़रमाए गए हैं, चन्द फ़ज़ाइल येह हैं : ❁ इस उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते क़ुरआन है। ❁ तुम में से बेहतर वोह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए। ❁ ह़दीसे क़ुदसी में इरशाद होता है : जिसे तिलावते क़ुरआन ने मुझ से मांगने और सुवाल करने से मश्ग़ूल रखा मैं उसे शुक्र गुज़ारों के सवाब से अफ़्ज़ल अ़त़ा फ़रमाऊंगा ❁ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है जिस त़रह़ लोहे को ज़ंग लग जाता है, दिलों की सफ़ाई तिलावते क़ुरआन और मौत की याद से होगी। ❁ क़ुरआने पाक पढ़ो बेशक तुम्हें इस के हर ह़र्फ़ के बदले दस नेकियां दी जाएंगी मैं येह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि الف एक ह़र्फ़ لام एक ह़र्फ़ और ميم एक

www.dawateislami.net

हर्फ़ है । ۞ क़ुरआने पाक की हर आयते मुबारका, जन्नत का एक दरजा और तुम्हारे घरों का चराग़ है ।[1]

(11) **ज़िक्रे सालिहीन के ज़रीए बिल वासिता ज़िक्रुल्लाह कीजिये :** अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन इमामुल अम्बिया, नबिय्युल अम्बिया हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ख़ुलफ़ाए राशिदीन, अ़शरए मुबश्शरा सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अहले बैते अतहार, अज़्वाजे मुतह्हरात, दीगर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, ताबेईन, तबए़ ताबेईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, हुज़ूर दाता गंज बख़्श, हुज़ूर ग़ौसे पाक, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व दीगर तमाम बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का ज़िक्र भी बिल वासिता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का ज़िक्र है, इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, सीरते मुस्तफ़ा, फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, सहाबए किराम का इ़श्क़े रसूल, करामाते सहाबा, उम्महातुल मोमिनीन । वग़ैरा वग़ैरा

(12) **रोज़ाना कुछ न कुछ अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने की आ़दत बनाइये :** रोज़ाना कुछ न कुछ अवराद पढ़ना भी **ज़िक्रुल्लाह** की एक सूरत है और इस की भी बहुत तरग़ीब दिलाई गई है, मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के अवरादो वज़ाइफ़ की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : क़ूतुल क़ुलूब, जिल्द अव्वल, इह़याउल उ़लूम, जिल्द अव्वल । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में भी अपने मुरीदीन व त़ालिबीन के लिये मुख़्तलिफ़ अवक़ात व मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के कई वज़ाइफ़ ज़िक्र फ़रमाए हैं, आप भी उन वज़ाइफ़ को अपने मा'मूलात में शामिल कर के कसीर सवाब कमाइये ।

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 1 / 823 ता 825 माख़ूज़न ।

www.dawateislami.net

(13) **दुरूदे पाक की कसरत कीजिये :** दुरूदे पाक भी निहायत अफ़्ज़ल ज़िक्र है, खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में दुरूदो सलाम का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, कसीर अहादीसे मुबारका में हुज़ूर नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं, दुरूदे पाक पढ़ने वाले को दुन्या व आख़िरत की बेशुमार भलाइयां अ़ता कर दी जाती हैं, दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को तमाम अवरादो वज़ाइफ़ से किफ़ायत कर दी जाती है, कल बरोज़े क़ियामत उसे शफ़ाअ़त नसीब होगी, जन्नत में दाख़िला नसीब होगा । मज़ीद फ़ज़ाइल के लिये हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**इह़याउल उ़लूम,**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 924 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾21﴿...राहे खु़दा में ख़र्च करना

राहे खु़दा में ख़र्च करने की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा और अज्रो सवाब के लिये अपने घरवालों, रिश्तेदारों, शरई फ़क़ीरों, मिस्कीनों, यतीमों, मुसाफ़िरों, ग़रीबों व दीगर मुसलमानों पर और हर जाइज़ व नेक काम या नेक जगहों में ह़लाल व जाइज़ माल ख़र्च करना "**राहे खु़दा में ख़र्च करना**" कहलाता है ।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ﴾ (پ۳، البقرہ: ۲۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो **अल्लाह** की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो ।"

﴾हदीसे मुबारका﴿ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाला क़ाबिले रश्क है

हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हसद (या'नी रश्क) नहीं मगर फ़क़त दो आदमियों के मुआमले में : पहला वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन अता फ़रमाया और वोह दिन रात उस के साथ क़ाइम रहे। दूसरा वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अता फ़रमाया और वोह दिन रात (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करता रहे।"(1)

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म

राहे ख़ुदा में अपना जाइज़ और हलाल माल ख़र्च करना बा'ज़ सूरतों में फ़र्ज़, बा'ज़ में वाजिब और बा'ज़ में मुस्तहब है।

23 हिकायत सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 723 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" सफ़हा 269 से सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के हवाले से एक इक़्तिबास पेशे ख़िदमत है : ग़ज़वए तबूक के मौक़अ़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब दिलाते हुए इरशाद फ़रमाया : "अपना माल राहे ख़ुदा में जिहाद के लिये सदक़ा करो।" इस फ़रमाने आलीशान की तक्मील में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने हस्बे तौफ़ीक़ अपना

(1) مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل من یقوم بالقرآن۔۔۔الخ، ص۴۰۷، حدیث:۸۱۵۔

www.dawateislami.net

अपना माल राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ किया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दस हज़ार मुजाहिदीन का साज़ो सामान तसद्दुक़ किया और दस हज़ार दीनार ख़र्च किये, इस के इ़लावा नव सो ऊंट और सो घोड़े मअ़ साज़ो सामान फ़रमाने ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर लब्बैक कहते हुए बारगाहे रिसालत में पेश कर दिये। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मेरे पास भी माल था, मैं ने सोचा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर दफ़्अ़ा इन मुआ़मलात में मुझ से सबक़त ले जाते हैं, इस बार ज़ियादा से ज़ियादा माल सदक़ा कर के उन से सबक़त ले जाऊंगा।" चुनान्चे, वोह घर गए और घर का सारा माल इकठ्ठा किया, उस के दो ह़िस्से किये, एक घरवालों के लिये छोड़ा और दूसरा ह़िस्सा ले कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। सरकारे नामदार मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! घरवालों के लिये क्या छोड़ के आए हो ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आधा माल घरवालों के लिये छोड़ आया हूं।" इतने में आ़शिक़े अक्बर, यारे ग़ारे मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपना माल ले कर बारगाहे रिसालत में इस त़रह़ ह़ाज़िर हुए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बिल्कुल सादा सी क़बा पहनी हुई थी, जिस पर बबूल के कांटों के बटन लगाए हुए हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को देख कर बहुत ख़ुश हुए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! घरवालों के लिये क्या छोड़ कर आए हो ?" बस मह़बूब का येह पूछना था कि गोया आ़शिक़े सादिक़ का दिल इ़श्क़ो मह़ब्बत की महक से झूम उठा, फ़ौरन ही समझ गए कि बात कुछ और है, क्यूंकि मह़बूब तो जानता है कि मेरे आ़शिक़े सादिक़ ने तो उस

www.dawateislami.net

वक़्त भी अपनी जान, माल, आल औलाद सब कुछ क़ुरबान कर दिया था जब मक्कए मुकर्रमा में ह़िमायत करने वाले न होने के बराबर थे बल्कि अक्सर लोग जानी दुश्मन बन गए थे और मह़बूब के कलाम को क्यूं न समझते कि येह तो वोह आ़शिक़ थे जो हर वक़्त इस मौक़अ़ की तलाश में रहते थे कि बस मह़बूब फ़रमाएं ! सब कुछ क़दमों में ला कर क़ुरबान कर दें, गोया :

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है
येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

येह तो वोह आ़शिक़े सादिक़ थे, जिन्हों ने कभी अपने माल को अपना समझा ही नहीं, बल्कि जो कुछ इन के पास होता उसे मह़बूब की अ़ता समझते और क्यूं न समझते कि :

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या'नी मह़बूबो मुह़िब्ब में नहीं मेरा तेरा

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन समझ गए कि मह़बूब की चाहत कुछ और है, ग़ालिबन मह़बूब येह कहना चाहते हैं कि ऐ मेरे आ़शिक़ ! मैं तो तेरे इ़श्क़ को जानता हूं, आज दुन्या को बता दे कि इ़श्क़ किसे कहते हैं, बस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मह़ब्बत भरे लहजे में यूं अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह ! اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने घर का सारा माल ले कर आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया हूं और घरवालों के लिये **अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है।''** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह मन्ज़र देख कर हैरान रह गए और कहने लगे : ''मैं कभी भी अबू बक्र सिद्दीक़ से आगे नहीं बढ़ सकता।''

www.dawateislami.net

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस

सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा और रसूल बस

राहे ख़ुदा में ख़र्च का ज़ेहन बनाने और ख़र्च करने के चौदह ﴾14﴿ त़रीक़े

(1) **राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के दुन्यवी व उख़रवी फ़वाइद पेशे नज़र रखिये :** राहे ख़ुदा में मुसलमानों पर अपने पाकीज़ा माल से सदक़ा व ख़ैरात कर के ख़र्च करने वालों के लिये आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अह़ादीसे मुबारका से तक़रीबन 25 फ़वाइद ज़िक्र फ़रमाए हैं : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बुरी मौत से बचेंगे, सत्तर दरवाज़े बुरी मौत के बन्द होंगे। (2) उम्रें ज़ियादा होंगी। (3) उन की गिनती (ता'दाद) बढ़ेगी। (4) रिज़्क़ में वुस्अ़त और माल की कसरत होगी, इस की आ़दत से कभी मोह़ताज न होंगे। (5) ख़ैरो बरकत पाएंगे। (6) आफ़तें बलाएं दूर होंगी, बुरी क़ज़ा टलेगी, सत्तर दरवाज़े बुराई के बन्द होंगे, सत्तर क़िस्म की बला दूर होगी। (7) उन के शहर आबाद होंगे। (8) शिकस्ता ह़ाली दूर होगी। (9) ख़ौफ़े अन्देशा ज़ाइल और इत़्मीनाने ख़ातिर ह़ासिल होगा। (10) मददे इलाही शामिल होगी। (11) रह़मते इलाही उन के लिये वाजिब होगी। (12) मलाइका उन पर दुरूद (दुआ़ए रह़मत) भेजेंगे। (13) रिज़ाए इलाही के काम करेंगे। (14) ग़ज़बे इलाही उन पर से ज़ाइल होगा। (15) उन के गुनाह बख़्शे जाएंगे, मग़फ़िरत उन के लिये वाजिब होगी, उन के गुनाहों की आग बुझ जाएगी। (16) ख़िदमते अहले दीन में सदक़े से बढ़ कर सवाब पाएंगे। (17) गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा अज्र लेंगे। (18) उन के टेढ़े काम दुरुस्त होंगे। (19) आपस में मह़ब्बतें बढ़ेंगी जो हर ख़ैर

www.dawateislami.net

व ख़ूबी की मुत्तबेअ़ (या'नी इन के पीछे पीछे चलने वाली) हैं। (20) थोड़े ख़र्च में बहुत का पेट भरेगा कि तन्हा खाते तो डबल ख़र्च आता। (21) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर दरजे बुलन्द होंगे। (22) मौला तबारक व तआ़ला मलाइका से उन के साथ मुबाहात (फ़ख़्र) फ़रमाएगा। (23) रोज़े क़ियामत दोज़ख़ से अमान में रहेंगे, आतशे दोज़ख़ उन पर ह़राम होगी। (24) आख़िरत में एह़साने इलाही से बह़रामन्द होंगे कि निहायते मक़ासिद व ग़ायते मुरादात (मक़्सदों की इन्तिहा और मुरादों के अन्जाम) है। (25) ख़ुदा ने चाहा तो उस मुबारक गुरौह में शामिल होंगे जो हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'ले अक़्दस के तसद्दुक़ में सब से पहले जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

(2) **बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये :** बन्दा जब बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ करेगा कि वोह कैसे राहे ख़ुदा में ख़र्च करते थे तो उसे भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा नसीब होगा, इस के लिये हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ **"इह़याउल उ़लूम,"** जिल्द सिवुम, स. 741 (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) से मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **बुख़्ल की मज़म्मत, अस्बाब और इलाज का मुत़ालआ़ कीजिये :** राहे ख़ुदा में ख़र्च न करने का एक सबब बुख़्ल (कन्जूसी) भी है, जब बन्दा बुख़्ल की मज़म्मत, अस्बाब और इन के इलाज का मुत़ालआ़ करेगा तो बुख़्ल से बचना आसान हो जाएगा और उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा नसीब होगा। इस के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : इह़याउल उ़लूम

1.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 153 ब तसर्रुफ़ क़लील।

www.dawateislami.net

जिल्द सिवुम, बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 128, जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल। वग़ैरा वग़ैरा

(4) **वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करते हुए राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** वालिदैन पर ख़र्च करने का हुक्म खुद कुरआने पाक में दिया गया है, चुनान्चे, सूरए बक़रह में इरशाद होता है :

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا یُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَیْرٍ فَلِلْوَالِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ وَالْیَتٰمٰى وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ؕ﴾ (پ۲، البقرہ:۲۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है।"

(5) **अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी करते हुए राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** सिलए रेहमी का हुक्म भी खुद रब तआ़ला ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया है जैसा कि मज़्कूरा आयते मुबारका गुज़री। नीज़ अहादीसे मुबारका में भी इस के बहुत फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए गए हैं। सदक़ा करने और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी करने से रिज़्क़ में वुस्अ़त और उम्र में इज़ाफ़ा होता है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो चाहता है कि उस के रिज़्क़ में वुस्अ़त, माल में बरकत हो वोह अपने रिश्तेदारों से नेक सुलूक करे।"(1) एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "बेशक सदक़ा और सिलए रेहमी इन दोनों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है और मकरूह और अन्देशे को दूर करता है।"(2)

1 ......بخاری، کتاب الادب، باب من یبسط لہ فی الرزق۔۔۔الخ، ۴/۹۷، حدیث:۵۹۸۵۔

2 ......مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/۳۹۷، حدیث:۴۰۹۰۔

(6) **अपने अह्लो इयाल की कफ़ालत कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** अह्ले ख़ाना पर ख़र्च करने के अहादीसे मुबारका में बहुत फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए गए हैं। ❁ जो सवाब की निय्यत से अपने अह्ले ख़ाना पर ख़र्च करे तो येह भी सदक़ा है। ❁ बन्दे के मीज़ान में सब से पहले अह्लो इयाल पर ख़र्च किये गए माल को रखा जाएगा। ❁ सब से अफ़्ज़ल दीनार वोह है जिसे बन्दा अपने घरवालों पर ख़र्च करे।[1]

(7) **यतीमों मिस्कीनों से हुस्ने सुलूक कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में ऐसे (शहादत की उंगली और बीच वाली उंगली की तरह) इकट्ठे होंगे।"[2] एक और हदीसे पाक में फ़रमाया : "बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बरगीरी करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की तरह है।"[3]

(8) **ईसाले सवाब कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** ईसाले सवाब भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का एक बेहतरीन मसरफ़ है। हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : "सा'द की मां का इन्तिक़ाल हो गया (मैं ईसाले सवाब के लिये कुछ सदक़ा करना चाहता हूं) तो कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "पानी।" उन्हों ने एक कुंवां खुदवा दिया और कहा : "येह उम्मे सा'द के लिये है।"[4] (या'नी इस का सवाब मेरी मां को पहुंचे।) ईसाले सवाब के लिये ख़र्च करने की मुख़्तलिफ़

1.....फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिहीन, 1 / 86

2.....بخاری، کتاب الادب، باب فضل من یعول یتیما، ۴/۱۰۱، حدیث:۲۰۰۵۔

3.....بخاری، کتاب الادب، باب الساعی علی المسکین، ۴/۱۰۲، حدیث:۲۰۰۷۔

4.....ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث:۱۶۸۱۔

www.dawateislami.net

सूरतें हो सकती हैं : ۞ अपने मर्हूमीन की अरवाह़ के लिये किसी भी नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करना ۞ मस्जिद में पैसे दे देना ۞ मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना वग़ैरा में पैसे दे देना ۞ घर में फ़ातिह़ा ख़्वानी ۞ बारहवीं शरीफ़ ۞ ग्यारहवीं शरीफ़ ۞ रजब में कूंडे ۞ घर या अ़लाक़े में इजतिमाए ज़िक्रो ना'त ۞ बुजु़र्गाने दीन के आ'रास ۞ घर में कु़रआन ख़्वानी ۞ ग़रीबों, यतीमों, मिस्कीनों, नादारों में खाना तक़्सीम करना ۞ किसी बेवा व मजबूर की मदद ۞ मुसाफ़िरों की ख़ैर ख़्वाही ۞ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना या किसी को सफ़र करवा देना ۞ दीनी कुतुबो रसाइल ख़रीद कर वक़्फ़ कर देना ۞ किसी बीमार का इ़लाज करवा देना वग़ैरा वग़ैरा। येह तमाम ईसाले सवाब की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन में ख़र्च करना राहे ख़ुदा में ही ख़र्च करना है।

(9) **सदक़ा व ख़ैरात कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** मुत़लक़ सदक़ा व ख़ैरात कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये : कि इस के कसीर फ़ज़ाइल व फ़वाइद अह़ादीसे मुबारका में बयान फ़रमाए गए हैं, तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेशे ख़िदमत हैं : ۞ "**सदक़ा** दिया करो बेशक सदक़ा तुम्हारे लिये जहन्नम से बचाव का एक ज़रीआ़ है।"(1) ۞ सदक़ा बुरी मौत से बचाता है और नेकी उ़म्र बढ़ाती है।"(2) ۞ "सदक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है।"(3)

(10) **ख़ुफ़्या त़ौर पर सदक़ा कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** छुपा कर राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब ख़ुद कु़रआने पाक में दिलाई गई है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

---

1 ......شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی التحریض علی صدقۃ التطوع، ۳/۲۱۴، حدیث: ۳۳۵۵۔
2 ......مسند امام احمد، حدیث رافع بن مکیث، ۵/۴۴۱، حدیث: ۱۶۰۷۹۔
3 ......معجم کبیر، ۴/۲۷۴، حدیث: ۴۴۰۲۔

www.dawateislami.net

﴿اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ یُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَیِّاٰتِكُمْ ؕ﴾ (پ۳، البقرہ: ۲۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे।" फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक मख़्फ़ी सदक़ा रब तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता है।"(1)

(11) **खाना खिला कर, पानी पिला कर राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो अपने (मुसलमान) भाई को रोटी खिलाए यहां तक कि उस का पेट भर जाए और उसे पानी पिलाए यहां तक कि उस की प्यास बुझ जाए तो **अल्लाह** तआ़ला उसे दोज़ख़ से ऐसी सात ख़न्दक़ों के बराबर दूर कर देगा जिन में से हर दो ख़न्दक़ों के दरमियान पांच सो साल का फ़ासिला हो।"(2)

(12) **क़र्ज़ दे कर राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** क़र्ज़ देना भी राहे ख़ुदा में सदक़ा करने और ख़र्च करने जैसा है बल्कि क़र्ज़ का कई गुना अज्र दिया जाता है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "शबे मे'राज मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा : सदक़ा दस गुना और क़र्ज़ अठ्ठारह गुना (ज़ियादा अज्र रखता) है।"(3)

(13) **तंगदस्त पर आसानी कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** तंगदस्त पर आसानी करने से अज्रो सवाब की उम्मीद है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो किसी तंगदस्त पर आसानी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमाएगा।"(4)

---

1 ......معجم کبیر، ۱۹/۴۲۱، حدیث: ۱۰۱۸۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب الاطعمة، باب فضیلة اطعام الطعام، ۵/۱۷۸، حدیث: ۷۲۵۴۔

3 ......ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب القرض، ۳/۱۵۴، حدیث: ۲۴۳۱۔

4 ......ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب انظار المعسر، ۳/۱۴۶، حدیث: ۲۴۱۷۔

www.dawateislami.net

(14) **मस्जिद ता'मीर कर के राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये :** ता'मीरे मस्जिद में ख़र्च की भी बहुत फ़ज़ीलत है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा।"[1] इसी त़रह़ मद्रसे या किसी भी दीनी इमारत वग़ैरा की ता'मीर में ख़र्च करना भी राहे ख़ुदा में ही ख़र्च करना है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22)... अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहना

अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने की ता'रीफ़

ख़ुशी, ग़मी, राह़त, तक्लीफ़, ने'मत मिलने, न मिलने, अल ग़रज़ हर अच्छी बुरी ह़ालत या तक़्दीर पर इस त़रह़ राज़ी रहना, ख़ुश होना या सब्र करना कि इस में किसी क़िस्म का कोई शिक्वा या वावेला वग़ैरा न हो "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना**" कहलाता है।

रिज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ सूरतें

۞ दुआ़ मांगना, गुनाहों से नफ़रत करना, गुनाहों से बचने की दुआ़ करना, मग़फ़िरत त़लब करना, गुनाह के मुर्तकिब से नाराज़ होना, अस्बाबे गुनाह को बुरा जानना, इस पर राज़ी न होना, امر بالمعروف ونہی عن المنکر के ज़रीए़ इस को ख़त्म करने की कोशिश करना, गुनाहों वाली सर ज़मीन से भागना और इस की मज़म्मत करना, दीन पर मुआ़वनत करने वाले अस्बाब को इख़्तियार करना, येह तमाम उमूर रिज़ा के ख़िलाफ़ नहीं। ۞ शिक्वा के तौर पर मुसीबत का इज़्हार करना, दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर नाराज़ होना, खाने की अश्या को बुरा कहना और इन में ऐ़ब निकालना, येह तमाम उमूर

[1] ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب من بنی مسجدا، ۱/۱۷۱، حدیث: ۴۵۰۔

www.dawateislami.net

रिज़ा के ख़िलाफ़ हैं। ۞ इस त़रह़ कहना कि "फ़क़्र आज़्माइश है, अह्लो इयाल ग़म और थकावट का बाइ़स हैं, पेशा इख़्तियार करना तक्लीफ़ और मशक़्क़त है।" येह तमाम बातें रिज़ा में ख़लल डालती हैं बल्कि बन्दे को चाहिये कि वोह तदबीर और ममलुकत को इस के मुदब्बिर और मालिक के सिपुर्द कर दे और वोह कहे जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया था कि : "मुझे कोई परवाह नहीं कि तवंगरी (मालदारी) की ह़ालत में सुब्ह़ करूं या फ़क़्र की ह़ालत में क्यूंकि मैं नहीं जानता कि इन दोनों में से मेरे लिये कौन सी ह़ालत बेहतर है।"[1]

आयते मुबारका

۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ﴾ (پ۷، المائدۃ:۱۱۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह है बड़ी कामयाबी।" ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ﴾ (پ۲۷، الرحمن:۶۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "नेकी का बदला क्या है मगर नेकी।" हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "एह़सान की इन्तिहा येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे से राज़ी हो और येह वोह सवाब है जो बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी होने की सूरत में मिलता है।"[2]

﴾हदीसे मुबारका﴿ रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाले मोमिन

रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 181 ता 190 माख़ूज़न। 2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 157

www.dawateislami.net

किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की एक जमाअ़त से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम लोग क्या हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हम मोमिन हैं ।" इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे ईमान की क्या निशानी है ?" अ़र्ज़ की : "हम आज़्माइशों पर सब्र करते हैं, आसूदगी में शुक्रे इलाही बजा लाते हैं और रब तआ़ला की तक़्दीर पर राज़ी रहते हैं ।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! तुम मोमिन हो ।"[1]

अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने का हुक्म

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे, रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहना नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला काम है ।

24 हिकायत सब्रो रिज़ा ने गिरिफ़्तारी से बचा लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़क्काशा मसरूक़ कूफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی बयान करते हैं कि एक शख़्स जंगल में रहता था, उस के पास एक कुत्ता, एक गधा और एक मुर्ग़ था । मुर्ग़ तो घरवालों को नमाज़ के लिये जगाया करता था और गधे पर वोह पानी भर कर लाता और ख़ैमे वग़ैरा लादा करता और कुत्ता उन की पहरादारी करता था । एक दिन लोमड़ी आई और मुर्ग़ को पकड़ कर ले गई, घरवालों को इस बात का बहुत रन्ज हुवा मगर वोह शख़्स नेक था, उस ने कहा : "हो सकता है इसी में बेहतरी हो ।" फिर एक दिन भेड़िया आया और गधे का पेट फ़ाड कर उस को मार दिया, इस पर भी घरवाले रन्जीदा हुए मगर उस शख़्स ने कहा : "मुमकिन है इसी में भलाई हो ।" फिर एक दिन कुत्ता भी मर गया तो उस शख़्स ने फिर भी येही कहा : "मुमकिन है इसी में बेहतरी हो ।" अभी कुछ दिन ही गुज़रे थे कि एक सुब्ह़ उन्हें मा'लूम हुवा कि उन के अत़राफ़ में आबाद तमाम लोगों को क़ैद कर

1 ......معجم اوسط، ۶/۲۶۷، حدیث: ۹۴۲۷ بتغیر قلیل، احیاء العلوم، ۵/۱۵۸۔

लिया गया है और सिर्फ़ येह ही मह़फ़ूज़ रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दीगर तमाम लोग कुत्तों, गधों और मुर्ग़ों की आवाज़ों की वज्ह से ही पकड़े गए। पस तक़्दीरे इलाही के मुत़ाबिक़ उन के ह़क़ में बेहतरी इन जानवरों की हलाकत में थी।"(1)

अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े

(1) **रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने के फ़ज़ाइल पर ग़ौर कीजिये :** तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेशे ख़िदमत हैं : (1) "ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस को इस्लाम की हिदायत दी गई और उस का रिज़्क़ ब क़दरे किफ़ायत है और वोह इस पर राज़ी है।" (2) जो शख़्स थोड़े रिज़्क़ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी रहे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस के थोड़े अ़मल पर राज़ी हो जाता है।" (3) "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उस को आज़माइश में मुब्तला करता है पस अगर बन्दा सब्र करे तो वोह उस को चुन लेता है और अगर राज़ी रहे तो उस को बर गुज़ीदा बना लेता है।"(2)

(2) **रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत सब से पहले उन लोगों को जन्नत की त़रफ़ बुलाया जाएगा जो हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करते हैं।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो तक़्दीर पर राज़ी नहीं उस की ह़माक़त का कोई इ़लाज नहीं।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद

---
1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 173
2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 159

फ़रमाया : "मैं किसी अंगारे को ज़बान से चाटूं और वोह जला दे जो जला दे और बाक़ी रहने दे जो बाक़ी रहने दे, येह मेरे नज़्दीक इस से ज़ियादा पसन्दीदा है कि मैं जो काम हो चुका उस के बारे में कहूं : काश न होता या न होने वाले काम के बारे में कहूं : काश हो जाता।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ईमान की सर बुलन्दी हुक्मे इलाही पर सब्र करना और तक़्दीर पर राज़ी रहना है।"(1)

(3) **रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने से मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायाते बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस के बारे में ह़िकायात पढ़ने से भी रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। इस सिलसिले में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ "इह़याउल उ़लूम," जिल्द पन्जुम, सफ़ह़ा 170 से मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(4) **"क्यूं" और "कैसे" को अपनी ज़िन्दगी से निकाल दीजिये :** "क्यूं" और "कैसे" दोनों अल्फ़ाज़ रिज़ा पर राज़ी रहने के ख़िलाफ़ हैं, एक मश्हूर ह़दीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं ने ख़ैर और शर को पैदा किया तो उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी है जिस को मैं ने ख़ैर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर ख़ैर को जारी किया और उस शख़्स के लिये ख़राबी है जिस को मैं ने शर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर शर को जारी किया और उस शख़्स के लिये हलाकत ही हलाकत है जो कहे : क्यूं और कैसे ?"(2)

1.....इह़याउल उ़लूम, 5 / 164, 165 ब तसर्रुफ़ क़लील।

2.....ابن ماجه، کتاب السنة، باب من کان مفتاحا للخیر، ١/١٥٥، حدیث:٢٣٧، ٢٣٨، معجم کبیر، ١٢/ ١٣٢، حدیث:١٢٧٩٧، احیاء علوم الدین، کتاب المحبة والشوق۔۔۔الخ، بیان فضیلة الرضا، ٥/٦٥۔

www.dawateislami.net

(5) **“अगर” और “काश” को भी अपनी ज़िन्दगी से निकाल दीजिये :** “अगर” और “काश” येह दोनों अल्फ़ाज़ भी रिज़ा पर राज़ी रहने में बहुत बड़ी रुकावट हैं। कई लोगों को देखा गया है कि जब कोई तक्लीफ़ या मुसीबत पहुंचती है, कोई माली नुक़्सान पहुंचता है तो येह कहते नज़र आते हैं कि “अगर मैं यूं कर लेता तो नुक़्सान न होता, या काश ! मैं यूं कर लेता।” वग़ैरा वग़ैरा अक़्ल मन्दी इसी में है कि बन्दा हर काम को सोच समझ कर करे, उस के फ़वाइद और नुक़्सानात पर पहले ही ग़ौरो फ़िक्र कर ले, फिर उस के करने पर नफ़्अ़ हो या नुक़्सान उसे तक़्दीरे इलाही जानते हुए राज़ी रहे, उस पर शिक्वा शिकायत न करे, वावेला न मचाए बल्कि ज़ाहिरी अस्बाब को इख़्तियार करते हुए आयिन्दा के लिये कोशिश करे।

(6) **तक्लीफ़ पर मिलने वाले सवाब पर ग़ौर कीजिये :** तक्लीफ़ पर मिलने वाले सवाब पर ग़ौर करने से रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने में मदद मिलेगी, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : “मुसलमान को जो भी मुसीबत पहुंचती है हत्ता कि कांटा भी चुभता है तो इस के बदले उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।”[1] मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना फ़त्ह मौसिली की ज़ौजए मोहतरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا का पाउं फिस्ला और उन का नाख़ुन टूट गया तो वोह मुस्कुराने लगीं, उन से अ़र्ज़ की गई : “क्या आप को तक्लीफ़ नहीं पहुंची ?” इरशाद फ़रमाया : “सवाब की लज़्ज़त ने मेरे दिल से तक्लीफ़ की कड़वाहट को ज़ाइल कर दिया है।”[2]

(7) **बड़ी मुसीबत को पेशे नज़र रखिये :** जब भी कोई मुसीबत या तक्लीफ़ पहुंचे तो इस से बड़ी मुसीबत या तक्लीफ़ को पेशे नज़र रखिये,

---

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب ثواب المؤمن فیما ــــ الخ، ص ۱۳۹۱، حدیث: ۲۵۷۲-

2 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 167

www.dawateislami.net

मसलन हाथ पर ज़ख़्म हो जाए तो यूं ज़ेहन बनाइये कि मेरे हाथ पर फ़क़त् ज़ख़्म हुवा है, अगर पूरा हाथ ही कट जाता तो मेरी कैफ़िय्यत क्या होती ? फ़क़त् पाउं में तक्लीफ़ है, अगर पूरी टांग ही कट जाती तो मेरी कैफ़िय्यत क्या होती ? दुन्यवी नुक़्सान पहुंचे तो यूं ज़ेहन बनाए कि फ़क़त् दुन्या का नुक़्सान हुवा है मेरा दीन तो सलामत है, वग़ैरा वग़ैरा। उम्मीद है कि इस से भी रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने का मदनी ज़ेहन बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(8) **नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** सोह़बत असर रखती है, बन्दा जब ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करता है जिन की ज़बान हर वक़्त शिक्वा शिकायत से तर रहती है तो इस पर भी उन का असर हो जाता है और येह भी उस बीमारी में मुब्तला हो जाता है, जब कि सब्रो शुक्र करने और रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाले लोगों की सोह़बत उसे साबिरो शाकिर और राज़ी रहने वाला बना देती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल भी अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इस मदनी माह़ोल में सब्रो शुक्र व रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने की तरग़ीब दिलाई जाती है, आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब्रो शुक्र व रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने की दौलत नसीब होगी।

(9) **रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने के मक़ामात की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** जब तक बन्दे को रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने के मक़ामात का इल्म नहीं होगा कि जहां रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहना चाहिये तो इस के लिये रिज़ा को इख़्तियार करना बहुत दुश्वार है। चन्द मक़ामात येह हैं : (1) जब किसी अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाए कि इस मौक़अ़ पर लोग उ़मूमन निहायत बे सब्री का मुज़ाहरा करते हैं बल्कि बा'ज़ जाहिल अफ़राद तो مَعَاذَاللّٰه कुफ़्रिय्या कलिमात तक बक देते हैं, जिस से ईमान बरबाद हो

जाता है। (2) कारोबार में नुक़्सान हो जाए। (3) एक्सीडन्ट हो जाए। (4) कोई कुदरती आफ़त नाज़िल हो जाए। (5) किसी भी तरह की बीमारी लग जाए। (6) अह्ले ख़ाना में से कोई बीमार हो जाए या किसी को तक्लीफ़ पहुंचे। (7) घर या दुकान में चोरी या डकैती हो जाए। (8) बिला वज्ह नोकरी से निकाल दिया जाए। (9) दौराने सफ़र जेब कट जाए। (10) मोबाइल फ़ोन या गाड़ी वग़ैरा छिन जाए। (11) कोई चीज़ गुम हो जाए।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾23﴿...ख़ौफ़े ख़ुदा

ख़ौफ़े ख़ुदा की ता'रीफ़

ख़ौफ़ से मुराद वोह क़ल्बी कैफ़िय्यत है जो किसी ना पसन्दीदा अम्र के पेश आने की तवक़्क़ोअ़ के सबब पैदा हो, मसलन फल काटते हुए छुरी से हाथ के ज़ख़्मी हो जाने का डर। जब कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़गी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए।[1]

आयते मुबारका

❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۷۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾﴾ (پ۲۷، الرحمن: ۴۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।"

---

1 .....ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14, ماخوذاً: احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، باب بیان حقیقۃ الخوف، ۴/۱۹۰

www.dawateislami.net

«हदीसे मुबारका» हिक्मत की अस्ल ख़ौफ़े ख़ुदा है

❁ हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हिक्मत की अस्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है।"(1) ❁ सरकारे मदीना राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से मिलना चाहते हो तो मेरे बा'द भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बहुत डरते रहना।"(2)

ख़ौफ़े ख़ुदा का हुक्म

ख़ौफ़े ख़ुदा तमाम नेकियों और दुन्या व आख़िरत की हर भलाई की अस्ल है, ख़ौफ़े ख़ुदा नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है। फिर ख़ौफ़ के तीन दरजात हैं : (1) **ज़ईफ़ : (या'नी कमज़ोर)** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की क़ुव्वत न रखता हो, मसलन जहन्नम की सज़ाओं के ह़ालात सुन कर मह़ज़ झुर झुरी ले कर रह जाना और फिर से ग़फ़्लत व मा'सियत (गुनाह) में गिरिफ़्तार हो जाना। (2) **मो'तदिल : (या'नी मुतवस्सित़)** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की क़ुव्वत रखता हो, मसलन अ़ज़ाबे आख़िरत की वईदों को सुन कर उन से बचने के लिये अ़मली कोशिश करना और उस के साथ साथ रब तआ़ला से उम्मीदे रह़मत भी रखना। (3) **क़वी : (या'नी मज़बूत़)** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को ना उम्मीदी, बेहोशी और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला कर दे, मसलन **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब वग़ैरा का सुन कर अपनी मग़्फ़िरत से ना उम्मीद हो जाना। येह भी याद रहे

---

1 ......شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/۴۷۰، حدیث:۷۴۳۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 472

www.dawateislami.net

कि इन सब में बेहतर दरजा **"मो'तदिल"** है क्यूंकि ख़ौफ़ एक ऐसे ताज़ियाने (कोड़े) की मिस्ल है जो किसी जानवर को तेज़ चलाने के लिये मारा जाता है, लिहाज़ा अगर इस ताज़ियाने की ज़र्ब (चोट) इतनी ज़ईफ़ (कमज़ोर) हो कि जानवर की रफ़्तार में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा न हो तो इस का कोई फ़ाएदा नहीं और अगर येह इतनी क़वी हो कि जानवर इस की ताब न ला सके और इतना ज़ख़्मी हो जाए कि इस के लिये चलना ही मुमकिन न रहे तो येह भी नफ़्अ़ बख़्श नहीं और अगर येह मो'तदिल हो कि जानवर की रफ़्तार में भी ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हो जाए और वोह ज़ख़्मी भी न हो तो येह ज़र्ब बेहद मुफ़ीद है।[1]

25 हिकायत — ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इन्तिक़ाल करने वाला जवान

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा में रात के वक़्त एक गली से गुज़र रहा था कि अचानक एक दर्द भरी आवाज़ मेरी समाअ़त से टकराई, उस आवाज़ में इतना कर्ब था कि मेरे उठते हुए क़दम रुक गए और मैं एक घर से आने वाली उस आवाज़ को ग़ौर से सुनने लगा। मैं ने सुना कि **अल्लाह** तआ़ला का कोई बन्दा इन अल्फ़ाज़ में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात कर रहा था : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मेरा मालिक है ! तू ही मेरा आक़ा है ! तेरे इस मिस्कीन बन्दे ने तेरी मुख़ालफ़त की बिना पर सियाह कारियों और बद कारियों का इरतिकाब नहीं किया बल्कि नफ़्स की ख़्वाहिशात ने मुझे अन्धा कर दिया था और शैतान ने मुझे ग़लत़ राह पर डाल दिया था जिस की वज्ह से मैं गुनाहों की दल दल में फंस गया, ऐ **अल्लाह** ! अब तेरे ग़ज़ब और अ़ज़ाब से कौन मुझे बचाएगा ?" (येह सुन कर) मैं ने बाहर खड़े खड़े येह आयते करीमा पढ़ी :

---

1 .....इहयाउल उ़लूम, 4 / 457, ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 18

www.dawateislami.net

﴿يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ(۶)﴾ (پ۲۸، التحریم: ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं, इस पर सख़्त कर्रे (या'नी ताक़तवर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।" जब उस ने येह आयत सुनी तो उस के ग़म की शिद्दत में और इज़ाफ़ा हो गया और वोह शिद्दते कर्ब से चीख़ने लगा और मैं उसे उसी हालत में छोड़ कर आगे बढ़ गया। दूसरे दिन सुब्ह़ के वक़्त मैं दोबारा उस घर के क़रीब से गुज़रा तो देखा कि एक मय्यित मौजूद है और लोग उस के कफ़न व दफ़्न के इन्तिज़ाम में मसरूफ़ हैं। मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि "येह मरने वाला कौन था ?" तो उन्हों ने जवाब दिया कि "मरने वाला एक नौजवान था जो सारी रात ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोता रहा और सहूरी के वक़्त इन्तिक़ाल कर गया।"[1]

ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने के आठ ﴾8﴿ त़रीक़े

(1) **रब तआला की बारगाह में सच्ची तौबा कर लीजिये :** जिस त़रह़ त़वील दुन्यावी सफ़र पर तन्हा रवाना होते वक़्त उ़मूमन हमारी येह कोशिश होती है कि वोही सामान रखें जो मुफ़ीद हो नुक़्सान देह अश्या साथ नहीं रखते ताकि हमारा सफ़र क़दरे आराम से गुज़रे और हमें ज़ियादा परेशानी का सामना न करना पड़े, बिल्कुल इसी त़रह़ सफ़रे आख़िरत को कामयाबी से तै करने की ख़्वाहिश रखने वाले को चाहिये कि रवानगी से क़ब्ल गुनाहों का बोझ अपने कन्धों से उतारने की कोशिश करे कि कहीं येह बोझ उसे थका कर कामयाबी की मन्ज़िल पर पहुंचने से महरूम न कर दे।

[1]......شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/ ۵۳۰، حدیث: ۹۳۷ بتصرف۔

www.dawateislami.net

इस बोझ से छुटकारे का एक त़रीक़ा येह है कि बन्दा अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करे क्यूंकि सच्ची तौबा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देती है जैसे कभी किये ही न थे। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही न हो।"(1)

(2) **ख़ौफ़े ख़ुदा के लिये बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ कीजिये :** यूं दुआ़ कीजिये : ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह कमज़ोर व नातुवां बन्दा दुन्या व आख़िरत में कामयाबी के लिये तेरे ख़ौफ़ को अपने दिल में बसाना चाहता है। ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनाहों की ग़लाज़त से लिथड़ा हुवा बदन लिये तेरी पाक बारगाह में ह़ाज़िर हूं। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे और आयिन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से बचने के लिये इस सिफ़त को अपनाने के सिलसिले में भरपूर अ़मली कोशिश करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे और इस कोशिश को कामयाबी की मन्ज़िल पर पहुंचा दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़त़ा फ़रमा। आमीन

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम
दीवाना शहनशाहे मदीना का बना दे

(3) **ख़ौफ़े ख़ुदा के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखिये :** फ़ित़री तौर पर इन्सान हर उस चीज़ की त़रफ़ आसानी से माइल हो जाता है जिस में उसे कोई फ़ाएदा नज़र आए। इस तक़ाज़े के पेशे नज़र हमें चाहिये कि क़ुरआनो अह़ादीस में बयान कर्दा ख़ौफ़े ख़ुदा के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखें, चन्द

1 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة، ٤٩١/٢، حديث: ٤٢٥٠۔

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइल येह हैं : ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के लिये दो जन्नतों की बिशारत दी गई है। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को आख़िरत में कामयाबी की नवीद (ख़ुश ख़बरी) सुनाई गई है। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को जन्नत के बाग़ात और चश्मे अ़ता किये जाएंगे। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले आख़िरत में अम्न की जगह पाएंगे। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को मदद व ताईदे इलाही ह़ासिल होती है। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे हैं। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा आ'माल में क़बूलिय्यत का एक सबब है। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले बारगाहे इलाही में मुकर्रम हैं। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले दुन्या व आख़िरत में कामयाब व कामरान हैं। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा जहन्नम से छुटकारे का सबब है। ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा ज़रीअ़ए नजात है।[1]

(4) **ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़लामात पर ग़ौर कीजिये :** जब किसी चीज़ की अ़लामात पाई जाएंगी तो वोह शै भी ख़ुद ब ख़ुद पाई जाएगी। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की अ़लामत आठ चीज़ों में ज़ाहिर होती है : (1) इन्सान की ज़बान में : इस त़रह़ कि रब तआ़ला का ख़ौफ़ उस की ज़बान को झूट, ग़ीबत, फ़ुज़ूल गोई से रोकेगा और उसे ज़िक्रुल्लाह, तिलावते क़ुरआन और इल्मी गुफ़्तगू में मश्ग़ूल रखेगा। (2) उस के शिकम में : इस त़रह़ कि वोह अपने पेट में ह़राम को दाख़िल न करेगा और ह़लाल चीज़ भी ब क़दरे ज़रूरत खाएगा। (3) उस की आंख में : इस त़रह़ कि वोह उसे ह़राम देखने से बचाएगा और दुन्या की त़रफ़ रग़बत से नहीं बल्कि ह़ुसूले इब्रत के लिये देखेगा। (4) उस के हाथ में : इस त़रह़ कि वोह कभी भी

1 .....ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 26 मुलख़्ख़सन।

अपने हाथ को ह़राम की जानिब नहीं बढ़ाएगा बल्कि हमेशा इत़ाअ़ते इलाही में इस्ति'माल करेगा। (5) उस के क़दमों में : इस त़रह़ कि वोह उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में नहीं उठाएगा बल्कि उस के हुक्म की इत़ाअ़त के लिये उठाएगा। (6) उस के दिल में : इस त़रह़ कि वोह अपने दिल से बुग़्ज़, कीना और मुसलमान भाइयों से ह़सद करने को दूर कर दे और इस में ख़ैर ख़्वाही और मुसलमानों से नर्मी का सुलूक करने का जज़्बा बेदार करे। (7) उस की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में : इस त़रह़ कि वोह फ़क़त़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इबादत करे और रिया व निफ़ाक़ से ख़ाइफ़ रहे। (8) उस की समाअ़त में : इस त़रह़ कि वोह जाइज़ बात के इलावा कुछ न सुने।[1]

(5) **जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो तफ़क्कुर कीजिये :** जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौर करने के लिये पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पेशे ख़िदमत हैं : ۞ दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ खौलने लगेगा।[2] ۞ दोज़ख़ियों में बा'ज़ वोह लोग होंगे जिन के टख़्नों तक आग होगी और बा'ज़ लोग वोह होंगे जिन के ज़ानूओं तक आग के शो'ले पहुंचेंगे और बा'ज़ वोह होंगे जिन की कमर तक होगी और बा'ज़ लोग वोह होंगे जिन के गले तक आग के शो'ले होंगे।[3] ۞ अगर उस ज़र्द पानी का एक डोल जो दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जारी होगा, दुन्या में डाल दिया जाए तो दुन्या वाले बदबू दार हो जाएं।[4] ۞ दोज़ख़ की आग हज़ार साल तक भड़काई गई

---

1 ......درة الناصحين، المجلس الثلاثون، ص ۱۰۹ ، خوف خدا، ص ۱۹۔
2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة والنار، ۲/۲٦۲، حدیث: ٦۵٦۱۔
3 ......مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب فی شدة حر نار جهنم۔۔۔الخ، ص ۱۵۲۴، حدیث: ۲۸۴۵۔
4 ......ترمذی، کتاب صفة الجهنم، باب ما جاء فی صفة شراب اهل النار، ۴/۲٦۳، حدیث: ۲۵۹۴۔

www.dawateislami.net

यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल तक भड़काई गई यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल तक भड़काई गई यहां तक कि सियाह हो गई, पस अब वोह निहायत सियाह है।(1) ۞ दोज़ख़ में बुख़्ती ऊंट के बराबर सांप हैं, येह सांप एक बार किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़ह्र चालीस बरस तक रहेगा और दोज़ख़ में पालान बांधे हुए ख़च्चरों की मिस्ल बिच्छू हैं तो उन के एक बार काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा।(2)

(6) **ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अह़वाल पेशे ख़िदमत हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते कि एक मील के फ़ासिले से उन के सीने में होने वाली गड़ गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती। ۞ एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام लोगों को नसीह़त करने और ख़ौफ़े ख़ुदा दिलाने के लिये घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप के बयान में उस वक़्त चालीस हज़ार लोग मौजूद थे, जिन पर आप के पुर असर बयान की वज्ह से ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि तीस हज़ार लोग ख़ौफ़े ख़ुदा की ताब न ला सके और इन्तिक़ाल कर गए। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस क़दर रोते कि दरख़्त और मिट्टी के ढेले भी आप के साथ रोने लगते। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ौफ़े ख़ुदा से इतना रोते थे कि मुसलसल रोने की वज्ह से आप की अक्सर बीनाई रुख़्सत हो गई।(3)

1 ......ترمذی، کتاب صفة الجهنم، ۴/۲۶۲، حدیث: ۲۶۰۰۔
2 ......مشکوۃ، کتاب احوال القیامة وبدء الخلق، باب صفة النار ۳/۲۴۳، حدیث: ۵۶۹۱۔
3 ......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، باب بیان احوال الانبیاء۔۔۔الخ، ۴/۲۲۴ تا ۲۲۶ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

۞ एक बार हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के कनारे बैठे और इतना रोए कि आप की चश्माने अक़्दस (मुबारक आंखों) से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम हो गई, फिर फ़रमाया : ऐ भाइयो ! इस क़ब्र के लिये तय्यारी करो ।(1)

۞ ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने एक बार बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : जब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम को पैदा फ़रमाया है, मेरी आंखें उस वक़्त से कभी इस ख़ौफ़ के सबब ख़ुश्क नहीं हुईं कि मुझ से कहीं कोई ना फ़रमानी न हो जाए और मैं जहन्नम में न डाल दिया जाऊं ।(2)

(7) **ख़ुद एह़तिसाबी की आ़दत अपनाते हुए फ़िक्रे मदीना कीजिये :** अपनी ज़ात का मुह़ासबा कर लेने की आ़दत अपना लेने से भी ख़ौफ़े ख़ुदा के ह़ुसूल की मन्ज़िल पर पहुंचना क़दरे आसान हो जाता है, फ़िक्रे मदीना का आसान सा मत़लब येह है कि इन्सान उख़रवी ए'तिबार से अपने मा'मूलाते ज़िन्दगी का मुह़ासबा करे, फिर जो काम उस की आख़िरत के लिये नुक़्सान देह साबित हो सकते हैं, उन्हें दुरुस्त करने की कोशिश में लग जाए और जो उमूर उख़रवी ए'तिबार से नफ़्अ़ बख़्श नज़र आएं, उन में बेहतरी के लिये इक़्दामात करे, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करे ।

(8) **ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** ऐसे नेक लोगों की सोह़बत में बैठना भी बन्दे के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बेदार करने में बहुत मददगार साबित होगा । हर सोह़बत अपना असर रखती है, मिसाल के त़ौर पर अगर आप को कभी किसी मय्यित वाले घर जाने का

---

1 ......ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن والبکاء، ۴/۴۶۶، حدیث: ۴۱۹۵-

2 ......شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/۵۲۱، حدیث: ۹۱۵، خوف خدا، ص ۱۴۲ تا ۱۴۳ ملخصا-

www.dawateislami.net

इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो वहां की फ़ज़ा पर छाई हुई उदासी देख कर कुछ देर के लिये आप भी ग़मगीन हो जाएंगे और अगर किसी शादी पर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो ख़ुशियों भरा माहोल आप को भी कुछ देर के लिये मसरूर कर देगा। बिल्कुल इसी त़रह अगर कोई शख़्स ग़फ़्लत का शिकार हो कर गुनाहों पर दिलैर हो जाने वाले लोगों की सोह़बत में बैठेगा, तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही की मानिन्द हो जाएगा और अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जिन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर हों, उन की आंखें **अल्लाह** तआ़ला के डर से रोएं तो उम्मीद है कि येही कैफ़िय्यात उस के दिल में भी सरायत कर जाएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾24﴿...ज़ोह्द ﴾दुन्या से बे रग़बती﴿

ज़ोह्द की ता'रीफ़

दुन्या को तर्क कर के आख़िरत की त़रफ़ माइल होने या ग़ैरुल्लाह को छोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने का नाम **ज़ोह्द** है।(1) और ऐसा करने वाले को **ज़ाहिद** कहते हैं। **ज़ोह्द** की मुकम्मल और जामेअ़ ता'रीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का क़ौल है, आप फ़रमाते हैं : "**ज़ोह्द** येह है कि बन्दा हर उस चीज़ को तर्क कर दे जो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर करे।"(2)

ह़क़ीक़ी ज़ाहिद की ता'रीफ़

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "ह़क़ीक़ी ज़ाहिद तो वोह है जिस के पास दुन्या

(1).....इह़याउल उ़लूम, 4 / 647 (2).....इह़याउल उ़लूम, 4 / 684

www.dawateislami.net

ज़िल्लत के साथ ह़ाज़िर हो, उस के ह़ुसूल के लिये मशक़्क़त भी न उठानी पड़े और वोह किसी भी क़िस्म का नुक़्सान उठाए बिग़ैर दुन्या को इस्ति'माल करने पर क़ादिर हो। मसलन इ़ज़्ज़त में कमी, बदनामी या किसी ख़्वाहिशे नफ़्स के फ़ौत होने का अन्देशा न हो लेकिन वोह इस ख़ौफ़ से दुन्या को तर्क कर दे कि उसे इख़्तियार कर के मैं उस से मानूस हो जाऊंगा और यूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और से मानूस होने और मह़ब्बत करने वालों नीज़ उस की मह़ब्बत में ग़ैर को शरीक करने वालों में शामिल हो जाऊंगा। आख़िरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाले सवाब को ह़ासिल करने की निय्यत से दुन्या को तर्क करने वाला शख़्स भी **ह़क़ीक़ी ज़ाहिद** है। जो शख़्स जन्नती मशरूबात को पाने के लिये दुन्यवी मशरूबात से नफ़्अ़ उठाने को तर्क कर दे, ह़ूराने जन्नत के इश्तियाक़ में दुन्यवी औ़रतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ न हो, जन्नती बाग़ात और उन के दरख़्तों पर नज़र रखते हुए दुन्या के बाग़ात से नफ़्अ़ न उठाए, जन्नत में ज़ेबो ज़ीनत के ह़ुसूल के लिये दुन्या में आराइश व ज़ेबाइश से मुंह मोड़ ले, जन्नती मेवा जात को पाने के लिये दुन्या की लज़ीज़ ग़िज़ाओं को तर्क कर दे इस ख़ौफ़ से कि कहीं रोज़े क़ियामत येह न कह दिया जाए :

﴿اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ﴾ (پ۲۶،الاحقاف:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम अपने ह़िस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके।" अल ग़रज़ जो शख़्स इस बात पर नज़र रखते हुए कि आख़िरत दुन्या से बेहतर और बाक़ी रहने वाली है और इस के इ़लावा दीगर हर चीज़ दुन्या है जिस का आख़िरत में कोई फ़ाएदा नहीं है, जन्नती ने'मतों को उन तमाम चीज़ों पर तरजीह़ दे जो उसे दुन्या में बिग़ैर किसी मशक़्क़त के ब आसानी दस्तयाब हैं ह़क़ीक़त में ऐसा शख़्स **ज़ाहिद** कहलाने का ह़क़दार है।[1]

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 653 ब तसर्रुफ़ क़लील।

www.dawateislami.net

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ारून का वाक़िआ़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

﴿ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِیْ زِیْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا یٰلَیْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ ﴿۷۹﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَیْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَ لَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ ﴾ (پ۲۰، القصص: ۷۹، ۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में, बोले वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी त़रह़ हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का बड़ा नसीब है, और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं।" हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الوَالِی फ़रमाते हैं : "इस आयते मुक़द्दसा में **ज़ोह्द** को उ़लमा की त़रफ़ मन्सूब किया गया है और ज़ाहिदीन का वस्फ़ येह बयान किया गया है कि वोह इ़ल्म की दौलत से माला माल होते हैं और येह बात **ज़ोह्द** की फ़ज़ीलत पर दलालत करती है।"(1)

﴾हदीसे मुबारका﴿ ज़ोह्द इख़्तियार करने वाले की फ़ज़ीलत

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से बेहतर शख़्स कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "हर वोह मोमिन जो दिल का साफ़ और ज़बान का सच्चा हो।" अ़र्ज़ की गई : "साफ़ दिल वाले से क्या मुराद है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह मुत्तक़ी और मुख़्लिस शख़्स जिस के दिल

(1).....इह़याउल उ़लूम, 4 / 655

www.dawateislami.net

में ख़ियानत, धोका, बग़ावत और ह़सद न हो।" फिर अ़र्ज़ की गई : "ऐसे शख़्स के बा'द कौन अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह शख़्स जो दुन्या से नफ़रत और आख़िरत से मह़ब्बत करने वाला हो।"[1]

ज़ोह्द का हुक्म

ज़ोह्द नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "अह़काम के ए'तिबार से **ज़ोह्द** की तीन अक़्साम हैं : (1) फ़र्ज़ कि बन्दा अपने आप को ह़राम चीज़ों से बचाए। (2) नफ़्ल कि बन्दा अपने आप को ह़लाल चीज़ों से भी बचाए। (3) एह़तियात़ कि बन्दा शुबहात से अपने आप को बचाए।[2] फिर **ज़ोह्द** के तीन दरजात हैं : (1) जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ ह़त्ता कि जन्नतुल फ़िरदौस से भी बे रग़बती इख़्तियार करे, सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करे वोह **ज़ाहिदे मुत़लक़** है जो कि **ज़ोह्द** का आ'ला तरीन दरजा है। (2) जो शख़्स तमाम दुन्यवी लज़्ज़ात से बे रग़बत हो लेकिन उख़रवी ने'मतों मसलन जन्नती हूरों, मह़ल्लात व बाग़ात, नहरों और फलों वग़ैरा की लालच करे वोह भी **ज़ाहिद** है लेकिन इस का मर्तबा **ज़ाहिदे मुत़लक़** से कम है। (3) जो शख़्स दुन्यवी लज़्ज़ात में से बा'ज़ को तर्क करे और बा'ज़ को नहीं मसलन मालो दौलत को तर्क करे, मर्तबे और शोहरत को नहीं या खाने पीने में वुस्अ़त को तर्क कर दे ज़ीनत व आराइश को नहीं, इस को मुत़लक़न **ज़ाहिद** नहीं कहा जा सकता। ज़ाहिदीन में ऐसे शख़्स का वोही मर्तबा है जैसे तौबा करने वालों में उस शख़्स का जो बा'ज़ गुनाहों से तौबा करे और बा'ज़ से न करे, जिस त़रह़

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۰۵، حدیث: ۴۸۰۰۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 685 मुलख़्ख़सन।

ऐसे ताइब की तौबा सह़ीह़ है क्यूंकि ममनूआ़ चीज़ों को तर्क करने का नाम तौबा है यूं ही ऐसे **ज़ाहिद** का **ज़ोह्द** भी सह़ीह़ है क्यूंकि मुबाह़ लज़्ज़तों का तर्क करना **ज़ोह्द** कहलाता है और जिस त़रह़ येह मुमकिन है कि कोई शख़्स बा'ज़ ममनूआ़त को तर्क कर पाता हो और बा'ज़ को नहीं, इसी त़रह़ जाइज़ चीज़ों में भी येह हो सकता है।"(1)

26 हिकायत रसूले ख़ुदा का इख़्तियारी ज़ोह्द

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो देखा कि दो जहां के सुल्त़ान रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खजूर की छाल से बुनी हुई चारपाई पर आराम फ़रमा थे, जिस के सबब मुबारक पहलूओं पर निशानात पड़ गए थे। येह मन्ज़र देख कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अश्कबार हो गए। हुज़ूर नबिये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया "ऐ उ़मर ! क्यूं रोते हो ?" अ़र्ज़ की : "मुझे इस बात ने रुला दिया कि क़ैसरो किस्रा जैसे बादशाह तो दुन्यवी आसाइशों में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब व चुने हुए बन्दे और रसूल होने के बा वुजूद खजूर की छाल से बुनी हुई एक चारपाई पर आराम फ़रमा हैं।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि उन के लिये दुन्या और हमारे लिये आख़िरत हो ? अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस बात पर राज़ी हूं।" इरशाद फ़रमाया : "तो फिर ऐसा ही है।"(2) (या'नी उन के लिये दुन्या और हमारे लिये आख़िरत है)

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 646

2.....الادب المفرد للبخاری، باب الجلوس علی السریر، ص ۳۱۱، حدیث:۱۱۶۳۔

www.dawateislami.net

ज़ोहद का ज़ेहन बनाने और इख़्तियार करने के नव ﴾9﴿ तरीक़े

(1) **ज़ोहद के फ़ज़ाइल व फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये :** चन्द फ़ज़ाइल व फ़वाइद येह हैं : ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ज़ोहद** इख़्तियार करने वाले के इरादों को मज़बूत फ़रमा देता है। ۞ **ज़ाहिद** के मालो अस्बाब की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। ۞ **ज़ाहिद** के दिल में दुन्या से बे नियाज़ी पैदा फ़रमा देता है। ۞ **ज़ाहिद** के पास दुन्या ज़लील हो कर आती है। ۞ **ज़ाहिद** को हिक्मत अ़ता कर दी जाती है। ۞ **ज़ाहिद** से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ महब्बत फ़रमाता है। जिस दिल में ईमान और हया मौजूद हों उस में **ज़ोहदो** तक़्वा क़ियाम करते हैं। ۞ **ज़ाहिद** के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ईमान से मुनव्वर फ़रमा देता है। ۞ **ज़ाहिद** की ज़बान पर भी हिक्मत जारी हो जाती है। ۞ **ज़ाहिद** को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या की बीमारी और उस के इलाज की पहचान अ़ता फ़रमा देता है। ۞ **ज़ाहिद** को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या से सहीह़ सलामत निकाल कर सलामती के घर या'नी जन्नत की त़रफ़ ले जाता है। ۞ **ज़ोहद** इख़्तियार करना अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इमामुल अम्बिया अहमदे मुज्तबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है। ۞ **ज़ाहिद** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब है। ۞ **ज़ाहिद** को बिग़ैर सीखे इल्म और बिग़ैर कोशिश के हिदायत नसीब हो जाती है। ۞ **ज़ाहिद** पर दुन्या की मुसीबतें आसान हो जाती हैं।[1]

(2) **ज़ोहद से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन पर ग़ौर कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : "दुन्या से **ज़ोहद** उस चीज़ का नाम है कि लोगों से बे रग़बती इख़्तियार की जाए।" ۞ हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**ज़ोहद** तो दर ह़क़ीक़त क़नाअ़त है।"

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 657 ता 669 माख़ूज़न।

۞ हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "लम्बी उम्मीद न लगाना **ज़ोहद** है ।" ۞ हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**ज़ाहिद** वोह शख़्स है जो किसी को देखे तो कहे कि येह मुझ से अफ़्ज़ल है ।" ۞ एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रिज़्क़े हलाल की तलाश **ज़ोहद** है ।" ۞ हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स तक्लीफ़ों पर सब्र करे, शहवात को तर्क कर दे और हलाल ग़िज़ा खाए तो बेशक उस ने हक़ीक़ी **ज़ोहद** को इख़्तियार कर लिया ।"(1)

(3) **ज़ोहद से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अहवाल का मुतालआ कीजिये :** इस सिलसिले में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की माया नाज़ तस्नीफ़ "इहयाउल उ़लूम," जिल्द चहारुम, सफ़हा 691 से मुतालआ बहुत मुफ़ीद है ।

(4) **फ़ज़ीलते ज़ोहद पर अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुतालआ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "दुन्या से बे रग़बती बदन और दिल की राहत का सबब है ।" ۞ एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम ने तमाम आ'माल को कर के देखा लेकिन आख़िरत के मुआ़मले में दुन्या से बे रग़बती से ज़ियादा किसी अ़मल को मुअस्सिर न पाया ।" ۞ हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, जब अहले जन्नत इन में से दाख़िल होना चाहेंगे तो दरवाज़ों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते कहेंगे : हमारे रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम ! जन्नत के आ़शिक़ों और दुन्या से बे रग़बत रहने वालों से पहले कोई शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा ।" ۞ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द

1.....इहयाउल उ़लूम, 4 / 682 ता 684 मुलख़्ख़सन ।

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स को **ज़ोह्द** की दौलत ह़ासिल हो उस का दो रक्अ़त नमाज़ अदा करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को (ग़ैरे ज़ाहिद) इबादत गुज़ारों की हमेशा की इबादत से ज़ियादा पसन्द है।"(1)

(5) **सच्चे ज़ाहिद की सिफ़ात अपनाने की कोशिश कीजिये :** ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि सच्चे **ज़ाहिद** की ग़िज़ा वोह है जो मिल जाए, लिबास वोह जो सत्रपोशी कर दे और मकान वोह जहां उसे रात हो जाए। दुन्या उस के लिये क़ैदख़ाना, क़ब्र उस का बिछोना, तन्हाई उस की मजलिस, हुसूले इब्रत उस की फ़िक्र, कुरआन उस की गुफ़्तगू, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का अनीस, ज़िक्र उस का रफ़ीक़, ज़ोह्द उस का साथी, ग़म उस का ह़ाल, ह़या उस की निशानी, भूक उस का सालन, ह़िक्मत उस का कलाम, मिट्टी उस का फ़र्श, तक़्वा उस का ज़ादे राह, ख़ामोशी उस का माल, सब्र उस का तक्या, तवक्कुल उस का नसब, अ़क़्ल उस की दलील, इबादत उस का पेशा और जन्नत उस की मन्ज़िल होगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ(2)

(6) **ज़ोह्द की अ़लामात पैदा करने की कोशिश कीजिये :** जब अ़लामात पैदा हो जाएंगी तो **ज़ोह्द** भी खुद ब खुद पैदा हो जाएगा। **ज़ोह्द** की तीन अ़लामतें हैं : ۞ **पहली अ़लामत :** जो चीज़ मौजूद है उस पर खुश न हो और जो मौजूद नहीं उस पर ग़मगीन न हो। ۞ **दूसरी अ़लामत :** ज़ाहिद के नज़्दीक मज़म्मत और ता'रीफ़ करने वाला बराबर हो। ۞ **तीसरी अ़लामत :** ज़ाहिद को सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत हो, उस के दिल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत व इत़ाअ़त की ह़लावत व मिठास ग़ालिब हो क्यूंकि कोई भी दिल मह़ब्बत की ह़लावत से ख़ाली नहीं होता तो उस में मह़ब्बते दुन्या की ह़लावत होती है या फिर मह़ब्बते इलाही की ह़लावत।(3) उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने **ज़ोह्द** की कई और अ़लामात

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 669 ता 672 मुलख़्ख़सन।
2.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 693
3.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 727

www.dawateislami.net

भी बयान फ़रमाई हैं, तफ़्सील के लिये इह्याउल उ़लूम, जिल्द चहारुम, सफ़्ह़ा 729 का मुत़ालआ़ कीजिये।

(7) **दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देने के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** कि जब बन्दे पर किसी चीज़ का नुक़्सान ज़ाहिर हो जाता है तो उ़मूमन उस से बचने की कोशिश करता है, जब बन्दा दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ नहीं देगा तो यक़ीनन आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ देगा और येही **ज़ोह्द** है। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन बातों में मुब्तला फ़रमा देगा : (1) ऐसा ग़म जो कभी उस के दिल से जुदा न होगा। (2) ऐसा फ़क़्र जिस से कभी नजात न मिलेगी और (3) ऐसी लालच जो कभी ख़त्म न होगी।"[1]

(8) **आख़िरत के लिये दुन्या को तर्क कर देने की इस मिसाल में ग़ौरो तफ़क्कुर कीजिये :** इस से भी ज़ोह्द इख़्तियार करने में मुआ़वनत नसीब होगी। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "आख़िरत के लिये दुन्या को तर्क करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स को बादशाह के दरवाज़े पर मौजूद कुत्ता अन्दर जाने से रोक दे, येह शख़्स उस कुत्ते के आगे रोटी का एक लुक़्मा डाल दे और जब वोह उसे खाने में मश्ग़ूल हो तो येह अन्दर दाख़िल हो जाए, फिर उसे बादशाह का क़ुर्ब नसीब हो जाए यहां तक कि पूरी सल्त़नत में उस का हुक्म जारी हो जाए। क्या तुम्हारे ख़याल में वोह शख़्स बादशाह पर अपना एह़सान समझेगा कि उस का क़ुर्ब पाने के इवज़ मैं ने उस के कुत्ते के आगे रोटी का लुक़्मा डाला था। शैत़ान भी एक कुत्ते की त़रह़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर मौजूद है और लोगों को अन्दर दाख़िल

1 .....इह्याउल उ़लूम, 4 / 666

www.dawateislami.net

होने से रोकता है अगर्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरवाज़ा खुला हुवा है, पर्दे उठा दिये गए हैं और हर किसी को दाख़िले की इजाज़त है। दुन्या अपनी तमाम तर ने'मतों समेत रोटी के एक लुक़्मे की मानिन्द है, अगर तुम इसे खा लो तो इस की लज़्ज़त सिर्फ़ चबाने के वक़्त तक मह़दूद है, ह़ल्क़ से नीचे उतरते ही इस की लज़्ज़त ख़त्म हो जाती है, मे'दे में इस का बोझ बाक़ी रहता है और आख़िरे कार येह गन्दगी और नजासत की सूरत इख़्तियार कर लेती है और इन्सान इसे अपने जिस्म से बाहर निकालने पर मजबूर हो जाता है। जो शख़्स ऐसी ह़क़ीर चीज़ को बादशाह का क़ुर्ब पाने के लिये तर्क कर दे भला वोह दोबारा उस की त़रफ़ कैसे मुतवज्जेह हो सकता है? कोई शख़्स अगर्चे सो (100) साल तक ज़िन्दा रहे लेकिन उसे दी जाने वाली दुन्या को आख़िरत में मिलने वाली ने'मतों से वोह निस्बत भी नहीं है जो रोटी के टुकड़े और बादशाह के क़ुर्ब की ने'मत के दरमियान है क्यूंकि मुतनाही चीज़ (या'नी जिस की कोई इन्तिहा हो) को ला मुतनाही चीज़ (या'नी जिस की कोई इन्तिहा न हो) से कोई निस्बत नहीं हो सकती। दुन्या अ़न क़रीब ख़त्म होने वाली है, अगर बिल फ़र्ज़ येह एक लाख साल तक बाक़ी रहे और इस के साथ साथ येह बिल्कुल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ भी हो इस में कोई मैल कुचैल न हो तो भी इसे आख़िरत की हमेशा रहने वाली ने'मतों से कोई निस्बत नहीं जब कि ह़क़ीक़त तो येह है कि इन्सान की उ़म्र क़लील और दुन्यवी लज़्ज़ात आलूदा और मैली होती हैं, भला ऐसी चीज़ को आख़िरत से क्या निस्बत हो सकती है।"[1]

(9) ज़ोह्द के मुख़्तलिफ़ दरजात की मा'लूमात ह़ासिल कर के अ़मल की कोशिश कीजिये : ❁ ज़ोह्द के तीन दरजात येह हैं : (1) **पहला दरजा :** बन्दे का मक़्सद अ़ज़ाबे जहन्नम, अ़ज़ाबे क़ब्र, ह़िसाब की सख़्ती, पुल सिरात़ से गुज़रना और उन दीगर मसाइबो आलाम से

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 675

www.dawateislami.net

छुटकारे का हुसूल हो जिन का अहादीसे मुबारका में बयान हुवा है, येह सब से अदना दरजे का **ज़ोहद** है। (2) **दूसरा दरजा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मिलने वाले सवाब, ने'मतों और जन्नत में जिन इन्आमात का वा'दा किया गया है, मसलन : महल्लात वग़ैरा इन पर नज़र रखते हुए **ज़ोहद** इख़्तियार किया जाए। (3) **तीसरा दरजा :** बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत के सबब और उस के दीदार की दौलत पाने के लिये **ज़ोहद** इख़्तियार करे, न तो उस का दिल उख़रवी अज़ाबों की तरफ़ मुतवज्जेह हो और न ही जन्नती ने'मतों की तरफ़ मुतवज्जेह हो, येह सब से आ'ला दरजा है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾25﴿...उम्मीदों की कमी

उम्मीदों की कमी की ता'रीफ़

नफ़्स की पसन्दीदा चीज़ों या'नी लम्बी उम्र, सिहूहत और माल में इज़ाफ़े वग़ैरा की उम्मीद न होना "**उम्मीदों की कमी**" कहलाता है।[2] अगर लम्बी उम्र की ख़्वाहिश मुस्तक़्बिल में नेकियों में इज़ाफ़े की निय्यत के साथ हो तो अब भी "**उम्मीदों की कमी**" ही कहलाएगी।[3]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝﴾ (پ۱۴، الحجر: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन्हें छोड़ो कि खाएं और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं।" तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

1.....इहयाउल उ़लूम, 4 / 676 ता 677 मुलख़्ख़सन।

2.....فیض القدیر، ۲/ ۷۰۹، تحت الحدیث: ۲۵۵۰ ماخوذاً۔

3.....الحدیقۃ الندیۃ، ۲/ ۳۸۳ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

में है : "इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुन्या की त़लब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ़ ह़क़ से रोकता है।"(1)

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ उम्मीदों में कमी दुख़ूले जन्नत का सबब

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम सब जन्नत में दाख़िल होना पसन्द करते हो?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" इरशाद फ़रमाया : "उम्मीदें कम करो और अपनी मौत अपनी आंखों के सामने रखो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो जैसे उस से ह़या करने का ह़क़ है।"(2)

उम्मीदों की कमी का हुक्म

उम्मीदों की कमी दुन्या से बे रग़बती और फ़िक्रे आख़िरत में मशग़ूल रखने, नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है, लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधने की बजाए जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी में मशग़ूल रहे।

27 हिकायत सिह़ह़त धोके में मुब्तला न करे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन शुमैत़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद साह़िब को येह कहते हुए सुना : "ऐ लम्बी सिह़ह़त

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 14, अल ह़जर, तह़्तुल आयत : 3

2.....موسوعۃ ابن ابی دنیا، قصر الامل، ۳/۳۱۰، حدیث: ۳۱۔

www.dawateislami.net

से धोका खाने वालो ! क्या तुम ने किसी को बीमारी के बिग़ैर मरते नहीं देखा ? ऐ लम्बी मोहलत मिलने से धोका खाने वालो ! क्या तुम ने बिग़ैर मोहलत के किसी को गिरिफ़्तार होते नहीं देखा ? अगर तुम अपनी लम्बी उ़म्र के बारे में सोचोगे तो पिछली लज़्ज़तें भूल जाओगे, तुम्हें सिह़्ह़त ने धोके में डाला है या लम्बा अ़र्सा आ़फ़िय्यत से गुज़रने पर इतराते हो या मौत से बे ख़ौफ़ हो चुके हो या फिर मौत के फ़िरिश्ते पर दिलैर हो चुके हो ? जब मौत का फ़िरिश्ता आएगा तो उसे तुम्हारा ढेर सारा माल रोक सकेगा न लोगों की कसरत रोक सकेगी, क्या तुम नहीं जानते कि मौत का वक़्त इन्तिहाई तक्लीफ़ देह, सख़्त और नाफ़रमानियों पर नादिम होने का है ।" फिर फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जो मौत के बा'द काम आने वाले आ'माल करे और उस पर भी रह़्म फ़रमाए जो मौत आने से पहले ही अपना मुह़ासबा कर ले ।"(1)

उम्मीदों में कमी का ज़ेह़्न बनाने और कमी करने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े

(1) **छोटी उम्मीद से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द रिवायात येह हैं : ۞ हु़ज़ूर नबिये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इरशाद फ़रमाया : "जब तुम सुब्ह़ करो तो तुम्हारे दिल में शाम का ख़याल न आए और जब शाम करो तो सुब्ह़ की उम्मीद न रखो और अपनी तन्दुरुस्ती से बीमारी के लिये और ज़िन्दगी से मौत के लिये कुछ तोशा ले लो । ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम नहीं जानते कि कल किस नाम से पुकारे जाओगे ।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि प्यारे

(1).....इह़याउल उ़लूम, 5 / 491

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़बई ह़ाजत से फ़रागत ह़ासिल की और पानी बहाया, फिर तयम्मुम फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! पानी तो क़रीब है ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं पानी तक पहुंचने की अज़ खुद उम्मीद नहीं रखता।" ۞ एक बार हुज़ूर नबिये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पूछा : "क्या तुम सब जन्नत में दाख़िल होना चाहते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो इरशाद फ़रमाया : "अपनी उम्मीदों को छोटा करो, मौत को आंखों के सामने रखो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करने का ह़क़ अदा करो।"(1)

(2) **लम्बी उम्मीदों की हलाकतों पर ग़ौर कीजिये :** तीन रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिये : ۞ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन लकड़ियां लीं, एक अपने सामने गाड़ी, दूसरी उस के बराबर में जब कि तीसरी कुछ दूर। फिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : "तुम जानते हो येह क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं। इरशाद फ़रमाया : "एक लकड़ी इन्सान और दूसरी मौत है, जब कि दूर वाली उम्मीद है, इन्सान उम्मीद की जानिब हाथ बढ़ाता है मगर उम्मीद की बजाए मौत उसे अपनी जानिब खींच लेती है।" ۞ आदमी बूढ़ा हो जाता है मगर उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं, एक ह़िर्स और दूसरी (लम्बी) उम्मीद। ۞ इस उम्मत के पहलों ने यक़ीने कामिल और परहेज़गारी के सबब नजात पाई जब कि आख़िरी ज़माने वाले बुख़्ल और (लम्बी) उम्मीद के सबब हलाक होंगे।(2)

(3) **उम्मीदों की कमी से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

---

(1).....इह़याउल उ़लूम, 5 / 484 ता 487 मुल्तक़त़न।
(2).....इह़याउल उ़लूम, 5 / 485 ता 487 मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "मैं उस शख़्स की मानिन्द हूं जिस की फैली हुई गरदन पर तल्वार रखी जा चुकी है और उसे इन्तिज़ार है कि कब उस की गरदन उड़ा दी जाएगी।" ۞ हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर मैं एक महीना ज़िन्दा रहने की उम्मीद करूं तो तुम देखोगे कि यक़ीनन मैं ने बड़ा गुनाह किया और मैं येह उम्मीद भी कैसे रख सकता हूं हालांकि मैं देखता हूं कि मुसीबतों ने दिन व रात हर घड़ी में लोगों को घेरा हुवा है।"(1) ۞ हज़रते सय्यिदुना क़ा'क़ाअ़ बिन ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : "मैं मौत के लिये 30 साल से तय्यारी कर रहा हूं, अगर वोह आ जाए तो इतनी ताख़ीर भी बरदाश्त न करूंगा जितनी ताख़ीर कोई चीज़ आगे पीछे करने में होती है।" ۞ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सा'लबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : "हैरत है कि तुम हंसते हो जब कि तुम्हारा कफ़न धोबी के पास से आ चुका होता है।"(2)

(4) **अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कीजिये :** उम्मीदों की कमी का येह एक बेहतरीन इलाज है, क्यूंकि जिस का दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर होता है वोह लम्बी लम्बी उम्मीदें लगाने की बजाए अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत व इताअ़त में मसरूफ़ हो जाता है, जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत के लिये तय्यारी करता है, अह़कामाते शरइय्या की पाबन्दी करता है, गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करता है।

(5) **दिल को हुब्बे दुन्या से पाक कीजिये :** लम्बी उम्मीदों का एक बहुत बड़ा सबब दुन्या की मह़ब्बत भी है, जब बन्दे के दिल में दुन्या

---

1 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 489 2 ...इह़याउल उ़लूम, 5 / 493, 494 मुल्तक़तन।

www.dawateislami.net

की महब्बत घर कर जाती है तो वोह लम्बी लम्बी उम्मीदें लगाने की आफ़त में मुब्तला हो जाता है, इस के अन्दर तवील अर्से तक ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश पैदा हो जाती है, लिहाज़ा दिल को हुब्बे दुन्या से पाक कीजिये कि जो जितना ज़ियादा लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ातिर राहतों में ज़िन्दगी गुज़ारता है मरने के बा'द उसे उन आसाइशों के छूटने का सदमा भी उतना ही ज़ियादा होगा।

(6) **उम्मीदों की कमी व ज़ियादती, फ़वाइद व नुक़्सानात की मा'लूमात हासिल कीजिये :** लम्बी उम्मीदों का एक सबब जहालत भी है कि बन्दा अपनी जवानी पर भरोसा कर के येह समझ बैठता है कि जवानी में मौत नहीं आएगी और बेचारा इस बात पर ग़ौर नहीं करता कि ज़ियादा तर लोग जवानी में ही मर जाते हैं, इस का इलाज येह है कि बन्दा लम्बी उम्मीदों के नुक़्सानात और छोटी उम्मीदों के फ़ज़ाइल वग़ैरा की तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करे, इस सिलसिले में मक्तबतुल मदीना की मतबूआ, हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**इह्याउल उ़लूम,**" जिल्द 5, सफ़हा 484 से मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

(7) **हर वक़्त मौत को पेशे नज़र रखिये :** मौत की याद उम्मीदों की कमी का बहुत बड़ा सबब है। इस का तरीक़ा येह है कि बन्दा अपने जवान रिश्तेदारों, दोस्तों और महल्लेदारों को याद करे जो हंसते खेलते अचानक मौत का शिकार हो कर क़ब्र की अन्धेरी कोठरी में चले गए, वोह लोग भी मौत का शिकार हो गए जिन्हों ने कभी मौत के बारे में सोचा भी न था, मुझे भी अचानक मौत का मज़ा चखना होगा और अन्धेरी क़ब्र में उतरना होगा और अपनी करनी का फल भुगतना होगा, उम्मीद है यूं **उम्मीदों की कमी** का मदनी ज़ेहन बनेगा।

(8) **नज़्अ़ व क़ब्र के वह्शतनाक माहोल का तसव्वुर कीजिये :** यूं तसव्वुर कीजिये कि मेरी मौत का वक़्त आ पहुंचा है,

मुझ पर ग़शी त़ारी हो चुकी है, ज़बान ख़ामोश हो चुकी है, मुझे सख़्त प्यास मह़सूस हो रही है, मेरे गिर्द खड़े लोग मुझे बेबसी के आ़लम में देख रहे हैं, फिर ऐसा मह़सूस हुवा कि जैसे मेरे जिस्म में सूइयां चुभो दी गई हों, मेरे जिस्मानी आ'ज़ा ठन्डे होना शुरूअ़ हो गए, मेरे दिल की धड़कन आहिस्ता होते होते बन्द हो गई, मेरी सांस भी ख़त्म हो गई, आह मेरी मौत वाक़ेअ़ हो गई, मुझे ग़ुस्ल व कफ़न दिया गया, जनाज़ा गाह पहुंच कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई और क़ब्रिस्तान ले जाया गया, येह वोही क़ब्रिस्तान है कि जहां दिन के उजाले में तन्हा आने के तसव्वुर से ही मेरा कलेजा कांपता था, येह वोही क़ब्र है जिस के बारे में कहा गया कि जन्नत का एक बाग़ है या दोज़ख़ का एक गढ़ा, येह तो वोही जगह है कि जहां दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते सर से पाउं तक बाल लटकाए, आंखों से शो'ले निकालते हुए इन्तिहाई सख़्त लह्जे में मुझ से तीन सुवाल करेंगे, आह ! गुनाहों की नुहूसत के सबब कहीं मेरी क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा न बना दिया जाए। आह ! मेरा क्या बनेगा ? फिर अपने आप से मुख़ातिब हो कर कहें कि अभी तो मैं ज़िन्दा हूं, अभी मेरी सांसें चल रही हैं, मैं उन ह़सरत आमेज़ लम्ह़ात के आने से पहले पहले अपनी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने की कोशिश में लग जाऊंगा, ख़ूब नेकियां करूंगा, गुनाहों से कनारा कशी इख़्तियार करूंगा ताकि कल मुझे पछताना न पड़े, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधने की बजाए फ़िक्रे आख़िरत में मशग़ूल हो जाऊंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(9) **ह़श्र या'नी क़ियामत की हौलनाकियों का तसव्वुर कीजिये :** यूं तसव्वुर कीजिये कि मैं ने क़ब्र से निकल कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िरी के लिये मैदाने मह़शर की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ कर दिया है, सूरज आग बरसा रहा है, लेकिन उस की तपिश से बचने के

www.dawateislami.net

लिये कोई साया मुयस्सर नहीं, हर एक को पसीनों पर पसीने आ रहे हैं जिस की बदबू से दिमाग़ फटा जा रहा है, हर कोई प्यास से निढाल है, दिल ज़िन्दगी भर की जाने वाली ना फ़रमानियों का सोच कर डूबा जा रहा है, इन के नतीजे में मिलने वाली जहन्नम की हौलनाक सज़ाओं के तसव्वुर से कलेजा कांप रहा है, आह सद आह ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर के उसी की बारगाह में हाज़िर हो कर ज़िन्दगी भर के आ'माल का हिसाब कैसे दूंगा ? दूसरी तरफ़ अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में नेक आ'माल इख़्तियार करने वालों को मिलने वाले इन्आमात देख कर अपने करतूतों पर शदीद अफ़्सोस हो रहा है कि वोह ख़ुश नसीब तो सीधे हाथ में नामए आ'माल ले कर शादां व फ़रहां जन्नत की तरफ़ बढ़े चले जा रहे हैं, लेकिन न जाने मेरा क्या बनेगा ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे जहन्नम में जाने का हुक्म सुना कर उलटे हाथ में आ'माल नामा थमा दिया जाए और सारे अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की नज़रों के सामने मुझे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाए, हाए मेरी हलाकत ! आह मेरी रुस्वाई ! (مَعَاذَاللہ) यहां पहुंच कर अपनी आंखें खोल दीजिये और अपने आप से मुख़ातिब हो कर यूं कहे कि घबराव नहीं ! अभी मुझ पर येह वक़्त नहीं आया, अभी मैं ज़िन्दा हूं, येह ज़िन्दगी मेरे लिये ग़नीमत है, मुझे लम्बी लम्बी उम्मीदें लगाने की बजाए अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश में लग जाना चाहिये, मैं अपने रब तआ़ला का इताअ़त गुज़ार बन्दा बनने के लिये उस के अह़कामात पर अभी और इसी वक़्त अ़मल शुरूअ़ कर दूंगा ताकि कल मैदाने मह़शर में मुझे पछताना न पड़े । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾26﴿...सिद्क़ ﴾सच बोलना﴿

सिद्क़ की ता'रीफ़

हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی सिद्क़ या'नी सच की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "सिद्क़ का लुग़वी मा'ना वाक़ेअ़ के मुत़ाबिक़ ख़बर देना है।"(1)

आयते मुबारका

۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾ (پ۲۴، الزمر: ۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।" इस आयते मुबारका में सच ले कर तशरीफ़ लाने वाले से मुराद हुज़ूर नबिये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं और तस्दीक़ करने वाले से मुराद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ या तमाम मोमिनीन हैं।(2) ۞ एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ﴾ (پ۲۱، الاحزاب: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था।"

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ सच जन्नत की त़रफ़ ले जाता है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक सिद्क़ (सच) नेकी की त़रफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और बेशक आदमी सच बोलता रहता है

1 ......التعریفات للجرجانی، باب الصاد، ص ۹۵۔

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 24, अज़्ज़ुमर, तह़तुल आयत : 33

www.dawateislami.net

यहां तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां सिद्दीक़ (बहुत बड़ा सच्चा) लिख दिया जाता है और बेशक किज़्ब (झूट) गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है और बेशक आदमी झूट बोलता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कज़्ज़ाब (बहुत बड़ा झूटा) लिख दिया जाता है।"[1]

सच बोलने का हुक्म

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह अपने दीनी व दुन्यवी तमाम मुआ़मलात में सच बोले कि सच बोलना नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला काम है।

28 हिकायत सच बोलने की बरकत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 106 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात" सफ़ह़ा 37 पर है : सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मैं इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये जीलान से बग़दाद क़ाफ़िले के हमराह रवाना हुवा और जब हमदान से आगे पहुंचे तो साठ (60) डाकू क़ाफ़िले पर टूट पड़े और सारा क़ाफ़िला लूट लिया लेकिन किसी ने मुझ से तअ़र्रुज़ न किया। एक डाकू मेरे पास आ कर पूछने लगा : "ऐ लड़के ! तुम्हारे पास भी कुछ है ?" मैं ने जवाब में कहा : "हां" डाकू ने कहा : "क्या है ?" मैं ने कहा : "चालीस दीनार।" उस ने पूछा : "कहां हैं ?" मैं ने कहा : "गुदड़ी के नीचे।" डाकू इस रास्त गोई को मज़ाक़ तसव्वुर करता हुवा चला गया। इस के बा'द दूसरा डाकू आया और उस ने भी इसी त़रह़ के सुवालात किये और मैं ने येही जवाबात उस को भी दिये और वोह

[1] ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب قبح الکذب ۔۔۔ الخ، ص ۱۴۰۵، حدیث: ۲۶۰۷۔

भी इसी त़रह़ मज़ाक़ समझते हुए चलता बना। जब सब डाकू अपने सरदार के पास जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सरदार को मेरे बारे में बताया तो मुझे वहां बुला लिया गया। वोह माल की तक़्सीम करने में मसरूफ़ थे ? डाकूओं का सरदार मुझ से मुख़ात़िब हुवा : "तुम्हारे पास क्या है ?" मैं ने कहा : "चालीस दीनार हैं।" डाकूओं के सरदार ने डाकूओं को हुक्म देते हुए कहा : "इस की तलाशी लो।" तलाशी लेने पर जब सच्चाई का इज़्हार हुवा तो उस ने तअ़ज्जुब से सुवाल किया कि "तुम्हें सच बोलने पर किस चीज़ ने आमादा किया ?" मैं ने कहा : "वालिदए माजिदा की नसीह़त ने।" सरदार बोला : "वोह नसीह़त क्या है ?" मैं ने कहा : "मेरी वालिदए मोह़तरमा ने मुझे हमेशा सच बोलने की तल्क़ीन फ़रमाई थी और मैं ने उन से वा'दा किया था कि सच बोलूंगा।" तो डाकूओं का सरदार रो कर कहने लगा : "येह बच्चा अपनी मां से किये हुए वा'दे से मुन्ह़रिफ़ नहीं हुवा और मैं ने सारी उ़म्र अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये हुए वा'दे के ख़िलाफ़ गुज़ार दी है।" उसी वक़्त वोह उन साठ डाकूओं समेत मेरे हाथ पर ताइब हुवा और क़ाफ़िले का लूटा हुवा माल वापस कर दिया।(1)

सच बोलने का ज़ेह्न बनाने और सच बोलने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े

(1) **सच के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ۞ "सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि येह नेकी के साथ है और येह दोनों जन्नत में (ले जाने वाले) हैं और झूट से बचते रहो क्यूंकि येह गुनाह के साथ है और येह दोनों जहन्नम में (ले जाने वाले) हैं।"(2) ۞ "जब बन्दा सच बोलता है तो नेकी करता है

(1) ......بهجة الاسرار، ذکر طریقه رحمة الله تعالی علیه، ص١٦٨۔

(2) ......ابن حبان، کتاب البر، باب الکذب، ٧/٤٩٤، حدیث: ٥٧٠٤۔

www.dawateislami.net

और जब नेकी करता है मह़फ़ूज़ हो जाता है और जब मह़फ़ूज़ हो जाता है तो जन्नत में दाख़िल हो जाता है।"[1] ۞ "तुम मुझे छ चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं : (1) जब बोलो तो सच बोलो (2) जब वा'दा करो तो उसे पूरा करो (3) जब अमानत लो तो उसे अदा करो (4) अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो (5) अपनी निगाहें नीची रखा करो और (6) अपने हाथों को रोके रखो।"[2]

(2) **सच से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** चन्द अक़्वाल येह हैं : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "चार बातें ऐसी हैं कि जिस में होंगी वोह नफ़्अ़ पाएगा : (1) सिद्क़ (या'नी सच) (2) ह़या (3) हुस्ने अख़्लाक़ और (4) शुक्र।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "सिद्क़ (या'नी सच) को अपनी सुवारी, ह़क़ को अपनी तल्वार और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अपना मत़्लूब व मक़्सूद बना लो।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली कत्तानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "हम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन को तीन अरकान पर मब्नी पाया : (1) ह़क़ (2) सिद्क़ (या'नी सच) और (3) अ़द्ल। पस ह़क़ आ'ज़ा पर, अ़द्ल दिलों पर और सिद्क़ अ़क़्लों पर होता है।"[3]

(3) **सच के दुन्यवी व उख़्रवी फ़वाइद पर ग़ौर कीजिये :** चन्द फ़वाइद येह हैं : ۞ सच बोलने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर अ़मल करता है। ۞ सच बोलने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल होती है। ۞ सच बोलने वाले की रोज़ी में बरकत होती है। ۞ सच बोलने

---

1 .....مسند امام احمد، مسند عبد اللہ ابن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۸۹، حدیث: ۶۷۵۲ ملتقطا۔

2 .....ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصدق، ۱/ ۲۴۵، حدیث: ۲۷۱۔

3 .....इह़याउल उ़लूम, 5 / 289 मुल्तक़त़न।

www.dawateislami.net

वाले को मोमिन क़रार दिया गया है। ۞ सच बोलने वाला निफ़ाक़ से दूर हो जाता है। ۞ सच बोलने वाले का दिल रोशन हो जाता है। ۞ सच बोलने वाले का ज़मीर मुत़मइन होता है। ۞ सच बोलने वाले को मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है। ۞ सच बोलने वाले का रह़मते इलाही से ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ۞ सच बोलने वाले को रह़मते इलाही से क़ब्रो ह़श्र की तक्लीफ़ों से अमान मिलेगी। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ۞ सच बोलने वाले को जन्नत में दाख़िला नसीब होगा। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(4) **झूट बोलने की वई़दों को पेशे नज़र रखिये :** तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ۞ "जब बन्दा झूट बोलता है तो गुनाह करता है और जब गुनाह करता है तो नाशुक्री करता है और जब नाशुक्री करता है तो जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।"[1] ۞ "मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो पूरा न करे और (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे।"[2] ۞ कितनी बड़ी ख़ियानत है कि तुम अपने मुसलमान भाई से कोई बात कहो जिस में वोह तुम्हें सच्चा समझ रहा हो ह़ालांकि तुम उस से झूट बोल रहे हो।"[3]

(5) **झूट बोलने के दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये :** चन्द नुक़्सानात येह हैं : ۞ झूट बोलने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ना फ़रमान है। ۞ झूट बोलने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है। ۞ झूट बोलना मुनाफ़िक़ की निशानी क़रार दिया गया है। ۞ झूट बोलने वाले को मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता। ۞ झूट बोलने वाला मुसलमानों को धोका देने

1 ......مسند امام احمد، مسند عبد الله ابن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۸۹، حدیث: ۲۲۵۲-

2 ......مسلم، کتاب الایمان، باب خصال المنافق، ص ۵۰، حدیث: ۱۰۷-

3 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی المعاریض، ۴/ ۳۸۱، حدیث: ۴۹۷۱-

www.dawateislami.net

वाला है। ۞ झूट बोलने वाले का ज़मीर मुत़्मइन नहीं होता। ۞ झूट बोलने वाले की रोज़ी से बरकत उठा ली जाती है। ۞ झूट बोलने वाले का दिल सियाह हो जाता है। ۞ झूट बोलने वाले को क़ब्रो ह़श्र की सख़्तियों का सामना करना पड़ सकता है।

(6) **अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कीजिये :** ख़ौफ़े ख़ुदा तमाम गुनाहों से बचने की अस्ल है, जब बन्दे के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा हो जाता है तो वोह अपने आप को तमाम गुनाहों से बचाने की कोशिश करता है, ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" और हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**इह़्याउल उ़लूम,**" जिल्द 4, सफ़्ह़ा 451 का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(7) **अपने दिल में एह़तिरामे मुस्लिम पैदा कीजिये :** कई लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने मुसलमान भाइयों से कारोबारी मुआ़मलात में झूट और दरोग़ गोई से काम लेते हैं, इस की एक वज्ह एह़तिरामे मुस्लिम का न होना भी है, जब बन्दे के दिल में अपने मुसलमान भाइयों का एह़तिराम पैदा हो जाता है तो वोह उन से झूट बोलने, धोका देही से काम लेने और ख़ियानत करने में आ़र मह़सूस करता और सच बोलता है, लिहाज़ा दिल में एह़तिरामे मुस्लिम पैदा कीजिये कि इस की बरकत से झूट से बचने और सच बोलने में मदद मिलेगी। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

(8) **किसी की मलामत की परवाह मत कीजिये :** बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि बन्दा अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये झूट बोलता है कि अगर सच बोलेगा तो लोग मलामत करेंगे, बुरा भला कहेंगे। इस का इ़लाज येह है कि बन्दा दुन्यवी ज़िल्लत के मुक़ाबले में जहन्नम की उख़रवी ज़िल्लत और अ़ज़ाबात को पेशे नज़र रखे कि दुन्यवी ज़िल्लत तो चन्द

लम्हों की है और अ़न क़रीब ख़त्म हो जाएगी लेकिन उख़रवी ज़िल्लत तो उस से कहीं बढ़ कर है, लिहाज़ा किसी की मलामत की परवाह न कीजिये, हमेशा सच बोलिये।

(9) **उख़रवी फ़ाएदे को दुन्यवी नुक़्सान पर तरजीह़ दीजिये :** बसा अवक़ात ब ज़ाहिर थोड़े से दुन्यवी फ़ाएदे के पेशे नज़र भी बन्दा झूट बोल लेता है लेकिन उसे येह मा'लूम नहीं होता कि झूट बोलना फ़क़त़ पहली बार आसान होता है इस के बा'द इस में मुश्किल ही मुश्किल होती है, नुक़्सान ही नुक़्सान होता है, जब कि सच बोलना फ़क़त़ पहली बार मुश्किल होता है बा'द में उस में आसानियां ही आसानियां होती हैं, झूट बोलने में बा'ज़ वक़्ती दुन्यवी फ़वाइद मगर आख़िरत के बहुत नुक़्सानात हैं, जब कि सच बोलने में कभी हो सकता है कि थोड़ा सा दुन्यवी नुक़्सान हो मगर उस में उख़रवी त़ौर पर फ़ाएदे ही फ़ाएदे हैं, लिहाज़ा हमेशा सच बोलिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम और अपनी रह़मत से सच बोलने की बरकत से ब ज़ाहिर थोड़े से दुन्यवी नुक़्सान को भी नफ़्अ़ में तब्दील फ़रमा देगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾27﴿...हमदर्दिये मुस्लिम

हमदर्दिये मुस्लिम की ता'रीफ़

किसी मुसलमान की ग़मख़्वारी करना और उस के दुख दर्द में शरीक होना "हमदर्दिये मुस्लिम" कहलाता है। हमदर्दिये मुस्लिम की कई सूरतें हैं, बा'ज़ येह हैं : (1) बीमार की इयादत करना (2) इन्तिक़ाल पर लवाहिक़ीन से ता'ज़ियत करना (3) कारोबार में नुक़्सान पर या मुसीबत पहुंचने पर इज़्हारे हमदर्दी करना (4) किसी ग़रीब मुसलमान की मदद

www.dawateislami.net

करना (5) बक़दरे इस्तिताअ़त मुसलमानों से मुसीबतें दूर करना और उन की मदद करना (6) इल्मे दीन फैलाना (7) नेक आ'माल की तरग़ीब देना (8) अपने लिये जो अच्छी चीज़ पसन्द हो वोही अपने मुसलमान भाई के लिये भी पसन्द करना। (9) ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकना और मज़्लूम की मदद करना (10) मक़रूज़ को मोहलत देना या किसी मक़रूज़ की मदद करना (11) दुख दर्द में किसी मुसलमान को तसल्ली और दिलासा देना। वग़ैरा

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾ (پ۲۸، الحشر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो।"

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक भूका शख़्स आया, हुज़ूर ने अज़्वाजे मुतह्हरात के हुजरों पर मा'लूम कराया क्या खाने की कोई चीज़ है ? मा'लूम हुवा किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है, तब हुज़ूर ने अस्हाब से फ़रमाया : जो इस शख़्स को मेहमान बनाए, **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़मत फ़रमाए। हज़रते अबू त़ल्हा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त ले कर मेहमान को अपने घर ले गए, घर जा कर बीबी से दरयाफ़्त किया : कुछ है ? उन्हों ने कहा : कुछ नहीं, सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है। हज़रते अबू त़ल्हा ने फ़रमाया : बच्चों को बहला कर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि वोह अच्छी त़रह़ खा ले। येह इस लिये तजवीज़ की, कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं

खा रहे हैं क्यूंकि उस को येह मा'लूम होगा तो वोह इसरार करेगा और खाना कम है भूका रह जाएगा। इस त़रह़ मेहमान को खिलाया और आप उन साहि़बों ने भूके रात गुज़ारी। जब सुब्ह़ हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "रात फ़ुलां फ़ुलां लोगों में अ़जीब मुआ़मला पेश आया, अल्लाह तआ़ला उन से बहुत राज़ी है।" और येह आयत नाज़िल हुई।[1]

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ मुसीबत ज़दा से ग़मख़्वारी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ग़मख़्वारी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ग़मख़्वारी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े अ़त़ा करेगा जिन की क़ीमत दुन्या भी नहीं हो सकती।[2]

हमदर्दिये मुस्लिम का हुक्म

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या में एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : "हर फ़र्दे इस्लाम की ख़ैर ख़्वाही हर मुसलमान पर लाज़िम है।"[3]

29 हिकायत — मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और दुख्यारों की ग़मख़्वारी

अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 111 पर फ़रमाते हैं : हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म (मुह़म्मद

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 28, अल ह़श्र, तह़्तुल आयत : 9

2 ......معجم اوسط، ۲/۴۲۹، حدیث:۹۲۹۲-

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 718

www.dawateislami.net

मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान) رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसलमानों की ग़मख़्वारी और दिलजूई करने में अपनी मिसाल आप थे, मुसलमान का दिल तोड़ने से हर दम इजतिनाब फ़रमाते, उन को फ़ाएदा पहुंचाने के बेहद ह़रीस थे और ह़रीस क्यूं न होते कि जिस मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना इ़श्क़ था उन्ही का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "خَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए।"[1] इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की मदनी झलक पेश करती हुई एक अनोखी ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक ख़ास मौक़अ़ पर मद्रसए फ़ैज़ुल उ़लूम (धतकी डेहिया जमशेदपुर, झारखंड अल हिन्द) में मदऊ़ किये गए। वापसी पर रेलवे स्टेशन जाने के लिये हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रिक्षे में तशरीफ़ फ़रमा हुए ही थे कि इतने में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! फ़ुलां परेशानी से दो चार हूं, ता'वीज़ मर्ह़मत फ़रमा दीजिये, मद्रसे के मोहतमिम रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी साह़िब ने उस शख़्स से फ़रमाया : गाड़ी का टाइम हो चुका है और तुम अभी ता'वीज़ के लिये बोल रहे हो ! हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अ़ल्लामा ज़ेद मज्दुहू को उस शख़्स को रोकने से मन्अ़ फ़रमाया। अ़ल्लामा साह़िब ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! गाड़ी छूट जाएगी। इस पर हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से सरशार और दुख्यारी उम्मत की दिलजूई में बेक़रार हो कर जो जवाब दिया वोह सुन्ह़री हुरूफ़ से लिखे जाने के क़ाबिल है। चुनान्चे, फ़रमाया : "छूट जाने दो, दूसरी ट्रेन से चला जाऊंगा। कल क़ियामत के दिन अगर ख़ुदावन्दे करीम جَلَّ جَلَالُه ने पूछ लिया कि तू ने मेरे फ़ुलां बन्दे की परेशानी में क्यूं मदद नहीं की ? तो मैं क्या जवाब दूंगा !"

[1] ......جامع صغیر،ص۲۴۶،حدیث:۴۰۴۴-

www.dawateislami.net

येह फ़रमा कर रिक्षा से सारा सामान उतरवा लिया ।[1] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । आमीन

हमदर्दी का ज़ेह्न बनाने और हमदर्दी की आ़दत अपनाने के सात ﴾7﴿ त़रीक़े

(1) **मुसलमानों से हमदर्दी के फ़वाइद को पेशे नज़र रखिये :** फ़ित़री त़ौर पर जब बन्दे के सामने किसी चीज़ के फ़वाइद होते हैं तो वोह उसे पाने में जल्दी करता है, मुसलमानों से हमदर्दी करने के चन्द फ़वाइद येह हैं : ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा का ह़ुसूल ۞ दिलजूई ۞ मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना ۞ ह़ौसला अफ़्ज़ाई करना ۞ ह़ुस्ने सुलूक करना ۞ ख़ैरख़्वाही करना ۞ परेशान ह़ाल की दुआ़ओं की बरकत से तकालीफ़ व परेशानी से नजात मिलना ۞ रह़मते इलाही के सबब ह़ुसूले जन्नत । वग़ैरा वग़ैरा

(2) **ह़ुस्ने अख़्लाक़ को पेशे नज़र रखिये :** किसी मुसलमान से हमदर्दी करना उस के साथ ह़ुस्ने सुलूक और अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहरा है । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "मीज़ाने अ़मल में ह़ुस्ने अख़्लाक़ से वज़्नी कोई और अ़मल नहीं ।"[2]

(3) **सिलए रेह़्मी को पेशे नज़र रखिये :** अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, रिश्तेदार तक्लीफ़ व परेशानी में आ जाएं तो उन के दुख दर्द में शामिल होना उन के साथ सिलए रेह़्मी करना है और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी करने का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि सिलए रेह़्मी का मदनी ज़ेह्न बनाए और जब भी कोई रिश्तेदार तक्लीफ़ व

---

1 .....मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 120, 121

2 ......الادب المفرد، باب حسن الخلق، ص ۹۱، حدیث:۲۷۳۔

परेशानी में मुब्तला हो जाए तो उस के साथ हमदर्दी कर के सिलए रेह़मी का सवाब ह़ासिल करने की कोशिश करे कि इस्लाम में सिलए रेह़मी के बहुत फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए गए हैं ।

(4) **एह़तिरामे मुस्लिम को पेशे नज़र रखिये :** एक आ़म मुसलमान के साथ हमदर्दी करने में एह़तिरामे मुस्लिम भी है, इस्लाम में एक मुसलमान मोमिन की हुरमत की बड़ी अहम्मिय्यत बयान की गई है, लिहाज़ा अपने अन्दर एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार कीजिये, किसी मुसलमान के तक्लीफ़ व परेशानी में मुब्तला होने का पता चले तो उसी जज़्बे के तह़्त उस की हमदर्दी की सआ़दत ह़ासिल कीजिये ।

(5) **ह़क़्क़े मुस्लिम की अदाएगी की निय्यत से हमदर्दी कीजिये :** फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "एक मोमिन के दूसरे मोमिन पर छ[6] ह़क़ हैं : (1) जब वोह बीमार हो तो इ़यादत करे (2) जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े में ह़ाज़िर हो (3) जब वोह बुलाए तो ह़ाज़िर हो (4) जब उस से मिले तो सलाम करे (5) जब छींके तो जवाब दे और (6) मौजूदगी व ग़ैर मौजूदगी में उस की ख़ैरख़्वाही करे ।"[(1)]

(6) **बीमार की इ़यादत कर के हमदर्दी कीजिये :** फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो किसी मरीज़ की इ़यादत करता है या रिज़ाए इलाही के लिये अपने किसी भाई से मिलने जाता है तो एक मुनादी उसे मुख़ात़ब कर के कहता है कि ख़ुश हो जा क्यूंकि तेरा येह चलना मुबारक है और तू ने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है ।"[(2)]

---

1 ......نسائی، کتاب الجنائز، باب النهی عن سب الاموات، ص ۳۲۸، حدیث: ۱۹۳۵۔

2 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی زیارة الاخوان، ۳/ ۴۰۶، حدیث: ۲۰۱۵۔

www.dawateislami.net

(7) मरीज़ की दुआएं लेने के लिये उस से हमदर्दी कीजिये : मरीज़ की दुआ भी मक़्बूल है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उस से अपने लिये दुआ की दरख़्वास्त करो क्यूंकि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की तरह होती है।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾28﴿...रजा ﴾रहमते इलाही से उम्मीद﴿

रजा की ता'रीफ़

आयिन्दा के लिये भलाई और बेहतरी की उम्मीद रखना "रजा" है। मसलन अगर कोई शख़्स अच्छा बीज हासिल कर के नर्म ज़मीन में बो दे और उस ज़मीन को घास फूस वग़ैरा से साफ़ कर दे और वक़्त पर पानी और खाद देता रहे फिर इस बात का उम्मीदवार हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस खेती को आस्मानी आफ़ात से महफ़ूज़ रखेगा तो मैं ख़ूब ग़ल्ला हासिल करूंगा तो ऐसी आस और उम्मीद को "रजा" कहते हैं।(2)

हक़ीक़ी उम्मीद

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي "इहयाउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं : "जब बन्दा ईमान का बीज बोता है और उस को इबादात के पानी से सैराब करता है और दिल को बुरी आदात के कांटों से पाक करता है तो फिर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल या'नी उन चीज़ों पर मरते दम तक क़ाइम रहने और मग़फ़िरत

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، ۲/۱۹۱، حديث:۱۴۴۱-

2 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان حقيقة الرجاء، ۴/۱۷۴، ۱۷۵ ملخصاً-
كيمیائے سعادت، اصل سيم در خوف ورجاء، حقيقت رجا، ۲/۸۱۰ ملخصاً-

www.dawateislami.net

का सबब बनने वाले हुस्ने ख़ातिमा का मुन्तज़िर रहता है तो उस का येह इन्तिज़ार हक़ीक़ी उम्मीद है जो फ़ी नफ़्सिही क़ाबिले ता'रीफ़ है।"[1]

रजा की अक़्साम और इन के अहकाम

हज़रते सय्यिदुना इब्ने खुबैक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रजा तीन त़रह़ की है : (1) कोई शख़्स अच्छा काम करे उस की क़बूलिय्यत की उम्मीद रखे। (2) कोई शख़्स बुरा काम करे फिर तौबा करे और वोह मग़फ़िरत की उम्मीद रखता हो। (3) झूटा शख़्स जो गुनाह करता चला जाए और कहे मैं मग़फ़िरत की उम्मीद रखता हूं।[2]

पहली दो क़िस्म की रजा मह़मूद जब कि आख़िरी क़िस्म की रजा मज़्मूम है जैसा कि ह़दीसे मुबारका में है : اَلْاَحْمَقُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللهِ الْجَنَّةَ या'नी अह़मक़ वोह है जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत की तमन्ना रखे।"[3]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ﴾ (پ۲۴، الزمر:۵۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।" इस आयत के तह़त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : "मुशरिकीन में से चन्द आदमी सय्यिदे

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان حقیقة الرجا، ۴/۱۷۵۔

2 ......الرسالة القشيرية، باب الرجا، ص۱۲۸۔

3 ......غریب الحدیث لابن سلام، دین، ۱/۴۳۸۔

www.dawateislami.net

आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हों ने हुज़ूर से अ़र्ज़ किया कि आप का दीन तो बेशक हक़ और सच्चा है लेकिन हम ने बड़े बड़े गुनाह किये हैं बहुत सी मा'सियतों में मुब्तला रहे हैं क्या किसी त़रह़ हमारे वोह गुनाह मुआ़फ़ हो सकते हैं इस पर येह आयत नाज़िल हुई।"(1)

﴾हदीसे मुबारका﴿ अच्छा गुमान रखते हुए मरना

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप की वफ़ात से तीन दिन पहले येह फ़रमाते सुना कि : "तुम में से कोई न मरे मगर इस त़रह़ कि **अल्लाह** से अच्छी उम्मीद रखता हो।"(2)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त सूफ़िया के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "नेक बख़्ती की निशानी येह है कि बन्दे पर ज़िन्दगी में ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब हो और मरते वक़्त उम्मीद, नेककार नेकियां क़बूल होने की उम्मीद रखें और बदकार मुआ़फ़ी की। उम्मीद की ह़क़ीक़त येह है कि इन्सान नेकियां करे और उस के फ़ज़्ल का उम्मीदवार रहे, बदकारी के साथ उम्मीद रखना धोका है उम्मीद नहीं, इस ह़दीस की बिना पर बा'ज़ बुज़ुर्गों ने कहा कि ख़ौफ़ की इ़बादत से उम्मीद की इ़बादत बेहतर है।"(3)

रजा का हुक्म

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखना वाजिब है।(4)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 24, अज़्ज़ुमर, तह़तुल आयत : 53

2.....مسلم، کتاب الجنة، وصفة نعيمها، باب امر بحسن الظن باللہ تعالٰی عند الموت، ص ١٥٣٨، حدیث:٢٨٧٧۔

3.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 439

4.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 12

www.dawateislami.net

हिकायत 30 अच्छी उम्मीद के सबब मग़्फ़िरत

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी यह्या बिन अक्सम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के विसाल के बा'द किसी ने उन को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाहे आली में खड़ा कर के फ़रमाया : "ऐ बद अमल बूढ़े ! तू ने फुलां फुलां काम किया।" फ़रमाते हैं : मुझ पर इस क़दर रो'ब तारी हो गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है। फिर मैं ने अर्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तेरा येह हाल नहीं बताया गया है। इरशाद फ़रमाया : "फिर मेरे बारे में क्या बयान किया गया ?" मैं ने अर्ज़ की : मुझ से हज़रते अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने, उन से हज़रते मा'मर ने, उन से हज़रते इमाम ज़ोहरी ने और उन से हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने और वोह तेरे नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से और उन्हों ने हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के हवाले से बयान फ़रमाया कि तू फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ हूं तो वोह मेरे साथ जो चाहे गुमान रखे।"(1) मेरा गुमान येह था कि तू मुझे अज़ाब नहीं देगा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जिब्रील ने सच कहा, मेरे नबी ने सच कहा, अनस, ज़ोहरी, मा'मर, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी सच कहा और मैं ने भी सच कहा।" हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अक्सम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : फिर मुझे जन्नती लिबास पहनाया गया और जन्नत तक मेरे आगे आगे गुलाम चलते रहे तो मैं ने कहा : वाह ! येह तो ख़ुशी की बात है।(2)

---

1 ......ابن حبان، کتاب الرقائق، باب حسن الظن باللّٰہ تعالٰی، ۲/ ۱۵، حدیث: ۶۳۴۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان حقیقۃ الرجاء، ۴/ ۱۷۸۔

www.dawateislami.net

रजा (या'नी अच्छी उम्मीद) का ज़ेहन बनाने और इस के हुसूल के पांच (5) त़रीके़

(1) **रजा के फ़ज़ाइल में ग़ौरो फ़िक्र कीजिये :** रह़मते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के मुत़ाबिक़ हूं अब वोह मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो चाहे गुमान रखे ।"(1) (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोजे़ क़ियामत बन्दे से इस्तिफ़्सार फ़रमाएगा : "जब तू ने बुराई देखी तो किस वज्ह से उसे नहीं रोका ?" अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ेहन में जवाब इल्क़ा फ़रमा देगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तेरी रह़मत की उम्मीद थी और लोगों का ख़ौफ़ था । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मैं ने तेरा गुनाह मुआ़फ़ किया ।"(2) (3) "एक शख़्स को जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो वोह वहां एक हज़ार साल तक "يَاحَنَّانُ يَامَنَّانُ" कह कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पुकारता रहेगा । "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिब्रीले अमीन से फ़रमाएगा : "जाओ ! मेरे बन्दे को ले कर आओ ।" चुनान्चे, वोह उसे ले कर आएंगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर देंगे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तू ने अपना ठिकाना कैसा पाया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : बहुत बुरा ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "इसे दोबारा वहीं ले जाओ ।" वोह जा रहा होगा तो पीछे मुड़ कर देखेगा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : क्या देखता है ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मुझे तुझ से येह उम्मीद थी कि एक मरतबा जहन्नम से निकालने के बा'द मुझे दोबारा उस में नहीं भेजेगा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "इसे जन्नत में ले जाओ ।"(3)

---

1 ......دارمی، کتاب الرقاق، باب حسن ظن باللہ، ۲/۳۹۵، حدیث: ۲۷۳۱۔

2 ......ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب قولہ تعالٰی: یا ایھا الذین امنو، ۴/۳۶۶، حدیث: ۴۰۱۷، دون: قدغفرتہ لک۔
احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان حقیقۃ الرجاء، ۴/۱۷۸۔

3 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللہ، ۱/۱۰۵، حدیث: ۱۰۹۔

(2) रजा से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये : इस के लिये इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की किताब "रिसालए क़ुशैरिय्या" और इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की किताब "इह़याउल उ़लूम," जिल्द चहारुम का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) रजा से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल में ग़ौर कीजिये : रजा के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين : (1) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "जिस ने कोई गुनाह किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में उस की पर्दापोशी फ़रमाई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम का तक़ाज़ा येह नहीं है कि आख़िरत में उस का पर्दा उठा दे और जिस शख़्स को दुन्या में उस के गुनाह की सज़ा दे दी गई हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़द्लो इन्साफ़ का तक़ाज़ा येह नहीं है कि आख़िरत में अपने बन्दे को दोबारा सज़ा दे। (2) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुझे येह पसन्द नहीं कि मेरा ह़िसाब मेरे वालिदैन के सिपुर्द कर दिया जाए क्यूंकि मुझे मा'लूम है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे वालिदैन से बढ़ कर मुझ पर रह़म करने वाला है। (3) ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की ह़ज़रते सय्यिदुना अबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मुलाक़ात हुई तो उन से पूछा : आप कब तक लोगों को उम्मीद और रुख़्सत की अह़ादीस सुनाते रहेंगे? तो उन्हों ने जवाब दिया : ऐ अबू यह़्या ! मैं उम्मीद करता हूं कि आप बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो करम के ऐसे मनाज़िर देखेंगे कि ख़ुशी के सबब अपने कपड़े फाड़ देंगे।[1]

(4) रजा के सबब बुलन्द दरजात और मग़फ़िरत नसीब होती है : किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताद अबू सह्ल सा'लूकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

1 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان دواء الرجاء والسبيل الذى يحصل منه ـــ الخ، ۴/۱۸۷-

www.dawateislami.net

को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में ऐसी उ़म्दा ह़ालत में देखा जिसे बयान नहीं किया जा सकता और उन से दरयाफ़्त किया कि किस सबब से आप ने येह मक़ाम पाया ? इरशाद फ़रमाया : अपने रब के साथ अच्छा गुमान रखने की वज्ह से ।[1] एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता, मालदार के साथ नर्मी करता और तंगदस्त को मुआ़फ़ कर देता । जब उस की मौत वाक़ेअ़ हुई तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि (मज़्कूरा आ'माल के इ़लावा) उस ने कोई भी नेक अ़मल नहीं किया था । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : हम से ज़ियादा मुआ़फ़ करने का कौन ह़क़दार है ?" यूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे इ़बादत के मुआ़मले में मुफ़्लिस होने के बा वुजूद हुस्ने ज़न और उम्मीद रखने के बाइ़स बख़्श दिया ।[2]

(5) **रजा नेक आ'माल करने का बाइ़स है :** कि अच्छाई की उम्मीद रखने वाला उस के लिये अ़मल भी करता है चुनान्चे, इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "जो शख़्स इस बात को जानता है कि ज़मीन नमकीन है और पानी भी कम है, बीज भी खेती उगाने की सलाह़िय्यत नहीं रखते तो वोह लाज़िमी त़ौर पर ज़मीन की निगरानी छोड़ देता है और उस की देख भाल में ख़ुद को थकाता नहीं है । उम्मीद इस लिये मह़मूद है कि वोह अ़मल पर उक्साती है और मायूसी जो कि उम्मीद की ज़िद है इस लिये मज़्मूम है कि वोह अ़मल से रोक देती है । जिसे उम्मीद की ह़ालत मुयस्सर होती है वोह आ'माल के साथ त़वील मुजाहदा कर लेता है और उसे इ़बादात पर पाबन्दी नसीब हो जाती है अगर्चे अह़वाल में तब्दीली होती रहे ।[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان دواء الرجاء والسيل الذى يحصل منه۔۔۔الخ، ۴/ ۱۸۹۔

2 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان فضيلة الرجاء والترغيب فيه، ۴/ ۱۷۸۔

3 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان حقيقة الرجا، ۴/ ۱۷۶۔

www.dawateislami.net

«29»...महब्बते इलाही

महब्बते इलाही की ता'रीफ़

तबीअत का किसी लज़ीज़ शै की तरफ़ माइल हो जाना महब्बत कहलाता है।(1) और महब्बते इलाही से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब और उस की ता'ज़ीम है।(2)

हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अली बिन उस्मान हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى महब्बते इलाही की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : "बन्दे की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत वोह एक सिफ़त है जो फ़रमां बरदार मोमिन के दिल में ज़ाहिर होती है जिस का मा'ना ता'ज़ीमो तकरीम भी है यहां तक कि बन्दा महबूब की रिज़ा तलब करने में लगा रहता है और उस के दीदार की तलब में बे ख़बर हो कर उस की कुर्बत की आरज़ू में बेचैन हो जाता है और उसे उस के बिग़ैर चैन व क़रार हासिल ही नहीं होता। उस की आदत अपने महबूब के ज़िक्र के साथ हो जाती है और वोह बन्दा ग़ैर के ज़िक्र से दूर और मुतनफ़्फ़िर रहता है। वोह तमाम तबई रग़बतों व ख़्वाहिशों से जुदा हो कर अपनी ख़्वाहिशात से कनारा कश हो जाता है, वोह ग़लबए महब्बत के साथ मुतवज्जेह होता है और ख़ुदा के हुक्म के आगे सर झुका देता है और उसे कमाल औसाफ़ के साथ पहचानने लगता है।"(3)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ﴾ (پ۲، البقرة:۱۶۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं।"

1.....इहयाउल उलूम, 5 / 16

2.....الرسالة القشيرية، باب المحبة، ص ۳۴۸۔

3.....كشف المحجوب، باب المحبة وما يتعلق بها، ص ۳۳۸۔

﴾हदीसे मुबारका﴿ ईमान क्या है ?

हज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन उ़क़ैली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ईमान क्या है ? इरशाद फ़रमाया : "ईमान येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल तुम्हारे नज़दीक सब से ज़ियादा मह़बूब हों ।"(1)

मह़ब्बते इलाही का हुक्म

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "उम्मत का इस बात पर इजमाअ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल से मह़ब्बत करना फ़र्ज़ है ।"(2)

31 हिकायत सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَیْہِ الرَّحمَہ और मह़ब्बते इलाही

हज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा गोया कि मुझे जन्नत में दाख़िल किया गया है तो मैं ने वहां एक शख़्स को दस्तर ख़्वान पर बैठे हुए देखा जिस के दाएं बाएं दो फ़िरिश्ते उसे अन्वाओ़ अक़्साम की चीज़ें खिला रहे हैं और वोह खा रहा है और एक शख़्स को देखा कि जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा है लोगों के चेहरों को देख कर बा'ज़ को दाख़िल होने देता है और बा'ज़ को वापस लौटा देता है फिर मैं "ह़ज़ीरतुल क़ुद्स" की जानिब बढ़ा तो अ़र्श के ख़ैमों में से एक शख़्स नज़र आया जो दीदारे इलाही में मुस्तग़्रक़ था और आंख नहीं झपकता था । मैं ने (ख़ाज़िने जन्नत) ह़ज़रते रिज़्वान عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : येह कौन हैं ? जवाब दिया : येह मा'रूफ़ करख़ी हैं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत जहन्नम के ख़ौफ़ और जन्नत के ह़ुसूल के लिये

1 ......مسند امام احمد، مسند مدنیین، حدیث ابی رزین العقیلی، ۵/۴۷۰، حدیث:۱۶۱۹۴۔
2 ......احیاء علوم الدین، کتاب المحبۃ والشوق۔۔۔الخ، بیان شواھد الشرع فی حب العبد للّٰہ تعالٰی، ۵/۳۔

नहीं की बल्कि मह्ज़ उस की महब्बत की वज्ह से की, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें क़ियामत तक अपनी त़रफ़ देखने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी है और दीगर अफ़राद के बारे में बताया कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا हैं।[1]

महब्बते इलाही पैदा करने के नव ﴾9﴿ त़रीक़े और अस्बाब

(1) **वुजूद अ़त़ा फ़रमाने वाली हस्ती से मह़ब्बत :** इन्सान देखे कि इस का कमाल व बक़ा मह्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है। वोही ज़ात इस को अ़दम से वुजूद में लाने वाली, इस को बाक़ी रखने वाली और इस के वुजूद में सिफ़ाते कमाल, इन के अस्बाब और इन के इस्ति'माल की हिदायत पैदा कर के इसे कामिल करने वाली है तो ऐसी ज़ात से ज़रूर मह़ब्बत रखनी चाहिये।

(2) **अपने मोह़सिन से मह़ब्बत :** जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचानने का ह़क़ है अगर बन्दा इस त़रह़ उसे पहचाने तो ज़रूर जान जाएगा कि इस पर एह़सान करने वाला सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और मोह़सिन से मह़ब्बत फ़ित़री होती है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत रखनी चाहिये।

(3) **जमाल वाले से मह़ब्बत : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जमील है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "اِنَّ اللهَ جَمِيْلٌ يُّحِبُّ الْجَمَالَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जमील है और जमाल को पसन्द करता है।"[2] और जमाल वाले से मह़ब्बत फ़ित़री और जिबिल्ली है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत का येह भी एक सबब है।

(4) **उ़यूब से पाक ज़ात से मह़ब्बत : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम

---

1 ......احياء علوم الدين، كتاب المحبة والشوق---الخ، بيان ان اجل اللذات واعلاها معرفة الله---الخ، ٥/٢٣-

2 ......مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانه، ص ٦٠، حديث: ٩١-

www.dawateislami.net

ऊ़यूबो नक़ाइस से मुनज़्ज़ा है और ऐसी ज़ात से मह़ब्बत करना अस्बाबे मह़ब्बत में से एक क़वी सबब है।

(5) **मह़ब्बते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस के लिये इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की किताब "**रिसालए कुशैरिय्या**" और इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِى की किताब "**इह़याउल ऊ़लूम**" **जिल्द पन्जुम** का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(6) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में ग़ौर कीजिये :** इन्सान देखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो मुनइमे ह़क़ीक़ी है तमाम ने'मतें उसी की त़रफ़ से हैं और वोह हर मख़्लूक़ को अपनी ने'मतों से नवाज़ रहा है। येह एह़सास इन्सान के अन्दर मुनइमे ह़क़ीक़ी की मह़ब्बत का जज़्बा पैदा करता है।

(7) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़द्ल और फ़ज़्लो रह़मत में ग़ौर कीजिये :** इन्सान ग़ौर करे तो उसे अ़द्लो इन्साफ़ में सब से बढ़ कर ज़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की दिखाई देगी और वोह येह भी देखेगा कि काफ़िरों और गुनाहगारों पर भी उस की रह़मत जारी है बा वुजूद येह कि वोह उस की ना फ़रमानी और सरकशी करते हुए दिखाई देते हैं। येह ग़ौरो फ़िक्र इन्सान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत पर उभारेगा।

(8) **मह़ब्बत की अ़लामतों में ग़ौर कीजिये :** ऊ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "बन्दे की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से मह़ब्बत करता है बन्दा उसे अपनी मह़बूब तरीन चीज़ पर तरजीह़ देता है और ब कसरत उस का ज़िक्र करता है, इस में कोताही नहीं करता और किसी दूसरे काम में मश्ग़ूल होने के बजाए बन्दे को तन्हाई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करना ज़ियादा मह़बूब होता है।[1]

1 ......لباب الاحياء، الباب السادس والثلاثون فی المحبة ـــ الخ، فصل فی الشوق، ص ۳۱۹ ـ

www.dawateislami.net

(9) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की सोह़बत और उन से मह़ब्बत : नेक बन्दों की सोह़बत और उन से मह़ब्बत भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने का एक ज़रीआ़ है कि नेक बन्दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का दर्स देते हैं और उन की सोह़बत से दिलों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत पैदा होती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾30﴿...रिज़ाए इलाही

रिज़ाए इलाही की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहना रिज़ाए इलाही है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۶۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की मह़ब्बत नहीं।"

इस आयते मुबारका के तह़त तफ़्सीरे "सिरातुल जिनान" में है : "अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दे तमाम मख़्लूक़ात से बढ़ कर अल्लाह तआ़ला से मह़ब्बत करते हैं। मह़ब्बते इलाही में जीना और मह़ब्बते इलाही में मरना उन की ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी होता है। अपनी ख़ुशी पर अपने रब की रिज़ा को तरजीह़ देना, नर्म व गुदाज़ बिस्तरों को छोड़ कर बारगाहे नियाज़ में सर ब सुजूद होना, यादे इलाही में रोना, रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये तड़पना, सर्दियों की त़वील रातों में क़ियाम और गर्मियों के लम्बे दिनों में रोज़े, अल्लाह तआ़ला के लिये मह़ब्बत करना, उसी की ख़ात़िर दुश्मनी रखना, उसी की ख़ात़िर किसी को कुछ देना और उसी की ख़ात़िर किसी से रोक लेना, ने'मत पर शुक्र, मुसीबत में सब्र, हर ह़ाल में ख़ुदा पर तवक्कुल, अपने हर मुआ़मले को अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द कर देना, अह़कामे

इलाही पर अ़मल के लिये हमा वक़्त तय्यार रहना, दिल को ग़ैर की मह़ब्बत से पाक रखना, अल्लाह तआ़ला के मह़बूबों से मह़ब्बत और अल्लाह तआ़ला के दुश्मनों से नफ़रत करना, अल्लाह तआ़ला के प्यारों का नियाज़ मन्द रहना, अल्लाह तआ़ला के सब से प्यारे रसूल व मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिलो जान से मह़बूब रखना, अल्लाह तआ़ला के कलाम की तिलावत, अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब बन्दों को अपने दिलों के क़रीब रखना, उन से मह़ब्बत रखना, मह़ब्बते इलाही में इज़ाफ़े के लिये उन की सोह़बत इख़्तियार करना, अल्लाह तआ़ला की ता'ज़ीम समझते हुए उन की ता'ज़ीम करना, येह तमाम उमूर और उन के इलावा सेंकड़ों काम ऐसे हैं जो मह़ब्बते इलाही की दलील भी हैं और उस के तक़ाज़े भी हैं।[1]

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ जन्नत में भी रिज़ाए इलाही का सुवाल

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नतियों पर तजल्ली फ़रमाएगा और उन से कहेगा : मुझ से मांगो। जन्नती कहेंगे : इलाही ! हम तुझ से तेरी रिज़ा का सुवाल करते हैं।"[2]

एक ह़दीसे पाक में है कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ गुरौहे फ़ुक़रा ! दिल की गहराइयों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी रहोगे तो अपने फ़क़्र का सवाब पाओगे वरना नहीं।"[3]

रिज़ाए इलाही का हुक्म

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले काम करे और उस की नाराज़ी वाले कामों से बचे।

1.....सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह : तह़्तुल आयत : 165, 1 / 264

2.....حلیۃ الاولیاء، الفضل الرقاشی، ۲/۲۲۲، حدیث: ۸۳۸۴-

3.....مسند الفردوس، ۵/۲۹۱، حدیث: ۸۲۱۶-

www.dawateislami.net

32 हिकायत रिज़ाए इलाही पर राज़ी

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी जो दुआ़ करते क़ुबूल होती)। एक बार मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नाबीना थे। लोग दौड़ते हुए आप के पास हाज़िर हुए और हर एक आप से दुआ़ की दरख़्वास्त करता और आप सभी के लिये दुआ़ करते। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, उस वक़्त नौ उ़म्र था। मैं ने उन से अपना तआ़रुफ़ कराया तो वोह मुझे पहचान गए और फ़रमाया : तुम मक्का वालों के क़ारी हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। फिर कुछ और बातें हुईं, आख़िर में मैं ने उन से अ़र्ज़ की : चचाजान ! आप लोगों के लिये दुआ़ करते हैं अपने लिये भी दुआ़ करें ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की बीनाई लौटा दे। तो वोह मुस्कुरा दिये और इरशाद फ़रमाया : "बेटा ! मेरे नज़्दीक रब तआ़ला की रिज़ा मेरी बीनाई से ज़ियादा अच्छी है।"(1)

अपने अ़मल में रिज़ाए इलाही चाहने के चार ﴾4﴿ त़रीक़े

(1) **रिज़ाए इलाही चाहने के लिये इस के फ़वाइद और फ़ज़ाइल में ग़ौर कीजिये :** सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सुन लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया वोह लोग हैं जो उन पांच नमाज़ों को क़ाइम करते हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों पर फ़र्ज़ फ़रमाया है और रमज़ान के रोज़े ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये रखते हैं और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये अपने माल की ज़कात ख़ुश दिली से अदा करते हैं और उन कबीरा गुनाहों से

(1) ......احیاء علوم الدین، کتاب المحبۃ والشوق۔۔۔الخ، بیان حقیقۃ الرضا۔۔۔الخ، ۵/ ۷۱۔

बचते हैं जिन के इरतिकाब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है।"(1)

(2) **रिज़ाए इलाही चाहने के लिये बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस के लिये इमाम अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की किताब "क़ूतुल क़ुलूब" और इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की किताब "इह़याउल उ़लूम" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **इख़्लास के साथ नेक आ'माल कीजिये :** रियाकारी से बचते हुए इख़्लास के साथ नेक आ'माल करना रिज़ाए इलाही चाहने वालों के लिये बेहतरीन ज़रीआ़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इख़्लास के साथ किये जाने वाले अ़मल को पसन्द फ़रमाता है और ऐसे अ़मल करने पर अपने बन्दे से राज़ी होता है।

(4) **रब की ना फ़रमानी और गुनाहों से बचिये :** अपने अ़मल से रिज़ाए इलाही चाहने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी और गुनाहों से बचना इन्तिहाई ज़रूरी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के होते हुए उस की रिज़ा कैसे मुमकिन है?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿31﴾...शौक़े इ़बादत

शौक़े इ़बादत की ता'रीफ़

सुस्ती को तर्क कर के शौक़ और चुस्ती के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करना शौक़े इ़बादत है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

1 ......معجم کبیر، ۱۷/ ۴۸، حدیث: ۱۰۱-

﴿اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ﴾ (پ۲۹، القلم:۳۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं।"

«हदीसे मुबारका» उमूरे दुन्या रब तआ़ला के ज़िम्मए करम पर

हदीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मैं बन्दे के दिल में अपनी इबादत का शौक़ देखता हूं तो उस के उमूरे दुन्या को अपने ज़िम्मए करम पर ले लेता हूं।"(1)

शौक़े इबादत पर तम्बीह

हर मुसलमान को चाहिये कि वोह इबादत में सुस्ती को तर्क कर के शौक़ और चुस्ती के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करे।

33 हिकायत इबादते इलाही के शौक़ में तक्लीफ़ का एहसास न हुवा

एक बुज़ुर्ग के जिस्म का कोई हिस्सा गल गया और उसे काटने की ज़रूरत महसूस हुई लेकिन मुमकिन न था तो कहा गया कि कुछ भी हो जाए नमाज़ में मश्ग़ूलिय्यत के वक़्त उन्हें इबादते इलाही के शौक़ की वज्ह से किसी चीज़ का एहसास नहीं होता। चुनान्चे, नमाज़ की ह़ालत में उन के बदन का वोह हिस्सा काट दिया गया।(2)

शौक़े इबादत का ज़ेहन बनाने और शौक़ पैदा करने के सात «7» त़रीक़े

(1) **नेक आ'माल की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** जब तक बन्दे को नेक आ'माल का इल्म नहीं होगा उस वक़्त तक उसे उन आ'माल को बजा लाने का शौक़ो ज़ौक़ और जज़्बा ह़ासिल नहीं हो सकता। इस के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

---

1 ......مجموعۃ رسائل امام غزالی، منہاج العارفین، باب السجود، ص ۲۱۷۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الصلاۃ ومھماتھا، حکایات واخبار فی صلاۃ الخاشعین رضی اللہ عنھم، ۱/۲۳۲۔

(2) **नेकियों की जज़ाओं और गुनाहों की सज़ाओं पर ग़ौर कीजिये :** नेकियों की जज़ाओं और गुनाहों की सज़ाओं पर ग़ौर करने से नेकियों की त़रफ़ रग़बत और गुनाहों से नफ़रत का ज़ेह्न बनेगा, शौक़े इबादत ह़ासिल होगा। इस के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **शौक़े इबादत से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये :** इस से भी शौक़े इबादत का मदनी ज़ेह्न बनेगा। इस के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ इन कुतुब का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है : ह़िकायतें और नसीह़तें, ख़ौफ़े ख़ुदा, तौबा की रिवायात व ह़िकायात।

(4) **आसान नेकियों की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये :** आसान नेकियां भी शौक़े इबादत पैदा करने में बहुत मुआ़विन हैं, आसान नेकियों की मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**आसान नेकियां**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(5) **शौक़े इबादत के ह़ुसूल की बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये :** दुआ़ मोमिन का हथियार है, शौक़े इबादत के ह़ुसूल के लिये यूं दुआ़ कीजिये : या इलाही ! मैं तेरी रिज़ा के लिये नेक बन्दा बनना चाहता हूं, तू अपनी इबादत का मुझे शौक़ और ज़ौक़ अ़त़ा फ़रमा, अपनी इबादत में मेरा दिल लगा दे, तुझे तेरे उन नेक बन्दों का वासित़ा जो ज़ौक़ और शौक़ के साथ हर वक़्त तेरी इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं मुझे भी शौक़े इबादत अ़त़ा कर दे। आमीन

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

(6) **अपने आप को बातिनी अमराज़ से बचाइये :** बातिनी अमराज़ अहकामे इलाही पर अमल करने में सब से बड़ी रुकावट हैं, जो शख़्स बातिनी अमराज़ का शिकार हो जाता है उस के दिल से इबादत की लज़्ज़त और शौक़ ख़त्म हो जाता है। बातिनी अमराज़ की मा'लूमात, अस्बाब व इलाज की तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब **"बातिनी बीमारियों की मा'लूमात"** का मुतालआ कीजिये।

(7) **अपने आप को बुरी सोहबत से बचाइये :** बन्दा जब बुरी सोहबत इख़्तियार करता है तो उस की नुहूसत से इबादत की लज़्ज़त ख़त्म हो जाती है क्यूंकि अच्छों की सोहबत अच्छा और बुरों की सोहबत बुरा बना देती है, लिहाज़ा बुरे लोगों की सोहबत से बचिये और नेक लोगों की सोहबत इख़्तियार कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** का मुश्कबार मदनी माहोल भी अच्छी सोहबत फ़राहम करता है, आप भी इस मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने अलाके में होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ** में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और नेकियों के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ। अपनी इस्लाह के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

﴾32﴿...गि़ना ﴾लोगों से बे नियाज़ी﴿

गि़ना की ता'रीफ़

जो कुछ लोगों के पास है उस से ना उम्मीद होना गि़ना है ।(1)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में फ़रमाता है :

﴿وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَ اَقْنٰى ﴿۴۸﴾﴾ (پ۲۷،النجم:۴۸) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और येह कि उस ने गि़ना दी और क़नाअ़त दी ।"

﴾हदीसे मुबारका﴿ मुख़्तसर सी नसीहत

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक देहाती बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे एक मुख़्तसर सी नसीहत फ़रमाइये । इरशाद फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ पढ़ो तो ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ समझ कर पढ़ो और हरगिज़ ऐसी बात न करो जिस से तुम्हें कल मा'ज़िरत करनी पड़े और लोगों के पास जो कुछ है उस से मुकम्मल ना उम्मीद हो जाओ ।"(2)

गि़ना के बारे में तम्बीह

मुसलमान को चाहिये कि वोह दुन्या की ज़लील दौलत से गि़ना या'नी बे नियाज़ी बरते और क़नाअ़त इख़्तियार करे ।

34 हिकायत क़नाअ़त और इस्तिग़ना की दौलत

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह महामिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को येह फ़रमाते

1 ......معجم کبیر، ۱۰/۱۳۹، حدیث:۱۰۲۳۹۔
2 ......ابن ماجه، کتاب الزھد، باب الحکمة، ۴/۴۵۵، حدیث:۴۱۷۱۔

सुना : "ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़े ईद के बा'द मैं ने सोचा कि आज ईद का दिन है, क्या ही अच्छा हो कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें ईद की मुबारक बाद दूं, आज तो ख़ुशी का दिन है, उन से ज़रूर मुलाक़ात करनी चाहिये। चुनान्चे, इसी ख़याल के पेशे नज़र मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के घर की जानिब चल दिया। वोह सादगी पसन्द बुज़ुर्ग थे और एक सादा से मकान में रहते थे। मैं ने वहां पहुंच कर दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर आने की इजाज़त चाही तो उन्हों ने मुझे अन्दर बुला लिया। जब मैं कमरे में दाख़िल हुवा तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने एक बरतन में फलों और सब्ज़ियों के छिल्के और एक बरतन में आटे की बूर (या'नी भूसी) रखी हुई थी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसे खा रहे थे। येह देख कर मुझे बड़ी ह़ैरत हुई, मैं ने उन्हें ईद की मुबारक बाद दी और सोचने लगा कि आज ईद का दिन है, हर शख़्स अन्वाओ़ अक़्साम के खानों का एहतिमाम कर रहा होगा लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आज के दिन भी इस ह़ालत में हैं कि छिल्के और आटे की भूसी खा कर गुज़ारा कर रहे हैं। मैं निहायत ग़म के आ़लम में वहां से रुख़्सत हुवा और अपने एक साह़िबे सरवत दोस्त के पास पहुंचा, जिस का नाम "जुरजानी" मश्हूर था। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : हुज़ूर ! किस चीज़ ने आप को परेशान कर दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की मदद फ़रमाए, आप को हमेशा ख़ुश व ख़ुर्रम रखे, मेरे लिये क्या हुक्म है ? मैं ने कहा : ऐ जुरजानी ! तुम्हारे पड़ोस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली रहता है, आज ईद का दिन है लेकिन उस की येह ह़ालत है कि कोई चीज़ ख़रीद कर नहीं खा सकता। मैं ने देखा कि वोह फलों के छिल्के खा रहे थे, तुम तो नेकियों के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा ह़रीस हो, तुम अपने उस पड़ोसी की ख़िदमत से ग़ाफ़िल क्यूं हो ? येह सुन कर उस ने कहा : हुज़ूर ! आप जिस शख़्स की बात कर रहे हैं वोह दुन्या दार लोगों से दूर रहना पसन्द

करता है। मैं ने आज सुब्ह ही उसे एक हज़ार दिरहम भिजवाए और अपना एक ग़ुलाम भी उन की ख़िदमत के लिये भेजा लेकिन उन्हों ने मेरे दराहिम और ग़ुलाम को येह कह कर वापस भेज दिया कि जाओ और अपने मालिक से कह देना कि तुम ने मुझे क्या समझ कर येह दिरहम भिजवाए हैं? क्या मैं ने तुझ से अपनी ह़ालत के बारे में कोई शिकायत की है? मुझे तुम्हारे इन दिरहमों की कोई ह़ाजत नहीं, मैं हर ह़ाल में अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से ख़ुश हूं, वोही मेरा मक़्सूदे अस्ली है, वोही मेरा कफ़ील है और वोह मुझे काफ़ी है। अपने दोस्त से येह बात सुन कर मैं बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा और उस से कहा : तुम वोह दिरहम मुझे दो, मैं उन की बारगाह में येह पेश करूंगा। मुझे उम्मीद है कि वोह क़बूल फ़रमा लेंगे। उस ने फ़ौरन ग़ुलाम को हुक्म दिया : हज़ार हज़ार दिरहमों से भरे हुए दो थैले लाओ। फिर उस ने मुझ से कहा : एक हज़ार दिरहम मेरे पड़ोसी के लिये और एक हज़ार आप के लिये तोह़्फ़ा हैं। आप येह ह़क़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमा लें। मैं वोह दो हज़ार दिरहम ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के मकान पर पहुंचा और दरवाज़े पर दस्तक दी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दरवाज़े पर आए और अन्दर ही से पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह मह़ामिली! तुम दोबारा किस लिये यहां आए हो? मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर! एक मुआ़मला दरपेश है, उसी के मुतअ़ल्लिक़ कुछ गुफ़्तगू करनी है। पस उन्हों ने मुझे अन्दर आने की इजाज़त अ़ता फ़रमा दी मैं उन के पास बैठ गया और फिर दिरहम निकाल कर उन के सामने रख दिये। येह देख कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने तुझे अपने पास आने की इजाज़त दी और तुम मेरी ह़ालत से वाक़िफ़ हो गए। मैं तो येह समझा था कि तुम मेरी इस ह़ालत के अमीन हो। मैं ने तुम पर ए'तिमाद किया था, क्या उस ए'तिमाद का सिला तुम इस दुन्यवी दौलत के ज़रीए़ दे रहे हो? जाओ! अपनी येह दुन्यवी दौलत अपने पास

www.dawateislami.net

ही रखो, मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मह़ामिली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : उन की येह शाने इस्तिग़ना देख कर मैं वापस चला आया और अब मेरी नज़रों में दुन्या ह़क़ीर हो गई थी। मैं अपने दोस्त जुरजानी के पास गया उसे सारा माजरा सुनाया और सारी रक़म वापस कर देना चाही तो उस ने येह कहते हुए वोह दिरहम वापस कर दिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जो रक़म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दे चुका उसे कभी वापस न लूंगा लिहाज़ा येह माल तुम अपने पास रखो और जहां चाहो ख़र्च करो। फिर मैं वहां से चला आया और मेरे दिल में माल की बिल्कुल भी मह़ब्बत न थी मैं ने सोच लिया कि मैं येह सारी रक़म ऐसे लोगों में तक़्सीम कर दूंगा जो शदीद ह़ाजत मन्द होने के बा वुजूद दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाते बल्कि सब्रो शुक्र से काम लेते हैं और अपनी ह़ालत ह़त्तल इम्कान किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देते।[1] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

ग़ना पैदा करने और इस का ज़ेह्न बनाने के आठ ﴾8﴿ त़रीक़े

(1) **ग़ना के फ़ज़ाइल का मुत़ालआ़ कीजिये :** ग़ना के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) "अमीरी ज़ियादा मालो अस्बाब से नहीं बल्कि अमीरी दिल की ग़ना से है।"[2] (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! क्या तुम कसरते माल को ग़ना समझते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम माल की कमी को फ़क़्र समझते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अस्ल ग़ना तो दिल की तवंगरी

1 ......عیون الحکایات، الحکایۃ التاسعۃ والخمسون بعد المائۃ، ص ۱۷۴۔

2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الغنی غنی النفس، ۴/۲۳۳، حدیث: ۶۴۴۶۔

www.dawateislami.net

है।"[1] (3) "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के नफ़्स में ग़ना और उस के दिल में तक़्वा डाल देता है।"[2]

(2) **ग़ना से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल पर ग़ौर कीजिये :** इस के लिये इमाम अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की किताब "क़ूतुल क़ुलूब" और इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की किताब "इह़याउल उ़लूम" और इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की किताब "रिसालए क़ुशैरिय्या" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

(3) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कामिल यक़ीन रखिये :** दुन्या और आख़िरत में कामयाबी का बुन्यादी उसूल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कामिल यक़ीन रखना है क्यूंकि बे यक़ीनी का एक लम्ह़ा कामयाबी के हुसूल के लिये कई सालों की जाने वाली मेह़नत पर पानी फेर देता है जब कि जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कामिल और पुख़्ता यक़ीन रखता है वोह दूसरों से बे नियाज़ रहता है और येह यक़ीन इस में ग़ना का जज़्बा बेदार करने में बेह़द मुआ़विन साबित होता है।

(4) **ग़ना की दुआ़ कीजिये :** दुआ़ मोमिन का हथियार और इबादत का मग़्ज़ है, यूं दुआ़ कीजिये : या रब्बे करीम ! हुज़ूर नबिये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ग़ना के सदक़े मुझे भी ग़ना की दौलत अ़त़ा फ़रमा। आमीन

(5) **ज़ोह्दो क़नाअ़त इख़्तियार कीजिये :** ज़ोह्द दुन्या से बे रग़बती दिलाता है जब कि क़नाअ़त थोड़े पर राज़ी होने पर उभारता है और येह दोनों चीज़ें ग़ना पर मुआ़विन साबित होती हैं कि आदमी ज़ोह्दो क़नाअ़त इख़्तियार कर के दूसरों से बे नियाज़ हो जाता है और थोड़े पर

1 ......ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر والزهد والقناعة، ۱/۳۷، حدیث: ۶۸۴۔
2 ......ابن حبان، کتاب التاریخ، باب بدء الخلق، ذکر سوال کلیم اللّٰہ ـــ الخ، ۸/۳۴، حدیث: ۶۱۸۴۔

राज़ी रह कर दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर लेता है यूं वोह ज़ोह्दो क़नाअ़त के साथ ग़ना की दौलत भी समेट लेता है।

(6) **ग़ना इख़्तियार करने वालों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** कि जिस त़रह़ बुरी सोह़बत असर दिखाती है यूं ही अच्छी सोह़बत भी असर दिखाती है कि आदमी जब अच्छी सोह़बत में रहता है तो उसे भी अच्छे काम करने का जज़्बा मिलता है और वोह अच्छाई का रास्ता इख़्तियार करने लगता है।

(7) **मालो दौलत की ह़िर्स को ख़त्म कीजिये :** मालो दौलत की ह़िर्स को ख़त्म कीजिये कि येह इन्सान के लिये बहुत ही ख़त़रनाक है अगर इस की रोक थाम न की जाए तो बसा अवक़ात येह दुन्यवी बरबादियों के साथ साथ उख़रवी हलाकतों की त़रफ़ भी ले जाती है और उसे ख़त्म कर के ही ग़ना की दौलत ह़ासिल हो सकती है।

(8) **ग़ना के फ़वाइद पर नज़र कीजिये :** ❁ जिस शख़्स की नज़र लोगों के मालो अस्बाब पर नहीं होती और वोह लोगों से बे नियाज़ होता है तो लोग ऐसे शख़्स को पसन्द करते हैं और उस के इस्तिग़ना को अच्छी नज़र से देखते हैं। ❁ ग़ना की दौलत इख़्तियार करने वाला मालो दौलत की ह़िर्स से दूर हो जाता है और ख़ुश दिली के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता है। ❁ ग़ना इख़्तियार करने वाला ब आसानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता है और फ़ुज़ूल कामों से इजतिनाब करता है। ❁ ग़ना के सबब आदमी में ख़ुद ए'तिमादी पैदा होती है। ❁ ग़ना के बाइ़स आदमी दूसरों पर भरोसा करना छोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करने लगता है। ❁ ग़ना के सबब ज़ोह्दो क़नाअ़त की दौलत भी नसीब होती है। ❁ ग़ना की वज्ह से आदमी बुख़्ल से दूर हो जाता है। ❁ ग़ना के सबब सख़ावत की दौलत नसीब होती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾33﴿...क़बूले ह़क़

क़बूले ह़क़ की ता'रीफ़

बात़िल पर न अड़ना और ह़क़ बात मान लेना क़बूले ह़क़ है।

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में फ़रमाता है :

﴿اِنَّا هَدَیْنٰهُ السَّبِیْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا﴿۳﴾﴾ (پ۲۹،الدھر:۳) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक हम ने उसे राह बताई या ह़क़ मानता या नाशुक्री करता।"

﴾ह़दीसे मुबारका﴿ क़बूले ह़क़ पर मजबूर करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी की दा'वत देते रहना और बुराई से मन्अ़ करते रहना। ज़ालिम का हाथ पकड़ कर उसे ह़क़ की त़रफ़ झुका देना और ह़क़ बात क़बूल करने पर उसे मजबूर कर देना।"(1) एक और रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "जब तक तुम नेक लोगों से मह़ब्बत रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे बारे में जब कोई ह़क़ बात बयान की जाए तो उसे मान लिया करो कि ह़क़ को पहचानने वाला उस पर अ़मल करने वाले की त़रह़ होता है।"(2)

क़बूले ह़क़ के बारे में तम्बीह

हर मुसलमान को चाहिये कि वोह ह़क़ बात क़बूल करे कि ह़क़ बात मा'लूम होने के बा वुजूद अनानिय्यत की वज्ह से उसे क़बूल न

(1) ......ابوداود، کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، ۴/ ۱۶۲، حدیث:۴۳۳۶۔

(2) ......شعب الایمان، باب فی مقاربة وموده۔۔۔الخ، ۶/ ۵۰۳، حدیث:۹۰۶۳۔

करना फ़िरऔ़निय़ों का त़रीक़ा है । चुनान्चे, क़ुरआने पाक में फ़िरऔ़नियों के मुतअ़ल्लिक़ है :

﴿فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِیْنٌ﴾ (پ۱۱، یونس:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो जब उन के पास हमारी त़रफ़ से ह़क़ आया बोले येह तो ज़रूर खुला जादू है ।" इस आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीरे "सिरातुल जिनान" में है : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि ह़क़ बात मा'लूम हो जाने के बा'द नफ़्सानिय्यत की वज्ह से उसे क़बूल न करना और उस के बारे में ऐसी बातें करना जो दूसरों के दिलों में ह़क़ बात के बारे में शुकूक व शुबहात पैदा कर दें फ़िरऔ़नियों का त़रीक़ा है, इस से उन लोगों को नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिये जो ह़क़ जान लेने के बा वुजूद सिर्फ़ अपनी ज़िद और अना की वज्ह से उसे क़बूल नहीं करते और उस के बारे में दूसरों से ऐसी बातें करते हैं जिन से यूं लगता है कि उन का अ़मल दुरुस्त है और ह़क़ बयान करने वाला अपनी बात में सच्चा नहीं है ।"[1]

35 हिकायत — क़बूले ह़क़ की आ'ला तरीन मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्अ़ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "औ़रतों का ह़क़्क़े महर चालीस ऊक़िया से ज़ियादा न करो जो ज़ियादा होगा उसे बैतुल माल में जम्अ़ कर दिया जाएगा ।" एक औ़रत बोली : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं हालांकि क़ुरआने पाक में तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यूं इरशाद फ़रमाता है : और तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो और उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो ।" येह सुन कर आप

1.....सिरातुल जिनान, पारह 11, यूनुस : तह़्तुल आयत : 76, 4 / 363

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले ह़क़ का मुज़ाहरा करते हुए इरशाद फ़रमाया : "एक औ़रत ने सह़ीह़ कहा और मर्द ने ख़त़ा की।"(1)

काश हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं, अगर कोई हमारी बात से दुरुस्त इख़्तिलाफ़ करे तो फ़ौरन क़बूल कर लें। इस मुआ़मले में अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुबारक अन्दाज़ देखने में आया है कि अगर कोई आप की बात से इख़्तिलाफ़े राए करता है और बिलफ़र्ज़ वोह दुरुस्त राए रखता है तो आप फ़ौरन उसे क़बूल फ़रमा लेते हैं बल्कि उस का शुक्रिय्या अदा करने के साथ साथ उसे जज़ाए ख़ैर की दुआ़ओं से भी नवाज़ते हैं, अगर बिलफ़र्ज़ उस की राए दुरुस्त न हो तो अह़सन त़रीक़े से उस की ऐसी इस्लाह़ फ़रमाते हैं कि उसे इस बात का एह़सास ही नहीं होता कि मेरी बात को क़बूल नहीं किया गया।

क़बूले ह़क़ का ज़ेह्न बनाने और इस की रुकावटों को दूर करने के आठ﴿8﴾ त़रीक़े

(1) **क़बूले ह़क़ के फ़वाइद पर नज़र कीजिये :** ❁ ह़क़ बात क़बूल करने वाले को लोग पसन्द करते हैं। ❁ ह़क़ बात क़बूल करने वाला तकब्बुर से दूर होता है क्यूंकि किसी को खुद से ह़क़ीर समझना और ह़क़ बात क़बूल न करना तकब्बुर है।(2) ❁ क़बूले ह़क़ आ़जिज़ी की अ़लामत है। ❁ क़बूले ह़क़ सालिह़ीन और नेक लोगों का त़रीक़ा है। ❁ क़बूले ह़क़ के सबब आदमी फ़ुज़ूल बह़सो मुबाह़सा से बच जाता है। ❁ ह़क़ बात क़बूल करने वाले की लोगों में क़द्रो मन्ज़िलत बढ़ जाती है। ❁ ह़क़ बात

---

1 ......كنز العمال، كتاب النكاح، الجزء: ١٦، ٢٢٦/٨، حديث: ٤٥٧٩٢۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب اللباس، باب ان اللہ جمیل یحب الجمال، ٢٥٦/٥، حدیث: ٧٤٤٥۔

www.dawateislami.net

क़बूल करने वाला झगड़े से बचा रहता है। ۞ क़बूले ह़क़ के सबब आदमी इनादे ह़क़ और इसरारे बात़िल से बच जाता है।

(2) **ह़क़ बात क़बूल न करने के नुक़्सानात में ग़ौर कीजिये :** ह़क़ बात क़बूल न करने वाले को लोग ह़क़ की तल्क़ीन करने से रुक जाते हैं। ۞ ह़क़ बात क़बूल न करने वालों को लोग ना पसन्द करते हैं। ۞ ह़क़ बात क़बूल न करने वाला इसरारे बात़िल और इनादे ह़क़ में मुब्तला हो जाता है। ۞ ह़क़ बात क़बूल न करने वाला तकब्बुर में पड़ जाता है। ۞ ह़क़ बात न मानने वाला झगड़े से नहीं बच पाता। ۞ ह़क़ बात क़बूल न करने वाला फ़ुज़ूल बह़्सो मुबाह़सा में मुब्तला हो जाता है। ۞ ह़क़ बात न मानने वाले को लोगों की नज़रों में ज़लील होना पड़ता है।

(3) **क़बूले ह़क़ के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** क़बूले ह़क़ के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने बुज़ुर्गाने दीन : ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "तीन चीज़ें आ़जिज़ी की अ़लामत हैं : (1) नफ़्स का ऐ़ब पहचान कर उसे छोटा समझना (2) इस्लाम की ह़ुरमत के सबब लोगों की ता'ज़ीम करना और (3) हर एक से ह़क़ बात और नसीह़त को क़बूल करना।"(1) ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "आ़जिज़ी येह है कि तुम ह़क़ के आगे झुक जाओ और उस की पैरवी करो और अगर तुम सब से बड़े जाहिल से भी ह़क़ बात सुनो तो उसे भी क़बूल कर लो।"(2)

(4) **सालिह़ीन और ह़क़ क़बूल करने वालों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** सालिह़ीन और ह़क़ क़बूल करने वालों की

(1)......شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع۔۔۔الخ، ۲/۲۹۸، حدیث: ۸۲۳۰۔

(2)......الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الاول فی الکبائر الباطنۃ ومایتبعھا، ۱/۱۲۳۔

www.dawateislami.net

सोह़बत की बरकत से क़बूले ह़क़ का जज़्बा मिलेगा और बात़िल पर इसरार से आदमी बच जाएगा।

(5) **ज़ाती मफ़ादात को बालाए त़ाक़ रखिये :** जब बन्दा येह मह़सूस करता है कि ह़क़ की ताईद करने से ज़ाती मफ़ादात ख़त़रे में पड़ जाएंगे जब कि ग़लत़ काम पर अड़े रहने से मेरी ज़ात को ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाएदा होगा तो वोह ह़क़ बात को क़बूल करने से रुक जाता है लिहाज़ा क़बूले ह़क़ के लिये ज़रूरी है कि ज़ाती मफ़ादात को बालाए त़ाक़ रखा जाए।

(6) **तकब्बुर को ख़त्म कीजिये :** क़बूले ह़क़ में एक बड़ी रुकावट तकब्बुर है कि मुतकब्बिर इन्सान ह़क़ बात को जान कर भी उसे क़बूल करने से कतराता है और उसे अपनी बे इ़ज़्ज़ती जानता है लिहाज़ा क़बूले ह़क़ के लिये ज़रूरी है कि तकब्बुर को ख़त्म किया जाए।

(7) **ख़ुद पसन्दी को ख़त्म कीजिये :** जो अपनी राए या मश्वरे को ह़तमी और ना क़ाबिले रद समझते हैं बा'ज़ अवक़ात ह़क़ बात की ताईद करना उन के लिये मुश्किल हो जाता है और वोह उसे अपनी अना का मस्अला बना कर ह़क़ बात की मुख़ालफ़त शुरूअ़ कर देते हैं लिहाज़ा क़बूले ह़क़ के लिये ज़रूरी है कि ख़ुद पसन्दी को ख़त्म किया जाए।

(8) **हुब्बे जाह और त़लबे शोहरत को ख़त्म कीजिये :** कभी ऐसा भी होता है कि किसी बात का ह़क़ होना रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ होता है लेकिन इस के बा वुजूद मुख़ालफ़त में अपना बात़िल और ग़लत़ मौक़िफ़ पेश किया जा रहा होता है जिस का सबब हुब्बे जाह और शोहरत का हुसूल होता है लिहाज़ा क़बूले ह़क़ के लिये हुब्बे जाह और त़लबे शोहरत को ख़त्म करना ज़रूरी है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾34﴿...माल से बे रग़बती

माल से बे रग़बती की ता'रीफ़

माल से महब्बत न रखना और उस की त़रफ़ रग़बत न करना माल से बे रग़बती कहलाता है ।

माल से बे रग़बती का कमाल दरजा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "माल से बे रग़बती का कमाल दरजा येह है कि बन्दे के नज़्दीक माल और पानी बराबर हों, ज़ाहिर है कि कसीर पानी का इन्सान के नज़्दीक होना उसे नुक़्सान नहीं देता जैसा कि साह़िले समुन्दर पर रहने वाला शख़्स और न ही पानी का कम होना ज़रर देता है जब कि ब क़दरे ज़रूरत पानी दस्तयाब हो । पानी एक ऐसी चीज़ है जिस की इन्सान को ज़रूरत होती है, इन्सान का दिल न तो कसीर पानी से नफ़रत करता है और न ही राहे फ़रार इख़्तियार करता है बल्कि वोह कहता है कि मैं उस से अपनी ह़ाजत के मुत़ाबिक़ पियूंगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को पिलाऊंगा और उस में बुख़्ल नहीं करूंगा । इन्सान के नज़्दीक माल की ह़ालत भी येही होनी चाहिये कि इस के होने न होने से उसे कोई फ़र्क़ न पड़े ।"(1)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْیَقِیْنِؕ۵﴾(پ۳۰،التکاثر:۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "हां ! हां ! अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की महब्बत न रखते ।"

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزھد، بیان حقیقۃ الفقر۔۔۔الخ، ۴/۲۳۷۔

www.dawateislami.net

﴾हदीसे मुबारका﴿ मौत ना पसन्द क्यूं ?

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे क्या हो गया है कि मैं मौत को पसन्द नहीं करता ? आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास माल है ?" उस ने कहा : जी हां । फ़रमाया : "अपना माल आगे भेज दो (या'नी आख़िरत के लिये सदक़ा करो), क्यूंकि मोमिन का दिल अपने माल के साथ होता है अगर उस ने उसे आगे भेज दिया तो उस से मिलना चाहता है और अगर पीछे छोड़ दे तो उस के साथ पीछे रहना चाहता है ।"(1)

माल से बे रग़्बती के मुतअ़ल्लिक़ तम्बीह

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : जिस क़दर माल की ज़रूरत होती है इस का हुसूल ममनूअ़ नहीं, माल ज़रूरत से ज़ियादा हो तो ज़हरे क़ातिल है जब कि ज़रूरत की मिक़्दार हो तो नफ़्अ़ बख़्श दवा है और उन दोनों के दरमियान मुख़्तलिफ़ दरजात हैं जिन के बारे में शुबहात हैं । माल की वोह मिक़्दार जो ज़रूरत से ज़ाइद के क़रीब हो वोह अगर्चे ज़हरे क़ातिल न हो लेकिन नुक़्सान देह है और जो मिक़्दार ज़रूरत के क़रीब हो वोह अगर नफ़्अ़ मन्द दवा न भी हो तो कम नुक़्सान देह है । ज़हर का पीना ह़राम और दवा का इस्ति'माल ज़रूरी है ।(2)

36 हिकायत अमीनुल उम्मह और ह़ज़रते मुआ़ज़ की माल से बे रग़्बती

एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक थैली में चार सो दीनार डाल कर गुलाम को दिये और फ़रमाया : "इन्हें ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के

1 ......الزہد لابن مبارک، باب فی طلب الحلال، ص ۲۲۴، حدیث: ۶۳۴۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزہد، بیان تفصیل الزہد فیما ہومن ضروریات الحیاۃ، ۴/۲۹۶۔

पास ले जाओ फिर कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ?" चुनान्चे, गुलाम वोह थैली ले कर अमीनुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया है कि येह दीनार अपनी किसी ज़रूरत में इस्ति'माल कर लें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन पर रह़्म फ़रमाए।" फिर अपनी लौंडी को बुलाया और फ़रमाया : "येह सात दीनार फ़ुलां को, येह पांच फ़ुलां को और येह पांच फ़ुलां को दे आओ।" यहां तक कि वोह सब के सब दीनार ख़त्म कर दिये। गुलाम ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सारी सूरते ह़ाल बयान कर दी। फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इतने ही दीनार एक और थैली में डाल कर गुलाम के ह़वाले किये और फ़रमाया : "येह ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले जाओ और कुछ देर वहां ठहरना और देखना कि वोह इन्हें कहां सर्फ़ करते हैं ?" गुलाम ने थैली ली और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन फ़रमाते हैं कि इस रक़म से अपनी कोई ह़ाजत पूरी कर लें।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन पर रह़्म फ़रमाए।" फिर अपनी लौंडी को बुला कर फ़रमाया : "इतने दिरहम फ़ुलां के घर, इतने फ़ुलां के घर पहुंचा दो।" इसी असना में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा को इस बात का इ़ल्म हुवा तो अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं हमें भी अ़त़ा फ़रमाएं।" उस वक़्त थैली में सिर्फ़ दो दीनार बाक़ी बचे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह थैली दीनारों समेत अपनी अहलिया की त़रफ़ उछाल दी। गुलाम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

www.dawateislami.net

फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ सुनाया जिसे सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुए।[1]

माल से बे रग़बती का ज़ेह्न बनाने और इसे इख़्तियार करने के नव ﴿9﴾ त़रीक़े

(1) **माल से बे रग़बती के फ़ज़ाइल में ग़ौर कीजिये :** हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से फ़क़ीर होने की ह़ालत में मिलना, मालदार हो कर न मिलना।"[2] ۞ एक ह़दीसे पाक में है कि "जो शख़्स दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल में ह़िक्मत दाख़िल फ़रमा कर उस की ज़बान पर जारी फ़रमा देता है, उसे दुन्या की बीमारी और उस के इलाज की पहचान अ़त़ा फ़रमाता है और उसे दुन्या से सह़ीह़ सलामत निकाल कर सलामती के घर (या'नी जन्नत की त़रफ़) ले जाता है।"[3]

(2) **माल से बे रग़बती के मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन में ग़ौर कीजिये :** अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अपनी हथेली में एक दिरहम रखा फिर फ़रमाया : "तू जब तक मुझ से दूर नहीं होगा मुझे नफ़्अ़ नहीं देगा।" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो शख़्स रूपे पैसे की इ़ज़्ज़त करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील करता है। ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना सुमैत़ बिन अ़ज्लान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : दिरहम और दीनार मुनाफ़िक़ों की लगामें हैं वोह उन के ज़रीए़ दोज़ख़ की त़रफ़ खींचे जाएंगे।[4]

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار الحسن بن ابی الحسن، ص ۲۸۳، حدیث: ۱۵۲۲۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب الرقاق، باب الف اللہ فقیرا، ۵/ ۴۵۰، حدیث: ۷۹۵۷۔

3 ......شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/ ۳۴۶، حدیث: ۱۰۵۳۲۔

4 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم المال وکراھۃ حبہ، ۳/ ۲۸۸۔

www.dawateislami.net

(3) **माल की त़रफ़ रग़बत करने के नुक़्सानात में ग़ौर कीजिये :** 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) "माल और जाह की मह़ब्बत दिल में इस त़रह़ निफ़ाक़ पैदा करती है जिस त़रह़ पानी सब्ज़ी उगाता है।"[1] (2) "बकरियों के रेवड़ में छोड़े गए दो भूके भेड़िये इतना नुक़्सान नहीं करते जितना नुक़्सान जाहो मन्सब और माल की मह़ब्बत मुसलमान आदमी के दीन में करती है।"[2] (3) "रूपे पैसे का पुजारी मलऊ़न है।"[3]

(4) **माल से बे रग़बती के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल का मुत़ालआ़ कीजिये :** ۞ मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़रफ़ अ़त़िय्यात भेजे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : येह क्या है ? लाने वालों ने कहा : येह ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप के लिये भेजे हैं। फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की मग़फ़िरत फ़रमाए, फिर एक पर्दा खींचा और उसे फाड़ कर थैलियां बनाईं और वोह तमाम माल अपने घरवालों, रिश्तेदारों और यतीमों में तक़्सीम कर दिया, इस के बा'द हाथ उठा कर दुआ़ मांगी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस साल के बा'द मुझे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का अ़त़िय्या न पहुंचे। लिहाज़ा रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द अज़्वाजे मुत़ह्हरात में सब से पहले आप का इन्तिक़ाल हुवा।[4]

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثالثة والخمسون بعد المائتين، ٢/ ٩ ٣-

2 ......ترمذی، كتاب الزهد، باب ماجاء فی اخذ المال، ٤/ ١٦٦، حدیث: ٢٣٨٣-

3 ......ترمذی، كتاب الزهد، باب ماجاء فی اخذ المال، ٤/ ١٦٦، حدیث: ٢٣٨٢-

4 ......احیاء علوم الدین، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم المال وكراهة حبه، ٣/ ٢٨٨-

❁ एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना का'ब कुरज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى को बहुत माल मिला तो आप से कहा गया : क्या ही अच्छा हो अगर आप अपने बा'द अपनी औलाद के लिये इसे ज़ख़ीरा कर लें ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं ! बल्कि मैं इसे अपने लिये अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास ज़ख़ीरा करूंगा और अपनी औलाद को अपने रब عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करूंगा।[1]

(5) **माल से बे रग़बती हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का त़रीक़ा है :** हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे मेरे रब ने इस बात की पेशकश की, कि वोह मेरे लिये वादिये मक्का को सोने का बना दे लेकिन मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं तो येह चाहता हूं कि मैं एक दिन भूका रहूं और एक दिन खाना खाऊं, जिस दिन भूका रहूं उस दिन तेरी बारगाह में आ़जिज़ी और दुआ़ करूं और जिस दिन खाना खाऊं उस दिन तेरी ह़म्दो सना और शुक्र बजा लाऊं।"[2]

(6) **माल से बे रग़बती के फ़वाइद में ग़ौर कीजिये :** ❁ माल से बे रग़बती ज़ोहदो क़नाअ़त पैदा करती है। ❁ माल से बे रग़बती नेक आ'माल में मुआ़विन साबित होती है। ❁ माल से बे रग़बती के बाइ़स आदमी ह़िर्स व त़मअ़ से बच जाता है। ❁ माल से बे रग़बती सादगी पैदा करती है। ❁ माल से बे रग़बत शख़्स को लोग पसन्द करते हैं। ❁ माल से बे रग़बती तक़्वा पर उभारती है। ❁ माल से बे रग़बती अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बुज़ुर्गाने दीन का त़रीक़ा है। ❁ माल से बे

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم المال وکراهة حبه، ۳/ ۲۸۹۔
2 ......ترمذی، کتاب الزهد عن رسول الله، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیه، ۴/ ۱۵۵، حدیث: ۲۳۵۴۔

www.dawateislami.net

रग़बती के सबब आदमी बुख़्ल से बच जाता है। ۞ माल से बे रग़बती के बाइ़स आदमी माल जम्अ़ करने की आफ़त से बच जाता है।

(7) **माल से बे रग़बती के लिये इस की आफ़ात और हलाकतों में ग़ौर कीजिये :** ۞ माल आदमी को गुनाह के रास्ते पर डाल देता। ۞ उ़मूमन माल के सबब आदमी ऐ़शो इ़शरत में मुब्तला हो जाता है। ۞ माल आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देता है। ۞ माल के बाइ़स इन्सान ह़िर्स व त़मअ़ में पड़ जाता है। ۞ मालदार आदमी को अपने माल की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र लगी रहती है। माल के सबब आदमी लम्बी उम्मीदों और ख़्वाहिशात को पूरा करने में लग जाता है। ۞ ज़ियादा माल वाले को अपने माल का ह़िसाब भी ज़ियादा देना पड़ेगा। ۞ ज़ियादा देर तक मैदाने मह़शर में खड़ा रहना पड़ेगा। ۞ अपने माल की ज़कात न देने वाले को आख़िरत में त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबात का सामना होगा। ۞ माल की रग़बत आदमी को फ़े'ले ह़राम में भी मुब्तला कर देती है। ۞ मालदार के ज़िम्मे लोगों के बहुत से ह़ुक़ूक़ होते हैं। ۞ मालदारी आदमी को नाशुक्री में डाल देती है। ۞ मालदारी सरकशी का बाइ़स भी बनती है।

(8) **मालो दौलत की ह़िर्स का ख़ातिमा कीजिये :** दुन्यवी माल की ह़िर्स मोमिन के लिये बहुत ही ख़त़रनाक है अगर इस की रोक थाम न की जाए तो बसा अवक़ात येह दुन्यवी बरबादियों के साथ साथ उख़रवी हलाकतों की त़रफ़ भी ले जाती है, लिहाज़ा इसे ख़त्म कर के माल से बे रग़बती और ज़ोहद इख़्तियार कीजिये।

(9) **क़ियामत के ह़िसाबो किताब से ख़ुद को डराइये :** ज़रूरत और ह़ाजत से ज़ाइद माल कमाना अगर्चे जाइज़ है लेकिन याद रखिये जिस का माल जितना ज़ियादा होगा क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाबो किताब भी

उतना ही ज़ियादा होगा। ज़ियादा मालो दौलत वाले को कल बरोज़े क़ियामत दुश्वारी और तक्लीफ़ का सामना होगा और उसे देर तक मैदाने महशर में ठहरना पड़ेगा जब कि कम माल वाला जल्दी जल्दी हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हो जाएगा, लिहाज़ा क़ियामत के हिसाबो किताब से खुद को डराइये, इस से भी माल से बे रग़बती इख़्तियार करने में भरपूर मदद मिलेगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾35﴿...गिब्ता ﴾रश्क﴿

गिब्ता की ता'रीफ़

किसी शख़्स में कोई ख़ूबी या उस के पास कोई ने'मत देख कर येह तमन्ना करना कि मुझे भी येह ख़ूबी या ने'मत मिल जाए और उस शख़्स से उस ख़ूबी या ने'मत के ज़वाल की ख़्वाहिश न हो तो येह गिब्ता या'नी रश्क है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआन में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَفِیْ ذٰلِكَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿۲۶﴾﴾ (پ۳۰، المطففین:۲۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और उसी पर चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले।"

﴾हदीसे मुबारका﴿ दो शख़्सों पर रश्क

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दो आदमियों के इलावा किसी पर हसद (या'नी रश्क) करना जाइज़ नहीं, एक वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया और उसे सहीह रास्ते में ख़र्च

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सए शांज़दहुम, 3 / 542 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

करने की क़ुदरत अ़ता फ़रमाई और एक वोह मर्द जिसे अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्म अ़ता किया तो वोह उस के मुताबिक़ फ़ैसला करे और उस की ता'लीम दे ।"[1]

गि़ब्ता ﴾रश्क﴿ का हुक्म

रश्क बा'ज़ सूरतों में वाजिब, बा'ज़ में मुस्तह़ब और बा'ज़ में मुबाह़ है । ۞ अगर कोई ने'मत दीनी हो और वाजिब हो मसलन ईमान, नमाज़ और ज़कात तो ऐसी ने'मत पर रश्क करना भी वाजिब है और इस की सूरत येह है कि बन्दा अपने लिये भी ऐसी ही ने'मत पसन्द करे अगर ऐसा नहीं करेगा तो वोह गुनाह पर राज़ी होगा और येह ह़राम है । ۞ अगर ने'मत ऐसी हो जो फ़ज़ाइल से तअ़ल्लुक़ रखती हो मसलन अच्छे कामों में माल ख़र्च करना और सदक़ा व ख़ैरात वग़ैरा करना तो ऐसी ने'मत पर रश्क करना मुस्तह़ब है । अगर ने'मत ऐसी हो जिस से फ़ाएदा उठाना जाइज़ हो तो इस पर रश्क करना मुबाह़ है । इन तमाम सूरतों में इस का इरादा उस शख़्स के मुसावी होना और ने'मत में उस के साथ शरीक होना है, ने'मत का उस के पास होना ना पसन्द नहीं । गोया यहां दो बातें हैं : एक येह कि जिस के पास ने'मत है वोह ने'मत के सबब राह़त में है और दूसरी येह कि जो इस ने'मत से मह़रूम है वोह इस की वज्ह से नुक़्सान में है । रश्क करने वाला पहली बात को ना पसन्द नहीं करता बल्कि अपना मह़रूम होना और पीछे रह जाना ना पसन्द करता और ने'मत वाले की बराबरी चाहता है और इस में कोई ह़रज नहीं कि इन्सान मुबाह़ अश्या में अपने नुक़्सान और पीछे रहने को ना पसन्द जाने । अलबत्ता इस त़रह़ फ़ज़ाइल में कमी ज़रूर आती है क्यूंकि इस त़रह़ की बातें ज़ोह्द, तवक्कुल और रिज़ा के ख़िलाफ़ और आ'ला मक़ामात के ह़ुसूल में रुकावट हैं ताहम गुनाह का बाइ़स नहीं ।[2]

---

1 ......بخاری، کتاب العلم، باب الاغتباط فی العلم والحکمۃ، ۱/۴۳، حدیث:۷۳۔

2 .....इह़्याउल उ़लूम, 3 / 586 मुल्तक़त़न ।

www.dawateislami.net

37 हिकायत सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का रश्क

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि फुक़राए मुहाजिरीन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर (मालदार मुसलमानों पर रश्क करते हुए) बोले कि मालदार बड़े दरजे और दाइमी ने'मत ले गए। फ़रमाया : येह कैसे ? अ़र्ज़ किया : जैसे हम नमाज़ें पढ़ते हैं वोह भी पढ़ते हैं और जैसे हम रोज़े रखते हैं वोह भी रखते हैं और (मालदार होने के सबब) वोह ख़ैरात करते हैं (लेकिन फुक़रा होने के सबब) हम नहीं करते, वोह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं, हम नहीं करते। तो नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न सिखाऊं जिस से तुम आगे वालों को पकड़ लो और पीछे वालों से आगे बढ़ जाओ और तुम से कोई अफ़्ज़ल न हो सिवाए उस के कि जो तुम्हारी त़रह़ करे। अ़र्ज़ की : जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इरशाद फ़रमाया : "हर नमाज़ के बा'द 33-33 बार اَللّٰہُ اَکْبَر, سُبْحَانَ اللّٰہ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कह लिया करो।"(1)

रश्क करने के चार ﴾4﴿ मवाक़ेअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी मुबाह़ काम में रश्क करना ह़राम नहीं लेकिन इन्सान को ऐसी चीज़ों पर रश्क करना चाहिये जिस पर रश्क करने से उसे सवाब मिले। मसलन :

(1) **अह्ले इ़ल्म पर रश्क करना चाहिये** : इ़ल्म एक ऐसी ने'मत है जिस की बदौलत इन्सान को मुआ़शरे में इम्तियाज़ी हैसिय्यत ह़ासिल होती है, इन्सान को चाहिये कि वोह उ़लमा पर रश्क करे क्यूंकि इन के पास वोह ने'मत है जो ख़र्च करने से बढ़ती है और इसी ने'मत के सबब

(1) مسلم، کتاب المساجد۔۔۔الخ، باب استحباب الذکر۔۔۔الخ، ص ۳۰۰، حدیث: ۵۹۵۔

www.dawateislami.net

इन्सान अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है और येह ने'मत दुन्या व आख़िरत में बन्दे को सरफ़राज़ करती है तो जिस के पास येह ने'मत है ह़क़ीक़त में वोही क़ाबिले रश्क है।

(2) **सख़ावत करने वाले पर रश्क करना चाहिये :** दुन्या में मालदारों की कमी नहीं लेकिन ऐसे मालदार लोग बहुत ही कम हैं कि जो अपने माल को ब ख़ुशी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करते हों। मुसलमान को चाहिये कि सख़ावत करने वालों पर रश्क करे क्यूंकि ह़लाल माल ह़ासिल होना एक ने'मत है और फिर इस माल को खुले दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करना दूसरी ने'मत, ह़लाल माल तो बहुत सों को मिल जाता है लेकिन सख़ावत की ने'मत ख़ास लोगों का ही मुक़द्दर बनती है।

(3) **अच्छी सिफ़ात के ह़ामिल शख़्स पर रश्क करना चाहिये :** दुन्या की ज़ाहिरी ने'मतें तो कई अफ़राद को मुयस्सर होती हैं लेकिन बात़िनी सिफ़ात की ने'मत हर एक को मुयस्सर नहीं होती। अच्छा लिबास, बेहतरीन रिहाइश, मालो दौलत और त़रह़ त़रह़ की दुन्यावी ने'मतें बहुत से लोगों के पास हैं मगर सब्र, तवक्कुल, क़नाअ़त, आ़जिज़ी व इन्किसारी, तवाज़ोअ़ और दीगर बात़िनी ख़साइल की ने'मत से बहुत कम लोग मुत्तसिफ़ हैं, अच्छे लिबास व सुकूनत और दीगर दुन्यावी ने'मतों पर रश्क करना अगर्चे गुनाह का बाइ़स नहीं लेकिन इन ने'मतों पर रश्क करने से फ़ज़ाइल में कमी आती है और इन ने'मतों से दुन्या में फ़ाएदा ह़ासिल होता है जब कि सब्र, तवक्कुल, क़नाअ़त वग़ैरा ऐसी सिफ़ात हैं जिन पर रश्क करने से इन्सान का मर्तबा बुलन्द होता है और येह दुन्या व आख़िरत में बन्दे को फ़ाएदा पहुंचाती हैं।

(4) **शहीद पर रश्क करना चाहिये :** इस दारे फ़ानी से हर इन्सान को कूच करना है, बा'ज़ लोगों की मौत तो बड़ी इ़ब्रतनाक हुवा करती है, कुछ लोग गुनाह करते हुए मौत के घाट उतार दिये जाते हैं मगर

बा'ज़ ख़ुश नसीब इस त़रह़ सफ़रे आख़िरत पर रवाना होते हैं कि हर एक ह़सरत करता है कि काश ! मुझे भी इसी त़रह़ मौत आए, शहादत की मौत भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी अ़त़ा है जिस की हर मुसलमान तमन्ना करता है और शहीद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जो आ'ला मक़ाम ह़ासिल है इस के पेशे नज़र हर मुसलमान को शहीद पर रश्क करना चाहिये ।

रश्क करने का जज़्बा ह़ासिल करने के तीन ﴾3﴿ त़रीक़े

(1) **रश्क करने के सवाब पर ग़ौर कीजिये :** दीनी उमूर में रश्क करने का जज़्बा बेदार करने के लिये रश्क के अज्र पर ग़ौर करना चाहिये क्यूंकि बन्दा जिस नेक अ़मल पर सच्चे दिल से रश्क करता है उसे इस पर सवाब अ़त़ा किया जाता है । मसलन : किसी को ह़ज पर जाते हुए देख कर रश्क करना कि मुझे भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इतना माल अ़त़ा फ़रमा दे कि मैं भी इस मुसलमान भाई की त़रह़ ह़ज कर सकूं या किसी ग़रीब मुसलमान का किसी को ख़ैरात करता देख कर रश्क करना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे भी माल अ़त़ा फ़रमा दे ताकि मैं भी उस मुसलमान की त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च कर सकूं, इसी त़रह़ हर नेक काम पर रश्क कर के बन्दा अपने आप को इस के सवाब का मुस्तह़िक़ बना सकता है । ह़ुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक शख़्स वोह है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल और इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और वोह इस में अपने रब से डरता है और सिलए रेह़मी करता है और इस में अल्लाह तआ़ला के ह़क़ को जानता है, येह शख़्स सब से अफ़्ज़ल मर्तबे में है और दूसरा शख़्स वोह है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म दिया, माल नहीं दिया, येह शख़्स सच्ची निय्यत के साथ कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़ुलां की त़रह़ अ़मल करता पस येह उस की निय्यत है और इन दोनों का सवाब बराबर है ।"(1)

---

(1) ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مثل الدنیا مثل اربعۃ نفر، ۴/۱۴۶، حدیث: ۲۳۳۲۔

www.dawateislami.net

(2) **इस बात पर ग़ौर कीजिये कि रश्क ह़सद से बचाता है :** येह एक फ़ित़्री बात है कि इन्सान जब किसी के पास कोई ने'मत देखता है तो उस के दिल में भी उस के हुसूल की ख़्वाहिश पैदा होती है अगर इन्सान दूसरों को मिलने वाली ने'मतों पर रश्क नहीं करेगा तो मुमकिन है कि वोह ह़सद में मुब्तला हो जाए और ह़सद बहुत बड़ा गुनाह है। रश्क, ह़सद से बचने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "रश्क ईमान से है और ह़सद निफ़ाक़ से, मोमिन रश्क करता है ह़सद नहीं करता और मुनाफ़िक़ ह़सद करता है रश्क नहीं करता।"[1]

(3) **रश्क करने के सबब नेक आ'माल में रग़बत :** इन्सान किसी चीज़ पर उसी ह़ाल में रश्क करता है जब कि उस के दिल में उस चीज़ की अहम्मिय्यत और त़लब होती है और इन्सान के दिल में जिस चीज़ की अहम्मिय्यत व त़लब नहीं होती वोह उस पर रश्क भी नहीं करता तो बन्दा अपने दिल में किसी की अच्छाई पर उसी सूरत में रश्क करेगा जब कि उस के दिल में उस अच्छाई की त़लब होगी और जब नेकी की त़लब होगी तो यक़ीनन फिर वोह उस नेक काम को करने की भी ख़ूब कोशिश करेगा और इस त़रह़ वोह मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल की त़रफ़ राग़िब होगा लिहाज़ा दूसरों के नेक आ'माल पर रश्क करना चाहिये ताकि ख़ुद भी वोह नेकियां करने का जज़्बा बन्दे में पैदा हो और वोह ज़ियादा से ज़ियादा नेक आ'माल करने की कोशिश करता रहे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿...मह़ब्बते मुस्लिम

मह़ब्बते मुस्लिम की ता'रीफ़

"किसी बन्दे से सिर्फ़ इस लिये मह़ब्बत करे कि रब तआ़ला उस

[1] حلية الاولياء، الفضيل بن عياض، ٨/٩٨، رقم:١١٤٨٧-

www.dawateislami.net

से राज़ी हो जाए, इस में दुन्यावी ग़रज़ रिया न हो, इस महब्बत में मां बाप, औलाद, अहले क़राबत मुसलमानों से महब्बत सब ही दाख़िल हैं जब कि रिज़ाए इलाही के लिये हों।"(1)

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَیْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ﴾ (پ۴، آل عمران:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में बट न जाना) और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए।"

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : इस आयते मुबारका में "اِخْوَانًا या'नी भाई होने" से मुराद उल्फ़त व महब्बत क़ाइम होना है।(2)

﴾हदीसे मुबारका﴿ महब्बत रखने वालों का इनआम

(1) हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा : मेरे जलाल की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले कहां हैं ? आज के दिन मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा जब कि मेरे अ़र्श के इलावा कोई साया नहीं।"(3) (2) हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि

1.....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 584 2.....इह्याउल उ़लूम, 2 / 571

3.....مسلم، كتاب البر والصلة والاداب، باب في فضل الحب في الله۔۔۔الخ، ص ۱۳۸۸، حديث: ۲۵۶۶۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे जलाल की ख़ातिर आपस में महब्बत करने वालों के लिये क़ियामत के दिन नूर के ऐसे मिम्बर होंगे कि अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) और शुहदा भी उन पर रश्क करेंगे।"[1]

महब्बते मुस्लिम का हुक्म

रिज़ाए इलाही की ख़ातिर किसी से महब्बत करना और दीन के ख़ातिर भाईचारा क़ाइम करना अफ़्ज़ल तरीन नेकी और अच्छी आदत है। अलबत्ता इस की कुछ शराइत़ हैं जिन की रिआयत करने से आपस में दोस्ती रखने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर महब्बत करने वालों में शुमार होते हैं। नीज़ इन शराइत़ की रिआयत करने से भाईचारा कदूरतों की आमेज़िश और शैत़ानी वस्वसों से पाको साफ़ रहता है जब कि इस के सबब इन्सान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल होता है और इन पर मुह़ाफ़ज़त करने से इसे बुलन्द और आ'ला दरजात ह़ासिल होते हैं।[2] अल्लाह के वासिते किसी से महब्बत करना बेहतरीन नेकी है और ऐसी महब्बत अल्लाह तआ़ला की महब्बत का ज़रीआ़ है।[3]

38 हिकायत — अल्लाह के लिये भाई से महब्बत का सिला

हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स अपने एक मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिये दूसरी बस्ती की त़रफ़ चला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के रास्ते में एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा दिया जब वोह उस के पास पहुंचा तो फ़िरिश्ते ने पूछा : कहां का इरादा है? उस ने कहा : उस बस्ती में मेरा एक दीनी भाई है उस के पास

---

1 .....ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الحب فی اللہ، ۴/۱۷۴، حدیث:۲۳۹۷۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 2 / 568 3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 588 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

जा रहा हूं। फ़िरिश्ते ने कहा : क्या तुझ पर उस का कोई एह्सान है जिस का बदला देने जा रहे हो। उस ने कहा : नहीं, बल्कि मैं उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये महब्बत करता हूं। फ़िरिश्ते ने कहा : "बेशक ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तेरे लिये येह पैग़ाम लाया हूं कि जिस त़रह तू उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करता है ऐसे ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से महब्बत फ़रमाता है।"(1)

महब्बते मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के चार ﴾4﴿ त़रीक़े

(1) **मुसलमानों से महब्बत के फ़ज़ाइल पर ग़ौर कीजिये :** मुसलमानों से महब्बत करने का जज़्बा पैदा करने के लिये महब्बते मुस्लिम के फ़ज़ाइल पर ग़ौर करना चाहिये क्यूंकि जब इन्सान को किसी अ़मल की फ़ज़ीलत मा'लूम होती है तो उस का दिल उस अ़मल की त़रफ़ माइल होता है और वोह अ़मल करना आसान हो जाता है लिहाज़ा अपने दिल में मुसलमानों की महब्बत पैदा करने के लिये इस के फ़ज़ाइल पर ग़ौर कीजिये। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आप से महब्बत करता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हें मुबारक हो, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "क़ियामत के दिन बा'ज़ लोगों के लिये अ़र्श के गिर्द कुरसियां नस्ब की जाएंगी, उन के चेहरे चौदहवीं के चांद की त़रह रोशन होंगे, लोग घबराहट का शिकार होंगे जब कि उन्हें कोई घबराहट न होगी, लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे उन्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दोस्त हैं जिन पर न कोई अन्देशा है न कुछ ग़म।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह

(1) ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب فی فضل الحب فی اللہ، ص ۱۳۸۸، حدیث: ۲۵۶۷۔

www.dawateislami.net

कौन लोग हैं ? इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आपस में महब्बत करने वाले ।"[1]

(2) **सलाम व मुसाफ़हा की आदत बनाइये :** सलाम व मुसाफ़हा करना हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऐसी प्यारी सुन्नत है कि जिस पर अमल करने से मुआशरे में महब्बत बढ़ती है और दिल एक दूसरे के क़रीब हो जाते हैं, हदीसे पाक में भी सलाम को महब्बत पैदा करने का सबब बयान किया गया है । चुनान्चे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "तुम जन्नत में हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते जब तक ईमान न ले आओ और तुम (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते जब तक आपस में महब्बत न करने लगो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम उसे करो तो आपस में महब्बत करने लगो ?" फिर इरशाद फ़रमाया : "आपस में सलाम को आम करो ।"[2]

(3) **हुस्ने अख़्लाक़ अपनाइये :** हुस्ने अख़्लाक़ के सबब बाहम उल्फ़त व महब्बत और मुवाफ़क़त पैदा होती है जब कि बद अख़्लाक़ी के सबब आपस में बुग़्ज़ो कीना, हसद और जुदाई पैदा होती है । हुस्ने अख़्लाक़ की सिफ़त से मुत्तसिफ़ शख़्स से हर एक मैल मिलाप रखना पसन्द करता है जब कि बद अख़्लाक़ से हर कोई कनारा कशी इख़्तियार करता है अगर बन्दा हुस्ने अख़्लाक़ का दामन छोड़ दे और बद अख़्लाक़ी से पेश आए तो अपने भी दूरी इख़्तियार कर लेते हैं लिहाज़ा मुसलमानों से महब्बत का रिश्ता क़ाइम रखने के लिये हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करना बहुत ज़रूरी है ।

(4) **मुसलमानों से कीना रखने की वईदों पर ग़ौर कीजिये :** अपने दिल को मुसलमानों की महब्बत का गुलशन बनाने के लिये मुसलमानों से बुग़्ज़ो कीना रखने की वईदों पर ग़ौर करना चाहिये क्यूंकि जब दिल में

1 ......قوت القلوب، ۲/۳۶۴۔

2 ......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان انه لا یدخل الجنة الا المؤمنون۔۔۔الخ، ص۴۷، حدیث: ۵۴۔

www.dawateislami.net

कीना होता है तो इन्सान ह़सद, ग़ीबत और बोहतान तराशी जैसे कबीरा गुनाहों में मुब्तला हो जाता है लिहाज़ा जब इन्सान की नज़र में कीना परवरी की वईदें होंगी तो वोह अपने दिल को बुग़्ज़ो कीना से पाक रखने की कोशिश करेगा और जब दिल बुग़्ज़ से पाक होगा तो यक़ीनी तौर पर दिल में मुसलमानों की मह़ब्बत घर करेगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾37﴿...अल्लाह की खु़फ़्या तदबीर से डरना

अल्लाह की खु़फ़्या तदबीर से डरने की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पोशीदा अफ़्आ़ल से वाके़अ़ होने वाले बा'ज़ अफ़्आ़ल को उस की खु़फ़्या तदबीर कहते हैं और उस से डरना अल्लाह की खु़फ़्या तदबीर से डरना कहलाता है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا یَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۠(۹۹)﴾ (پ۹، الاعراف:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्या अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर हैं तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं।" रबीअ़ बिन खु़सैम की साहि़बज़ादी ने उन से कहा : क्या सबब है मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया : "ऐ नूरे नज़र ! तेरा

1.....इह़याउल उ़लूम, 4 / 504, 505 माख़ूज़न

बाप शब को सोने से डरता है या'नी येह कि ग़ाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अ़ज़ाब न हो।"(1)

﴾हदीसे मुबारका﴿ गुनाह पर क़ाइम रहने वाले के बारे में ख़ुफ़्या तदबीर

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम किसी बन्दे को देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ अ़ता फ़रमाता है हालांकि वोह अपने गुनाह पर क़ाइम है तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ढील है। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿فَلَمَّا نَسُوۡا مَا ذُكِّرُوۡا بِهٖ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ اَبۡوَابَ كُلِّ شَیۡءٍ ؕ حَتّٰۤی اِذَا فَرِحُوۡا بِمَاۤ اُوۡتُوۡۤا اَخَذۡنٰهُمۡ بَغۡتَةً فَاِذَا هُمۡ مُّبۡلِسُوۡنَ ﴿۴۴﴾﴾ (پ۷، الانعام: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गईं थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।(2)

अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने का हुक्म

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर भरोसा करते हुए गुनाहों में मुस्तग़्रक़ हो जाना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना कबीरा गुनाह है।"(3) लिहाज़ा हर मुसलमान पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना वाजिब है।

39 हिकायत — अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से पनाह

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 9, अल आ'राफ़, तह़्तुल आयत : 99

(2).....معجم اوسط، ۶/۲۲۲، حدیث: ۹۲۷۲۔

(3).....الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرۃ التاسعۃ والثلاثون، ۱/۱۸۵۔

से मन्क़ूल है कि जंगे क़ादिसिय्या के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ किस्रा (या'नी ईरान के बादशाह) की तल्वार, क़मीस, ताज, पटका और दीगर अश्या भेजीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों की त़रफ़ देखा तो उन में ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक बिन जु'शुम मुदलिजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे, वोह बहुत त़ाक़तवर और त़वीलुल क़ामत थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ सुराक़ा ! उठो और येह लिबास पहन कर दिखाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में पहले ही ख़्वाहिश थी। चुनान्चे, मैं खड़ा हुवा और शाहे ईरान का लिबास पहन लिया। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे देखा तो फ़रमाया : "अब दूसरी जानिब मुंह करो।" मैं ने ऐसा ही किया। फ़रमाया : "अब मेरी त़रफ़ मुंह करो।" मैं आप की त़रफ़ मुड़ गया तो फ़रमाया : "वाह भई वाह ! क़बीला मुदलिज के इस जवान की क्या शान है ! देखो तो सही, शाहे ईरान का लिबास पहन कर, उस की तल्वार गले में लटका कर कैसा लग रहा है ! ऐ सुराक़ा ! अब जिस दिन तू ने शाहे ईरान का लिबास पहना वोह दिन तेरे लिये और तेरी क़ौम के लिये शरफ़ वाला तसव्वुर किया जाएगा, अच्छा ! अब येह लिबास उतार दो।" फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपने नबी व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस (दुन्यवी माल) से मन्अ़ फ़रमाया, ह़ालांकि वोह तेरी बारगाह में मुझ से कहीं ज़ियादा मह़बूब हैं और मुझ से बहुत ज़ियादा बुलन्दो बाला हैं। फिर तू ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इस (माल) से मन्अ़ फ़रमाया, ह़ालांकि वोह तेरी बारगाह में मुझ से ज़ियादा बुलन्द मर्तबे वाले हैं। फिर तू ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमा दिया।

ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अगर तेरी त़रफ़ से येह खुफ़्या तदबीर है तो मैं इस से तेरी पनाह चाहता हूं।" येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "शाम से क़ब्ल इस तमाम माल को गुरबा में तक़्सीम कर दो।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरने का ज़ेह्न बनाने के छ ﴿6﴾ त़रीक़े

(1) अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام व औलिया के अह़वाल पर ग़ौर करना चाहिये : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام, फ़िरिश्ते और औलियाए किराम भी ख़ौफ़ज़दा रहते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी और फ़िरिश्ते मा'सूम हैं, इन से अल्लाह तआला की ना फ़रमानी मुमकिन नहीं जब कि हम सरापा ख़त़ा हैं, हमारे जिस्म का हर ज़र्रा गुनाहों से आलूदा है, हमारी ज़िन्दगी का बहुत बड़ा ह़िस्सा ग़फ़्लत में गुज़र रहा है जब कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام और फ़िरिश्तों का हर लम्ह़ा खुदा की बन्दगी में बसर होता है मगर फिर भी वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल न हों और हम हर वक़्त रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी और सरकशी में मुन्हमिक होने के बा वुजूद अपने बारे में मुत़मइन रहें, बिलाशुबा येह हमारे लिये निहायत ख़त़रे की बात है, हमें हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रो रहे थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़ी फ़रमाई कि तुम दोनों क्यूं रो रहे हो ह़ालांकि मैं तुम्हें अमान दे चुका हूं? अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी खुफ़्या तदबीर से कौन बे ख़ौफ़ हो सकता है?"(2)

---

1 .....उ़यूनुल ह़िकायात, ह़िस्सा दुवुम, स. 373 2 .....इह़याउल उ़लूम, 4 / 503

www.dawateislami.net

(2) **बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ कीजिये :** हर मुसलमान को बुरे ख़ातिमे से डरना चाहिये कि बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ दिल में बिठाने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर का ख़ौफ़ भी दिल में बैठ जाएगा और कोई भी अपनी मौत के मुआ़मले में कैसे मुत्मइन हो सकता है ? क्यूंकि कोई शख़्स इस बात से वाक़िफ़ नहीं कि उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा या कुफ़्र पर और इन्सान की पूरी ज़िन्दगी का दारो मदार ख़ातिमे पर ही है इसी लिये अगर कोई शख़्स सारी ज़िन्दगी कुफ़्र पर रहा मगर मौत से चन्द लम्हे पहले उसे ईमान की दौलत नसीब हो गई तो वोह बा मुराद व कामयाब हो गया और जो शख़्स सारी ज़िन्दगी इस्लाम पर रहा और ख़ूब इबादतो रियाज़त करता रहा लेकिन मरने से कुछ देर क़ब्ल مَعَاذَاللّٰه काफ़िर व मुर्तद हो गया तो ऐसा शख़्स तबाहो बरबाद और हमेशा के लिये नारे जहन्नम का मुस्तह़िक़ है, बुरे ख़ातिमे का मुआ़मला तो इतना नाज़ुक है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मा'सूम नबी भी उस से ख़ौफ़ज़दा रहते थे अगर्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उन का ईमान मह़फ़ूज़ था मगर फिर भी वोह इस बारे में बेह़द मुतफ़क्किर रहा करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ख़्वाब में खुद को मैं ने जन्नत में पाया, जहां मैं ने 300 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से मुलाक़ात की और उन सब से येह सुवाल किया कि आप ह़ज़रात दुन्या में सब से ज़ियादा किस चीज़ से ख़ौफ़ज़दा थे ? उन्हों ने जवाब दिया : "बुरे ख़ातिमे से।"(1)

(3) **गुज़श्ता लोगों के वाक़िआ़त पर ग़ौर कीजिये :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से मुतअ़ल्लिक़ बहुत से वाक़िआ़त इस्लामी कुतुब में बयान किये गए हैं जिन में ऐसे लोगों का तज़्किरा है कि जिन्हों ने अपनी सारी ज़िन्दगी इबादतो रियाज़त में गुज़ारी मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी

(1).....इह़याउल उ़लूम, 4 / 525

www.dawateislami.net

ख़ास गुनाह के सबब उन की गिरिफ़्त फ़रमा ली और उन का बहुत भयानक अन्जाम हुवा। खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम में बल्अ़म बिन बाऊ़रा के बारे में बयान फ़रमाया है, येह बहुत आ़बिदो ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दा'वात था मगर जब इस ने अपनी क़ौम के कहने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये बद दुआ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से ईमान व मा'रिफ़त की दौलत छीन ली और येह कुफ़्र पर मरा। इसी त़रह़ और भी बहुत से वाक़िआ़त हैं जिन का मुत़ालआ़ करने से बन्दे के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर का ख़ौफ़ पैदा होता है।

(4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की बे नियाज़ी पर ग़ौर कीजिये :** इन्सान अपने अ़मल से **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात को न नफ़्अ़ पहुंचा सकता है न नुक़्सान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात बे नियाज़ है, उस के हुक्म में कोई दख़्ल अन्दाज़ी नहीं कर सकता, वोह जिस की पकड़ करना चाहे उसे कोई छुड़ा नहीं सकता, बन्दा चाहे जितने नेक आ'माल कर ले मगर उस की बख़्शिश यक़ीनी नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी भी ख़त़ा पर बन्दे की गिरिफ़्त फ़रमा सकता है, वोह ज़ुल्म से पाक है और उस का हर फ़ैसला अ़द्ल पर मब्नी है, इन्सान को चाहिये कि वोह अपने नेक आ'माल पर भरोसा न करे बल्कि हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी को मद्दे नज़र रखे और उस की खुफ़्या तदबीर से डरता रहे और अपनी इ़बादतो रियाज़त पर नाज़ न करे, शैत़ान ने हज़ारों साल इ़बादत की मगर उसे तकब्बुर ने आ लिया और वोह हमेशा के लिये मर्दूद हो गया।

(5) **अपनी ने'मतों पर ग़ौर कीजिये :** जिस शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में मालो दौलत, रोज़ी में कसरत, फ़रमां बरदार औलाद की ने'मत, अच्छी सिह़ह़त, ओ़ह्दए वज़ारत या सदारत या हुकूमत वग़ैरा के ज़रीए फ़राख़ी फ़रमाई है उसे येह सोचना चाहिये कि कहीं येह आसाइशें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर तो नहीं कि मुझे दुन्या में येह ने'मतें

www.dawateislami.net

अ़ता कर दी गई हैं और आख़िरत में मुझे इन ने'मतों से मह़रूम कर दिया जाएगा या येह ने'मतें मेरे लिये ग़ुरूर व तकब्बुर, सरकशी, ग़फ़्लत और मुख़्तलिफ़ गुनाहों का सबब तो नहीं जिन में मश्ग़ूल हो कर मैं अपनी आख़िरत ख़राब कर दूं, इस त़रह़ अपनी ने'मतों के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने से भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने का ज़ेहन बनेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस पर वुस्अ़त फ़रमाए और वोह येह न समझ सके कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर है तो वोह बिल्कुल बे अ़क़्ल है।"(1)

(6) **अपनी आज़्माइशों पर ग़ौर कीजिये :** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "सरमाया दारों वग़ैरा के साथ साथ नादारों, बीमारों और मुसीबत के मारों को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना लाज़िमी है कि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए आज़्माइश में डाला गया हो और नाजाइज़ गिला शिकवा, ग़ैर शरई बे सब्री और ग़ुरबत व मुसीबत को ह़राम ज़राएअ़ के ज़रीए ख़त्म करने की कोशिशें आख़िरत की तबाही का सबब बन जाएं।"(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾38﴿...एह़तिरामे मुस्लिम

एह़तिरामे मुस्लिम की ता'रीफ़

मुस्लिम की इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत का पास रखना और उसे हर त़रह़ के नुक़्सान से बचाने की कोशिश करना एह़तिरामे मुस्लिम कहलाता है।

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة التاسعة والثلاثون، ١/١٨٥۔

2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, पेट का क़ुफ़्ले मदीना, स. 683

www.dawateislami.net

आयते मुबारका

(1) इरशादे बारी तआ़ला :

﴿وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِیْلِۙ وَمَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ﴾ (پ۵، النساء:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी गुलाम से।"

(2) फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴿وَالَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْہَادِی मज़्कूरा आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी **अल्लाह** की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज़ को मान कर बा'ज़ से मुन्किर हो कर इन में तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं करते या येह मा'ना हैं कि हुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ते क़त्अ़ नहीं करते। इसी में रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं, सादाते किराम का एह़तिराम और मुसलमानों के साथ मुवद्दत (प्यार व मह़ब्बत) व एह़सान और उन की मदद और उन की त़रफ़ से मुदाफ़अ़त (दिफ़ाअ़) और उन के साथ शफ़्क़त और सलाम व दुआ़ और मुसलमान मरीज़ों की इयादत और अपने दोस्तों, ख़ादिमों, हमसायों, सफ़र के साथियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत भी इस में दाख़िल है और शरीअ़त में इस का लिह़ाज़ रखने की बहुत

www.dawateislami.net

ताकीदें आई हैं, बकसरत अहादीसे सहीहा इस बाब में वारिद हैं।"[1]

﴾हदीसे मुबारका﴿ एहतिरामे मुस्लिम की तरगीब

एक मरतबा हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : "जानते हो मुसलमान कौन है ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" तो इरशाद फ़रमाया : "मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "मोमिन कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "मोमिन वोह है कि जिस से दूसरे मोमिन अपनी जानों और मालों को महफ़ूज़ समझें।"[2]

एहतिरामे मुस्लिम का हुक्म

एहतिरामे मुस्लिम का तक़ाज़ा येह है कि हर हाल में हर मुसलमान के तमाम हुक़ूक़ का लिहाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शरई किसी भी मुसलमान की दिल शिकनी न की जाए। हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी मुसलमान का दिल न दुखाया, न किसी पर तन्ज़ किया, न किसी का मज़ाक़ उड़ाया, न किसी को धुतकारा, न कभी किसी की बे इज़्ज़ती की बल्कि हर एक को सीने से लगाया।[3]

40 हिकायत एहतिरामे मुस्लिम का अज़ीम जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अब्दुल्लाह ख़य्यात् رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुकान पर बैठ कर कपड़े सिलाई करते थे, एक आतश परस्त (आग की पूजा करने वाला) आप से कपड़े सिलवाता और हर बार उजरत में खोटे सिक्के दे

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 13, अर्रअ़्द, तह्तुल आयत : 21

2.....مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/۶۵۴، حدیث: ۶۹۴۲۔

3.....एहतिरामे मुस्लिम, स. 26

जाता, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोशी से रख लेते और खोटे सिक्कों के मुतअ़ल्लिक़ कुछ कहते न ही वापस लौटाते । एक दिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه किसी काम से कहीं चले गए आप की ग़ैर मौजूदगी में वोह आतश परस्त आया, आप को न पा कर शागिर्द को खोटे सिक्के दे कर अपना कपड़ा मांगा । शागिर्द ने खोटे सिक्के देखे तो लेने से इन्कार कर दिया । आप वापस तशरीफ़ लाए तो शागिर्द ने सारा माजरा बयान किया । येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''तुम ने बुरा किया, येह आतश परस्त कई साल से मुझे खोटे सिक्के ही देता आ रहा है, मैं इस निय्यत से ले कर रख लेता और कुंवें में डाल देता हूं कि कहीं वोह इन से दूसरे मुसलमानों को धोका न दे ।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एह़तिरामे मुस्लिम बजा लाने के लिये मुसलमानों के हुक़ूक़ की अदाएगी बहुत ज़रूरी है, मुसलमानों के बा'ज़ हुक़ूक़ ऐसे हैं जो हर मुसलमान से तअ़ल्लुक़ रखते हैं या'नी चाहे घरवाले हों, रिश्तेदार हों, वालिदैन हों या दोस्त अह़बाब हों, उन का तअ़ल्लुक़ हर मुसलमान से है लिहाज़ा एह़तिरामे मुस्लिम की अदाएगी के लिये चन्द हुक़ूक़ मुलाह़ज़ा कीजिये :

मुसलमानों के हुक़ूक़ की तफ़्सील

(1) जो अपने लिये पसन्द करे वोही अपने भाई के लिये पसन्द करे, जो अपने लिये ना पसन्द करे वोही अपने भाई के लिये ना पसन्द करे । (2) अपने क़ौलो फ़े'ल से किसी मुसलमान को तक्लीफ़ न पहुंचाए । (3) हर मुसलमान के साथ आ़जिज़ी से पेश आए और किसी पर तकब्बुर न करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी मुतकब्बिर और इतराने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाता । (4) एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें न सुने और न ही

1.....इह़याउल उ़लूम, 3 / 218

किसी की बात दूसरों तक पहुंचाए। (5) जिस मुसलमान के साथ जान पहचान है अगर उस के साथ नाराज़ी हो जाए तो तीन दिन से ज़ियादा बोल चाल तर्क न करे। (6) जिस क़दर मुमकिन हो हर मुसलमान के साथ अच्छा सुलूक करे ख़्वाह वोह हुस्ने सुलूक का मुस्तहिक़ हो या न हो। (7) किसी मुसलमान के हां इजाज़त लिये बिग़ैर दाख़िल न हो बल्कि तीन बार इजाज़त त़लब करे अगर इजाज़त न मिले तो वापस लौट जाए। (8) हर एक से हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आए और उन के मक़ामो मर्तबे का ख़याल रखते हुए उन से मुआमलात करे क्यूंकि अगर वोह जाहिल के साथ इल्मी, अनपढ़ के साथ फ़िक़्ही और कम पढ़े लिखे के साथ फ़साहतो बलाग़त से भरपूर गुफ़्तगू करेगा तो उन्हें भी तक्लीफ़ देगा और ख़ुद भी तक्लीफ़ उठाएगा। (9) बड़ों के साथ इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से पेश आए और बच्चों पर शफ़्क़त व मेह्रबानी का मुआमला करे। (10) तमाम मख़्लूक़ के साथ हश्शाश बश्शाश नर्म मिज़ाज रहे। (11) किसी मुसलमान के साथ वा'दा करे तो वफ़ा करे। (12) लोगों के साथ अपनी त़रफ़ से मुनसिफ़ाना रवय्या अपनाए और उन्हें वोह न दे जो ख़ुद नहीं लेना चाहता। (13) जिस शख़्स की हैअत और कपड़े उस के बुलन्द मर्तबा होने पर दलालत करते हैं उस शख़्स की इ़ज़्ज़तो इकराम ज़ियादा करे और लोगों के साथ उन के मक़ामो मर्तबे के मुत़ाबिक़ पेश आए। (14) जिस क़दर मुमकिन हो मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ करवाए। (15) मुसलमानों की पर्दापोशी करे। (16) तोह्मत की जगहों से बचे ताकि लोगों के दिल उस के बारे में बद गुमानी का शिकार न हों और ज़बानें उस की ग़ीबत करने से मह़फ़ूज़ रहें, क्यूंकि जब लोग उस की ग़ीबत की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के मुर्तकिब होंगे तो वोह उस ना फ़रमानी का सबब होने की वज्ह

www.dawateislami.net

से उस में शरीक होगा। (17) हर ह़ाजत मन्द मुसलमान की अपनी वजाहत के बाइस जाइज़ सिफ़ारिश करे और जिस क़दर मुमकिन हो उस की ह़ाजत रवाई की कोशिश करे। (18) हर मुसलमान के साथ बात करने से पहले सलाम करे और सलाम के वक़्त मुसाफ़ह़ा करे। (19) जहां तक मुमकिन हो अपने मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त और उस के जानो माल को दूसरों के ज़ुल्मो सितम से मह़फ़ूज़ रखे। अपनी ज़बान और हाथ के ज़रीए़ उस का दिफ़ाअ़ करे और उस की मदद करे क्यूंकि इस्लामी भाईचारा इसी बात का तक़ाज़ा करता है। (20) मुसलमान की छींक का जवाब दे। (21) अगर किसी शरीर से सामना हो जाए तो तह़म्मुल मिज़ाजी से काम ले और उस के शर से बचे। (22) अग़निया के साथ मेल जोल से इजतिनाब करे, मसाकीन के साथ मेल रखे और यतीमों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आए। (23) हर मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही करे और उस के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की कोशिश करे। (24) मुसलमान की इ़यादत करे। (25) मुसलमानों के जनाज़े में शिर्कत करे। (26) क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत करे।[1]

एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के चार ﴾4﴿ त़रीक़े

(1) **एह़तिरामे मुस्लिम की फ़ज़ीलत पर ग़ौर कीजिये :** मुसलमानों की इ़ज़्ज़त व आबरू की ह़िफ़ाज़त करना और उन का एह़तिराम करना बहुत फ़ज़ीलत की बात है, हर मुसलमान का दूसरे मुसलमान के साथ इस्लामी रिश्ता है जिस की वज्ह से उस पर लाज़िम है कि वोह अपने मुसलमान भाई का इकराम करे और उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे और हमेशा उस की बे ह़ुरमती से बचता रहे और अगर कोई दूसरा शख़्स मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करे या उसे तक्लीफ़ पहुंचाए तो मुसलमान पर

[1].....इह़याउल उ़लूम, 2 / 704 ता 760 मुल्तक़त़न।

लाज़िम है कि वोह अपने मुसलमान भाई की मदद करे और उस की इ़ज़्ज़त पामाल न होने दे। चुनान्चे, हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपने मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस से जहन्नम का अ़ज़ाब दूर फ़रमा देगा।" इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾﴾ (پ ٢١، الروم: ٤٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।"(1)

(2) **मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करने की वई़दों पर ग़ौर कीजिये :** मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करना बहुत बुरा फ़े'ल है और इस की बहुत मज़म्मत बयान की गई है। बे इ़ज़्ज़ती करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं : मुसलमान का मज़ाक़ उड़ाना, गाली देना, चुग़ली लगाना, बोहतान तराशी करना, जहां उस की इ़ज़्ज़त की जाती हो वहां उसे ज़लील करना, ग़ीबत करना या उस की ग़ीबत हो रही हो तो क़ुदरत के बा वुजूद न रोकना भी बे इ़ज़्ज़ती में शामिल है। अगर किसी मुसलमान को ज़लीलो रुस्वा किया जा रहा हो तो दूसरे मुसलमान पर लाज़िम है कि उस का दिफ़ाअ़ करे अगर क़ुदरत के बा वुजूद उस की हिमायत नहीं करेगा तो ख़ुद भी गुनाहगार होगा। (1) हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सूद 70 गुनाहों का मजमूआ़ है और इन में सब से कम येह है कि कोई शख़्स अपनी मां से बदकारी करे और सूद से बढ़ कर गुनाह मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।"(2) (2) फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस के सामने उस के मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और वोह उस

---

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب وغيره، باب الترهيب من الغيبة ــــ الخ، ٣/٨٠٤، حديث: ٤٣٧١-

2 ......موسوعه ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت ــــ الخ، باب الغيبة وذمها، ٧/١٢٤، حديث: ١٧٣-

www.dawateislami.net

की मदद पर क़ादिर हो और मदद करे, **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस की मदद करेगा और अगर बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद नहीं की तो **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उसे पकड़ेगा।"[1]

(3) **हुक़ूक़ुल इबाद अदा करने का ज़ेह्न बनाइये :** हुक़ूक़ुल इबाद की इस्लाम में बड़ी अहम्मिय्यत है और इन की अदाएगी पर बहुत ज़ोर दिया गया है। एह्तिरामे मुस्लिम सह़ीह़ तौर पर बजा लाने के लिये मुसलमानों के हुक़ूक़ की अदाएगी बहुत ज़रूरी है और इन हुक़ूक़ में वालिदैन, बहन भाई, रिश्तेदार, पड़ोसी, दोस्त अह़बाब के हुक़ूक़ भी शामिल हैं अगर बन्दा इन तमाम हुक़ूक़ को कामिल तौर पर अदा करने का ज़ेह्न बनाए तो इस के सबब उस के दिल में एह्तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार होगा क्यूंकि येह ही वोह तमाम हुक़ूक़ हैं जिन को पूरा करने से एह्तिरामे मुस्लिम अदा होता है।

(4) **हुस्ने अख़्लाक़ अपनाइये :** हुस्ने अख़्लाक़ ऐसी सिफ़त है कि जो एह्तिरामे मुस्लिम की अस्ल है क्यूंकि हुस्ने अख़्लाक़ अच्छाइयों की जामेअ़ है, हुस्ने अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ इन्सान ईसार, दिलजूई, सख़ावत, बुर्दबारी, तह़म्मुल मिज़ाजी, हमदर्दी, अख़ुव्वत व रवादारी जैसी आ'ला सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होता है और येह ही वोह सिफ़ात हैं जिन से इन्सान में एह्तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार होता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾39﴿...मुख़ालफ़ते शैत़ान

मुख़ालफ़ते शैत़ान की ता'रीफ़

अल्लाह तआ़ला की इबादत कर के शैत़ान से दुश्मनी करना,

1 ......مصنف عبد الرزاق، باب الاغتیاب والشتم، ۱۰/۱۸۸، حدیث: ۲۲۸۵-

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में शैत़ान की पैरवी न करना और सिद्क़े दिल से हमेशा अपने अ़क़ाइदो आ'माल की शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करना मुख़ालफ़ते शैत़ान है।[1]

आयते मुबारका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّیْطٰنِؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ۝۱۶۸﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" एक और मक़ाम पर फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّاؕ﴾ (پ۲۲، فاطر:۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो।"

﴿ह़दीसे मुबारका﴾ शैत़ान की मुख़ालफ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हमें समझाने के लिये एक लकीर खींची और इरशाद फ़रमाया : "येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रास्ता है, फिर उस लकीर के दाएं बाएं मुतअ़द्दद लकीरें खींचीं और इरशाद फ़रमाया : "येह मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं, इन में से हर एक पर एक शैत़ान है जो लोगों को इस पर चलने की दा'वत देता है।" फिर येह आयत तिलावत फ़रमाई : ﴿وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ﴾ (پ۸، الانعام:۱۵۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और, और राहें न चलो।[2]

1.....मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 110 माख़ूज़न।

2.....سنن کبری للنسائی، کتاب التفسیر، باب سورۃ الانعام، ۶/۳۴۳، حدیث: ۱۱۱۷۴۔

www.dawateislami.net

मुख़ालफ़ते शैत़ान का हुक्म

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "शैत़ान मर्दूद की मुख़ालफ़त अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचा देती है और अल्लाह तआ़ला के औलिया के साथ जन्नत में आ'ला मक़ाम अ़त़ा कर देती है और उस मक़ाम पर पहुंचा देती है कि तुम रब्बुल आ़लमीन की ज़ियारत कर सकोगे।"(1)

41 हिकायत मौत के वक़्त शैत़ान की मुख़ालफ़त

ज़करिय्या नाम का एक मश्हूर ज़ाहिद गुज़रा है, शदीद बीमारी के बा'द जब उस पर सकरात का आ़लम त़ारी हुवा तो उस के दोस्त ने उसे कलिमे की तल्क़ीन की मगर उस ने मुंह दूसरी त़रफ़ फेर लिया, दोस्त ने दूसरी मरतबा तल्क़ीन की लेकिन उस ने इधर से उधर मुंह फेर लिया, जब उस ने तीसरी मरतबा तल्क़ीन की तो उस ज़ाहिद ने कहा : "मैं नहीं कहता।" दोस्त येह सुनते ही बेहोश हो गया, कुछ देर बा'द जब ज़ाहिद को कुछ इफ़ाक़ा हुवा, उस ने आंखें खोलीं और पूछा : तुम ने मुझ से कुछ कहा था ? उन्हों ने कहा : हां, मैं ने तुम को कलिमे की तल्क़ीन की थी मगर तुम ने दो मरतबा मुंह फेर लिया और तीसरी मरतबा कहा : "मैं नहीं कहता।" ज़ाहिद ने कहा : बात येह है कि मेरे पास शैत़ान पानी का प्याला ले कर आया और दाईं त़रफ़ खड़ा हो कर मुझे वोह पानी दिखाते हुए कहने लगा तुम्हें पानी की ज़रूरत है ? मैं ने कहा : हां ! कहने लगा : कहो : "ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) अल्लाह के बेटे हैं।" मैं ने मुंह फेर लिया तो दूसरे रुख़ की त़रफ़ से आ कर कहने लगा मैं ने मुंह फेर लिया, जब उस ने तीसरी मरतबा "ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) अल्लाह के बेटे हैं।" कहने को कहा तो मैं ने कहा : "मैं नहीं कहता।" इस पर वोह पानी का प्याला ज़मीन पर पटख़ कर भाग

1 ......بستان الواعظین، مجلس فی الاستعاذۃ، ص ۲۷۔

www.dawateislami.net

गया। मैं ने तो येह लफ़्ज़ शैत़ान से कहे थे, तुम से तो नहीं कहे थे। फिर वोह कलिमए शहादत का ज़िक्र करने लगा।[1]

शैत़ान की मुख़ालफ़त पर उभारने के छ ﴾6﴿ त़रीक़े

(1) **शैत़ान के मक़ासिद पर ग़ौर कीजिये :** शैत़ान की मुख़ालफ़त पर कमरबस्ता होने के लिये ज़रूरी है कि हमें उस के मक़ासिद मा'लूम हों क्यूंकि जब हमें उस के नापाक अ़ज़ाइम का इ़ल्म होगा तो हमारे दिल में उस के लिये नफ़रत पैदा होगी और उस की मुख़ालफ़त का ज़ेह्न बनेगा। शैत़ान के चन्द मक़ासिद हैं : (1) बन्दे से उस का ईमान छीनना ताकि वोह दाइमी त़ौर पर जहन्नम का ह़क़दार बन जाए, अगर ईमान न छीन सके तो फिर उस का मक़्सद होता है कि (2) बन्दे को फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला करे, अगर येह अपने इस मक़्सद में भी कामयाब न हो तो फिर उस की कोशिश येह होती है कि (3) बन्दे को नेक आ'माल से रोके ताकि वोह आ'ला मर्तबे को न पहुंच सके। लिहाज़ा इन्सान को शैत़ान के मज़्मूम मक़ासिद अपने ज़ेह्न में रखने चाहियें ताकि दिल में उस की मुख़ालफ़त का जज़्बा पैदा हो।[2]

(2) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत कीजिये :** शैत़ान अल्लाह तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दुश्मन है इसी लिये वोह हमारा भी दुश्मन है और हमें उस की मुख़ालफ़त करनी है, जब हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मह़ब्बत करेंगे तो उन की इत़ाअ़त करेंगे और उन की इत़ाअ़त ही शैत़ान की मुख़ालफ़त है।

(3) **नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** सोह़बत इन्सान की ज़िन्दगी पर बड़ा गहरा असर डालती है अगर बन्दा गुनाहों में मुन्हमिक रहने वाले अफ़राद की सोह़बत में बैठेगा तो उस के लिये ख़ुद को गुनाहों से

---

1 .....मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 124

2 .....इस्लाहे आ'माल, 1 / 197 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

बचाना और अच्छे आ'माल कर के शैत़ान की मुख़ालफ़त करना बहुत दुश्वार होगा लेकिन अगर बन्दा नेक लोगों की सोहबत इख़्तियार करेगा तो उस के लिये नेकियां करना और बुराइयों से बच कर शैत़ान की मुख़ालफ़त करना आसान होगा। लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि बुरे लोगों की सोह़बत से बचता रहे और हमेशा नेक परहेज़गार लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे।

(4) **शैत़ान के फ़रेब को जानने की कोशिश कीजिये :** शैत़ान की मुख़ालफ़त करने के लिये उस के मक्रो फ़रेब को जानना बहुत ज़रूरी है, बा'ज़ अवक़ात शैत़ान नेकी की आड़ में बुराई को पेश करता है क्यूंकि जब वोह ब ज़ाहिर बन्दे को गुनाह की त़रफ़ बुलाने पर क़ादिर नहीं होता तो गुनाह को नेकी की सूरत में पेश करता है और बन्दे को गुनाह में मश्ग़ूल होने का इ़ल्म ही नहीं होता। मसलन आ़लिम को नसीह़त के पैराए में कहता है : क्या तुम ख़ल्क़े ख़ुदा की त़रफ़ नज़र नहीं करते कि वोह जहालत की वज्ह से तबाह हुए जा रहे हैं और ग़फ़्लत की वज्ह से हलाकत के क़रीब पहुंच गए हैं, क्या तुम उन्हें हलाकत से नहीं बचाओगे ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इ़ल्म, फ़सीह़ ज़बान और बेहतरीन अन्दाज़ से नवाज़ा है तुम्हें लोगों को वा'ज़ो नसीह़त करनी चाहिये, इस त़रह़ पहले वोह बन्दे को नेकी की दा'वत देने पर राज़ी करता है फिर आहिस्ता आहिस्ता उस के दिल में रियाकारी, ख़ुद पसन्दी, तकब्बुर व ग़ुरूर, ह़ुब्बे जाह और दीगर बात़िनी बुराइयां पैदा कर देता है और उसे इस का इ़ल्म ही नहीं होता, बन्दा अपने गुमान में नेकी कर रहा होता है लेकिन दर ह़क़ीक़त वोह गुनाहों के दलदल में धंसता चला जाता है, लिहाज़ा शैत़ान की मुख़ालफ़त करने के लिये उस के मक्रो फ़रेब का इ़ल्म ह़ासिल करना चाहिये ताकि उस से बचा जा सके।

(5) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का ज़िक्र कीजिये :** शैत़ान की मुख़ालफ़त करने और गुनाहों से बचने के लिये उस के वस्वसों से नजात ह़ासिल करना ज़रूरी है और शैत़ानी वस्वसों से नजात का बेहतरीन ज़रीआ़ **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र है । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शैत़ान इब्ने आदम के दिल पर अपनी सूंड रखे हुए होता है अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो पीछे हट जाता है और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भूल जाए तो फ़ौरन उस के दिल पर ग़ालिब आ जाता है ।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना कै़स बिन ह़ज्जाज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे शैत़ान ने मुझ से कहा : "मैं तुम में दाख़िल होते वक़्त फ़र्बा ऊंटनी की मानिन्द था और अब चिड़या की त़रह़ हो गया हूं ।" मैं ने पूछा : "ऐसा क्यूं ?" उस ने कहा : "तुम ज़िक्रुल्लाह के ज़रीए मुझे पिघलाते रहते हो ।"[2]

(6) **भूक से कम खाइये :** पेट भर कर खाना शैत़ान की मुख़ालफ़त में रुकावट बनता है क्यूंकि खाना अगर्चे ह़लाल और शुबे से पाक हो मगर उसे पेट भर कर खाने से शहवात को तक़्विय्यत मिलती है और शहवात शैत़ान के हथियार हैं । मन्क़ूल है कि ज़ियादा खाने में छ ख़राबियां हैं : (1) दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ निकल जाता है । (2) दिल में मख़्लूक़ के लिये कुछ बाक़ी नहीं रहता क्यूंकि वोह सभी को पेट भरा गुमान करता है । (3) इबादत बोझ मह़सूस होने लगती है । (4) इल्मो ह़िक्मत की बात सुन कर दिल में रिक़्क़त पैदा नहीं होती । (5) ख़ुद ह़िक्मतो नसीह़त की बात करता है तो लोगों के दिलों पर इस का असर नहीं होता और (6) इस के सबब कई बीमारियां पैदा हो जाती हैं ।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......موسوعہ ابن ابی الدنیا، کتاب مکائد الشیطان، ۴/۵۳۶، حدیث: ۲۲۔

2 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 95

3 .....इह़याउल उ़लूम, 3 / 102

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	6
अल मदीनतुल इल्मिय्या	7
नजात दिलाने वाले आ'माल (पेशे लफ़्ज़)	9
39 नजात दिलाने वाले आ'माल की ता'रीफ़ात	12
(1).....निय्यत	19
निय्यत की ता'रीफ़	19
आयते मुबारका	19
अहादीसे मुबारका	19
निय्यत के मुतफ़र्रिक़ अहकाम	20
1 हिकायत अच्छी निय्यत की वज्ह से बख़्शिश हो गई	22
"आमिले निय्यत" बनने के आठ (8) तरीक़े	22
(2).....इख़्लास	25
इख़्लास की ता'रीफ़	25
आयते मुबारका	26
(हदीसे मुबारका) इख़्लास के साथ थोड़ा अमल भी काफ़ी	26
इख़्लास का हुक्म	26
2 हिकायत इख़्लास के साथ इबादत करने वाला गुलाम	27
इख़्लास पैदा करने के ग्यारह (11) तरीक़े	29
(3).....शुक्र	34
शुक्र की ता'रीफ़	34
आयते मुबारका	34
(हदीसे मुबारका) दुन्या व आख़िरत की भलाइयां	35
शुक्र के मुख़्तलिफ़ अहकाम	35
3 हिकायत मा'ज़ूरी में भी शुक्र अदा करने वाला नेक शख़्स	36
शुक्र की आदत अपनाने के सात (7) तरीक़े	41
(4).....सब्र	44
सब्र की ता'रीफ़	44
आयते मुबारका	45
(हदीसे मुबारका) साबिर के लिये उख़रवी इन्आम	45
सब्र करने के मुख़्तलिफ़ अहकाम	45
4 हिकायत बिच्छू के काटने पर सब्र	47
सब्र की आदत बनाने के सात (7) तरीक़े	47
(5).....हुस्ने अख़्लाक़	49
हुस्ने अख़्लाक़ की एक पहलू के ए'तिबार से ता'रीफ़	49
हुस्ने अख़्लाक़ में शामिल नेक आ'माल	50
आयते मुबारका	50
(हदीसे मुबारका) मीज़ाने अमल में सब से वज़्नी शै	51
हुस्ने अख़्लाक़ का हुक्म	51
5 हिकायत नवासए रसूल का कमाले हुस्ने अख़्लाक़	51
हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने के दस (10) तरीक़े	53
(6).....मुहासबए नफ़्स (फ़िक्रे मदीना)	57
मुहासबए नफ़्स की ता'रीफ़	57
आ'माल से क़ब्ल और बा'द मुहासबे की नफ़ीस वज़ाहत	57
मुहासबए नफ़्स, फ़िक्रे मदीना, दा'वते इस्लामी	58
आयते मुबारका	58
(हदीसे मुबारका) समझदार कौन ?	59
मुहासबए नफ़्स का हुक्म	59
6 हिकायत मुहासबए नफ़्स करने वाला खुश नसीब	59

www.dawateislami.net

मुहासबा करने और इस का ज़ेहन बनाने के बारह त़रीक़े	60	10 हिकायत सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की आ़जिज़ी व इन्किसारी	83
(7).....मुराक़बा करना	66	आ़जिज़ी का ज़ेहन बनाने और अपनाने के ग्यारह त़रीक़े	84
मुराक़बे की ता'रीफ़	66	(11)....तज़्किरए मौत	89
आयते मुबारका	66	तज़्किरए मौत की ता'रीफ़	89
(ह़दीसे मुबारका) मुराक़बे की मुबारक ता'लीम	67	आयते मुबारका	89
मुराक़बे का हुक्म	67	(ह़दीसे मुबारका) लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत की याद	90
7 हिकायत मुराक़बा करने वाला शागिर्द	68	तज़्किरए मौत का हुक्म	90
मुराक़बा करने के पांच (5) त़रीक़े	69	11 हिकायत मौत की याद	92
(8).....मुजाहदा करना	70	तज़्किरए मौत का ज़ेहन बनाने और करने के ग्यारह (11) त़रीक़े	93
मुजाहदे की ता'रीफ़	70	(12).....हुस्ने ज़न	98
आयते मुबारका	70	हुस्ने ज़न की ता'रीफ़	98
(ह़दीसे मुबारका) मुजाहदए नफ़्स करने वाले सह़ाबी	71	आयते मुबारका	98
मुजाहदे का हुक्म	72	(ह़दीसे मुबारका) मुसलमान के साथ हुस्ने ज़न रखने की ह़ुरमत	99
8 हिकायत सुस्ती दिलाने पर नफ़्स को अनोखी सज़ा	72	हुस्ने ज़न का हुक्म	99
मुजाहदा करने और इस का आ़दी बनने के छ त़रीक़े	73	12 हिकायत हुस्ने ज़न की बरकत से शिफ़ा मिल गई	100
(9).....क़नाअ़त	75	हुस्ने ज़न का ज़ेहन बनाने और हुस्ने ज़न क़ाइम करने के नव (9) त़रीक़े	101
क़नाअ़त की ता'रीफ़	75	(13).....तौबा	105
आयते मुबारका	76	तौबा की ता'रीफ़	105
(ह़दीसे मुबारका) क़नाअ़त पसन्द रब का मह़बूब है	76	आयते मुबारका	106
क़नाअ़त का हुक्म	76	(ह़दीसे मुबारका) तौबा करने वाला रब तआला को पसन्द है	106
9 हिकायत रोटी के टुकड़े के सबब क़नाअ़त इख़्तियार कर ली	77	तौबा का हुक्म	107
क़नाअ़त का ज़ेहन बनाने और इसे इख़्तियार करने के आठ (8) त़रीक़े	77	गुनाहों से तौबा करने का त़रीक़ा	107
(10).....आ़जिज़ी व इन्किसारी	81	13 हिकायत तौबा व इस्तिग़फ़ार व मुजाहदे के सबब रूह़ परवाज़ कर गई	108
आ़जिज़ी व इन्किसारी की ता'रीफ़	81		
आयते मुबारका	81		
(ह़दीसे मुबारका) आ़जिज़ी करने वाले के लिये बुलन्दी	82		
आ़जिज़ी व इन्किसारी का हुक्म	82		

www.dawateislami.net

तौबा में ताख़ीर की सात वुजूहात और इन का हल	109
तौबा करने का ज़ेहन बनाने के छ (6) तरीक़े	112
तौबा पर इस्तिक़ामत पाने के छ (6) तरीक़े	114
गुनाहों से तौबा करने का तरीक़ा	116
तजदीदे ईमान का तरीक़ा	119
तौबा करने का एक तरीक़ा	120
(14).....सालिहीन से महब्बत	121
सालिहीन से महब्बत की ता'रीफ़	121
आयाते मुबारका	121
अहादीसे मुबारका	123
सालिहीन से महब्बत का हुक्म	123
14 हिकायत नेक लोगों की सोहबत के अहवाल	124
15 हिकायत सय्यिदुना उवैसे क़रनी से महब्बत और इन की सोहबत	124
सालिहीन से महब्बत पैदा करने के चार तरीक़े	127
(15)..... अल्लाह व रसूल की इताअत	129
अल्लाह व रसूल की इताअत की ता'रीफ़	129
आयते मुबारका	129
अहादीसे मुबारका	129
अल्लाह व रसूल की इताअत का हुक्म	130
16 हिकायत सारी उम्र इताअत में गुज़ार दी मगर !	130
इताअत का जज़्बा पैदा करने, इताअत करने के नव (9) तरीक़े	131
(16).....दिल की नर्मी	135
दिल की नर्मी की ता'रीफ़	135
आयते मुबारका	135
(अहादीसे मुबारका) नर्म दिल पाक दामन ग़नी की फ़ज़ीलत	135
दिल की नर्मी का हुक्म	136
17 हिकायत दुआ की बरकत से दिल की सख़्ती दूर हो गई	136
दिल में नर्मी पैदा करने के दस तरीक़े	137
(17)......ख़ल्वत व गोशा नशीनी	142
ख़ल्वत व गोशा नशीनी की ता'रीफ़	142
आयते मुबारका	143
(हदीसे मुबारका) ख़ल्वत व गोशा नशीनी ज़रीअ़ए नजात है	144
ख़ल्वत व गोशा नशीनी के अहकाम	144
18 हिकायत ख़ल्वत के फ़वाइद ख़ल्वत नशीन राहिब की ज़बानी	147
ख़ल्वत इख़्तियार करने के नव (9) तरीक़े	150
(18).....तवक्कुल	157
तवक्कुल की ता'रीफ़	157
आयते मुबारका	158
(हदीसे मुबारका) रब तआ़ला पर कामिल तवक्कुल करने का इन्आ़म	158
तवक्कुल के अहकाम	158
19 हिकायत तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है	160
तवक्कुल का ज़ेहन बनाने और तवक्कुल पैदा करने के ग्यारह (11) तरीक़े	161
(19).....ख़ुशूअ़	167
ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़	167
आयते मुबारका	167
(हदीसे मुबारका) जिस दिल में ख़ुशूअ़ न हो उस से पनाह	168
ख़ुशूअ़ का हुक्म	168
20 हिकायत हर वक़्त ख़ुशूअ़ में डूबे रहते	169
21 हिकायत नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़	170
आ'माल में ख़ुशूअ़ पैदा करने के सात तरीक़े	170
(20).....ज़िक्रुल्लाह	173

ज़िक्रुल्लाह की ता'रीफ़	173	ख़ौफ़े ख़ुदा का हुक्म	201
ज़िक्रुल्लाह की मुख़्तलिफ़ अक़्साम	173	25 हिकायत ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इन्तिक़ाल	
आयते मुबारका	175	करने वाला जवान	202
(हदीसे मुबारका) सब से ज़ियादा महबूब अमल	175	ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने के आठ (8) तरीक़े	203
ज़िक्रुल्लाह का हुक्म	175	**(24).....ज़ोहद (दुन्या से बे रग़बती)**	209
22 हिकायत एक या अल्लाह में सो (100) लब्बैक	176	ज़ोहद की ता'रीफ़	209
ज़िक्रुल्लाह का ज़ेहन बनाने और करने के तेरह (13) तरीक़े	177	हक़ीक़ी ज़ाहिद की ता'रीफ़	209
(21).....राहे ख़ुदा में ख़र्च करना	183	आयते मुबारका	211
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की ता'रीफ़	183	(हदीसे मुबारका) ज़ोहद इख़्तियार करने वाले की	
आयते मुबारका	183	फ़ज़ीलत	211
(हदीसे मुबारका) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाला		ज़ोहद का हुक्म	212
क़ाबिले रश्क है	184	26 हिकायत रसूले ख़ुदा का इख़्तियारी ज़ोहद	213
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म	184	ज़ोहद का ज़ेहन बनाने और इख़्तियार करने के नव	
23 हिकायत सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का		तरीक़े	214
राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना	184	**(25).....उम्मीदों की कमी**	219
राहे ख़ुदा में ख़र्च का ज़ेहन बनाने और ख़र्च करने		उम्मीदों की कमी की ता'रीफ़	219
के चौदह (14) तरीक़े	187	आयते मुबारका	219
(22).....अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहना	193	(हदीसे मुबारका) उम्मीदों में कमी दुख़ूले जन्नत का	
अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने की ता'रीफ़	193	सबब	220
रिज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ सूरतें	193	उम्मीदों की कमी का हुक्म	220
आयते मुबारका	194	27 हिकायत सिह्हत धोके में मुब्तला न करे	220
(हदीसे मुबारका) रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने		उम्मीदों में कमी का ज़ेहन बनाने और कमी करने के	
वाले मोमिन	194	नव (9) तरीक़े	221
अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने का हुक्म	195	**(26).....सिद्क़ (सच बोलना)**	227
24 हिकायत सब्रो रिज़ा ने गिरिफ़्तारी से बचा लिया	195	सिद्क़ की ता'रीफ़	227
अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहने के नव (9) तरीक़े	196	आयते मुबारका	227
(23).....ख़ौफ़े ख़ुदा	200	(हदीसे मुबारका) सच जन्नत की तरफ़ ले जाता है	227
ख़ौफ़े ख़ुदा की ता'रीफ़	200	सच बोलने का हुक्म	228
आयते मुबारका	200	28 हिकायत सच बोलने की बरकत	228
(हदीसे मुबारका) हिक्मत ही अस्ल ख़ौफ़े ख़ुदा है	201	सच बोलने का ज़ेहन बनाने और सच बोलने के	

नव (9) त़रीके़	229	(30).....रिज़ाए इलाही	250
(27).....हमदर्दिये मुस्लिम	233	रिज़ाए इलाही की ता'रीफ़	250
हमदर्दिये मुस्लिम की ता'रीफ़	233	आयते मुबारका	250
आयते मुबारका	234	(ह़दीसे मुबारका) जन्नत में भी रिज़ाए इलाही का सुवाल	251
(ह़दीसे मुबारका) मुसीबत ज़दा से ग़मख़्वारी की फ़ज़ीलत	235	रिज़ाए इलाही का हुक्म	251
हमदर्दिये मुस्लिम का हुक्म	235	32 हिकायत रिज़ाए इलाही पर राज़ी	252
29 हिकायत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और दुख्यारों की ग़मख़्वारी	235	अपने अ़मल में रिज़ाए इलाही चाहने के चार त़रीके़	252
हमदर्दी का ज़ेहन बनाने और हमदर्दी की आ़दत अपनाने के सात (7) त़रीके़	237	(31).....शौके़ इबादत	253
(28).....रजा (रह़मते इलाही से उम्मीद)	239	शौके़ इबादत की ता'रीफ़	253
रजा की ता'रीफ़	239	आयते मुबारका	253
ह़क़ीक़ी उम्मीद	239	(ह़दीसे मुबारका) उम्रे दुन्या रब तआ़ला के ज़िम्मए करम पर	254
रजा की अक़्साम और इन के अह़काम	240	शौके़ इबादत पर तम्बीह	254
आयते मुबारका	240	33 हिकायत इबादते इलाही के शौक़ में तक्लीफ़ का एह़सास न हुवा	254
(ह़दीसे मुबारका) अच्छा गुमान रखते हुए मरना	241	शौके़ इबादत का ज़ेहन बनाने और शौक़ पैदा करने के 7 त़रीके़	254
रजा का हुक्म	241	(32).....ग़ना (लोगों से बे नियाज़ी)	257
30 हिकायत अच्छी उम्मीद के सबब मग़्फ़िरत	242	ग़ना की ता'रीफ़	257
रजा (या'नी अच्छी उम्मीद) का ज़ेहन बनाने और इस के ह़ुसूल के 5 त़रीके़	243	आयते मुबारका	257
(29).....मह़ब्बते इलाही	246	(ह़दीसे मुबारका) मुख़्तसर सी नसीह़त	257
मह़ब्बते इलाही की ता'रीफ़	246	ग़ना के बारे में तम्बीह	257
आयते मुबारका	246	34 हिकायत क़नाअ़त और इस्तिग़्ना की दौलत	257
(ह़दीसे मुबारका) ईमान क्या है ?	247	ग़ना पैदा करने और इस का ज़ेहन बनाने के 8 त़रीके़	260
मह़ब्बते इलाही का हुक्म	247	(33).....क़बूले ह़क़	263
31 हिकायत सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَه और मह़ब्बते इलाही	247	क़बूले ह़क़ की ता'रीफ़	263
मह़ब्बते इलाही पैदा करने के नव त़रीके़ और अस्बाब	248	आयते मुबारका	263
		(ह़दीसे मुबारका) क़बूले ह़क़ पर मजबूर करना	263

www.dawateislami.net

क़बूले हक़ के बारे में तम्बीह	263	का सिला	282
35 हिकायत क़बूले हक़ की आ'ला तरीन मिसाल	264	महब्बते मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के	
काश हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले		चार तरीक़े	283
बन जाएं	265	(37)......अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना	285
क़बूले हक़ का ज़ेहन बनाने और इस की		अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने की ता'रीफ़	285
रुकावटों को दूर करने के 8 तरीक़े	265	आयते मुबारका	285
(34)......माल से बे रग़बती	268	(ह़दीसे मुबारका) गुनाह पर क़ाइम रहने वाले	
माल से बे रग़बती की ता'रीफ़	268	के बारे में ख़ुफ़्या तदबीर	286
माल से बे रग़बती का कमाल दरजा	268	अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने का हुक्म	286
आयते मुबारका	268	39 हिकायत अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से पनाह	286
(ह़दीसे मुबारका) मौत ना पसन्द क्यूं ?	269	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने का	
माल से बे रग़बती के मुतअ़ल्लिक़ तम्बीह	269	ज़ेहन बनाने के 6 तरीक़े	288
36 हिकायत अमीनुल उम्मह और हज़रते		(38).....एह़तिरामे मुस्लिम	291
मुआ़ज़ की माल से बे रग़बती	269	एह़तिरामे मुस्लिम की ता'रीफ़	291
माल से बे रग़बती का ज़ेहन बनाने और इसे		आयते मुबारका	292
इख़्तियार करने के 9 तरीक़े	271	(ह़दीसे मुबारका) एह़तिरामे मुस्लिम की तरग़ीब	293
(35).....ग़िब्ता (रश्क)	275	एह़तिरामे मुस्लिम का हुक्म	293
ग़िब्ता की ता'रीफ़	275	40 हिकायत एह़तिरामे मुस्लिम का अ़ज़ीम जज़्बा	293
आयते मुबारका	275	मुसलमानों के हुक़ूक़ की तफ़्सील	294
(ह़दीसे मुबारका) दो शख़्सों पर रश्क	275	एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के	
ग़िब्ता (रश्क) का हुक्म	276	4 तरीक़े	296
37 हिकायत सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का रश्क	277	(39).....मुख़ालफ़ते शैत़ान	298
रश्क करने के चार मवाक़ेअ़	277	मुख़ालफ़ते शैत़ान की ता'रीफ़	298
रश्क करने का जज़्बा ह़ासिल करने के तीन तरीक़े	279	आयते मुबारका	299
(36).....मह़ब्बते मुस्लिम	280	(ह़दीसे मुबारका) शैत़ान की मुख़ालफ़त	299
मह़ब्बते मुस्लिम की ता'रीफ़	280	मुख़ालफ़ते शैत़ान का हुक्म	300
आयते मुबारका	281	41 हिकायत मौत के वक़्त शैत़ान की मुख़ालफ़त	300
(ह़दीसे मुबारका) मह़ब्बत रखने वालों का इन्आ़म	281	शैत़ान की मुख़ालफ़त पर उभारने के 6 तरीक़े	301
मह़ब्बते मुस्लिम का हुक्म	282	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	304
38 हिकायत अल्लाह के लिये भाई से मह़ब्बत		मआख़िज़ो मराजेअ़	310

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ़

قرآن مجید	کلام الٰہی	----
نام کتاب	**مؤلف/مصنف/متوفی**	**مطبوعات**
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تفسیر نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی کراچی
تفسیر صراط الجنان	مفتی ابو الصالح محمد قاسم قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مصنف ابن ابی شیبۃ	حافظ عبد اللہ محمد بن ابی شیبہ کوفی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند امام احمد	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل شیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف ۱۴۱۹ھ
سنن ابن ماجۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
السنن الکبریٰ	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۱ھ
سنن الدارمی	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
مسند ابی یعلیٰ	شیخ الاسلام ابو یعلیٰ احمد بن علی بن مثنیٰ موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
نوادر الاصول	امام ابو عبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری ۱۴۲۹ھ
صحیح ابن حبان	حافظ ابو حاتم محمد بن حبان تمیمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
حلیۃ الاولیاء	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مسند الفردوس	حافظ ابو شجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین خطیب تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
الادب المفرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ۱۳۹۰ھ
جامع العلوم والحکم	ابو الفرج عبد الرحمن ابن رجب حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیہ مکہ مکرمہ
غریب الحدیث	امام قاسم بن سلام بن عبد اللہ ہروی بغدادی، متوفی ۲۲۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ

كنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرء وف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
نزہۃ القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفی	فرید بک سٹال لاہور ۱۴۱۹ھ
شرح اعتقاد اھل السنة	حافظ ابو القاسم ھبة اللہ بن حسن طبری لالکائی، متوفی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ الاسکندریہ مصر
کتاب الشریعة	امام ابو بکر محمد بن حسین آجری، متوفی ۳۶۰ھ	دار الوطن، عرب شریف ۱۴۱۸ھ
رد المحتار مع الدر المختار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوی ھندیہ	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الھند	دار الفکر بیروت ۱۴۱۱ھ
فتاوی رضویہ (قدیم)	اعلی حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبہ رضویہ کراچی ۱۴۲۱ھ
فتاوی رضویہ	اعلی حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
الموسوعة لابن ابی الدنیا	عبد اللہ بن محمد بغدادی معروف بابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہلسنت ہند ۱۴۲۳ھ
الرسالة القشیریة	امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن قشیری، متوفی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
کشف المحجوب	حضور داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری متوفی ۵۰۰ھ	مرکز الاولیاء لاہور
مکاشفة القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
إحیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
لباب الاحیاء	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
لباب الاحیاء	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار البیروتی دمشق، شام ۱۴۲۴ھ
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
فیضان احیاء العلوم	المدینة العلمیة (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۳ھ
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
البر والصلة	ابو الفرج عبد الرحمن ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، بیروت ۱۴۱۳ھ
الزھد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
کتاب الزھد	امام عبد اللہ بن مبارک مروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
الزھد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
الانوار القدسیة	امام عبد الوہاب بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار التقوی دمشق ۱۴۲۸ھ
الطبقات الصوفیة	ابو عبد الرحمن محمد بن حسین سلمی، متوفی ۴۱۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
نتائج الافکار القدسیة	شیخ الاسلام زکریا بن محمد انصاری، متوفی ۹۲۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
عیون الحکایات	امام ابو فرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی

عیون الحکایات	امام ابوالفرج عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
درۃ الناصحین	علامہ عثمان بن حسن بن احمد شاکر خوبوی	دارالفکر بیروت
حکایتیں اور نصیحتیں	الشیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
بستان الواعظین	امام ابوالفرج عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۹۹۰ء
الزواجر عن اقتراف الکبائر	امام ابوالعباس احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
الحدیقۃ الندیۃ	علامہ عبدالغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان
اِصلاحِ اعمال (الحدیقۃ الندیۃ)	علامہ عبدالغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
اتحاف السادۃ المتقین	محمد بن محمد بن عبدالرزّاق معروف بمرتضی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲۰۰۹ء
کشف المحجوب	علی بن عثمان ہجویری المعروف حضور داتا گنج بخش، متوفی ۴۶۵ھ	مرکز الاولیاء لاہور
التعریفات	علامہ سید شریف علی بن محمد بن علی جرجانی متوفی ۸۱۶ھ	دارالمنار للطباعۃ والنشر
التوقیف	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	عالم الکتب، قاہرہ ۱۴۱۰ھ
کتاب القلیوبی	علامہ احمد شہاب الدین قلیوبی ۱۰۶۹ھ	باب المدینہ کراچی ۱۳۹۱ھ
مثنوی مولانا روم	مولانا جلال الدین محمد بن محمد رومی، متوفی ۶۷۰ھ	خدیجہ پبلیکیشنز لاہور ۲۰۱۱ء
فیضانِ سنت	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
نماز کے احکام	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
بہجۃ الاسرار	امام ابوالحسن نورالدین علی بن یوسف شطنوفی، متوفی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
الکامل فی التاریخ	ابن الاثیر ابوالحسن علی بن ابوالکرم شیبانی جزری، متوفی ۶۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
بدگمانی	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
فضائل دعا	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
خوفِ خدا	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
صفۃ الصفوۃ	امام ابوالفرج عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
وفیات الاعیان	ابوالعباس احمد بن محمد بن ابراہیم بن ابی بکر بن خلکان، متوفی ۶۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
فیضانِ صدیق اکبر	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ فیضان صحابہ واہل بیت)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
توبہ کی روایات وحکایات	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
احترامِ مسلم	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
کراماتِ صحابہ	شیخ الحدیث علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
سیدی قطبِ مدینہ	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
۲۸ کلماتِ کفر	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
آنسوؤں کا دریا (بحر الدموع)	امام ابوالفرج عبدالرحمن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مولانا مصطفٰے رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
فیضانِ ریاض الصالحین	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ فیضان حدیث)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۴ھ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

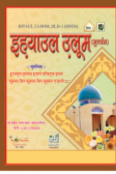

0133157

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net